इब्ने निशातीविरचित

फूलबन

☆

संपादक

श्री देवीसिंग व्यंकटसिंग चौहान,
बी. ए. (ऑनर्स), एल्‌एल्. बी.
सदस्य, लोकसेवा आयोग, बम्बई

☆

महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, पुणें

इब्ने निशातीविरचित

फूलबन

★

संपादक

श्री देवीसिंग व्यंकटसिंग चौहान,
बी. ए. (ऑनर्स), एल्‌एल्‌. बी.
सदस्य, लोकसेवा आयोग, बम्बई

★

महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, पुणें

फूलबन

इस पुस्तकके प्रकाशनके लिए मराठवाडा विश्वविद्यालय द्वारा रु. १०००/- का अनुदान प्राप्त हुआ है ।

प्रथम संस्करण
गांधीजयंती शक १८८८
(२ अक्तूबर १९६६)

ग. वा. करमरकर
मंत्री, महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा,
राष्ट्रभाषा भवन, नारायण पेठ,
पुणे द्वारा प्रकाशित

गो. प. नेने
राष्ट्रभाषा मुद्रणालय, ३८७ नारायण पेठ,
पुणे २ द्वारा मुद्रित

मूल्य रु. ७-५०

अनुक्रम

प्रकाशकीय

अंग्रेजी शासन कालके पहले दक्षिण भारतमें 'दक्खिनी हिन्दी' का उपयोग राजभाषाके तौरपर कई शतियाँ होता रहा। आरंभमें वह सिर्फ बोलचालकी भाषा रही लेकिन धीरे-धीरे उसका रूप विकसित होकर उसमें उत्तमोत्तम ग्रंथोंकी रचनाएँ भी हुईं। लेकिन इनमेंसे बहुत कम अब तक प्रकाशित हो सकी हैं। हमारे लिये बडी प्रसन्नताकी बात है कि श्री. देवीसिंग चौहान द्वारा संपादित इब्ने-निशातीविरचित 'फूलबन' प्रकाशित करनेका सुअवसर हमें प्राप्त हो रहा है। इसके द्वारा फार्सी लिपि न जाननेवालोंको दक्खिनी हिन्दीके एक मौलिक ग्रंथका परिचय हो सकेगा।

श्री देवीसिंग चौहान मराठी, हिंदी, अंग्रेजी, उर्दू, दक्खिनी हिन्दी, फार्सी भाषाओं और उनके साहित्यके अध्ययनमें गहरी रुचि रखते हैं। अनुसंधान-कार्यमें उन्हें गहरी आस्था है। पत्र-पत्रिकाओंमें उनके अनुसंधानपरक लेख नित्य प्रकाशित होते रहते हैं। भारतीय स्वाधीनता संग्रामके सेनानी तथा राजनीतिके क्षेत्रके एक जानेमाने नेता होनेके साथ-साथ साहित्यके प्रति उनकी आस्था विशेष रूपसे स्पृहणीय है। हैदराबाद रियासत तथा बंबई राज्यकी विधान सभाओंके सदस्य और शिक्षा विभागके मंत्रीके नाते उन्होंने उल्लेखनीय कार्य किया। इस समय वे महाराष्ट्र राज्य लोकसेवा आयोगके सदस्य हैं। महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभाकी औरंगाबाद विभागीय समितिके अध्यक्षके नाते वे राष्ट्रभाषा प्रचारमें सक्रिय सहयोग देते रहे हैं। उन्हींके अध्यवसाय और परिश्रमके फलस्वरूप यह पुस्तक पाठकोंके समक्ष प्रस्तुत हो रही है। इस पुस्तकके प्रकाशनका सौभाग्य हमें प्राप्त हुआ जो हमारे लिए गौरव-की बात है। मराठवाडा विश्वविद्यालयने इस पुस्तकके प्रकाशनके लिए रु. १००० का अनुदान दिया जिसके लिए हम उस विश्वविद्यालयके अधिकारियोंके कृतज्ञ हैं।

आशा है, पाठक इस पुस्तकको पसंद करेंगे।

महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा,
राष्ट्रभाषा भवन, नारायण पेठ,
पुणें २

ग. वा. करमरकर
मंत्री

हृद्गत

दक्खिनी हिंदी आजकी राष्ट्रभाषाका पूर्ववर्ती रूप है। वह मुसलमान साहित्यकोंके हाथों गुजश्ता चार-पाँच शतियोंसे बनती रही है। आजके उसके रूप हिंदी और उर्दू हैं। इन दोनोंमें भाषा शास्त्रीय दृष्टिसे कोई भेद नहीं। लिपि अरबी-फार्सी और कुछ विदेशी शब्दोंका उसमें प्रयोग, यह ऐसी बातें नहीं हैं जिसके कारण किसी भाषाके मूल स्वभाव और प्रकृतिमें कोई दोष पैदा हो। यही कारण है कि वह भारत और पाकिस्तानकी राष्ट्रभाषाके नाते काम कर रही है। मेरी यह अविचल धारणा है जबसे मुसलमान विजेता दक्षिणावर्त पहुँच गये उन्होंने खड़ीबोली अथवा दक्खिनी हिंदीका प्रयोग दक्षिणमें किया। इसके व्यवहारका स्वरूप राष्ट्रभाषाके नातेसे ही होता रहा है।

यह खयाल सरासर गलत और निर्मूल है कि आजकी राष्ट्रभाषा हिंदीका उद्गम और विकास अँग्रेज़ी सत्ता स्थिर होनेपर शुरू हुआ। वह तो शतियोंसे होते आ रहा था। अँग्रेज़ोंने उस घटनाको समझ लिया और उसके विकासमें सहायता की। अँग्रेज़ोंके पूर्वका हिंदीका इतिहास अभिनिहित है। हिंदी भाषाका सर्वांगपूर्ण इतिहास दक्खिनी हिंदीके अध्ययन बिना पूरा नहीं हो सकता। यह आवश्यक है कि दक्खिनीकी तमामतर साहित्य-संपदा हिंदी पाठकोंको प्राप्त हो जाए। 'फूलबन' का संपादन इसी विशाल प्रयत्नकी एक छोटी-सी कड़ी है।

इस अध्ययनमें मैंने संहिता टीकाशास्त्रके आदेशोंको प्रयोग-निहित करनेकी चेष्टा की है। फूलबनकी अवास्तव रीतिसे बढ़ी हुई मर्यादाको घटा, उसको मूल संहितापर स्थिर करनेका प्रयत्न यहाँपर किया गया है। इस क्षेत्रमें मतभिन्नताके लिए काफी गुंजाइश है। मैंने जो कुछ कहा है उससे अलग राय हो सकती है। लेकिन यह इस दिशामें प्रथम प्रवेश है। तद्भव और देशी शब्दोंके निश्चितीकरण और अर्थनिर्धारणमें मैंने यथाशक्ति प्रयत्न किया है। फार्सी शब्दोंके संस्कृत मूल शब्द देनेका प्रयत्न भी किया गया है। यह प्रयत्न करते समय जर्मन पंडित पाल शर्न, के. जी. केंट, तोलमन आदि विद्वानोंके भाषाशास्त्रीय ग्रन्थोंसे सहायता ली गयी है। यह प्रयत्न भी नया है। अगर इन दोनों प्रयत्नोंकी दिशाको विद्वान् बढाते जाएँ तो फार्सीका विदेशीपन शनैः शनैः कम होता जाएगा। नये क्षितिज दृष्टिक्षेपमें आ जाएँगे। हिंदीका अध्ययन अधिक परिपूर्ण होगा।

डॉ. बाबूरामजी सक्सेनाका मैं अत्यंत ऋणी हूँ कि उन्होंने मेरे इस अल्पस्वल्प प्रयत्नको अपने आशीर्वाद और मार्गदर्शनसे विभूषित किया। मराठवाड़ा विद्यापीठका भी मैं आभारी हूँ।

हिंदी दिन, शके १८८८ — देवीसिंग चौहान

प्रस्तावना

प्राय: ४० साल हुए जब हमें अपने भाषाविज्ञानके अनुसन्धानके क्रममें उस वाणीका परिचय मिला जिसे हम दक्खिनी हिन्दी कहते हैं। सबसे पहले श्री हाशिमीकी एक पुस्तक देखनेको मिली जिसका नाम है "दकनमें उर्दू"। यह उर्दू लिपिमें लिखा हुआ इस वाणीका एक परिचयात्मक विवरण है। इसे मैंने गौरसे पढ़ा और इस नतीजेपर पहुँचा कि यह वाणी जिसे हाशिमी साहब उर्दू कहते हैं वास्तवमें हिन्दी है। इसमें काफी साहित्य है और उस सारे साहित्यके लेखकोंने इसे कभी उर्दू नहीं कहा, हिन्दुई या हिन्दी कहा है। निश्चय ही इनमेंसे बहुतेरे लेखक ऐसे थे जो या तो स्वयं अभारतीय थे अथवा अभारतीयोंकी सन्तान। उनकी अपनी भाषा अधिकतर पहले फारसी रही होगी और उसकी तुलनामें उन्होंने इस वाणीको हिन्दी (हिन्दीकी भाषा) करार दिया। इसके उपरांत मेरी रुचि इस साहित्यके पढ़नेकी ओर हुई। थोड़े दिनों बाद ही मेरा परिचय प्रोफेसर मोहियुद्दीन कादिरी 'ज़ोर" से हुआ। प्रोफेसर कादिरीने इस साहित्यके अमूल्य ग्रन्थोंको प्रकाशित करानेमें बड़ा योगदान किया। प्रोफेसर अब्दुलहकने भी निज़ाम सरकारकी मददसे इस साहित्यको आगे बढ़ाया। ज़ोर साहबसे मेरी मुलाकात पॅरिसमें १९३० में हुई। उस समय वह वहाँ अनुसन्धान कर रहे थे। यह मुलाकात गहरी होती गयी और हम दोनों एक-दूसरेके दृष्टिकोणको समझते हुए अपनी-अपनी बुद्धिके अनुसार इस साहित्यको प्रोत्साहन देनेमें अग्रसर हुए। १९३७–४० ईसवीमें मैं हिन्दी साहित्य सम्मेलनका प्रधान मन्त्री था। उस समय मैंने बहुत प्रयत्न किया कि हिन्दी इस साहित्यको अपना ले और देवनागरी लिपिमें इसके ग्रन्थोंको प्रकाशित करे। मेरी यह इच्छा किन्हीं कारणंसे तब सफल नहीं हो सकी। इसके उपरांत प्रयागकी हिन्दुस्तानी एकेडेमीने मुझे इस साहित्यपर कुछ व्याख्यान देनेका निमन्त्रण दिया। मेरे ये व्याख्यान 'दक्खिनी हिन्दी' नामसे हिन्दुस्तानी एकेडेमीने प्रकाशित किये। इस ग्रन्थके प्रकाशनके उपरांत हिन्दीवालोंका ध्यान अपने साहित्यके इस अंगकी ओर आकर्षित हुआ और तबसे देवनागरी लिपिमें कई उत्तम ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं।

प्रस्तुत ग्रन्थ "फूलबन" इब्ने-निशातीकी रचना है, इस ग्रन्थके उर्दू लिपिमें दो संस्करण मौजूद हैं। देवनागरी लिपिका प्रस्तुत संस्करण श्री देवीसिंग व्यंकटसिंग चौहानने बड़े परिश्रमसे तैयार किया है। पाण्डु लिपि देखकर और प्रकाशित उर्दू लिपिके संस्करणोंका अध्ययन कर सम्पादकने शुद्ध पाठ स्थापित करनेका प्रयत्न किया है। प्राचीन ग्रन्थोंमें बहुधा क्षेपक अंश ज़रूर पाये जाते हैं। संपादकने कुशलतापूर्वक मीमांसा करके क्षेपक अंशोंको अलग कर देनेका प्रशंसनीय कार्य किया है। जैसा कि संपादकने भूमिकामें लिखा है 'फूलबन' कलाकी दृष्टिसे उत्तम ग्रन्थ है। इसकी भाषा स्थान स्थानपर अलंकृत है। इन अलंकारोंमें भारतीयताका पुट यथेष्ट है। जहाँ अ-भारतीय तत्त्व हैं वे निश्चय ही फारसीके ग्रन्थोंके प्रभावसे आये हैं। भारतीय तत्त्व इब्नेनिशातीके अपने अनुभवसे और सम्भवत: भारतीय साहित्यके प्रभावसे उनके ग्रन्थमें आ गये हैं। दक्खिनी हिन्दीमें मैंने यह प्रतिपादित करनेका प्रयत्न किया है कि वलीकी प्रारम्भिक रचनाओं तक भारतीय तत्व इस सीमा तक थे कि माशूक स्त्री हो सकती थी किन्तु वलीकी दिल्ली यात्राके उपरांत उनकी रचनामें यह भारतीय तत्त्व भी नष्ट हो गया और तबसे उत्तरी भारतके फारसीसे यथेष्ट प्रभावित उर्दू लेखकों का प्रभाव बढ़ने लगा। तब भी दक्खिनीने अपना व्यक्तित्व यथा सम्भव कायम रक्खा है और आज भी दक्खिनीके साहित्यको उर्दूसे पृथक् ही समझना चाहिए।

इस साहित्यकी भाषा खड़ी बोली हिंदी है और खड़ी बोलीका वह स्वरूप जो वर्तमान परिनिष्ठित खड़ी बोलीके स्वरूपसे थोड़ा भिन्न है। इसमें स्थान-स्थानपर आज अवधी और व्रज आदि बोलियोंके व्याकरणिक रूप प्राप्त होते हैं। इन्हें हम इन बोलियोंका प्रभाव न कहकर मूल खड़ी बोलीका अंग ही कहेंगे क्योंकि परिनिष्ठित रूप धारण करनेके पूर्व किसी भी भाषामें विकल्प रूप होते हैं और वे उसके अपने ही अंग हैं। सम्पादकने अपनी भूमिकामें यह ठीक ही कहा है कि फारसी और संस्कृत एक ही परिवारकी भाषाएँ हैं। उन्होंने कुछ शब्दोंको तुलना रूपमें पृष्ठ २५ पर अपनी भूमिकामें उपस्थित किया है। इनकी व्युत्पत्तिमें मतभेदकी गुंजाइश है।

खड़ी बोलीका दक्खिनी रूप ऐसे क्षेत्रमें पनपा जो तेलगु भाषा और मराठी भाषाका निजी क्षेत्र है। ऐसी दशामें यह स्वाभाविक ही था कि इन भाषाओंके कुछ शब्द हिंदीके इस स्वरूपमें आ जाएं।

सम्पादकने अपनी ३० पृष्ठकी भूमिकामें आवश्यक बातोंका विवेचन किया है। इसके उपरांत मूल ग्रन्थ फूलबनका पाठ दिया है। इस पाठमें पाद-टिप्पणीमें कठिन शब्दोंका अर्थ भी दे दिया है जिससे ग्रन्थको समझनेमें आसानी रहेगी। इसके ऊपर फूलबनके कुछ संदर्भोंपर टिप्पणी भी दी हुई है और ८ पृष्ठोंमें फूलबन हिन्दी-मराठी शब्दकोश भी प्रस्तुत किया गया है। इस प्रकार संपादकने ग्रंथको सर्वांग-संपूर्ण बनानेमें अपनी ओरसे कोई कसर बाकी नहीं रक्खी। मुझे विश्वास है कि इनके इस परिश्रमका हिन्दी संसार आदर करेगा। संपादककी भाषा उनकी मातृभाषा मराठीसे प्रभावित है और एक-दो स्थानोंपर वह उर्दूकी पाण्डु लिपियोंसे प्रभावित दिखाई पड़ते हैं। उदाहरणके लिए भूमिकाके प्रथम पृष्ठपर ही "हातों" शब्द मिलता है। परिनिष्ठित हिंदीमें हम "हाथों" लिखते हैं। इसी प्रकारके कई और उदाहरण भी मिलेंगे किन्तु इनसे ग्रंथकी कोई क्षति नहीं होती। हिंदी समूचे भारतकी राष्ट्रभाषा है और स्वाभाविक रूपसे ही अहिंदी भाषा-भाषी क्षेत्रोंके लेखकोंकी लेखनीसे उसका परिनिष्ठितसे भिन्न स्वरूप निखरेगा। उसका हमें स्वागत करना चाहिए। मैं संपादक, श्री देवीसिंग व्यंकटसिंग चौहानको इस उत्तम ग्रंथके लिए बधाई देता हूँ। वह साहित्यिक अनुसन्धानका और भी कार्य कर रहे हैं उसमें उन्हे ईश्वर सफलता दे। मुझे आशा है कि दक्खिनीका पूरा साहित्य शीघ्र ही देवनागरी लिपिमें प्रकाशित हो जाएगा। यह उसी प्रकार मूल्यवान है जैसे जायसीकी पद्मावत या नूर मोहम्मदकी इन्द्रावती, जो अवधीके उत्तम ग्रंथ हैं। महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभाने फूलबनको प्रकाशित कर प्रशंसनीय कार्य किया है। इसके लिए उसको अनेक साधुवाद।

रायपुर, दिनांक ६ अक्तूबर, १९६६ — **बाबूराम सक्सेना**

भूमिका

बहमनी राजघराने का दक्षिण में राज्य कायम होते ही यहां पर दक्खिनी हिंदी के पैर जम रहे थे। बहमनी राज्य काल में खाजा बंदेनवाज गेसू दराज़ने दक्खिनी में साहित्यनिर्मिति की। फीरोजशाह के कालमें कवि निजामी पैदा हुआ जिसने दक्खिनीमें पहला कथा-काव्य 'कदमराव और पदम' लिखा। बहमनी राज्य के अंत पर दक्षिण में पांच मुसलमानी राज्य स्थापित हुए। दक्खिनी हिंदी के विकास में बीजापूर की आदिलशाही और गोलकुण्डा की कुतुबशाही ने विशेष कर हाथ बटाया। इन्हीं दो राज्यों में फार्सी विद्वानोंके साथ साथ दक्खिनीके कवि और साहित्यिकों को पर्याप्त सहकार और प्रोत्साहन मिलता रहा। इसी अतीव अनुकुल वायुमंडलके कारण ही बीजापूर और गोलकुण्डामें दक्खिनी के शेंकडो छोटे-मोटे कवि काम करते रहे और दक्खिनीकी साहित्यसंपदा वृद्धिंगत होती रही।

कुतुबशाही राजाओंने शिल्प और साहित्य को खास तौर पर बढावा दिया। इस दृष्टिसे कुतुबशाही राजा और हैद्राबादको विशेष महत्त्व प्राप्त हुआ था। दक्खिनी को इस घराने के हातों विशेष प्रोत्साहन मिला। यह खानदान १८० वर्षो तक राज्य करता रहा। और दक्खिनी भी प्रगति करती रही। कुतुबशाही खानदानके पहले तीन चार राजाओंने राज्यको मजबूत बना दिया था। विशेषतः इस घरानेके चौथे बादशाह इब्राहीम कुतुबशहाने राज्य को पर्याप्त स्थिर और विशाल बना दिया। वह अपने पिता सुल्तान कुली के मारे जाने पर सात सालों तक पडोसके हिंदु राज्य विजयनगरमें आश्रित था और अन्तमें उसी राज्यकी सहायतासे राज्य पा सका। इसी कारण उसके मनमें मुस्लिमेतर प्रजा के लिये सहिष्णुता और आदर का भाव था। इसीका परिणाम था कि उसने धर्म और कार्यप्रणालिमें विशाल-दृष्टिका स्वीकार किया था। उसका शहर और राजप्रासाद भिन्न धर्मीय और भिन्न संस्कृतियोंका संगम था।

प्रवासमें वह बडे बडे विद्वानों और कलावंतोंका अपने साथ रखता था। वह उनकी बडी क़द्र करता और उनसे मित्रोंके नाते बरताव करता था। उस के बाहय प्रासादके सात भाग थे। उनमेंसे तीसरे भाग में इब्राहीम कुतुबशहाने चित्रकार और ग्रंथपालोको स्थान दिया था। यह लोक राजाके गंथालय की व्यवस्था करते थे। चौथा भाग दरबारी कवि और ग्रंथलेखकों के लिए नियुक्त था। छटे भाग में कवि और सरदारोंका स्थान था। इसी स्थान पर तात्त्विक और साहित्यिविषयक चर्चा होती थी। यह जानकारी इब्राहीम शीराजीनें अपने इतिहासग्रंथ 'तजकिरतुल्मुलूक' में सुरक्षित की है। इतिहासको यह भी ज्ञात है कि अनेक तेलगु कवि-ओंने इस बादशाह की स्तुति तेलगु भाषामें की है।

इसी बादशहाहके राजकालमें मुल्ला खयाली, सय्यद महमूद, कुतुबुद्दीन बीदरी फीरोज मानी, अहमद गवासी आदि प्रसिद्ध कवि और साहित्यिक गुजरे है। पाठक देखेंगे कि इनमेंसे पहले तीन कवियोंका उल्लेख इब्ने निशातीने अतीव आदरबुद्धिसे इस काव्य के अंतमें किया है।

इब्राहीम कुतुबशाह का बेटा मुहम्मद कुली (जन्म शक १४८८ – मृत्युशक १५३४) इसी साहित्यिक और विद्याभिवृद्धि के काल में नव विचारोंसे संस्कारित होता पर्वरिश पा रहा था। वह विद्या और साहित्यका पर्वाना था। वह इस खानदानका सबसे बडा और उस भूमिका कविश्रेष्ठ हुआ है। उसने हैदराबाद शहर की बुन्याद रखने के बावजूद, दक्खिनीमें श्रेष्ठ दर्जे की कविता लिखी है। जिसको स्व. डॉ. ज़ोरनें संपादित कर, प्रकाशित किया है। उस का समय विद्याभिवृद्धि और दक्खिनीके लिए अत्यंत पोषक रहा। उसने दक्खिनीके साथ साथ तेलगुमें भी कविता लिखी है। वह हिंदु संस्कृति और साहित्यका कडा अभिलाषी था। उसने अपने बापदादा का लिबास छोड दे कर हिंदुस्थानी पोशाक; रहनसहनकी रीति और जीवनपथ स्वीकार कर लिया था उसने दाढी मुंडवाई थी और वह आंध्रनिवासियोंका पोशाक किया करता।

वह दक्खिनी का श्रेष्ठतम आश्रयदाता रहा है। दक्खिनीपर उसने वह उपकार किया जो उसके पहले या बाद किसी बादशाहके हातों न बन सका। वह दक्खिनी का प्रथम ' साहिबे दीवान ' कवि है।

मुहम्मद कुलि का समसामयिक कविश्रेष्ठ मुल्ला वजही (प्रथम काव्य शक १५३१–हि१०१८)हुआ है जिसनें दक्खिनीका पहला गद्यग्रंथ लिखा। वजही केही टक्कर का श्रेष्ठ कवि शेख अहमद इसी काल में गुज़रा है।

सुलतान मुहम्मद (जन्म शक १५१५) मुहमदकुली का भतिजा था। वह ऊंची श्रेणी का कवि न था। किंतु उसने स्वयं मुहम्मदकुली का दीवान संपादित किया, इस के समयमें कविश्रेष्ठ मुल्ला ग़वासी जीवित था।

कुतुबशाही वंश का सातवा बादशाह अब्दुल्ला शक १५३६ में पैदा हुआ और शक १५४७ में सिंहासनाधीश बना। वह अपने नाना के कदमपर चलनेका प्रयत्न करता था। वह स्वयं कवि था और साहित्यिकोंका बडा आदर करता था। मुल्ला वजही, मलिक खुश्नूद और इब्ने निशाती जैसे कविश्रेष्ठोंका वह समकालीन और आश्रयदाता था। उसने शिवाजी महाराजाके राज्यारोहणके पूर्व दो साल तक राज्य चलाकर शक १५९४ (हिजरी१०८३) में स्वर्गवास किया।

इब्ने-निशाती के सिवा कुतबी, अफज़ल क़ादरी, आ़बिद, सय्यद वलाकी आदि उसके राज्यकालके प्रसिद्ध कवि गुज़रे हैं।

यहां इस बातका उल्लेख करना उचित होगा कि दक्षिणके मुसलमान बादशाह, अमीर, सरदार, विद्वान आदिने जहां तक कि लोकव्यवहार का संबन्ध है, हिंदीही को अपने व्यवहारका माध्यम बनाया था। मुसलमान राज्यकर्ता और साधूसंतोंकी मातृभाषा फार्सी वा अरबी होनेके बावजूद भी उन को हिंदीही का

अवलंबन करना पडा । चूंकि केवल मुसलसानोंके हातों यह हिंदी दक्षिणमें पलती रही ; उसमें फार्सी अरबी शब्दोंकी प्रचुरता पैदा हुई और वह दक्खिनी कहलाई । क्यों कि केवल उत्तरकी व्रजभाषा, अवधी या खडीबोली नहीं रही, इसी कारण वह दक्खिनी बन गई । किन्तु इस मे कोई संदेह नहीं कि वह वही हिंदी थी जिसमें अमीर खुस्रोने आत्माविष्कार किया था । विद्यापति और कबीरने अपने दिव्य-सन्देश जनसाधारण तक पहुंचाए थे । प्रारंभमें इस हिंदीमें तमाम विचार, भाव, स्वभावविशेष और मनोविश्लेषण कों परिष्कृत करनेकी क्षमता नहीं थी । किन्तु धीरे धीरे साहित्यवाणी के लिए आवश्यक गुणोंका उसमें प्रादुर्भाव होते गया । जलदीसे प्रगति होनेमें सबसे बडा कारण यह प्रतीत होता है कि दक्षिणके सब राज्य-कर्ताओंने इसी भाषा को अपनाया था । वह स्वयं इसी वाणीमें व्यवहार करते, काव्यरचना करते और इसमें साहित्य निर्माण करनेवाले कवि आदि को आश्रित और सम्मानित करते थे ।

हिंदी या दक्खिनी दिल्ली के शासकोंकी व्यवहारकी भाषा बनने और दक्षिण में वह राज्यकर्ताओंकी मातृभाषा बननेका एक विशेष कारण यह भी है कि दक्षिण-के बीजापूर, अहमदनगर और गोलकुण्डा के मुसलमान बादशाह शिया-पंथी थे । गो उनका धर्म इस्लाम था, परन्तु वह सुन्नी या अन्य इस्लाम पंथियोंसे अलग-अलग थे । उनमें कुछ विशेष बातें थीं । इस कारण वह उन्हें दूसरे मुसलमानोंसे पृथक् करती हैं । उनकी इस भिन्नताका कारण उनके हिंदु प्रजासे स्वीकार हुए मार्ग-मेंभी प्रतिबिम्बित हुआ है । दक्षिणके मुसलमान शासक, उनके दिल्लीके समकक्षोंकी तुलनासे, अधिक सहिष्णु, हिंदु संस्कृतिके अधिक जाननेवाले और हिंदी भाषा के अधिक अपनानेवाले दिखाई देते हैं । बीजापूरके इब्राहीम आदिलशाह 'नवरस' और गोलकुण्डाके चतुर्थ बादशाह मुहम्मदकुली, मानी हिंदुके प्रति अतीव सहिष्णु, मुस्लि-मेतर कविसाहित्यिकों के भी आश्रयदाता और प्रेमी, और दक्खिनी या हिंदी के उच्च श्रेणीके स्वयं कवि हुए हैं ।

ऊपर की विचारधारा का प्रतिबिम्ब हमें उस समय की दक्खिनी में भी मिलता है । उस समय की दक्खिनी में पूरा भारतीय वायुमंडल दिखाई देता है ।

कवि चरित्र

दक्खिनी की तीनचार सौ सालों की जीवनयात्रा में फूलबन उस के गले के रत्नहार के समान उसको सालंकृत और सुशोभित करता है । जितना फूलबन काव्य का परिमल चारों ओर फैला हुवा है, उतना ही उसका रचयिता इब्ने निशाती अंधःकारगर्ता में पडा हुवा है । लेकिन यह दुर्भाग्य केवल निशाती ही का ही नहीं है । बिना किसी परिवाद के हम कह सकते हैं कि यही अवस्था प्राचीन तमाम-तर कवियों और महाकवियों की है । न कविकुलशिरोमणि कालिदास उसको अपवाद हैं न महाकवि शेखरीभूत बाणभट्ट । न केवल संस्कृत के ही प्राचीन कवियों का यह हाल है । यही अवस्था प्राचीन अथवा मध्ययुगीन अन्य प्रादेशिक भाषाओं के लेखकोंकी भी है । नामदेव, कबीर, तुलसीदास, रसखान आदि हिंदी के कवि,

अथवा ज्ञानेश्वर, भास्करभट्ट बोरीकर, नरेंद्र, मुकुंदराज आदि मराठी भाषा के कवि इन सबों के संबंध में कहा जा सकता है कि उन के जन्ममृत्यु के वर्ष, उनका स्थान और जीवनी की अन्य जानकारी बहुतही कम मिलती है। यही हाल दक्खिनी हिंदी के कवियों का भी है।

इब्ने निशाती के पूरे नाम के बारे में कोई जानकारी नहीं मिलती थी। लेकिन श्री. शेख चांद ने, फूलबन की एक अधोरी पाण्डुलिपिके आधार पर बतलाया है कि उसका नाम शेख मुहम्मद मज़हर था और उसके पिता का नाम शेख फख्रुद्दीन। इस पाण्डुलिपि में मुहम्मद मजंहर के नामके पूर्व शेखुल्मशायख की बहुमानवाचक उपाधि भी लिखी गई है। इससे जान पडता है कि इब्ने निशाती यह मुहम्मद मज़हर का कविता का नाम है।

निशाती के निवासस्थान, उसका विद्याभ्यास, उसकी युवावस्था आदि के बारे में हमें कोई मालूमात नहीं हैं। हम केवल इतना जानते हैं कि वह हैदराबाद का निवासी और अब्दुल्ला कुतुबशा का समकालीन था। वह शाही वा सरदारी खानदान से नहीं था। प्रारंभ में उसको अब्दुल्ला कुतुबशाह के दरबारमें कोई विशेष स्थान प्राप्त नहीं हुवा था। इस बात की शिकायत उसने अपने काव्य में की है।

हुजूऱ्यां में अगर मुंज सल्ग होता गुहर-रेजां में मेरा कलक होता
फरागत उस ते गर टुक मुंज कों होता ले मोत्यां खूब मैं उस में परौता
बडच्यां के नाद अछता तो बडापन दिखाता आज मैं गाता में बहुत फन
ज़माना ना समज कर क़द्र मेरा बिछाना है वो भुई सूं सद्र मेरा

इस से मालूम होता है कि निशाती को शाही दरबार में उच्च स्थान प्राप्त था. न उस के घर की सांपत्तिक अवस्था विलोभनीय। इसी कारण उसने कहा है कि अगर उस को यह दोनों बातें प्राप्त होतीं तो वह गोता मार कर खूब मोती बाहर निकालता और हार में उनको पिरौता। जमाने ने उसकी क़ीमत नहीं पहचानी। महाकवि भवभूतिने भी इसी प्रकारकी अपने ज़मानेकी शिकायत की थी।

ये नाम केचिदिह नः प्रथयन्त्यवज्ञां जानन्ति ते किमपि तान्प्रति नैष यत्नः
उत्पत्स्यतेऽस्ति मम कोऽपि समानधर्मा कालोह्ययं निरवधिर्विपुला च पृथ्वी।

इण्डिया ऑफिस ग्रंथालय में रखी हुई फूलबन की एक पाण्डुलिपि में, फूलबन के परिशिष्ट के साथ, दो चित्र भी दिए गए हैं। उसमें से एक चित्र में कवि इब्ने निशाती फूलबनकाव्य का एक जोड लिखता हुवा एक नोकर के साथ, चित्रित है। दूसरे एक चित्र में अब्दुला कुतुबशाह की एक महफिल में इब्ने निशाती काव्यगोष्टी करता हुवा बतलाया गया है। इससे पता चलता है कि फूलबन लिखने के कुछ वर्षो बाद निशाती को बादशाही दरबार में उच्च स्थान प्राप्त हुवा था। फूलबन का यह परिशिष्ट निशाती के अंदाजा सौ वर्ष बाद लिखा गया है।

इसके अतिरिक्त निशाती के कोई मालूमात बाहर के अन्य साधनों या ग्रंथों से नहीं मिलते। उसके स्वभाव. भाषा, वृत्तिविशेष आदि मालूम करने का उसका यह काव्यही एकमेव साधन है।

उर्दू और उसकी मां दविखनी हिंदी के तमाम कवियों की यह विशेषता प्रतीत होती है कि वह बहुतही खुदनुमाईपसंद होते हैं। इस के विरुद्ध इब्ने निशाती का स्वभाव अत्यन्त विनयशील था। उस के पूर्व के तमाम-तर कवि अपनी श्रेष्ठता और अपूर्वता जतलाने में व्यापृतबुद्धि थे। उन्होंने अपने समसामयिक कवियों पर कडी चोटें लगाई हैं, तरह तरह से उनकी टीकाटिप्पणी की है। किन्तु निशाती इन बातों से कोसों दूर है। वह आत्मस्तुति पर कभी नहीं उतरता (जोड १७२७) उसने अपने इस काव्य में अपने समकालीनों का उल्लेख भी टाल दिया है। अपने काव्य की श्रेष्ठता और गुणगर्भता पर उसको पूरा विश्वास था। इस की सच्ची परख करने के लिए वह गतपूर्व कविश्रेष्ठों की याद करता है। उस के एक शताब्दि पूर्व गुज़रे हुए फीरोज़ बीदरी, सय्यद महमूद, शेख़ अहमद, मुल्ला खयाली और विजयनगर साम्राज्य को मृत्युआघात करने वाले अहमदनगर के बादशाह निजामशाह के विजय के उद्गाता, हसन शौकी को वह याद करता है। उस की इस प्रवृती में प्राचीन महाकवियों की महानता की झलक नज़र आती है। (जोड १७२१ से १७२५)

दविखनी कवियों की यह सुप्रतिष्ठित परंपरा है कि वह अपनी कृति हम्द से-ईशप्रार्थना से शुरू करते हैं। इस के बाद ईश्वर को उपस्थित मान कर उसकी प्रार्थना, मुनाजात के रूप में की जाती है। फिर पैगंबर की स्तुति नात के रूप में होती है। इस के पश्चात अली आदि धर्मनेताओं की स्तुति मनक़बत में की जाती है। हर किसी काव्यकृति में उस समय के बादशाहकी स्तुति करने की परंपरा चलती आई है। इसी परंपरा को निशातीने भी चलाया है। इस के पश्चात् ग्रंथ निर्मिति के कारण के संबंध में कवि निवेदन करता है। यहां पर इब्ने निशातीनें, अन्य कवियों के भान्ति, इस दुनिया में अपना नाम क़ायम करने, सत्कीर्ति प्राप्त करने के लिए, यह काव्य लिखा।

प्रा. सर्वरीने कहा है कि इब्ने निशाती ने यह काव्य अपनी युवावस्था में लिखा। इस की पुष्टि में उन्होंने निम्न जोड की ओर इशारा किया है।

मुतव्वल कर तूं मेरी जिंदगानी
तूं बरखुर्दार कर मेरी जवानी

उन्होंने निवेदन किया है कि निशातीने यह काव्य बीस पचीस वर्षो की आयु में लिखा हो। लेकिन यह असंभव है। स्वयं प्रा. सर्वरी के कथन के अनुसार निशाती की यह कृति नवशिक्षित कवि का काम नहीं है। फूलबन से उस का रचयिता अनुभवी और परिणतबुद्धि प्रतीत होता है। यह कृति इतनी कम उम्र में लिखी जाना संभवनीय नहीं। दूसरी बात यह कि निशाती ने अपने इस काव्य के अन्त में जमानेंने उसकी कीमत, मूल्य न समझने की शिकायत की है। निशाती जैसा साधारण कुटुंब में पैदा हुआ युवक इतने शीघ्र उच्च प्रतिष्ठा की अपेक्षा क्यों कर कर सकता है? चूं कि निशाती कि यह अपेक्षा थी, इस लिए उसकी आयु काव्य-निर्मिति के समय कम से कम, चालीस पचास वर्षोंकी होनी चाहिए। उसके ग्रंथसे

भी उस की परिणत अवस्थाका पता चलता है। इस पर से अगर निशाती के जन्म वर्ष का पता लगावे तो उसका जन्म शक १५४३ (हिजरी १०३०) के लगभग होना संभवनीय है।

कवि की विद्वत्ता

इब्ने निशाती के विद्याभ्यास या शिक्षाके संम्बन्धमें, जैसा कि कविवर्य मुल्ला नुस्रतीके बारेमें उसके खुदके ग्रंथोंसे मालूमात मिलते हैं, कोई मालूमात उसके खुद के ग्रंथ से या अन्य साधनोंसे नहीं मिलते। वह कहां पैदा हुआ, उस की शिक्षा किस प्रकार हुई, उसकी जिंदगी किस प्रकार व्यतीत होती थी, इत्यादिके संबंधमें यद्यपि कोई जानकारी हम तक नही पहुंची. तथापि यह बात बिल्कुल निरपवाद है कि इब्ने निशाती बहुतही बहुश्रुत और विद्वान था। फूलबन काव्यसे ज्ञात होता है कि निशाती को फार्सी भाषा में अतीव प्राविण्य प्राप्त था। उसकी फार्सी-प्रवीणताके बारेमें उस समयके लोकमत का स्वयं कविने उल्लेख इस प्रकार किया है।

तुझे है फारसी में दस्त-गाह आज
न करसी तर्जुमा बीं कोई तुज बाज।

तुझको (जोड १८४) फार्सी भाषामें महारत प्राप्त है। बिसातीन नामी कथा -काव्य का तेरे सिवा कोई भाषांतर भी न कर सकेगा।

उसकी दक्खिनो भाषा की प्रवीणता यूं वर्णन हुई है।

सुख़न का आज हो कर तू गुहर-संज सुख़न का खोलता नैं क्या सबब गंज
जगत को कै सुनाता नैं यो बातां शकर पर कै तूं लिखता नैं बरातां
(१६०-६१)

तूं आज साहित्यसागर का रत्न-पारखी है। तूं साहित्यका भांडार क्यों नहीं खोलता। तूं दुनिया को यह बातें क्यों नहीं सुनाता। तूं मीठे मीठे वृत्त-काव्य क्यों नहीं लिखता।

इससे पता चलता है कि निशाती को फार्सी भाषामें काफी प्रवीणता प्राप्त थी। उसी प्रकार दक्खिनी हिंदीमें भी वह सिद्धहस्त लेखक था। फार्सीमें लिखा हुआ उस का कोई ग्रंथ आजतक नहीं मिला है। और फूलबनके सिवा उसकी कोई कृति-गद्य वा पद्य आजतक उपलब्ध नहीं है। उसने स्वयं कहा है कि उसको गद्य में अधिक मेल था और उसकी बुद्धि उस क्षेत्रमें सूक्ष्म अभिरुचि रखती थी। परंतु जनसाधारण को अपनी प्रविणताका दर्शन करानेके लिए उसनें यह काव्य लिखा (१७२०)। कवि का धर्मपंथ शिया था। पहले पहल कार्सा द तासीने उसके शियापंथी होने का उल्लेख किया था। प्रा. सर्वरी के कथनके अनुसार भी निशाती एक श्रद्धावान, हृदयपूत शियापंथी भक्त था (प्रस्तावना पृ.४३, ४४)

लेखनकाल

फूलबन एक बहुतही लोकप्रिय कथाकाव्य है । उसकी कई प्रतियां रसिक काव्यप्रेमियोंने अपने उपयोग के लिए बनाई । इब्ने निशातीने स्वयं इस काव्य का लेखनकाल काव्यके सर्ग ६ में (जोडक्रम २०४) दिया है । 'अग्यारा सौ कों कम थे बीस पर चार ' यह उसके शब्द हैं। इसमें कोई संदेह नहीं कि यह हिजरी कालगणनानुसार १०७६ है ।

किन्तु इस लेखनकालके संबंधमें विद्वानोंमें मतभेद है । भारतके अनेक ग्रंथालयों में प्राप्त पाण्डुलिपियोमें यह काल ऊपर बतलाया हुआ ही दिया गया पाया जाता है । किन्तु लंडनस्थित इण्डिया ऑफिस और रॉयल एशियाटिक के ग्रंथसंग्रहों में प्राप्त पाण्डुलिपियोंमें उपर्युक्त जोड निम्नप्रकार दिया गया है ।

अथा तारीख तो लाया यो गुलज़ार ।
अग्यारा सौ को कम थे तीस पर चार।

इससे सन हिजरी १०६६ निकलता है । चूंकि लंडनस्थित प्रतियोंपर विद्वानोंकी दृष्टि पहलेपहल पडी और फूलबन काव्य का अध्ययन होने लगा तो हि. १०६६ सनही जनताके सामने आया । दूसरी कई प्रतियोंमें सन १०७६ साफ तौर पर आनेके बावजूद भी, यह ग़लतफ़हमी आज तक विद्वानोंमें चलती आ रही है । इसका ताजा अनुभव "अलिगढ तारीखे अदबे--उर्दू '(प्रकाशन काल शक १८८४) में मिलता है । फूलबन का लेखनकाल ७ बार उल्लिखित किया गया है, जिस में दुरुस्त सन १०७६ केवल एक बार, और सन १०६६ जो गलत है, छह बार लिखा गया है । कार्साद तासीने गलत उल्लेखका अवलंब किया था ।

प्रो. अब्दुलक़ादर सरवरीने शक १८५९ (हि. १३५७) में फूलवन के प्रथम प्रकाशन की प्रस्तावना में सुचारुतया सिद्ध किया है कि वास्तवमें फूलबन का लेखनकाल शक १५८७ (हि. १०७६) ही हैं । श्री. नसीरुद्दीन हाशमीने अपने ग्रंथ 'दकन में उर्दू' की प्रथम आवृत्ति, मेंभी १०७६ का स्वीकार किया था। किंतु उन्होंने द्वितीयावृत्ति में अपनी राय बदलकर डॉ. मुहीयूद्दीन क़ादरी जोरके वह सहविचारी बन गये और ग़लत सन मान लिया । प्रा. सर्वरीने बतलाया है कि उन्होंने कई प्रतियां तलाश और जांच की । उन सब में, केवल एक के सिवा सन हिजरी १०७६ ही दिया गया है । केवल आग़ा हैदर साहिबके पास की प्रति में, जो बिल्कुल हाल की है, सन १०६६ दिया हुवा है । अधिक पूर्वकालीन प्रतियोंमें सन हि. १०७६ ही दिया गया है ।

प्रा. सर्वरीने सबसे अधिक विश्वासपात्र सुबूत इस प्रकार दिया है । प्रसिद्ध कवि सय्यद मुहम्मद ' इशरती ' के सुपुत्र एक कवि ' हुनर ' ने फूलबन के समान काव्यकृति निर्माण करनेकी महत्वाकांक्षासे प्रेरित होकर ' नेहदर्पण ' नामी कथा-काव्य लिखा । उसने अपना काव्य, निशातीके फूलबनके संपूर्ण करनें के दिनही पूरा

किया । ‘ हुनर ’ फुलबन के लेखनकाल का उल्लेख भी अपने कथा-काव्य में करता है । वह् निम्न प्रकार हैं ।

सने हिजरी ले आया जब यो रुख बार।
अग्यारा सौ कों कम थे बीस पर चार ।

‘ नेहदर्पण ’ में के शद्ब संशयातीत और बिल्कुल साफ हैं । उसमें किसी शंका के लिए स्थान नहीं है । यह भी याद रहे कि ‘ हुनर ’ ने अपना काव्य निशातीके फूलबनके केवल ६८ वर्ष बादमें याने हिजरी सन ११४४ में लिखा था । इस कारण उसका उल्लेख प्रा. सर्वरीके अनुसार अधिक विश्वासपात्र और स्वीकरणीय है । और यह बिल्कूल ठीक भी हैं ।

श्री. शेख चांद ने फूलबन प्रकाशन (शक १८७७) की प्रस्तावना में इस प्रश्नकी चर्चा की है । प्रा. सर्वरी की विचारधारा और आधारपरंपरा को मानते हुए उन्होंने और एक अंधोरी पाण्डुलिपि का आधार प्रस्तुत किया है जिसमें बीस पर चार ’ के स्थान पर ‘ बिस्त पर चार ’ के शद्ब प्रयुक्त हैं । इस पाण्डुलिपि का शद्ब ‘ बिस्त’ ‘ बीस ’ के जगह् पर प्रयुक्त है और यूं तो प्रक्षेप है । किंतु यह प्रक्षेप भी कुछ लाभदायक और संशयनिवृत्ति करनेवाला है । यह भी संतोषदायी है ।

अंत में हम यह निवेदन करना ठीक समझते हैं कि अब विद्वानों और अनु-संधान कार्यकर्ताओंकों यह निरपवाद रीतिसे ग्रहण कर लेना चाहिए कि फूलबन का लेखनकाल शक १५८७ (हिजरी १०७६) है।

काव्य की पंक्तिसंख्या

फूलबन एक छोटासा कथा काव्य है। स्वयं इब्ने निशाती के उल्लेख (जोड १७४३) के अनुसार इस काव्य की श्लोक या जोडों की संख्या १७४४ है । निशातीं कहता है

गिनतमें आए सो यक बार बैतां ।
हैं सतरा सौ पो दो बीस चार बैतां ।

तमाम तर प्रतियों में यही जोड दिया गया है । महत्त्व के शद्ब ‘सतरा सौ’ और ‘दो बीस चार’ इनमें किसी प्रकारके पाठ भेद नहीं हैं। एक प्रति में यह बैत नहीं दिया गया । दूसरी एक प्रति में जोड–संख्या १९२१ बतलाई गई है। तीसरी एक प्रतिमें, जो प्रा. सर्वरी के कथनके अनुसार बिल्कुल हाल की है, जोडसंख्या १९५० बतलाई गई है । किन्तु वास्तवमें १९१२ संख्या पाई जाती है ।

अभी तक फूलवन दो विद्वानोंने संपादित किया है। एक प्रति प्रा. अब्दु-ल्क़ादर सर्वरी, हैद्राबाद शक १८५९– (हि. १३५७) की और दूसरी शेख चांद,

कराची (शक १८७७-सन १९५५) की। प्रा. सर्वरी की आवृत्तिमें काव्य की सर्गसंख्या ४७ है। इसके विरूद्ध शेख चांद की संपादित आवृत्तीमें सर्गसंख्या ४९ है। फूलबन काव्य में प्रत्येक सर्ग का प्रारंभ एक अलग मात्राके जोड या पंक्तिसे होता है । यही वृत्त या छंद आगे के प्रत्येक सर्गप्रथम जोड के लिए प्रयुक्त है। इस प्रकार हर सर्गका प्रथम जोड एक ही छंद या वृत्तमें होता है । इस सर्गप्रथम जोड का विशेष यह होता है कि उसमें उस सर्गका विषय सारांश रूपसे ग्रथित किया गया है । सब सर्गप्रथम जोड अगर एकत्र लिखे जाएं तो उसका एक कसीदा बन जाता है जिसमें मसनवी का सारांश प्राप्त होता है।

दक्खिनी कवियोंकी इस विशेष शैलीके निर्माता अमीर खुस्रो रहे हैं। मुल्ला नुस्रतीने (मृत्यु शक १५९६--हिजरी १०८५) अपने प्रसिद्ध अलीनामा ग्रंथ में इस शैलीका उपयोग किया है । उसी प्रकार उसके कथा-काव्य गुल्शनें इश्क़ में भी यह शैली प्रयुक्त हुई है । इब्ने निशातीनें भी इसी शैली का उपयोग इस फूलबन काव्यमें किया है ।

प्रा. सर्वरी की प्रतिमें सर्ग-संख्या ४७ और कुल जोड-संख्या १९७७ हैं। लेकिन इस ज़ोड-संख्यामें संपादकने सर्ग-प्रथम जोड को गिना नहीं। वह अलग है । किंतु पहले सर्ग के आरंभमें ऐसा ज़ोड नहीं है। इस तरह प्रा. सर्वरीकी प्रतिमें कुल जोड २०२३ गणित होते हैं । इसके मुक़ाबलेमें श्री शेख चांद की प्रति में सर्ग-प्रथम जोडोंको शामिल करके जोड--संख्या १९७६ है ।

इसी संबंधमें और एक वात उल्लेखनीय हैं। वह "परिशिष्ट फूलबन" की है। फूलबन के इस परिशिष्ट की जानकारी 'उर्दू शहपारे' के लेखक स्वर्गीय डॉ.मुहीयूद्दीन कादरी जोरने दी और उसका महत्त्वभी बतलाया। दक्षिण भारत-आंध्रप्रदेशमें सिधोट संस्थानमें मुहम्मद हैदर इब्ने मुहम्मद जाफर नोमी एक दक्खिनी हिंदी के प्रेमी और कवि थे । वह इब्ने निशाती बडे भक्त और प्रेमी थे । उन्होंने निशाती के अनुसरण में अपना काव्यनाम इब्ने जाफर रख लिया था । सिधोट की जागीरदारनीके बढावेसे इब्ने जाफरने फूलबन के मूल काव्यमें हुमायून और समन्वर के विवाहको तफ़सीलके साथ वर्णन किया है। यही परिशिष्ट फूलबन है। श्री. नसीरूद्दीन हाशमी, हैदराबादके कथनानुसार इस परिशिष्टमें ३४१ जोड हैं । इब्ने जाफ़र विशेष अच्छा कवि नहीं है। उसका यह बढावा मूल काव्य में किसी प्रकार नहीं जच सकता ।

इस परिशिष्टके साथ हि. ११९३ में लिखा गया मूल काव्य इण्डिया ऑफिस ग्रंथालयमें मौजूद है । इस की विशेषता यह कि उसमें इब्ने निशाती के दो चित्र दिए गए हैं । एक चित्रमें निशाती अपनें काव्य का लेखन करता हुआ बतलाया है । और दूसरे चित्रमें वह कुतुबशाही बादशाह अब्दुल्लाकी महफिलमें अपना काव्य सुना रहा है ।

यह स्पष्ट है कि इन ३४१ जोडोंका फूलबनसे कोई संबंध नहीं है ।

प्रो. सर्वरीने नातके सर्गमें १३ जोड (१०१-११३) दिये हैं । उनके स्वयं कथनके अनुसार यह जोड दूसरी विश्वासपात्र पाण्डुलिपियोंमें नहीं पाए जाते और

...२

यह संशयित और त्याज्य हैं । श्री. चांदने भी उनको संशयित और त्याज्य निर्णीत किया है । प्रो. सर्वरीने और १७ जोडोंका किसी अन्य प्रतिमें होने का उल्लेख तो किया । किन्तु उनको त्याज्य ठहराते हुए, अनुल्लेखित रखा ।

संहिता के निर्णय की आवश्यकता

फूलबन एक अतीव सुंदर काव्य--कृति है । भाषाके अलंकार, चंद्रसूर्य, समुद्र चांदनी रात और सुबहशामके सूंदर वर्णनोंके अतिरिक्त, निशाती की प्रसादमय साधा सहज भाषाशैली और केवल खडीबोलीका प्रयोग, यह दो निशाती की विशेषताएं कही जा सकती हैं । उसने फार्सी शद्बोंका प्रयोग काफी किया है । लेकिन उन शद्बोंसे उसकी भाषा की सहजता और सादगी बाधित नहीं होती । उसका यह शैली-स्वभाव यहां तक नज़र आता है कि उसने सहजतासे खडीबोली और फार्सी शद्बोंके यमक और क़ाफ़िए घडे हैं ।

आज का लगभग दो हज़ार जोडोंका फूलबन काव्य देखनेसे मालूम होता है कि निशातीके प्रेमियोनें उसका मूल काव्य तबदील करके रख दिया है । निशातीकी मूल सहजता और खडीबोली जगह जगह पर बाधित और बिगडी हुई दिखाई देती है । निशाती की मूल संहिता को पुनः स्थापित करनेकी आवश्यकता हमेशा सामने आती है ।

संहिता-निश्चितीकरण की दिशा

दक्खिनीके अन्य शेंकडों कथा--काव्यों और काव्योंमें जो बात नहीं पाई जाती वह फूलवनमें मौजुद है । स्वयं इब्ने निशातीने अपनी मसनवीके ज़ोडों की-अबयात की संख्या बतला दी है । हम उपर लिख चुके हैं कि यह जोड-संख्या 'सतरा सौं पर दोबीस चार अथवा सतरा सौ चवालीस है । इससे अनुमानित होता है कि कमसे कम दो-ढाई सौ जोड संशयित हैं और नक्लनवीसों या अन्य साधारण प्रतिके कविलेखकोंने प्रसंगवशात् समाविष्ट किए हैं ।

संहिता और दुरुस्त पाठभेदोंकी दृष्टिसे श्री शेख चांद का संपादन सत्यके अधिक समीप है । उस में भी कई गलत पाठ हैं । संस्कृतोत्पन्न शद्बोंका उच्चार और अर्थ देनेमेंसे श्री चांदने विशेष रूपसे गलतियां की हैं । तथापि, प्रा. सर्वरी की तुलनासे उसका संपादन अधिक विश्वसनीय प्रतीत होता है ।

प्रा. सर्वरी और शेख चांद दोनोंने दुरुस्त संहिताके निर्णयकी आवश्यकता जान ली है । परंतु श्री शेख चांदने प्रा. सर्वरी के त्याज्य ठहराए हुए १३ जोडोंको त्याज्य ठहराने के अतिरिक्त कोई प्रयत्न नहीं किया । प्रा. सर्वरीने इस सबन्धमें कहा है, " इस तरहके इज़ाफे और ग़ालिबन ईसलाहें भी 'फूलबन' में वक्तन फवक्तन होती रही हैं चुनां चि फूलबनके मख्तूतोंकी तफसीलातमें अशआर की तादाद के ईख्तलाफसे यह चीज ब-खूबी वाजे है । .... मुम्किन है कि यह काम भी बादमें किसी ज्यादा मुस्तनद और बा-हिम्मत अहले-क़लम की सईसे अंजाम को पहुंचे ।" इससे बढ़-कर उन्होंने संहिता निश्चित करनेका प्रयत्न नहीं किया ।

फूलबन काव्यकी सत्य और दुरस्त संहिता कायम करनेमें हम चार पांच पहलूसे विचार कर सकते हैं। दो ढाई सौ जोडोंका प्रक्षेप अलग करनेमें चार पांच कारण हमारे सामने आते हैं।

(१) स्वयं कविने यह स्पष्ट कर दिया है कि उसने ग़ज़ल नहीं लिखी। तो भी फूलबन में एक ग़ज़ल समाविष्ट है।

(२) दुवाईया जोड आशीष-वाचक श्लोक एक होनेके अतिरिक्त पांच-सात जोड यहां पर मिलते हैं। यह सिलसिला अभिरुचि के विरुद्ध प्रतीत होता है

(३) संदर्भ की नाजुकी अथवा उचितता को नजर-अंदांज़ करके कई ज़ोड बीच में आ जाते हैं जो उस स्थानपर ठीक नहीं जचते।

(४) कविने कुछ वर्णन किया। किन्तु उस को बढाकर विस्तृत करने की इच्छासे प्रक्षेपकने और जोड बढ़ा दिए।

(५) कई स्थानोंपर कुछ जोडों की भाषा, अन्य जोडोंकी तुलनासे, अधिक फार्सी-प्रचुर बनी हुई नज़र आती है।

(६) कुछ जोड ऐसे दिखाई देते हैं जो ज्यूं के त्यूं फिर दुहराए गए हैं। स्पष्टतया यह पुनरावृत्त हैं। वह संहितासे हट जाते हैं।

(७) कई जोड ऐसे भी मिलते हैं जिनकी मुख्य कल्पना या विचार ऊपर के किसी जोड में आगया है। लेकिन यमक बदलकर और कुछ शद्बोंका हेरफेर करके दूसरा जोड दिया गया है। ऐसा जोड भी अनावश्यक सिद्ध होता है।

स्वयं इब्ने निशातीने कहा है कि उस ने ग़ज़ल नही लिखी। वह कहता है कि यद्यपि ग़ज़ल का मर्तवा बहुत ऊंचा है, तथापि उस का हर वैत-जोड स्वयं एक ग़ज़ल है। अगर कोई श्रेष्ठ श्रेणीका कवि ग़ज़ल नहीं कहता तो उस कारण उसकी महानता में कोई बाधा या न्यून नहीं पैदा होता। इस अपनी धारणाकी सिद्धिमें उसने निज़ामी गंजवी और शाहनामाके रचयिता फिर्दोसी के नाम पेश किए हैं। निज़ामीने सिकंदर-नामा, लैला-मजनून आदि पांच मस्नवियां लिखी, कोई ग़ज़ल नहीं कही। फिर्दोसीने भी एकही शाहनामा ग्रंथ लिखा। कोई ग़ज़ल नही लिखी। लेकिन दोनो महाकवियोंकी श्रेष्ठता वा लोकमान्यता में किसी प्रकारसे बाधा नही पडी। निशातीकी यह धारणा बिल्कुल दुरुस्त और ऐतिहासिक वास्तवतापर आधारित है। अपने खुदके बारे में भी उसने यह मानदंड स्वीकृत कर लिया है। कवि की महानता नापने तोलनेका साधन ग़ज़लख़ाही होने के वावजूद भी, उसने स्वयं ग़ज़ल न लिखनेका उल्लेख किया है।

लेकिन आश्चर्य यह कि इतना आत्मविश्वासपूर्ण उल्लेख उसी काव्यमें करने के पश्चात भी, उसके किसी अंधश्रद्धालु प्रेमीने उसके नामपर एक ग़ज़ल इस काव्यमें प्रविष्ट कर ही दी है।

इसी कारण मैं, पूरी ग़ज़ल और उसके प्रस्तावनारूप एक जोड को संशयित और त्याज्य समझता हूं। यह छह ज़ोड फूलबनसे निकाले जाने चाहिए।

आशीषपर जोड

भारतीय कवियोंकी प्राचीन साहित्य परम्पराके अनुसार दक्खिनी के कवि भी एक आध श्लोक आशीर्वचन के तौरपर लिखते हैं। हर कोई बडा कवि अपना महाकाव्य आशीर्वचसे समाप्त करता है और नाटककार अंत में भरतवाक्य लिख जाता है। महाकवि कालिदासने अपने विलोभनीय छोटेसे काव्य मेघ-दूतमें, यक्ष के ज़बानी उसके संदेशवाहक मेघको यह आशीष प्रयुक्त किया है।

माऽभूदेवं क्षणमपि च ते विद्युता विप्रयोगः। निशातीने अपने बादशाह अब्दुल्ला कुतुबशाह को निम्न प्रकार आशीष प्रविष्ट कर अपना काव्य समाप्त किया है।

अछो शह कों मुबारक फूलबन यो।
नज़रमें जम अछो शहके चमन यो।

इसी काव्यसे ज्ञात होता है कि इब्ने निशाती की ज़माने ने कद्र नहीं की थी। उस समयके बादशाह अब्दुल्ला कुतुबशाहने भी, जो अत्यंत सहिष्णु, उदारधी, काव्यसाहित्यप्रेमी और कविसाहित्यिकोंका बडा दिलदादा था, निशाती की ओर ध्यान नहीं दिया था। बादशाहकी मर्जी या कृपा संपादन करनेके लिए कविने अपना यह काव्य उससे संबंधित किया है। इस विश्वास का उसको फल भी मिला। इस की सविस्तर चर्चा हम अन्यत्र करेंगे। यहां केवल इतना ही अभिप्रेत है कि कविने बादशाहको आशीष प्रविष्ट किया है।

यहां पर निशातीके अंधश्रद्धालु मित्रों और नादान दोस्तोंने उसको नुकसान पहुंचाया है। उपर्युक्त जोड के पश्चात् और सात जोड बढाए गए हैं जो काव्यसमीक्षक. काव्यशरीरकी प्रतियां करनेवाले मुसलमान जाति, वगैरे को भी आशीष प्रदान करते हैं। यह बिल्कुल अनावश्यक और बे-महल है। कुतुबशाही राजा अतीव सहिष्णुवृत्ति, और संस्कृत, तेलगु आदि मुस्लिमेतर साहित्यके प्रेमी और अभ्यासक रहे हैं। यह संभवनीय नहीं लगता कि उन्होंके वायुमंडल पला हुआ कवि केवल मुसलमानोंसे इस प्रकार अपेक्षा करेगा। इसलिए यह अंतिम के सात जोड इस काव्यमें अनावश्यक अतएव संशयित और त्याज्य हैं।

संदर्भ–विसंगति

इस काव्य में संदर्भ और चालू विषय को छोडकर कई स्थानोंपर कई जोड आगए हैं। उदाहरणके तौरपर काव्यके अंतमें धन्यवादके अवसरके दो जोड ‘इलाही दे तूं.,....मुंझको यनज्जुल’ ईश्वरसे कुछ याचना करनेवाले हैं। यह दोनों जोड संदर्भमें बिल्कुल जचते नही। कवि धन्यवाद पेश कर रहा है। धन्यवादका यह सिलसिला उपर्युक्त दो जोडों के बाद आठ जोडो तक चालू है। बीच ही में उक्त दो जोड रसहानिकारक, अतएव त्याज्य हैं।

इसी प्रकारकी विसंगति के कई उदाहरण दिए जा सकते हैं। इस समय उसकी पूरी तफसील में जाना ठीक नहीं है। केवल नमूनों के लिए श्री, शेख चांद की प्रति की सर्ग २४ में की ८८५ से ८८८ पंक्तिया देखी जाए। यह हुमायून और समन्बर के प्रथम परिचयका प्रसंग है। उस पंक्तियोंके पहलेही समन्बरने अपने

मनमें हुमायुनको स्वीकारनेका वर्णन आया है। यह हुमायूनकी हो जाती और वह समन्बर का। इसके पश्चात् किसी नासमझने उक्त चार जोड जोड दिए हैं जो केवल रसभंग करनेवाले हैं। कोईभी रसिक उनको उस स्थान पर रहते हुए पसंद नहीं करेगा।

फारसी प्रचुरता

प्रा. सर्वरीने अपनी विस्तृत प्रस्तावनामें इब्ने निशातीके इस छोटेसे काव्यके काव्यगुण गिनाए हैं। वह फर्माते हैं कि "काव्यदृष्टीसे 'फूलबन' की सबसे विलोभनीय विशेषता उस की शैली की सादगी है। ...... लेकिन इन तमाम बातोंके बावजूद हम उसकी गैर-मामूली सादगी और सादा-बयानीसे प्रभावित हुए बगैर नहीं रह सकते" (पृ. ५०-५१) कोई भी दक्खिनी हिंदी का अभ्यासक प्रा. सर्वरी की उक्त मतप्रणालीसे सहर्ष सहमत हो सकता है। लेकिन काव्य पढते समय कई स्थान ऐसे मिलते हैं जहां हमकों महसूस होता है कि इब्ने निशाती नही बल्कि कोई दूसरा व्यक्ति बोल रहा है। फार्सी शद्बोंके बावजूद, निशाती के शद्ब बोझ नहीं मालूम होते। उस की सादगीमें कोई अंतर नहीं पडता।

अब सर्ग २५ मे के नदीके वर्णन के दो पंक्तिसमूह दिए जाते हैं। प्रथम समूह निशानी की सादा, सहज और प्रसादपूर्ण लेखन शैली का पतीक है। और दूसरे पंक्ति-समूहमें फारसी शद्बोंकी अनावश्यक और अस्थायी विपुलता किसी वाचक को बोझ मालूम हुए बगैर नहीं रहेगी।

निशाती कहता है

अथे घर पर घर इते उस शहरमें दाट 	कि वां जाने न थी बारेकों कैं बाट
अथा नीर उस नदी का दूद ते साफ़ 	मिठाई में करें थो शहद पर लाफ़
न उस खूबी के आने सक बराबर 	गगन पर जा रहचा ख़िज्लत सूं कौसर

उसके पश्चात् इन जोडोंको देखिए

निछल नीर उस नदी का देख जीहूं 	सटचा गीरत सूं दर्यामें अपस कूं
देख उस पानी पो अछे नील सूं ख़त 	दिए थे बंदगी के लिख दौनों खंत
देख उस आबे-रवां को शत बगदाद 	पडचा गीरत सूं जा दर्यामें आझाद
हुबाव अच्छर जो उस अबरार के थे 	मगर दीदे उलुल् अबसार के थे
देख उसमें खूब गुन पैदा व पिनहां 	छुप्या जुलमत मने ज्यूं आबे है वां
अधर पुर-कफ ज़ंजीरी पग में भारी 	अंझू आ़शिक़ नमन आंख्यांते जारी

पहले जोड-समूहसे निशातींकी सादगी टपकती है। फार्सी के कुछ शद्ब बोझ नहीं लगाते। दूसरे जोडसमूहमे पानीकी सफाईकी पुनरुक्ति होने के बावजूद, न अर्थ सुस्पष्ट हे, न शद्बोंकी सादगी कायम रही है। अनोखें और बडे बडे फार्सी शद्बोंके बोझ के नोचे वाचक दब जाता है। यह जोड निशाती के नहीं हो सकते। इस लिए त्याज्य हैं।

कविने कुछ वर्णन किया। किन्तु प्रक्षेपकोंने उस वर्णनको बढा कर और विस्तृत किया। निशाती की भाषाका ध्यान रखे तो यह प्रक्षेप ध्यानमें आ जाते है।

इस का उदाहरण सर्ग १६ में सौदागर के कार्यक्षेत्रमें मिलता है । कविने कुछ देशों और स्थानों का निर्देश किया । पर प्रक्षेपकोंने उसको और भी विस्तृत कर दिया (देखिए श्री· चांदकी प्रति–ज़ोड ५४६ से ५५२) । यह ज़ोड अज्ञात स्थानों और भाषा के कारण प्रक्षिप्त करार पाते है ।

यह भी देखनेमें आया है कि कुछ ज़ोड दुहराए गए हैं । संदर्भ–भंग करते हुए भी पहले का जोड बादमें भी लिखा गया है । देखिए पुनरुक्तिके जोड १५५ और १७७, १३८१ और १४२५, १५५२ और १५८५, १७१५ और १७१८ (श्री. चांद की पुस्तक)

ऊपर लिखे गए मानदंण्डोंको सामने रखकर, फूलबन काव्य को देख गया, और ज़ोडोंकी संख्या स्वयं कवि के उल्लेख के अनुसार, १७४४ रख दी गई है । कुछ अवसरपर मेरी राय या निर्णय हर किसी रसिकको सम्मत होगा ऐसी मेरी धारणा नहीं है । इसमें स्वतंत्र बिचारके लिए अथवा अन्य निर्णयके स्वीकारके लिए स्थान हो सकता है । किन्तु फूलबन की संहिताका निश्चितीकरण आवश्यक है । इस मुश्किल कार्य की ओर प्रा, सर्वरीने अपनी प्रस्तावना के पृ. ११९ पर इशारा किया है । यह काम बहुत ही मुश्किल और पेचीदा होनें की जानकारी रखते हुए भी, मैं इस क्षेत्रमें पड चुका हूं । कुछ स्थानोंपर मेरे निर्णय में ग़लती हो सकतीं है । इसमें रसिक और अनुसंघान कार्यकर्ता इस कठीण कार्य को आगे बढा सकते हैं । यह पहला प्रयत्न है ।

काव्य का कथानक

फूलबन काव्य एक कहानी है । उसमें केवल एकही कहानी नहीं किंतु पांच छह छोटी छोटी कहानियां हैं । एक कहानीसे दूसरी कहानी उसके भाग के तौर-पर निकलती है । वस्तुतः फूलबन एक कथा नहीं है जैसा कि कार्सा द तासी समझता था । वास्तवमें यह प्राचीन पौर्वात्य आख्यान पद्धति की कथा है । इसमें एक प्रमुख कथामें दूसरी कथाएं गौणरूपमें अनुस्यूत की गई हैं । इसके उदाहरण हितोपदेश, पञ्चतंत्र अथवा बाणभट्टकी कादम्बरीमें मिलते हैं । उसी प्रकार ‘ अलिफ लैला’ और बागोबहार की कथाए भी इसीके नमूने हैं । आख्यान उपाख्यान की प्राचीन परंपरा का इब्ने निशातीने इस काव्यकथानकमें अवलम्ब किया है ।

फूलबनकी कथा कंचनपटनके बादशाहसे प्रारंभ होती है । उस बादशहाने स्वप्नमें एक ज़ोगींको देखा । यह ज़ोगी प्राचीन ऋषि या गोस्वामी का प्रतिनिधि है । उसका शरीर गो दुवला पतला था, लेकिन उसके चिहरेपर आत्मिक तेज था । इस ज़ोगीसे कविने केवल कहानी कहनेवाले का काम लिया है । वह इस काव्य की भिन्न भिन्न कथाएं कहता है । मेरा बाप खुरासानके राजा का प्रधान था । वह बडा बुद्धिमान् था । उसने एक कथा मुझे सुनाई थी कि कश्मीर का एक राजा था । वह बहुतही न्यायी था । उसकी आज्ञा न केवल मनुष्यमात्रपर थी वल्कि उसके उद्यानके फल फूल लताए भी उस कीं आज्ञा पालन करती थीं । आज्ञापालन होनेका बहुत सुंदर और काव्यमय वर्णन निशातीने किया है । एक रोज़

बादशाह को दरबारमें एक मालीने एक फूल दिया। राजा बहुत खुश हुआ और उसको वह झाड अपने उद्यानमें लगानेकी आज्ञा दी। मालीने भगीरथ प्रयत्न-कर वह पौधा प्राप्त किया और बागमें लगाया। उस झाडका फूल माली का राजा को रोज़ाना दिया करता था। एक दिन फूल मुरझाया हुआ नज़र आया तो राजाने मालीसे उसका कारण पूछा। मालीने उत्तर दिया कि फूल की एक बुलबुलसे मित्रता और प्रेम है। चूंकि बुलबुल कभी कभी रोता है इस लिए फूल कुम-लाया हुआ है। बादशाहने फांदा डालकर बुलबुलको पकडनेकी आज्ञा दी। वह पकडा गया। एक तंग पिंजरेमें बुलबुल बंद हुआ। रो रो कर बुलबुलने बहुत शोक किया। बादशाहने उसका कारण पूछा तो बुलबुलने सब कहानी कह दी।

बुलबुलने कहाकि उसका बाप खुतन का बडा सौदागर था। वह खुश्की और समुद्रपर व्यापार किया करता। दैववशात् एक बार वह व्यापारके लिए गुज-रात गया। बापके साथ बेटा भी प्रवासमें साथमे था। उस समय बेटेकी युवावस्था थी। वह जहां रहता था वहींपर समीप ही एक संयमी भक्त रहता था। उसको एक नौजवान कन्या थी। वह उस युवतीपर आकृष्ट हुआ। कविनें उस सुंदरीका बहुत काव्यमय और अलंकारपूर्ण वर्णन किया है। दोनोंका प्रेम बढता गया। बात लोकेसें फैल गयी। प्रवाद की नदियां बहने लगीं। बात भक्तके कानों तक पहुंची। उसने बददुआ दी। ईश्वरने उस शापको सच ठहराया। मैं और उसकी बेटी बुल-बुल और फूल में रूपांतरित हुएं। यह कह बुलबुलने राजासे बिनती की अब मेरा दैव और तेरी कृपा है।

राजाको यह सुनकर विचार सूझा कि उसके पास एक अंगोठी है। उसको अगर ऐसे रूपांतरित प्राणिपर फिराए तो वह अपने मूल शरीरावस्थाको प्राप्त करता है। राजाने दोनोंपर अंगोठी फिराई तो क्षणमात्रमें वह दोनों युवायुवतीके रूपमें सामने खडे हुए। राजाने दोनोंका सम्मान किया और अपने पास रख लिया।

वह युवक बादशाहको कहानी सुनाया करता। उसने राजाको एक कहानी सुनाई कि प्राचीन कालमें कोई राजा था। वह बडा शूर और वैभव संपन्न था। एक दिन उसको वार्ता मिली कि चीन का एक सुप्रसिद्ध चित्रकार चित्रोंके साथ आया है। चीन का नाम सुनते ही राजाको स्मरण हुआ कि उसनें चीनको जीतनेके लिए भेजा हुआ उसका सेनापति अभीतक वापिस नहीं लौटा। न जाने उधर ही देश काबीज कर, राजा बन बैठा हो। राजाके चतुर प्रधानने उसको एक कहानी सुनाई।

एक अत्यंत चतुर और बुद्धिमान राजा था। उसका जोगियोंसे बडा लगाव था। देशदेशके जोगी उसके पास जमा होते थे। एक जोगीनें राजाको आत्माके शरीरान्तर करनेकी विद्या सिखाई। इस विद्यासे कोई मनुष्य दूसरी योनिके प्राणीमें आपनी आत्माको डाल सकता था। और किसी समय पूर्वशरीरमें भी आ सकता था। राजाने यह विद्या अपने एक पराक्रमी प्रधानको सिखाई। एक रोज राजा शिकारसे वापिस हो रहा था। लष्कर बिछड गया था। साथ केवल वह प्रधान था। राजानें एक मृत हिरन देखा। दिलमें आया कि अपनी आत्मा उसमें डाल दूं। वैसा ही किया। राजा हिरन बन गया। प्रधानने उस विद्या की युक्तिसे अपनी

आत्मा राजाके मृत शरीरमें डाल दी। और अपनें शरीर के तलवारसे टुकडे टुकडे कर फेंक दिए। वह राज्यका स्वामी बन बैठा। उस राजाकी रानी सतवंती नामकी थी। प्रधानके मनमें पाप खडा हुआ। वह रानीको अपनी करना चाहता था। लेकिन सतवंती को संशय होकर वह प्रधानको टालती रही।

सच्चा राजा जब लौटने आया तो अपनें शरीर की जगह उस को ख़ाली दिखाई दी। राजा सब जान गया। एक मरे हुए तोतेके शरीरमें प्रवेश कर राजा सतवंतीके महलमें पहुंचा। तोतेको मालूम हुआ कि सतवंती पहले राजा पर प्रेम करती है। और उसके प्रति निष्ठावान है। तोतेने सारी कहानी सतवंतीको सुनाई। सतवंतीको राजानें मश्वरा दिया कि जब प्रधान आएगा तो उसके सामनें एक मृत कुमरी रख दे और अपनी जान उसमें डालनेंके लिए कह दे। जूंही प्रधाननें कुमरी के शरीर में अपनी आत्मा डाल दी तो राजानें अपना मूल शरीर ग्रहण कर कर लिया। वह आनंदसे फिरसे राज्य चलाने लगा। एक चतुरने कहा कि ठीक हुआ। उस मूढनें एक स्त्रीमूढ राजाके समान, अपना राज्य खोया था। राजाने उत्सुकतासे पूछा कि वह कौन ऐसा मूढ था कि जिसने स्त्रीके कारण अपना राज्य खोया।

प्रधानने कहानी सुनाई कि प्राचीन कालमें ईरानका एक बादशाह था। उस की एक स्वरूपसुंदर बेटी थी। उस का नाम समन्बर था। ईजिप्तका हुमायून नामी राजपुत्र राजकन्याका अपूर्व लावण्य सुनकर दीवाना बन, मां-बाप छोड, समन्बर की खोजमें रवाना हुआ। शहरको पहुंच कर देखता है कि सारा नगर समन्बरके प्रेमियोंसें गुलजार बना हुआ है। हुमायून उसके दृष्टीक्षेप की अभिलाषामें चूर रोते रोते दिन काटता रहा। एक दिन उसका दैव खुला। समन्बर की नजर उस पर पडी। दोनोंने एक दूसरेको देखा। आकर्षित हुए। उत्तरोत्तर आकर्षण बढ गया। मुलाकातें शुरू हुई। लोकप्रवादसे बचनेके लिए दोनों वहांसे भाग, एक नगर सिंधमें, जो अस्ल गंगाके किनारे था, एक प्रासाद 'बैतुलआशिकैन' में जा ठहरे। हुमायून चाहता था कि उनके प्रेमका गूढ किसीको मालूम न हो लेकिन एक मालनने यह सारा माजरा वहांके राजाको सुनाया। राजा की पापी दृष्टि समन्बर पर थी। वह किसी बहाने से हुमायुनको अपने रास्तेसे हटाना चाहता था। तय हुआ कि उसको भोजन समारंभमें निमंत्रित कर, उसको नदीमें डूबा दिया जाए हुमायून खेलमें बाजी हार गया। अवस्न होकर वह नदीमें कूद पडा और एक महामत्स्यके पेटमें गडप हो गया।

अब वह दुष्ट राजा समन्बरके पीछे पडा। किसी तरह वह उसको अपनी बनाना चाहता था। इधर इजिप्तके राजाको अपना बेटा धोकेसे मारा जानेंकी ख़बर पहुंची। वह एक बडी सेना लेकर हिंदके उस राजापर हमला करने के लिए आया। घुमसानका युद्ध हुआ। हिंदका राजा परास्त हुआ। परास्त राजाने सजा पानेके पहले यह बिनती की कि मेरे पास एक मछली है। उसकी यह रहस्यमय विशेषता है कि वह समुद्रसे कोई खबर लिखा लाती है। मछलीनें खबर लाई कि हुमायून जीवित है।

समन्बर अपने प्रेमी की खोजमें निकल चुकी थी। वह मलिकआरा नामी परी से मिलती है। मलिक आरा जीवित हुमायून को और समन्बर को मिला देती है। दोनों के मांबाप खुश हो जाते हैं। हुमायून राजा बन राज करता है। यहां पर कथानक पूरा हो जाता है।

ऊपर के सार मे मालूम होगा कि फूलबन के कथानक में तीन लंबी कहानियों के साथ तीन छोटी कहानियां हैं। छोटी कथाएं प्रवेशद्वार का काम कर, बडी कथाओंकी प्रस्तावनारूप हैं। संयमी भक्त और कंचनपटन का राजा फूलबन के मुख्य पात्र नहीं हैं। किन्तु इस कथानक में (१) खतन के व्यापारी का बेटा और गुजरात के भक्त की बेटी, (२) जोगीभक्त राजा का धोखाबाज प्रधान और उस राजा की पत्नी सतवंती, और (३) समन्बर, हुमायून सिंध का अदूरदर्शी राजा और मक्कार प्रधान यह पात्र विशेष महत्त्वपूर्ण हैं।

फूलबन काव्य के संबंध में यह बात विशेष है कि इस के पात्रों के बजाय काव्य की काव्यात्मकता भाषासौष्ठव, उसके अलंकार, प्रसादमय और ओघवती शैली विशेष लक्षणीय हैं।

फूलबन : एक कलाकृति

साहित्यिक दृष्टि से इस काव्य की सबसे बडी खूबी उस की सादा, प्रसादयुक्त शैली है। यह सही है कि इब्ने निशाती के ज़माने तक कविता की परिभाषा अथवा शब्दशास्त्र ठीक तौर पर नहीं बना हुवा था। प्रत्येक कवि दैनंदिन लोकजीवनकी भाषा को ही अपनी साहित्यिक वाणी के लिए प्रयुक्त करता था। कुछ प्राचीन काव्यसंकेत उसके प्रयोगके लिए मिलते थे। लेकिन बहुत कम। कवि अपने अनुभव और कल्पनाशक्तिसेही अधिक काम लेता था। कवि की प्रसादयुक्त सहज शैली हर जगह दृष्टीगोचर होती है। उसकी यह विशेषता उसके समसामयिक कवियोंकी तुलनासे विशेष उल्लेखनीय और आकर्षक दिखाई देती है।

निशाती की दूसरी विशेषता उसके क्षुद्र चीजोंके तफसीलवर्तन में है। वह एक मामूली बातकी ऐसी ऐसी तपसील देता है कि पाठकोंके सामने एक हू-बहू चित्र सामने आ जाता है। जब मलिकआरा पत्र लिखती है तो तफसील देखिए। मुनशीको बुलाया गया। देखिए, वह किस प्रकार आकर बैठा। उस की क़लम कैसी सुंदर है। कागज कितना आकर्षक, चित्रविचित्र चित्रकारीसे सुशोभित। सियाही का वर्णन भी देखिए और अंत में विषय कितना सादा, कि केवल पत्र लिखना था। निशाती की वाणी अत्यंत दर्दभरी, अत एव पाठकोंपर परिणाम करनेवाली है। कहानीका कोई भाग देखिए, उसके पात्र पाठकोंपर परिणाम किए बगैर नहीं रहते।

स्वयं निशातीके कथनके अनुसार, यह फूलबन बिसातीन नामी फारसी मसनवीका भाषांतर है। परन्तु इस काव्यके देखनेसे पता चलता है कि यह केवल भाषांतर तो रहा बाजू को, अनुवाद भी नहीं है। यह निशातीकी स्वतंत्र साहित्यसृष्टी है। यहां पर उसकी कल्पनाशक्तिका स्वैर सञ्चार है। विद्वानोंका यह दावा है कि

यह मूल काव्यसे अधिक सुंदर औंर रसपूर्ण है। (प्रा. सर्वरी पृ. ५६) उदाहरण-केलिए काव्य का दुसरा मुनाजात का सर्ग देखिए। यह पूरा सर्ग निशाती की स्वतंत्र कृति है। इमाम हुसेन की स्तुतीपर लिखा हुआ चौथा सर्ग भी केवल स्वतंत्र और आत्मप्रेरणापर आधारित है। कथानक के दूसरे भाग भी कविके ही सजे सिंगारे हुए है। उस में अनुवाद का कोई रंगरूप नही।

फूलबन काव्य दक्खिनी-प्रेमीयोंमें बहुत लोकप्रिय रहा। आजतक उसने रसिकों को रिझाया है। फूलबनकी अनुकरण में कई मस्नवियां भी लिखी गई। ऐसी दो मस्नवियोंका उल्लेख मिल जाता है। हैद्राबादके एक कवि सय्यद मुहम्मद हुनर ने एक कथाकाव्य 'नेहदर्पन' फूलबनके जवाब में लिखा। स्वर्गीय डॉ. अब्दुल्हक़ के अनुसार यह काव्य काफी ऊंचे दर्जेका है और उसका दर्जा फूलबनसे किसी प्रकार कम नही। (कदीम उर्दू १९६१. पृ. १९१) हुनरने नेहदर्पन हिजरी ११४४- (शक १६५३) में लिखा।

इसके पश्चात हैद्राबादही के एक कवि सय्यद मुहम्मदवालाने फूलबन के अनुकरणमें एक कथाकाव्य हिजरी ११५० (शक १६५९) में लिखा। उसने भी इब्ने-निशातीसे श्रेष्ठ होने दावा किया है। पर यह एक भद्दासा काव्य है और निशातीका इस संबंधमे नामोच्चार करना भी व्यर्थ है।

काव्यालंकार

निशातीका यह काव्य अलंकारोंका एक अतीव सुंदर और मनोहारी भांडार है। स्वयं कवि अपनी इस विशेषतापर बजा तौर पर गर्व करता है। उसके आत्म-विश्वासपूर्ण उद्गार है-

ज़ु कोई सनअ़त समजता है सो ग्यानी वही समजे मेरी यो नुकता-दानी
वही समजे समज है जिस को कुछ बात ज़ु मैं बांध्या हूं यो सनअ़त सू अबयात
हुनर कोई नें देख्या सो मैं दिखाया सनाए एक-कम चालीस ल्याया
हर यक मिसरा उपर हो कर ब-जिद खूब रख्या हूं क़ाफिया ल्या मुस्तनद खूब
दिखाया मैं हुनर कर सबको ह़लका सनअत करता हूं शस्तो-शश महल का

सर्ग ४९, जोड १६९६-१७००

निशाती का यह दावा बिल्कुल दुरुस्त है कि जो अलंकारशास्त्रके ज्ञाता होंगे वही उसकी इन सूक्ष्मबातोंको समझेंगे और उसका रसग्रहण करेंगे। कवि का यह दावा कि आज तक किसीने जो कला नहीं आविष्कृत की है वह उस को प्रथमबार पेश कर रहा है, केवल अलंकारोंकी हद तक सत्य है। अन्य कवियों में, जैसा कि नुस्रती आदिमें अलंकारोंका दर्शन होता है। अलंकार पेश करनेका ढंग वहां कुछ अलग हैं। मगर यहां मनोहारिता कुछ और है।

निशातीने कहा हैं कि उसने इस काव्यमें उनचालीस अलंकार फूलबन की सरस्वतीको पहनाए हैं। और वह अलग अलग ६६ अवसरोंपर। यह दोनो संख्याएं स्थूल मालूम होती हैं। अगर अलंकार दृष्टीसे पूरे काव्यका आलोचन किया जाए तो

३९ से अधिक अलंकारस्थान दिखाई दडते है। विशेष अलंकार निम्नप्रकार हैं।
(अंक पंक्तियों के)

उपमा अलंकार– २४२–३, ३३१, ३८८, ३९५, १२०४.
रूपक– २३२, २५१, २६०, २६६, ३२५, ३६९–७०, ६७३, ९२४, १०६३, ११४२, १४०३, १४८९, १४९२–४, १५०५, १५६८.
दृष्टांत– ३०९–१४, ९४१–४३, ९६०–६१, ९७१, १०३४, १०४२–४५, १०७५–७६, ११६५–६८, ११४३–४, ८५६–६०, ११७९, ११८१, ११९६–९८, १२०२–३, १२१३–१४, १२१५–१६, १३४४, १३४७, १४३५–८, १४७३–४, १५३४–५, १६३६–४४, १६७३.
अनुप्रास– १३१३, १४०९
उत्प्रेक्षा– ३५०, ३८६.
भ्रांतिमान– ३३३ से ३३५
स्वभावोक्ति– ९३४–५, ११७४–७६.
सार– ८२३–५
परिसंख्या– १३७–४१, १४८, २३४.
अतिशयोक्ति– १४७, ८४०, ८४२–३, ८४५, ८७७, २२१–३०.
व्यतिरेक– ५०६–२२, ८३२–५, ८३७, ८४८–९ ८५३, ८५५.
चेतनगुणोक्ति– ९५०–६१, ९६३–५, २४९–५०, २५२–३, ३६०–५
विरोधाभास– १०३२, ११४२.
श्लेष– १३७, १३८, १४०, १४१; १४८ .

इन अलंकारोमें विशेष आकर्षणीय और हृद्य सार, व्यतिरेक चेतनगुणोक्ति और परिसंख्या अलंकार हैं। विशेषतर खूबी यह कि परिसंख्या अलंकारको देखनेसे संस्कृतके महाकवि बाणभट्ट की कादम्बरी की स्मृति ताजा होती है। बाणभट्टका निम्न अलंकार याद आता है।

यत्र च मलिनता हविर्धूमेषु न चरितेषु, मुखरागः शुकेषु न कोपेषु, चञ्चलता कदलीदलेषु न मनःसु, चक्षूरागः कोकिलेषु न परकलत्रेषु,.....रामानुरागो रामायणेन न यौवनेन, मुखभङ्गविकारो जरया न धनाभिमानेन। (कादम्बरी-निर्णयसागर–पृष्ठ८९)

निशातीका शैलीविशेष

इस बात का उल्लेख ऊपर किया गया है कि, मुल्ला नुस्रतीके समान, इब्ने निशातीनेभी उस विशेष ढंग का प्रयोग इस काव्यमें किया है कि फूलवनके प्रत्येक सर्ग के प्रथम जोड एकत्र लिखे जाए तो वह कसीदा बन जाता है। इसमें पूरे काव्य का सारांश आ जाता है। चूंकि इस काव्यके ४९ सर्ग है, इस लिए यह ४९ जोडोंका कसीदा बनता है। कई स्थानोंपर वर्णन प्रारंभ करते हुए कविने कुछ अपनी राय जाहिर की हैं जिससे कवि का आत्मविश्वास प्रगट होता है। देखिए जोड २०८, ३७२, ६२२, ६५७, ८१५, १२४१ और १३८४। यह बीचबीचमें कवि का मतप्रगटन जिस से कवि के व्यक्तिमत्व का कुछ दर्शन होता है।

कथानककी घटनाओंका परिणाम वृद्धिगत करनेके लिए निसर्गका सुंदर उपयोग, निशाती स्थान स्थान पर करता–हुआ दिखाई देता है । सर्ग २५ में समन्वर और हुमायूनकी मुलाकात का वर्णन देखिए । यह वर्णन (जोड ९५१ से ९६६) विशेष हृद्य बना हुआ है । महाकवि कालिदास जैसे शैलीशाली कवियों की यहां पर याद ताजा होती है और प्रतीत होता है कि निशाती भी महाकवि कहलाए जाने के योग्य है । इसीप्रकारके वर्णन (देखिए जोड ३७४ से ३८५, १४३१ से १४३७ और १६३२ से १६३५.) अन्यत्र भी मिलते हैं ।

उसकी भाषा

इब्ने निशाती अपनी इस भाषा को 'दकन की बात' कहता है । उसके पूर्व अढाई सौ सालसे चलती आई परम्पराके अनुसार, निशाती अपनी भाषा को दक्खिनी ही कहता है न कि उर्दू या कोई अन्य भाषा (देखिए जोड १८५) । वह यह परम्परा भी कह देता है कि इसी भाषामें एक व्यक्ति अपने दोस्तसे अपने भावोंका आविष्करण करता है । इसी भाषामें प्रेमका बाजार गरम होता था । इस परम्परा की पुष्टी उस समय लिखे गए अन्य फार्सी में लिखे गए इतिहासग्रन्थोंसे भी होती है । यह कहा जा सकता है कि खडी बोली की बुनयाद पर खडी की गई दक्खिनी की इमारत तीन साडेतीन शताब्दियों पूर्व राष्ट्रभाषाकाही काम कर रही थी । वस्तुतः उस समय ही हिंदी भारतकी राष्ट्रभाषा बनी हुई थी । उसका रिवाज जहां जहां मुसलमानोंकी हुकूमत पहूंची, वहां पर कायम हो गया था ।

निशातीके पूर्वके साहित्यिकोंकी तुलनासे फूलबनमें फार्सी शद्बोंकी प्रचुरता है । निशातीके कुछ ३०–४० साल पूर्व गुजरे हुए मुल्ला वजही में फार्सी शद्बोंकी संख्या कुछ कम है । नुस्रतीमेंभी फार्सी शद्ब ज्यादा ही हैं । हम अन्य स्थान पर (देखिए राष्ट्रवाणी मासिक, पूना जून १९६३) बतला चुके है कि दक्खिनी हिंदी पर मराठी भाषा का काफी प्रभाव था । मुल्ला वजही में मराठी भाषा का प्रभाव अधिकतम है । मुल्ला नुस्रतीने भी मराठी शद्ब, कहावतें, वाग्प्रचार आदि प्रचुरतया प्रयुक्त किए हैं । इब्ने निशातीने भी मराठी शद्बोंका उपयोग काफी किया है । किन्तु उक्त दो कवियोसें कुछ कम ।

भारतीयता

आज की उर्दू शायरीपर यह आक्षेप किया जाता है कि उसका वायुमंडल भारतीय नही हैं, उस की आत्मा भारतीय नहीं है । फूलबन या दक्खिनी की किसी कलाकृति पर ऐसा आरोप करना कठिन है । फूलबनका वायुमंडल अधिकांश में भारतीय है । यह बात नहीं है कि उसमें ईरान, अरब के संदर्भ या अरबी, फ़ार्सी के काव्यसंकेत नहीं पाए जाते । यूं तो अरबी, फ़ार्सीके संदर्भ अनेक हैं । लैलामजनून शीरीन फ़र्हाद, यूसुफ जुलेखा आदि प्रेमियोंके संदर्भ हमेशा नज़र आते हैं । परन्तु इस के साथही भारतीय संदर्भ, भारतीय साहित्यिक कवि संकेत भी प्रचुरतासे प्रयुक्त किए गए हैं ।

इब्ने निशाती की नायिका भारतीय है। देखिए

थी रानी शाह कों यक सतवंती नावूं
चंदरसूरज ने देखे कधी छांवूं
यह उस नायिका का पता है। उसका
शील भी भारतीय है।

सदा शाकिर थी उसकी गत पो बीब्यां सत्वां खात्यांथ्यां तिस के सत पो बीब्यां
वो सत की सतवंती अवतार नारी सत्यां का मान सत सूं रखनहारी

सतवंती रानी की चालपर, उसके शीलपर पतिव्रता नारियां धन्यता मानती थीं। वह सतीत्व का अवतार थी। अपने सतीत्वसे सतीयोंका मान रखती थी। यह फूलबन का बर्णन देखकर यह सन्देह होता है कि क्या निशातीनें कालिदास का यह श्लोक

तस्याः खुरन्यासपवित्रपांसुं। अपांसुलानां धुरि कीर्तनीया।।

(श्लोक २, द्वितीयः सर्गः –रघूवंशम्)

सामने रखकर तो उपयुक्त पंक्तियां नहीं लिखी। इतनी भारतीयता निशाती में दिख पडती है।

तमाम भारतीय भाषा और संस्कृतमें कुछ काव्यसंकेत हैं। निशाती उन संकेतोंसे अछी तरह परिचित था। फूलबनकी एक नायिका अपना एकपतीत्व किस भान्ति निश्चयपूर्वक वर्णन करती है।

नईं हूं वो कंवल जो उस सुरज बाज शिगुफ़्ता होवूं फिर कर चांद सूं आज
वो चातक म्हेवूं पिवूं बरसात की कर हर यक पानी सूं लब अपना करूं तर

इस से पता चलता है कि निशाती सूर्यविकासी पुंडरीक कमलसे परिचित था कि यह कमल केवल सूर्यदर्शन पर ही प्रफुल्लित होता है, न कि चंद्रदर्शन से। उसी तरह निशाती अछी तरह जानता है कि चातक केवल वर्षा का जल ही प्राशन करता है। और कभी दुसरा पानी पीता नहीं। भारतीय कवितामें सुपरिचित यह संकेत एकनिष्ठताके द्योतक है। निशातीने उनका उपयोग अपनी नायिका का पतिप्रेम सुस्थिर बतलाने के लिए सुचारू रीतींसे किया है।

जब आपत्प्रसंग आता है और निशाती की नायिका अपने प्रेमी की खोज में निकलती है तो उस का रंगढंग भी पूरी तरह भारतीय नज़र आता है।

भिबूती लें अपस मूं को लगाई पुनम का चांद बादल में छुपाई
बिरह के दर्द दुःख सूं पदमिनीवो चली बनवास ले बैरागनी वो

जब वह अपने पतीके शोधमें निकलती है तो उसका भालप्रदेश विभूतिसे मलिन है। गोया उसका मुखचंद्र मेघाच्छादित हुआ। विहरके दर्द और दुःखसे वह पद्मिनी गोया बैरागन बनकर बनवास को निकली।

भारतीयता का यह प्रभाव पूरे काव्य में नज़र आता है। फार्सी शद्बों और फार्सी संकेतों के प्रयीग के बावजूद भी पाठक इस भारतीय वायुमंडलमें ही रहता सहता है।

कुछ और पहलू

फूलबनमें भारतीय वायुमण्डलके निर्माणप्रयासमें कविने और एक दो प्रकारसे भी कदम उठाया है। इस काव्यका कथानक केवल कविनिर्मित और निजंधरी है। इसमें कविने प्राचीन संस्कृत, प्राकृत और अपभ्रंश कवियोंकी परम्पराका बहुतकुछ पालन किया हैं। राजा को स्वप्नमें तपोधन दर्वेशका दर्शन, बुलबुलका कथावर्णन में और कथानकके एक पात्रके नाते उपयोग, जाहिद के शापसे प्रिय प्रेयसीका फूल और बुलबुल बन जाना, जादुभरी अंगूठीका मंत्रसामर्थ्य, योन्यन्तर और परकाय–प्रवेशकी विद्या, मृत कुमरीमें मनुष्यकी प्राण डालना इत्यादि अनेक भारतीय परम्परा और साहित्यिक प्रथाओंका प्रयोग कविने इस छोटे काव्यमें किया है।

यह तमाम कथानकसूत्र भारतीय प्राचीन परम्पराके अनुसार है। डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदीने इन भारतीय कथानक रूढियोंका विश्लेषण अपने छोटेसे ग्रन्थ हिंदी साहित्यका आदिकाल (१९६१) के चतुर्थ व्याख्यानमें किया है। भारतीय साहित्यकी कथानक रूढियोंके सम्बन्धमें ब्लूमफील्ड, पेंजर, नार्मन ब्राउन आदि युरोपीयन विद्वानोंके अनुसन्धानपर एक परिश्रमोंका उन्होंने उल्लेख किया है। साधारणतः इन पंडितोंने निजन्धरी कहानियोंके अभिप्रायोंके विषयमें काम किया है। श्री द्विवेदीने ऐसी २१ प्रकारकी कथानक रूढियां गिनाई हैं (पृष्ठ ८०)। उनमें कहानी कहनेवाला शुक, स्वप्नमें प्रियका दर्शन पाकर आसक्त होना, किसी मुनिका शाप, रूपपरिवर्तन, लिंगपरिवर्तन, परकायप्रवेश, परिचारिका का राजासे प्रेम और अन्तमें उसका राज्यकन्या और रानीकी बहनके रूपमें अभिज्ञान, हंस, कपोत आदिसे सन्देश भेजना, किसी उद्यानस्थित तडागमें राजस्त्रियोंका नग्नावस्थामें स्नानविधि, काव्यनायकका वहां पहूंचना और नारियोंके कपडे ले कर समीपवर्ती वृक्षराजिमें छिपकर बैठ जाना आदि कथापरम्पराओंका उल्लेख किया है।

प्रस्तुत फूलबन काव्यमें भी कवि इब्ने निशाती इस प्राचीन परम्परासे प्रभावित है। राजाको स्वप्नमें एक तपोधन ऋषि (दर्वेश) का दर्शन हुआ और राजाका शेष आयुष्य प्रभावित हुआ (पंक्ति ३०१)। बुलबुलको मनुजवाणी प्राप्त हुई और वह बोलने लगा (पं. ४५०, ५२०) विरहव्यथित प्रेयसीने वायुको अपना दूत बनाना चाहा (पं. ५०३) राजाके कोशागारमें एक जादूभरी अंगूठी थी जिस के प्रभावसे किसी प्राणी का भी योन्यन्तर किया जा सकता था (पं. ६५०, ७००)। विद्याके प्रभावसे राजा हिरन बन गया (पं. ७७०)। फिर राजा परकायप्रवेश कर शुक बन जाता है (पं. ८२१)। अन्तमें कविने अपने कथानकको मिलनान्त बनाने के लिए, मुई कमरीमें खलनायककी प्राण, परकायप्रवेश की विद्याके प्रभावसे डाल दी और राजाने अपनी पूर्वकाया प्राप्त कर ली (पं. ८६८–७०)। राजाके मत्स्यालयमे एक जादूवाली मछली थी जो अज्ञातकी खबर लाती थी (पं. १५३८)।

इससे साफ प्रतीत होता है कि कविने भारतीय साहित्य परम्परासे पूर्णतया प्रभावित हो कर अपने कथानककी रचना की है। उसने कई स्थानोंपर फारसी साहित्यके वृक्ष, फूल, पक्षी और अन्य संकेतोंका प्रयोग काव्यमें किया है। इसके बावजूद इस काव्यपर भारतीय परम्पराकाही अधिकतर प्रभाव दिखाई देता है।

एक कथामेंसे दूसरी कथाकी निर्मिती करना कवि अपनी श्रेष्ठताका प्रतीक मानता है ।

जे कोई धरता है बातां का फरासत कता है यों हिकायतमें हिकायत (पं. ६५२) यह भी प्राचीन परम्परा है । छटी शकशताब्दिमे महाकवि बाणभट्टनें अपनें जग प्रसिद्ध उपन्यास कादम्बरीमें इस तंत्र का प्रयोग किया था । इसके पूर्वभी पंचतंत्र में जो बाणभट्टके पूर्वकी रचना है, इसका सुचारु प्रयोग मिलता है । विष्णुशर्माके समयसे यह प्रथा भारतीय साहित्यमे आजतक बद्धमूल और प्रयोगान्वित है । हिंदी साहित्यमें पलनेवाले इब्ने निशाती के लिए भी इस परम्पराका स्वीकार करना सहज था ।

भाषा का स्वरूप

निशातीकी भाषाके संबंधमें यह याद रहे वह आन्ध्रप्रदेशास्थित गोलकोंडा का निवासी था । इसके बावजूद भी मुल्ला वजही और मुल्ला नुस्रती जैसे सम-सामयिकों के समान उसकी भाषामें मराठी शब्दोंका पर्याप्त प्रमाण मिल जाता है । यह भी याद रहे कि वह किसी बादशाही दरबारसे संबद्ध नहीं था । इसकी भाषा में केवल मराठीके 'नको', 'लई', 'च' आदि शब्द दूसरोंके समान ही पाये जाते हैं । कुछ मराठी शब्द तो ऐसे हैं जो ग्रामीण मराठीमें तीन सौ वर्ष पहले प्रयुक्त होते थें और आज भी वह वैसेही चलतें आ रहे हैं । ग्रान्थिक मराठी भाषामें उनका प्रवेश कम है । किंतु वह जनतामें सर्वत्र रुढ हैं । बलकाना (वळकावणें), शेला, कधीं, दंदी–दंदिया, अनमानना (अनमान करणें), मुखडा, मुसकटना, कुवल वैतागी, आयां-बायां, नटवा, होड, हुडकना, अरडाना, फांकना, आवा, अपरूप, डुलना, बुरांटी (कांटा–विशेष), अजूं–आजू–अझूं, धड (शरीर, सुरक्षा), रावत, (राऊत), हदरना, सौरात (आशामग्न हो, अतीव यत्नशील होना), पैसना, (पैसणें–प्रवेशना) आदि शब्द केवल मराठी भाषाके प्रतीत होते है । इन में से कई शब्द तत्कालीन ज्ञानेश्वरी, लीलाचरित्र, स्मृतिस्थल आदि ग्रंथोंमें भी प्रयुक्त हैं । वह दक्खिनीमें इस भाँति प्रयुक्त होते आए हैं मानो ऐसा लगता है कि वह उसका अविभाज्य और सहज अंग हैं । निशातीका यह काल दक्खिनीका ऐश्वर्य काल है । इस समय भाषाको एक प्रकारसे स्टॅन्टर्ड रूप प्राप्त हो गया था । इसमें मराठी शब्द भाषाका अंग बन गए थे ।

दक्खिनी वास्तवमें खडी बोली है । पर उसपर ब्रज, अवधी और राजस्थानी भाषाओंका भी कुछ सिक्का है । सप्तमी विभक्तिके परसर्ग 'पै' मांझ, मँझार मंझिआर-रा यह ब्रजसे दक्खिनीमें आए हैं । यह अवधीमें भी पाए जाते है । यह' अवधीमें भी पाए जाते हैं । 'सूं' 'सों' 'सो-सौं' 'तें-ते' 'थे-थें' 'सेते-ती' 'सिते' यह सब परसर्ग तृतीया, चतुर्थी और पञ्चमीके लिए प्रयुक्त होते हैं और ब्रजसे आए है । चतुर्थीका 'काज' 'ताईं-तई' भी ब्रजसे हैं । आरु (और) केवल ब्रजका हैं । षष्ठी के, 'का' के समानार्थी परसर्ग केर-रा-री-रे, कर-री केवल अवधी के हैं । ब्रजमें उनका प्रवेश नहीं । वह किंचित भिन्न रूपमें बंगाली, असमी आदि पूर्वी

भाषाओंमें मिलता है। करनहार, देबनहार, रखनहार, सिबनहार इत्यादि कर्तृवाचक नामधातुभी अवधीसे प्रविष्ट हुए है। क्रियाका भविष्य कालदर्शक 'सी' चिन्ह राजस्थानी भाषाओंसे दक्खिनीमें आया है। 'रकसी' 'सकसी' 'सरसी' 'कहसी' 'रहसूं' आदि रूप हमेशा इस काव्यमें पाए जाते हैं। डिंगल आदि राजस्थानी भाषा-बोलियोंमें वह अब भी प्रयुक्त होता हैं। गुजरातीमें आज भी उसका प्रयोग होता है। श्री शेख चांदने उसको नहीं समझा।

आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओंकी, संस्कृत के वा अन्य भाषाओं के शब्द अपनाने की एक विशेष रीति और परंपरा है। संस्कृत के ऐसे संस्कारयुक्त शब्दोंको तभ्दव कहा जाता है। संस्कृतके ऐसे हजारों तद्भव शब्द दक्खिनीमें हैं। वही तो प्रधानतः उसका शब्दभांडार है। दक्खिनीने इस प्राचीन परंपराका पूरा पूरा स्वीकार करते हुए अरबी-फारसीके शब्दोंको संस्कारित करके अपनेमें समा लिया हैं। हुजरवंद, अखलवंद, बलवंद, फाम, नजीक आदि शब्दरूप इसीके साक्षी है। प्राकृत, अपभ्रंश और आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओंकी स्वरागम की प्रवृत्ति 'बहुतीच' 'अवली च' 'इस्तन्यां' 'इस्कंदरी' आदि प्रयोगों में दृग्गोचर होती है। इस प्रकार हम देखते है कि कुछ अरबी-फार्सी शब्दोंके समाए लेनेके बावजूद भी दक्खिनी प्राचीन भारतीय भाषापरंपरा पर कार्यमग्न है।

फार्सी का रंगरूप

बहुत थोडों को मालूम है कि फार्सी भाषा केवल आर्यभाषा है। फार्सी के पूववर्ती रूप पहलवी और अवेस्ता हैं। अवेस्ता वैदिक संस्कृत की बेटी हो या न हो, सब भाषाशास्त्रज्ञ यह बात निरपवाद रीति से मानते हैं कि वह संस्कृत की भगिनी अवश्य है। यही हाल ग्रीक, लॅटिन, रशियन आदि भाषाओंका है। पृथ्वीतल पर तीन बडे भाषावंश हैं, आर्यन, सेमिटिक और मोंगोल। उन में आर्यभाषावंश दुनिया में सब से अधिक प्रसृत, संपन्न और सुसंस्कृत है। आर्यवंशके तीन प्रमुख शाखाविशेष हैं- आर्यभारतीय, युरोपीय और इण्डो-ईरानी। इस अंतिम शाखा में फार्सीभाषा का समावेश है। आधुनिक हिन्दी, प्राकृत और संस्कृत में जो नाता-रिश्ता है वही चालू फार्सी, पहलवी और अवेस्ता में पाया जाता है।

फार्सी शब्द फार्स से बना है जो मौजूदा ईरान वा पर्सिया का एक प्रान्त है। कुछ दिनों तक ईरान का नाम फार्स था। वस्तुतः फार्स पार्स है। परन्तु उस का रूप बादमें फार्स बना है। ईरान, एरान, अइर्यन यह सब संस्कृत आर्य शब्द के पर्याय हैं। पहले पहल ग्रीक इतिहास लेखकोंने ईरान को पर्शिया कहा। लेकिन इस देश के पुनरुत्थानतत्पर होने पर शक १८५७ में पर्सिया का नाम फिर से ईरान रखा गया। युरोपीय उस को अब भी पर्सिया कहा करते हैं। यह विद्वानों की मानी हुई बात है कि ईरानी और भारतीय आर्य एक ही कुटुंब के घटक हैं। उन का वंश और भाषा प्राचीन काल में एक ही थी। जब वह ईरान और भारत में पहुँच गये तो कालदेश के कारण उन की भाषा में भी अन्तर पडता गया। लूई ग्रे विद्वानने भारतीय आर्यों को स-भाषी और ईरानियों को ह-भाषी कहा है। संस्कृत स का

संस्कृत स का ईरानी या अवेस्ता भाषा में ह् बन जाता है। सिन्धु (सिन्धु नदी के तीरों पर रहनेवाले आर्य) शब्द का रूप अवेस्ता में हिंदु बन जाता है। यही प्रक्रिया सखामनास् (संज्ञाविशेष) से हकामनस् अकामनियस में पायी जाती है। अवेस्ता का रूप इसवी सनपूर्व ५००-७०० वर्ष में बन चुका था। अवेस्ता भाषा में ईरानी (भारत के पार्सियों) लोगोंके प्राचीनतम ग्रन्थ-गाथाएँ लिखी गई हैं। यह गाथाएँ वैदिक आर्यो के ऋचायों का, थोडेबहुत भाषिक अन्तर से, बव्हंश में रूपान्तर होना विद्वानों से बतलाया जाता है। जिस प्रकार संस्कृत से प्राकृत बनी उसी प्रक्रिया से अवेस्ता से पहलवी बनी। और जिस प्रकार प्राकृत-अपभ्रशों से आधुनिक भारतीय भाषाएं बनी हुई हैं ठीक उसी प्रक्रिया से पहलवी से फार्सी वनी हुई है। अनेक भारतीय बोलियोंके समान फार्सी की भी अफगानी, बलूची, सोग्दियानी, कुर्दी आदि अनेक बोलभाषाएं आज भी लोकप्रयुक्त हैं।

फार्सी भाषा का शब्दभण्डार अधिकांश में अवेस्ता-संस्कृत से प्राप्त है। आधुनिक फार्सी का व्याकरण भी केवल संस्कृत व्याकरणानुसारी है। आधुनिक भारतीय भाषाओं के समान फार्सी में भी सुलभीकरण की बलवत्तर प्रवृत्ति दिखाई देती है। संस्कृत के हजारों शब्द फार्सी भाषामें प्रयुक्त होते हैं। एक विशिष्ट वर्णोच्चारण प्रक्रियापद्धति के अनुसार संस्कृत के शब्द फार्सी में पाए जाते हैं। स्वधा शब्दसे फार्सी भाषामें खुदा (ईश्वर, स्वामी) शब्द बन गया है। यही अवस्था नमाज़ (ईश्वरवन्दन) की है, वह संस्कृत के नमस् शब्द से बना हुआ है। फार्सी का शाह शब्द संस्कृत क्षत्रिय का रूप है। आधुनिक फार्सी के व्याकरणनियम के विरुद्ध पाया गया शाहानशाह अथवा शहनशाह शब्द संस्कृत क्षत्रियाणां क्षत्रिय का समकाय और स्मारक है। इसी प्रकार दिल (हृदय), जिगर (यकृत्), पुल (परेत), ज़र-सुवर्ण (हिरण्य), साल-वर्ष (शरद्-वर्ष), शहर (क्षत्र), अंजुमन (सम्-अजनम्-सभा), आजाद (आधात), चिहरा (चित्र+क), आस्मान (अश्मन्-इंद्र का वज्र), गर्म-उष्ण (घर्म), ज़्-ज़ुबान (जिव्हा), जवान (युवान्), जिन्दह् (जीवन्तः), दर्या (ज्रयस्-विशालता), दाद (धात), दिबीर-दवीर (लिपिकार), देर (दीर्घम्), दोस्त (जोष्टार), नवद (नवतिः-९०,) पहलू (पर्शुका-फसली), फर्मान (प्रमाणम्), वन्दह (बन्धक,) बयो (वधू), बहार (वासर), बेवह (विधवा), मय-इ (मधु), मर्द (मर्त्यः), माह-(मास-महिना व चन्द्र), मिहर-सूर्य (मित्र), मेख़ (मयुख), रोज (रोचस्), शब (क्षपा), सफेद (श्वेत), सवार (अश्ववार-हिंदी, मराठी-असिवार), सितारह (स्तृ+क), हर (सर्व), हजार (सहस्र), हमाल (समर्थ) आदि शब्दों की व्युत्पत्ति ग्रे, केंट, पॉल हॉर्न आदि आंग्ल वा शार्मण्यदेशीय विद्वानों की प्रतिपादित है।

...४

ईराणी राष्ट्र स्वयं आर्यवंश का कहलाता है। भारतनिवासी पार्शी जनता के लिए ईराणी राष्ट्र के अंतःकरण में अतीव आदरभाव है। च्यूं कि भारतनिवासी पार्सी ही थे जिन्होने शक की ७ वीं शति में क्रूर और असुसंस्कृत अरबों के हम्लों से ईराणी संस्कृति, धर्म, देवदेवता, पहलवीभाषा और झुरतुष्ट्र की प्राचीन परम्पराओं को बचाने के लिए परमतसहिष्णु भारत को प्रयाण किया। यहां पर इस छोटीसी पार्सी जाति को इच्छित स्थान मिल गया। इसी कारण अवेस्ता धर्मग्रन्थ, भाषा और धर्म की सुरक्षा हो पाई। इस भावना का दर्शन डॉ. पूरे-दाऊद के ग्रन्थों से होता है। पूरे-दाऊद ईरानी सरकार की और से स्व. डॉ. रवीन्द्रनाथ ठाकूर के निमंत्रण पर, शके १८५६ में एक साल के लिए शान्तिनिकेतन में प्राध्यापक वा आचार्य के नाते भेज गए थे। उनके छः व्याख्यान के. आर कामा इंस्टिटयूट बम्बई की ओर से करवाए गए और पश्चात् वह पुस्तक रूप से संस्थाके क्रमांक २८ के ग्रन्थ रूपमें प्रकाशित हो चुके हैं। पूरे-दाऊद ईरानी राष्ट्र के सांस्कृतिक प्रतिनिधि ही थे। भारत और भारतीय पार्सियों के सम्बन्ध में उनके द्वारा स्वयं पूरे-दाऊद और ईरानी राष्ट्रके भावों का दर्शन कीजीए।

" We Iranians look at our Parsi brothers in India with feelings of gratitude and respect, for their having preserved the ancient religion of Iran and with it our noble Iranian character. In Iran today, all men look back to their ancient history, tradition and culture, and therefore, there has orisen a feeling of venity and love among the old brethran of Iran of the same blood. When we think of our Parsi brethren as the Presrvers of the ancient faith of Iran, a feeling of admiration and gratitude for India at once comes to our mind, for the tolerant India, but for whose hospitality and protection, the Parsi Community would not be living today. This world famous tolerance of the Hindus is recorded in the history of the past......

.... We Iranians do not feel that the children of Iran had gone to any foreign country eleven centuries ago, because India is an Aryan Country and we are glad that a part of the Aryan Iran had taken refuge in a part of an Aryan India.

(Lectures of Prof. Pour-i-Daud, 1935, P. 116)

इस उद्धरण से आधुनिक इरानी राष्ट्रके भारत के प्रति नितान्त सद्भाव और प्रेम का दर्शन होता है। इस में राजकीय आंदोलनों से कभी भी न मिटनेवाले सांस्कृतिक, वांशिक, भाषिक बन्धनों और आकर्षणों का स्वच्छ दर्शन होता है। आशा की जा सकती है कि स्वतन्त्र भारत और स्वतंत्र ईरान के भावबन्धन और भी प्रबल और अटूट बनते जाएंगे।

यह एक वस्तुस्थिति है कि शक ५७२ में अरबोंने ईरान जीत लेनेके पश्चात् पहलवी और उसकी अनुगामी फार्सी भाषामें अरबी शब्दों का अनुपात उत्तरोत्तर बढता गया। कुरान ने अवेस्ता-गाथा को परास्त किया। छलित और पराजित झरतुष्ट्रानुयायी भाग निकल पडे। प्रसिद्ध शाहनामा ग्रन्थ के निर्माता महाकवि फिर्दोसीने पहलवी-भाषा की उद्यानवाटिका को, उगे हुए कास आदि तृणांकुरों से, साफ किया (लगभग शक ९५०)। शहनामा में अरबी भाषा के केवल ऐसे ही शब्दों का उपयोग किया गया है जो फार्सी में बिल्कुल घुलमिल गए थे और जो फार्सी की नवनवोन्मेशालिनी प्रकृति के अनुकूल थे (देखिए अर्नेस्ट पी. होर्वित्झ कृत इण्डो-इरानियन फिलॉलॉजी शक १८४०–कामा इंस्टिटचूट, बम्बई, पृ. १०)। इस के पश्चात्काल में सादी, हाफिज शीराजी आदि महाकवियों के हाथों अरबी शब्दों के अधिकाधिक प्रयोग की प्रवृत्ति बढती रही। अब गुजश्ता ५०–६० वर्षों से ईरानियों में फिर यह भावना बढ गई है कि फार्सी भाषाको अपना उसका स्व-त्व प्रदान करने के लिए, इस भाषा को अनावश्यक अरबी शब्दों से पाकसाफ करना चाहिए। यह भावना समय के साथ बल पकड रही है। इस वस्तुस्थिति का कथन एन्सायक्लोपीडिया ब्रिटानिका (शक १८८२) के पर्सिया-खंड में भाषा-संबंधीवर्णन में भी पाया जाता है। उपरोक्त प्रकांडपंडित प्रो. पूरे-दाऊद पचाससे अधिक फार्सी ग्रंथोंके लेखक हैं। अभी तक उनकी यह शारदोपासना चालू है। उन की भाषा में भी अरबी शब्दविषयक यही प्रतिबिम्ब दिखाई देता है।

आचार्य पूरे-दाऊद ने आगे चल कर अपने ग्रन्थ में बतलाया है कि ईराननें अपना भाषिक और सांस्कृतिक स्वत्व कभी नहीं खोया। वह बतलाते हैं– "ईरान पर अरबोंका आक्रमण, मोंगोल चंगीझ खान की भयंकरता, और तार्तार तैमूरलेन का मनुष्यसंहार यह ऐसे महान् भयंकर संकट थे कि इन आक्रमणों के वर्णन के पश्चात् आश्चर्य लगता है कि ईरान क्यों कर जिन्दा रहा हो। अधिक आश्चर्य की बात यह है कि ईरान न केवल जिन्दा रहा बल्कि वह अभींतक ईरानी रहा है। ईजिप्त. ईराक (मेसोपोटामिया), सीरिया, आफ्रिका और अन्य दुर्दैवी देश, ज़ो आततायी अरबों के आक्रमणों के शिकार हो गए, अपना प्राचीन स्व-त्व खो बैठे हैं। स्पेन के सिवा, केवल ईरान ही एक देश है जो, अपना अरबीकरण होने के बावजूद भी, केवल ईरानी रह चुका है और जिन जिन बातों को अरबोंने उस पर ठोंसना चाहा उन सब का उसने इरानीकरण कर दिया (पृ. १३०)।

ईरान का एक राजवंश सेल्जुक (शक९५९ से ११०९) विदेशी था, किन्तु उन का संपूर्णतया ईरानीकरण हो गया था। उन का शील और नैतिक मूल्यांकन ईरानी संस्कृति के रंग में रंगा हुआ है। उन का समय ईरान का वैभवकाल था। इसी संपन्न

काल में सादी और हाफ़िज की ज्योतिर्मयी द्वयी ललामभूत हो गई थी । यह ईरान की शान है कि खून और खड्ग के प्यासे मोंगोल चंगीज खान और तार्तार तैमूर-लेन के वंशजों का ईरान में कुछ पीढियां रहने के बाद, ईरान की सांस्कृतिक प्रभुताने इस प्रकार मानवीकरण कर दिया कि वह ही संस्कृति और कला के बडे आश्रयदाता बने (पृ. १३१) । ईरान की यह शान और विशेषता है कि उस ने अपनी संस्कृति और कला ओं से, विजेताओं को जीत लिया है (पृ. १३२)" ।

हिन्दी में फार्सीशब्द

दक्खिनी हिन्दी के आठ दस ग्रंथ अब तक नागरीलिपिबध्द हिन्दी में सम्पादित और प्रकाशित हो चुके हैं । उस में दक्खिनी के कव्यसंकलन भी समाविष्ट है । इन सम्पादनों में आर्य भारतीय शब्दसम्पत्ति की चर्चा, व्युत्पत्ति आदि का प्रयत्न तो जरूर दिखाई देता है। परंतु फार्सी-अरबी शब्दों की केवल समानार्थक शब्दावली दिई गई हैं। उसके देखने से मालूम होता है कि इन शब्दों के इतिहास, मूल वा व्युत्पत्ति के सम्बन्ध में कोई प्रयत्न इन प्रकाशनों में दिग्दर्शित नहीं होता। अरबी शब्दावली की बात बाजू को रखी जाए, क्यों कि अरबी एक स्वतंत्र भाषावंश की भाषा है। किन्तु यही दृष्टीकोन फार्सी शब्दों के सम्बन्ध में स्वीकार्य नहीं हो सकता। किन्तु दुर्दैववशात्, उपरोक्त अध्ययनों में यही होते आ रहा है । फार्सी के संबंध में यह जो कुछ थोडासा यहां पर लिखा जा रहा है उस का मूलभूत हेतु यह है कि अनुसन्धान कार्यकर्ताओं का ध्यान इस ओर अर्कपित करें कि फार्सी आर्यकुल की भाषा है । फार्सी और अरबी शब्दों को एक ही मानदंड लगाने से सब घोडे बारह टक्के पर बेचने का दोष अनुसंधानको के माथे लग जाता है । जिस प्रकार हर एक अनुसंधानक दक्खिनी वा किसी आधुनिक आर्य भारतीय भाषा के अध्ययन में तद्भव शब्दों की खोज करता है, उसी प्रकार उस को चाहिए कि फार्सीशब्दों की खोज करे, उसका मूल ढूंढ निकाले । अगर तद्भव शब्दों के समान कोई फार्सी शब्द किसी भी प्रकार से, प्राचीन इतिहास के खोजप्रकाश में किसी संस्कृत शब्द से वना हुआ हो तो उस शब्द को हिन्दी से तजने की आवश्यकता न होगी । अगर यह ज्ञात हो जाए कि ईरानी बेवह और भारतीय विधवा के दु:ख और आवेग एक ही हैं तो ईरानी का दिल भारतीयों के हृदय से एकरूप और सहसंवेदक बन जाएगा और ईरानी शाह और भारतीय क्षत्रिय, इस दु:खावेग को कम करने में सहकार्य और सहवीर्य बन जाएंगे ।

डॉ. हरदेव बाहरी ने हिन्दी पर पर्सियन का प्रभाव नामी एक प्रबंध ग्रन्थरूप से शक १८८२ में आंग्लभाषा में प्रकाशित किया है । उसका मूल लेख शक १८६५ में अलाहाबाद विद्यापीठ अध्ययन में प्रसिध्द हुआ था । इस छोटेंसे प्रबन्ध में डॉक्टर

महोदय ने फार्सी के हिन्दीपर हुए प्रभाव की मीमांसा सुचारु रीति से की है। फार्सी का प्रभाव वह भारत की राजभाषा होने और फार्सीप्रचुर उर्दू के कारण होना उन्होंने बतलाया है। उसी के साथ उर्दू साहित्य और उसके साहित्यिक, गुटबंदी की भावना के शिकार हो, फार्सी -अरबी से बेजा तौंर पर प्रभावित होने की उन्होंनें वजा शिकायत की है। उर्दू लेखकों और कवियों की अभारतीय और अ-राष्ट्रीय प्रवृत्तियोंपर संकेतमात्र प्रकाश डाला है। डॉ. बाहरी ने यह भी बलताया है की फार्सी इण्डो-आर्यन भाषा है। ग्रन्थ के परिशिष्ट अ में ३७१ फार्सी शब्दों के संस्कृत व्युत्पत्तिशब्द दिए हैं। अपने प्रस्ताव में उन्होंने ग्रन्थप्रयोजन बतलाते हुए कहा है कि वह इस प्रभाव की कहानी बतलाना है। उस के साथ इस दिशा की खोज भी उस में अभिप्रेत है कि इस प्रभाव की सुचारू प्रवृत्तियों को हिन्ही भाषा मे किस प्रकार समा लिया जाए।

जिस प्रकार ऊार्सी के माध्यमद्धारा अरबी भाषा के कई शब्द हिन्ही में पहुंच चुके हैं उसी प्रकार व्यापारव्यवहार, ज्ञान का आदान और अवेस्ता- पलहवी -फार्सी के माध्यम से संस्कृत कें कई शब्द अरबी भाषा में भी समाविष्ट हो चुके हैं। संस्कृत की सहोदरा अवेस्ता ने कुरान की भाषा को भी ऋणप्रदान किया है। इस विषय का अध्ययन कई पाश्चात्य विद्वानों ने किया है। कुरान में पाए गए परकीय शब्दों के अध्ययन का सार दि फॉरिन व्होक्याबुलरी ऑफ दि कुरान (गायकवाड प्राच्य माला क्रमांक ७९, शक १८६०) नामक ग्रन्थ में डॉ. आर्थर जेफरी कैरो, ने सादर किया है। इस ग्रन्थ से मालूम होता है कि कुरान में अक्काडियन, फीनिशियन, अर्माईक, सीरियाई, ईथीयोपीक, फ्हलवी, ग्रीक आदि भाषाओं के शब्दों के साथ साथ, संस्कृत के पहुंचे हुए शब्दों का भी पता चलता है। संस्कृत के शब्द अरबी में पहुंचनें के दो मार्ग हैं—एक प्रत्यक्ष यातायात, लेनदेन का और दुसरा है अवेस्ता के द्वारा। अवेस्ता भाषा अरबी से कम से कम एक सहस्र वर्ष पूर्व विकसित और संपन्न भाषा रह चुकी है।

फूलबन काव्य में फार्सी-अरबी के जो शब्द प्रयुक्त हुए हैं उन का कोश अन्त में दिया गया हैं। फार्सी के जिन शब्दों की व्युत्पत्ति प्रात्प हो सकी वह कोश में यथास्थान दी गई है। जहां तक हो सके व्युत्पत्ति अन्य विद्वानों की वतलाई हुई है। इस कथन का हेतु एकमात्र यही है कि दक्खिनी के अभ्यासकों का ध्यान इस दिशा में आर्कषित किया जाए।

अंतमें इस छोटेसे काव्यके अध्ययनकी व्यवस्थाका निर्देश हम जरूरी समझते है। दक्खिनीमें ब्रजभाषा और अवधीके भी प्रत्यय प्रयुक्त होते हैं। निशातीने भी उन्हींका प्रयोग किया है। यह प्रत्यय साधारण हिंदी पाठकको मुश्किल लगते हैं।

इसलिए काव्यके आरंभहीमें उन प्रत्ययोंका अर्थ दिया गया हैं। दक्खिनीमें भविष्य कालदर्शक प्रत्यय 'सी' गुजराती से वा राजस्थानीसे आया है। फार्सी शब्दोंका अर्थ पृष्ठकी पद टिप्पणियोंमें दिए गए हैं। पाठकोंकी सुविधाके लिए समग्र फार्सी शब्दोंका कोश अंतमें दिया गया है। मराठी वा हिन्दी शब्द और वाक्प्रचारों का भी कोश जोड दिया गया है। ऐसे शब्दोंकी संख्या ३०० के लगभग है।

इस काव्यमें कुछ ऐसे उल्लेख हैं जिन का स्पष्टीकरण करनें की आवश्यकता प्रतीत हुई। ऐसी टिप्पणियां काव्यके अन्तमें प्रथमही दी गई है। आशा है कि वह पाठकोंको लाभदायक सिद्ध होंगी।

बम्बई, देवीसिंग चौहान

१९ ज्येष्ठ, शक १८८६

इब्ने-निशीतीविरचित

फूलबन

सर्ग १ ला

दर[१]-हम्दे[२]-बारी[३] ताला

नुख़स्तें[४] योजना करता हूं दर तौहीदे[५]-सुबहानी[६]
जिने दो हर्फ़[७]में ज़ाहिर किया असरारे[८] पिनहानी[९]

ख़ुदावंदा तुजे जम[१०] है ख़ुदाई   हमेशा तुज़ कों साजे कबरयाई[११]
अज़ल[१२] कों नईं समज तेरा बदायत[१३]   अबद कों[१४] फ़हम[१५] नईं तेरा नहायत[१६]
गगन हौर धरत कों देता तूं हस्ती[१७]   बुलंदी उस कों देता इस कों पस्ती[१८]
सुरज ज़र्रा[१९] है तेरे नूर का[२०] एक   चंदर कतरा[२१] है तुज समदूर का एक   ५
कियां तूं चिहरा दिन का नाज़नीन[२२] ख़ूब   दिया तूं ज़ुल्फ़[२३] शब कों[२४] अंबरीन[२५] ख़ूब
दिया ख़ूबां के[२६] रुख़[२७]को सुबह का ताब[२८]   बंधा नैनां पो दो अबरू के[२९] मिहराब[३०]
पिशानी में रख्या आधे चंदर कों   दिखाया सर के बालां में अंबर कों
लिख्या तूं जीब के ताले[३१] मने बात   दिया लब[३२] नसीबां में तूं नाबात[३३]
फ़िरावे, चर्ख़[३४] कर तूं रोज़ आसमां   खडग कों सूर[३५] के तिस पर देवे सान[३६]   १०
चमन कों फूल सूं सिंगार देता   गगन कों कहकशां का[३७] हार देता
तूं रंग-आमीज़[३८] कयता[३९] है चमन कों   दिया ख़ुश[४०]-बूई हर यक फूलबन कों
दिया तूं नरगिसां के[४१] बन कों दीदे[४२]   क़दा[४३] सर्वां के[४४] तूं कयता है सीधे
कत्रा कों[४५] फूल की तूं चाक[४६] देता   कली के पैरहन कों[४५] तंग कयता
विलायत[४७] हुस्न का तूं गुल कों बख्श्या   तूं किश्वर[४७] इश्क़ का बुलबुल कों बख्श्या   १५
दिया तूं शमा के[४८] तैं नूर हौर ताब[२८]   किया तिस पर तूं परवाने कों[४९] बे-ताब[५०]
बहूत बद-मस्त है कर फ़ील[५१] अंबर का   रख्या उस सर उपर आंकस[५२] चंदर का
सिफ़त[५३] तेरा है सब की अक़्ल ते भार[५४]   तेरी तारीफ़ में[५३] नें बात कों ठार[५५]
जहाँ लंग है सुफ़ीदी[५६] हौर सियाही[५६]   तेरी क़ुदरत[५७] पो देती है गवाही[५८]
जमीं ते नैशकर[५९] जब भार आया   शहादत[५८] पर तेरी उंगली उचाया   २०
चमन के जां तलक फूलां जो हैं सब   तेरी वहदत[५] उपर खोले अहैं लब
अपस की[६०] ज़ात में[६१] ऐसा तूं यक है   अगर दहरी अच्छे बी दो नईं कै
सिफ़त में तेरी नें है चाल सब की   ज़बां[६२] उस ठार पर है लाल सब की

---

१. में, २. प्रार्थना, ३ ईश्वर, ४. प्रथम, ५. एकमेव होना, ६ ईश्वर, ७ अक्षर, ८ भेद, ९ अदृश्य, गुप्त, १०. नित्य, नित, ११. श्रेष्ठत्व, बडापन, १२. अनादि, १३. आरंभ, १४. अनन्त, १५. समझ, १६ परिणाम, शेवट, १७. अस्तित्व, १८. नीचापन, १९. कण, २० प्रकाश, २१. बूंद, २२. नारीका, २३. केस, बाल, २४. रात, २५. कस्तूरीमय, २६. प्रेयसी, २७. गाल, २८ प्रकाश, तेज, २९. भूं जो आँखपर होती है, ३०. खिड़की, ३१. नसीब, दैव, ३२ होंट, ओष्ठ, ३३. दांत, ३४. आकाश, ३५. सूर्य, ३६ तीक्ष्ण करना, ३७. आकाश-गंगा, ३८. रंगा-बिरंगा, ३९ करता, ४०. सु गंधता, ४१. फूलविशेष, ४२. आँख, ४३. कभी, ४४. वृक्षविशेष, ४५. पोशाक, ४६. फाडना, ४७. देश, ४८. दीप, ४९. पतंग, ५०. परेशान, ५१. हाथी, ५२ अंकुश, ५३ वर्णन, ५४. बाहर, ५५. स्थान, ५६. शुभ्रता व कालापन, ५७ शक्तिमानता, ५८. साक्ष, ५९. गन्ना, ६० स्वतः, खुद, ६१. व्यक्तिमत्त्व, ६२. वाणी.

अदब[१]का ठार है यां जानकर मैं   जबां अपनी ल्या गरदान[२] कर मैं
सदा इब्ने निशाती पर अए सुबहान[३]   करम कर तूं करम कर अए मिहरबान[४]
मेरे दायम[५] दुआ के[६] फूलबनकूं   तूं रख ताज़ा कबूलियतके[७] म्हेवं[८] सूं   २५

सर्ग २ रा

मुनाजाते[९]-ब[१०]-दरगाहे क़ाज़ीउल्हाजात[११]

जो कुच मतलब सो तेरा है ख़ुदाके पास मंग जम[१२] जम
सकल-मक़्सूदे[१३]-आलम जो कि है मौजूदे[१४] रहमानी[१४]

इलाही[१५] ग़ैब के[१६] पर्दे सिते[१७] तूं   मेरे मतलब के शाहिद का[१८] दिखा मूं
तूं कर दिलकों मेरे आईना किरदार[१९]   मुहब्बत का जो देखूं तिस में दीदार[२०]
मेरे सीने में[२१] भर असरार[२२] तेरे   नयन देखन कों दे अनवार[२३] तेरे
मुहब्बत सूं तेरी दे आशनाई[२४]   कहे हैं "आशनाई रू-शिनाई[२५]"   ३०
तेरी बातां कों सुनने गोश[२६] दे गोश   समजने राज़[२७] तेरा होश[२८] दे होश
मिठाई दे शकर की मुज ज़बां कों   तूं चश्मे[२९]-शहद का कर मुज दहां कों[३०]
शकर कर तूं सदा गुफ़्तार[३१] मेरा   हुनर का गरम कर बाज़ार मेरा
दे बख़्शिश मुज विलायत[३२] शाअरी का[३३]   तो किश्वर[३४] कर अता[३५] मुज माहिरी का[३६]
मेरे ख़ामे कों[३७] दे गोहर-फ़शानी[३८]   भी दे नामे कों[३९] ख़ूबी[४०] की निशानी   ३५
मुतव्वल[५०] कर तूं मेरी जिंदगानी   तूं बरख़ुरदार कर मेरी जवानी
मुज आईना कों दिल के दे जिला[४१] तूं   सदा सिह्हत की[४२] राहत[४३] सूं चला तूं
दुन्यां की हैबता[४४] सूं रख तूं ईमन[४५]   निगह[४६] रख तूं हर यक आफ़त[४७] सूं निसदिन
जबूनी[४७] सूं निगह रख तन कों मेरे   अमानत[४८] रख ख़जां[४९] सूं बन कों मेरे   ४०
दर्या रहमतकी[५१] जिस दिन आएँगी जोश   न कर इब्ने निशाती कों फ़रामोश[५२]
गुनह कों गरचे मेरे नैं है ग़ायत[५३]   वले[५४] रहमत है तेरा बे-नहायत[५५]
गवाही देवेंगे जिस वक्त रूं रूं[५६]   हो मुज इब्ने निशातीके कुधन[५७] तूं
कुदूरत[५८] सूं सफ़ाकर[५९] राह[६०] मेरा   नबी कों[६१] कर शफ़ाअत-ख़ाह[६२] मेरा

---

१. साहित्य, २. सिद्ध होना, ३ ईश्वर, ४ कृपालू, ५. नित्य, ६. प्रार्थना, याचना, ७. मान्यता, ८ मेघ, बारिश, ९ ईश्वर उपस्थित जान, प्रार्थना करना, १० दरबारमें, ११ सृष्टि-नियन्ता, १२. हमेशा, १३. दुनयाकी आशा, हेतु १४. ईश्वरका अस्तित्व १५. ईश्वर, १६. अदृश्यता, १७. से, १८. साक्षी, गवाही देनेवाला १९. शील, २०. दर्शन, २१. छाती, २२. भेद, २३. नूरका बहुबचन, प्रकाश, २४. परिचय, पहचान, २५ प्रत्यक्ष भेंट, २६ कान, २७. गुप्त बात, २८. समझ, २९. शहद, मधुका झरना, ३०. मूं, मुख, ३१ बात-चीत, वाणी, ३२. देश, ३३. काव्य, ३४. देश, ३५. देना, ३६. प्रवीणता, ३७ लेखणी, कलम, ३८. मोती निकालना, ३९. ग्रंथ, ४०. सुंदरता, ४१. प्रकाशित कर, ४२. निरोगिता, ४३. आराम, ४४ संकट, ४५. निडर, ४६ दृष्टि, ४७. बेकार, ४८. सुरक्षित, ४९ पतझड, ५०. दीर्घ, ५१. कृपा, ५२. भूलना, ५३. अंत, मर्यादा, ५४. किंतु, ५५. अमर्याद, ५६. रोम, केस, ५७. ओर, ५८. मलिनता, ५९. स्वच्छ, साफ़ ६०. मार्ग, ६१. पैगंबर, ६२. कृपाकांक्षी.

सर्ग ३ रा

दर[1]- नाते[2]- हजरते - सरवरे[3]- आलम[3] मुहम्मद मुस्तफा[4]

कहूं मैं नात सरवरका शफीउलमुजनिबैन[5] बर हक़[6]
कि जिसके नूर सूं परतू[7] किया दो जग कों ताबानी[8] ४५

करूं मैं ले क़लम हात इब्तदा नात[2] सचे हक़ के[9] पैयंबर का अदा[10] नात
मुहम्मद पेशवा[3] है सरवरां का[3] अहे सर-खेल[11] सब पैगंबरां का
नबी तूं पाक,[12] तेरा पाक दीन[13] है सचा तूं रहमतुलआलमैन[14] है
अगर होता न तूं आदम[15] न होता न आदम बल्कि[16] यो आलम[17] न होता
शरफ[18] पाया है आदम तुज तरफ ते हुवा मौजूद आलम तुज तरफ ते ५०
तेरी तारीफ करने किस को हद है तुं ही अरवाह[19] आदमका सो जद[20] है
अहे मालूम सब कों यों इशारत कि तूं मआनी[21] है होर आदम इबारत[22]
यूं आया है तूं होए पर सारे मुरस्सल[23] कि फूल आंगे तो ज्यूं आता है फल
हुवा आदम निपज अहमद की खा़तिर[24] पियाला ज्यूं कि आया मद की[25] खा़तिर
अहे मक़सूद[26] तुज मेवे सूं मेरा अहे मतलब तेरे सेवे सं मेरा ५५
दो जग में कोई नैं तेरे सिवाया खुदा क़ुरान में तुज कों सराया[27]
शरीअतका[28] सटचा आवाज़ा जग में तरीक़त कों[29] किया तूं ताज़ा जग में
खुदा का मारफत[30] है तुज सूं पैदा हक़ीक़त[31] तुज सूं है हक़ का[32] हुवेदा[33]
है तुज मुक-नूरका दीवाना जबरैल अहे तुज शमा का[34] परवाना जबरैल
शबे-मेराज[35] है तुज शह सूं रोशन फलक का बाड[36] है तुज मह[37] सूं रोशन ६०
नवाज़्या[38] पल में तूं अफलाकियां कों[39] किया फिर कर मशरफ[40] खाकियां[41] कों
दिस्या सो हाल वो मेराज की रात जगत की अक़्ल सूं पैलाड[42] है बात
सूरज कों छांवूं कोई देखे नैं कैं तूं सूरज था उसी ते छांवूं तुज नैं
जमीं रही इस सबब[43] सूं पस्त[44] हो कर कि साया नैं पडा तेरा उस उपर
सुबह जिस दिन जो रस्ता-ख़ीज़[45] होयगा सूरज का आंच[46] बहूतीच तेज़ होयगा
तूं कर इब्ने-निशातीके सर उपर शफाअत के[47] तेरे साए कों छतर[48] ६५

१. में, २. पैगंबरकी स्तुति, ३. जगका नेता, ४. नेता, ५. अपराधी पर कृपालू, ६. सुयोग्य, ७. प्रतिबिंब, ८. प्रकाशित, ९. सत्य, १०. देना, ११. प्रमुख सेनापति, १२. पवित्र, १३. धर्म, १४. दो जग पर कृपा करनेवाला, १५. आदमी, १६. किंतु, १७. जग, १८. मान्यता, १९. आत्मा, रूहका बहुवचन, २०. मूल पुरुष, २१. अर्थ, २२. विषय, कृति, २३. रवाना, २४. लिए, २५. मद्य, शराब, २६. ध्येय, २७. स्तुति की, २८. धर्मशास्त्र, २९. आचार-शास्त्र, ३०. ईश्वर-ज्ञान, ३१. वस्तुस्थिति, ३२. सत्य, ३३. आविष्कृत, ३४. दिया, दीप, ३५ पूनमकी रात, ३६. बाडा, मकान, ३७. चंद्र, ३८. सराहना की, ३९. स्वर्गनिवासी, ४०. प्रतिष्ठा, ४१. मृत्युलोक के निवासी, ४२. परे, दूर, ४३. कारण, ४४. नीची, ४५. कयामत, प्रलय, ४६. अग्नि, ४७. कृपा, ४८. छत्र, छत.

तेरी अवलाद पर हौर तुज पो हर दम हज़ारां सूं अछो सलवात[१] व सिलम[२]

मनकबते[३]-हज़रते–अमीरुल्मोमिनीन[४] अली

ज़बांकों मनक़बत के सात खोलूं — नबी के जा-नशीन का[५] मदह[६] बोलूं
"वल्यां जग"[७] के सितारे हैं अली यां — विलायत के[८] विलायत का है सुलतान
अ़ली सारे वल्यां में है सिपहदार[९] — अ़ली सारे वल्यां में का है सरदार ७०
जो ख़म[१०] दिसता है हल्क़ए[११] आस्मां का — है गोशा[१२] यक वो तेरे कमां का[१३]
तेरे दफ़्तर का अम्बर[१४] है एक अच्छर[१५] — है तेरे जाम[१६] का यक क़तरा[१७] कौसर[१८]
तेरी हिम्मत की दर्या पर नवा नीर — दिसे यक बुडबुडे[१९] ते हो के कम-थीर[२०]
गगन के कहकशां का[२१] है जो विवहार[२२] — नईं वो धार है तुज हात का वार
जो कोई कयता[२३] है परकर तुज सिते हुम[२४] — सितम[२५] अपने किया बाज़ू पो परकम[२६] ७५
क़ुलाबा[२७] जो अगर अछता ज़मीं कों — फिरा कर पल में उस कों मारता तूं
तेरा दुलदुल[२८] जो है वो ज़ात ताज़ी[२९] — चले गह[३०] चाल बांदे गाह-बाज़ी[३१]
धमांके में[३२] जो आवे वो परीज़ाद[३३] — अं-पड[३४] सकसी[३५] न उसकी गर्द को[३६] बाद[३७]
कधीं टुक[३८] गरम होकर दौड में आए — सुब्रा का दल पिछे सट कर अंगे जाए
धरत गर ताब[३९] सूं धीरक[४०] न पाती — गगन की नाद[४१] सरगर्दां[४२] हो जाती ८०
हवा पर यूं उडे गोया कबूतर — जमीं पर यूं फिरे ज्यूं बादे-सरसर[४३]
मलक[४४] तेरी करामत के[४५] रिसाले[४६] — उतारिद[४७] कन[४८] सूं जाते हैं लिखा ले
तेरी तारीफ़ करना एक साअ़त[४९] — अहे हफतार[५०] सालां की इबादत[५१]
अहे उस्ताद गरचह सब में जबरैल — पड़े अब्जद[५२] तेरे मकतब में[५३] जबरैल
तूं देखा है जधां ते कर उपर मूं — लरजता[५४] है गगन पर सूर आझूं[५५] ८५
नबी हौर तूं है दोनों यक-तन हो — जो कोई देखे कि हैं दो, धेंड[५६] अहे वो
तेरी अवलाद जो हैं बर-गुज़ीदे[५७] — अहे रोशन जिनो सूं दिल के दीदे[५८]
हमारे सर के हैं वो ताज सारे — अहे सर-ताज़ वो सारे हमारे
मंगे तुज कन ते बी इब्ने-निशाती — कि नैं है इस्तताअ़त[५९] का बसाती[६०]
अ़ता[६१] कर हश्र[६२] के दिन जाम मुज कों — तूं कर दो जग में शीरीं[६३] काम मुज कों ९०

---

१. नमाज, दुआ, २ प्रेम, सहिष्णुता, ३. अली आदि धर्मनेताओंकी स्तुति करना, ४. मुसलमानों-के नेता, ५ स्थानपर बैठनेवाला, ६. स्तवन, ७. साधू, संत, ८. देश, ९. सेनानायक, १०. निचलापन, टेढ़ापन, ११. वर्तुलाकार, १२ कोना, १३. कमान, १४. सुगंधी मोम, १५. अक्षर, १६. प्याला, १७ बूंद १८. स्वर्गकी नदी, १९. बुलबुला, २०. कम स्थिर, २१. आकाश गंगा, २२. व्यवहार, २३. करता है, २४. हिम्मत, जोश, २५. जुल्म, २६ अभिलाषा; मुहताज, २७. मछली पकड़नेका साधन, गल, २८ नाम खच्चरका, २९. घोड़ा, ३०. जगा, स्थान, ३१ चालविशेष, ३२. जोश, आवेश, ३३. अप्सराका वंश, ३४. पहुँचना, ३५. सकेगा, ३६. धूली, ३७. हवा, वायु, ३८. क्षणमात्र, ३९. प्रकाश, ४०. स्थिरता, ४१. समान, ४२. घूमने लगती, ४३. तूफानकी हवा, ४४. देवदूत, ४५ कर्तृत्व, ४६ ग्रंथ, ४७. बुध नामका ग्रह, ४८. समीप, ४९ घंटा, समय, ५०. सत्तर. ५१. भक्ति, ५२. अलीफ, बे, जीम, दाल आदि मूलाक्षर, ५३. पाठशाला, ५४. कम्पित होता है, ५५ अभी तक, ५६. घेड़ जाति, ५७. चुनी हुई, ५८. चक्षु, ५९. शक्ति, ६०. समर्थ; शक्तिवाला ६१. दे, ६२. प्रलयकाल, ६३. मीठा।

सर्ग ४ था

दर[१]– मदहे[२]– इमाम हुसेन

सना[२] उस नयन निरजन का,[३] आहे करतार सामी[४] वो
उसी की मये[५]– मुहब्बत[५] सूँ दिखता शिअरकी[६] बानी
अज़ल के[७] इल्म का[८] आलिम[९] जो है वो है सब नाकिस[१०] अपो सालिम[११] जो है वो
जो है उस्ताद सनअ्त[१२] की नज़र का हुनरमंदों में क़ुदरत के[१३] हुनर का
मंग्या करने किताब ईजाद[१४] वो यक मंगे तसनीफ[१५] करने यादगार[१६] यक
सो कयता[१७] इब्तदा[१८] ताज़ीम का[१९] सतर[२०] लिखा 'फी[२१] अहसन[२१] तकवीम[२२]' का सतर ९५
रख्या उस सतर में कै लाक मानी[२३] हुए मौजूद[२४] जीव के पाक[२५] मानी[२३]
रगां का[२६] जदवल[२७] उस उपराल कयता[१७] सर उपर अक़्ल का सर-लूह[२८] देता
बंद्या है उस्तख़ां[२९]– बंदी सूँ मुस्तर[३०] रगां का खींचता जदवल सरासर[३१]
अ़नासिर के[३२] मिला कर जुज़[३३] यक ठार तबीअत का[३४] बंध्या शीराज़ा[३५] यक बार
जगत कों जिल्द में[३६] हस्ती[३७] के भान्या शिकंजे[३८] ते अ़दम[३९] के भार ल्याया
हुवा यो हाल[४०] हासिल[४१] मुज कों जिस दिन मुहब्बतका सबक़[४२] पाया उसी छन १००
मुहब्बत का बयां[४३] क्यों कर किया जाए बयां किस की ज़बां में वो नईं आए
करे नें फूल की कोई बास का शरह[४४] सटे नें कोई दिल के ऐश का[४५] तरह[४६]
रक़म में[४३] आए नें बुलबुल के नाले[४७] भंवर के नें कये जाते उलाले[४८]
हुवा ने हल किसी ते शमा का[४९] हाल पतंग का नें लिखा जाता है अहवाल[५०] १०५
कहो किस धात[५१] अपना इश्क़[५२] बोलूं मुहब्बत का कहो क्यों राज़[५३] खोलूं
देवें तौफ़ीक़[५४] गर शाहे-शहीदां[५५] देवें फुरसत जो मुज माहे–[५६] शहीदां
करूंगा ज़ाहिर अपना शौक़ दिल का कहूंगा खोल कर मैं ज़ौक दिल का
दखन ते करबला कों जिस घडी जाऊं चलूं ख़ामे के[५७] नमने सर कों कर पावूं
जो नामे के[५८] नमन इस ठार अं-पडूं[५९] मुबारक ठार कों यक बार अं-पडूं
अवल अंझवां[६०] सूं वां पानी छिनक ख़ूब करूंगा बाद अज़ां[६१] पलखां[६२] सूं जारूब[६३] ११०
पडूं गुंबद कने जा छावूं के सार लगूं उस कांद[६४] सूं ज्यूं नक़्शे-दीवार[६५]
करूं कंदील वां मैं मन कों अपने बिछावूं फर्श[६६] कर वां तन कों अपने

---

१. में, २. स्तुति, ३. निरंजन=निर्गुण, ४. स्वामी, मालक, ५. प्रेमका मद्य, ६. कवित्व, ७. अनादि, ८. ज्ञान, ९. ज्ञाता, १०. निरर्थक, अपूर्ण, ११ पूर्ण, १२ कला, तंत्र, १३. शक्ति, १४. बनाना १५ ग्रंथलेखन, १६ स्मारक, १७ करता, १८. प्रारंभ, १९. वंदन, नमन, २०. पंक्ति, २१. कलापूर्ण, खूबीसे, २२ कायम करना, २३ अर्थ, २४. पैदा, २५. पवित्र, २६. शरीरकी नस, २७. तख्ता, २८. प्रमुख तख्ता, २९. अस्थि, हड्डी, ३०. सीधा, एक रेषामें, ३१. पूरा, ३२ उनसूरका बहुवचन, पंचतत्त्व, ३३. अंश, भाग, ३४. शरीर, ३५. व्यवस्था, ३६ पुट्ठा ३७. अस्तित्व, ३८. सज़ा देनेका यंत्र, ३९. निरस्तित्व, ४०. स्थिति, ४१ हस्तगत, ४२. पाठ, ४३. वर्णन, ४४. टीका, स्पष्टीकरण, ४५ आराम, ४६ पद्धति, ४७. शिकायत, ४८. जोश, ४९. दिया, दीप, ५०. वृत्त, ५१. प्रकार, ५२. प्रेम, ५३. भेद, गुह्य, ५४. सद्बुद्धि, ५५. आतमार्पण करनेवालोंका राजा, ५६. चाँद, ५७. कलम, लेखनी, ५८. पत्र, ५९. पहूँचूँ, ६०. आँसू, ६१. बादमें ६२. पलक, ६३. झाडू, ६४. दीवार, ६५. चित्र, ६६. ज़मीन, भूमि

फिर उस मरक़द[१] उपर ते अपसीं[२] वारूं[३] — दुख अपना दिल के लहू सूं वां निगारूं[४]
सबूरी[५] सट पकड कर बे-क़रारी[६] — करूं बे-इख़्तियारी[७] सात ज़ारी[८] ११५
फ़रात[९] अपने दो नयनां कर को दिखलावूं — लहू रो कर बिला[१०] तन कर को दिखलावूं
हवस[११] है दिल में मेरे बहूत रोने — सियह[१२] नामे कों तिस पानी सूं धोने
भला है सब ते लेना अब ख़मूशी[१३] — नईं यां ठार करना ख़ुद[१४]–फ़रोशी
किता बोलूं नईं सरते सो बातां — किता कों कोई नें करते सो बातां
तेरे जम[१५] दोस्तां सूं यार[१६] हूं मैं — अ़दवां[१७] सूं तेरे बे-ज़ार[१८] हूं मैं १२०
जो कोई यारी दिए हैं तुज कों यारां — अछो रहमत[१९] उनन पर सद[२०] हज़ारां
अ़ता[२१] कर तूं मुज़ बी अपना सुहबत[२२] — जो है मेरी लिखी वो ऐन[२३] निअ़मत[२४]

सर्ग ५ वाँ

दर-बयाने[२५]–मदहे[२६]जहाँ-पनाहे[२७]–अब्दुल्ला कुतुबशाह

यो वसफ[२५] साहिब[२८] आदिल शह[२९] ग़ाज़ी[३०] अ़ब्दुल्ला
तजम्मुल[३१] यूं दिसे उसमें कि ज्यूं दाबे[३२] सुलेमानी

करूं तारीफ[२५] मैं उस ताज-वर का[३३] — समजता है जिने क़ीमत गुहर का[३४]
शहाँ का शाह अ़ब्दुल्ला ग़ाज़ी — अछो जम हक़ सूं उस की पेश-बाज़ी[३५] १२५
सआ़दत के[३६] नयन का नूर है तूं — शुजाअ़त[३७] के गगन का सूर[३८] है तूं
अहे जमशीद का[३९] सब दाब तुज में — सिकंदर का वो है आदाब[४०] तुज में
सलाबत[४१] आज तेरी है सुजानी — किया है दुश्मनां के लहू[४२] कों पानी
शुजाअ़त के तेरे डर सूं सरासर[४३] — खडग में आग पानी रहे हैं मिल कर
देखे तूं फूल हौर कांटे में यक ठार — वले[४४] किस ते न कोई पाते हैं आज़ार[४५] १३०
तेरे देख अ़द्ल[४६] कों मिल बाज़[४७] लक लक — न क्यों बैटे यकस कों एक लग लग
हंसां बहऱ्यांके[४८] घुंगरू में के दाने — हिमायत[४९] सूं तेरी जाते हैं खाने
अजब[५०] नें देख तेरी नौशेरवानी — करें बकऱ्यां की गुर्गां[५१] पासबानी[५२]
अ़जब नैं गर चिडयां सब मिल को आवे — ब़िल्यां की गोद में अंडरे[५३] छिपावें

---

१. क़बर, २. स्वयं, ख़ुद, ३. अर्पण करूँ, ४. लिखना, ५ सहनशक्ति ६. अस्वस्थता, ७. ख़ुदको भूलकर, ८. रोना, ९. फरात नदी, १०. विना, बिन, ११. लालुच, १२. काला पत्र-पाप, १३. खामोश रहना, १४. खुदको बेचना, १५ हमेशा, १६. मित्र, १७. शत्रु, १८. त्रस्त, १९. दया, २०. शत, सौ, २१. दे, २२. संगति, सहवास, २३. केव ा, २४ ईश्वरक़ा दान, २५. वर्णन, २६. स्तुति, २७. जगका आश्रय, २८. स्वामी, २९. राजा, ३० पराक्रमी ३१ शोभा, वैभव, ३२. प्रभाव, ३३. सिंहासनाधीश, ३४. रत्न, ३५. अग्रेसरत्व ३६. सुजनता, ३७ शौर्य, ३८. सूर्य, ३९. ईरानका, एक प्रसिद्ध राजा, ४०. सभ्य आचार, ४१. निष्ठुरता, ४२. रक्त, खून, ४३ संपूर्ण, ४४. परंतु ४५. दुःख, ४६. न्याय, ४७. शिकारी पक्षी, ४८. शिकारी पक्षी, ४९. सहायता, ५०. आश्चर्यकारक, ५१. भेडिया, ५२. रक्षा, ५३. अंडे ।

अगर देगा जो तेरा अ़द्ल[१] हद[२] बांद   रखेगा कर जतन[३] कितां के[४] तें चांद   १३५

है तेरे अ़द्ल की यां बात पूरी   दुखी पर नें चली यां किस की ज़ोरी[५]

किया सो अ़द्ल तेरा पेश-दस्ती[६]   छुपे ख़ूबां के[७] जा अंख्यां में मस्ती

कजी[८] तुज अ़द्ल सूं जग में रही नें   बग़ैर[९] अज़ अबरवां में[१०] बी नें कें

ज़माने के तेरे सगले[११] है चंगे[१२]   बग़ैर[९] अज़[९] सूई नें बी कोई नंगे

नईं कोई दौर में[१३] तेरे परेशां[१४]   अछेंगे गर तो महबूबां के[१५] ज़ुल्फां[१६]   १४०

किया तूं रह-ज़नां[१७] सूं पाक दक्खन   नईं कोई आज मतरब[१८] बाज[१९] रह-ज़न

करम[२०] यूँ ख़ल्क पर[२१] धरता है तूं आप   कि ज्यूँ धरते हैं पंगड्यां[२२] पो मांबाप

शुजाअ़त का[२३] देखत तुज मुज मुक पो पानी   सटे सब पहलवानां पहलवानी

तेरा मतबख़[२४] किरा बादल[२५] धुवाँ है   ढिगारां[२६] राखके सो आसमां है

सआ़दत[२७] मुश्तरी[२८] जम तुज सूँ पावे   ज़ुहल[२९] हबशी[३०] तेरे घर का कवावे[३१]   १४५

सुहाती[३२] है तुजे मसनद-नशीनी[३३]   फलातूं[३४] की है तुजमें दूर-बीनी[३५]

अगर काग़ज़ गगन का होए धूरा[३६]   सिफ़त[३७] तेरा न होसी[३८] तो बी पूरा

अदब[३९] सूँ कोई तन नें आज ख़ाली   तंबोरे बिन किसे नें गोश-माली[४०]

अ़दालत की[४१] तेरी देख रस्म[४२] हौर रीत   अजब नें गर होए तो ज़हर अमरीत

अगर बकर्‍यां कों देवे शाह फरमान   लेकर आवेंगे बागां को पकड कान   १५०

किया तूं अ़द्ल ऐसा आज जग पर   फतर के संग[४३] सूं शीशे कों नें डर

तुज हिम्मत सूं मछर गर पाएगा बल   करेगा ज़ेर[४४] पल में मस्त मंगल[४५]

मुसलसिल[४६] वस्फ के[३७] तुज सिलसिले कों[४७]   हलाने नें सकत मुज हौसले कों[४८]

सिफत में नें चल्या देखकर सकत कें   दुआ़[४९] सूं ख़तम[५०] करता[५१] बात कों[५२] मैं

जधां[५३] लग मिहरो-चर्ख़[५४] अख़ज़री[५५] है   जधां लग घन पो ज़ुहरा[५६] मुश्तरी[५७] है   १५५

अछो तुज कों तधां लग ताज[५८] हौर तख़्त[५८]   तधां लग तुज अछो इक़बाल[५९] हौर बख़्त[६०]

अछो तुज कों हमेशा बादशाही   मदद हर दम अछो तुजकों इलाही[६१]

---

१. न्याय, २. मर्यादा, ३. सुरक्षा, ४. कई, ५. जुल्म, ६ आगे बढना, ७. प्रेयसी, ८. दुर्जनता, टेढापन, ९. के विना, १०. आबरू, भूं, ११. सब, १२. निरोगी, १३. समय, १४. कष्टी, १५. प्रेयसी, १६ बाल, १७. रास्ता मारनेवाला, बाटमारू, १८. मद्यपानगृह, १९ सिवा, विना, २०. दया, २१. मनुष्यजाति, २२ लूला, लंगडा, २३. शौर्य, २४. खाना पकानेका स्थान, २५. मेघ, २६. ढेर, २७. सुजनता, २८. बृहस्पति नाम ग्रह, २९. शनि ग्रह, ३०. आफ्रिकाकी एक जाति, ३१. कहलावे, ३२. शोभा देना, ३३. सिंहासनाधीशता, ३४ प्लेटो, ३५. दूरदृष्टि, ३६. सम्पूर्ण, ३७. वर्णन, ३८ होगा, ३९ शिष्टता, ४०. कान खींचना, ताकीद करना, ४१ न्यायासन, ४२. विधि, ४३. सहवास, ४४. परास्त, ४५. हाथी, ४६ अखंडित, ४७. परंपरा, ४८ हिम्मत, आशा, ४९. प्रार्थना, ५० पूरा. ५१. करता, ५२ प्रकरण, सर्ग, ५३. जब तक, ५४. सूर्य और आसमान, ५५. सर सब्ज, हराभरा, ५६. शुक्र ग्रह, ५७. गुरु, ५८ मुकुट और सिंहासन, ५९. वैभव, ६०. सुदैव, ६१. ईश्वर

सर्ग ६ वाँ

दर-बयाने-सबबे[१]-तालीफ़े[२]-किताबे-क़िस्सए[३]-फूलबन

करम[४] हौर फज़ल[५] ते हक़[६] के हुनर[७]-मंदी को अं-पडचा[८] हूँ
किया उसकी इनायत[९] सूं सुखन[१०] की यो दुर-फ़शानी[११]

मुजे यक दिन दिया हातिफ ने[१२] आवाज़ — गिरत की दासतां के[१३] अए सुखन-साज़[१४] — १६०
सुखन का आज हो कर तो गुहर-संज[१५] — सुखन का खोलता नैं क्या सबब गंज[१६]
जगत को कैं[१७] सुनाता नैं यो बातां — शकर पर के तूं लिखता नैं बरातां[१८]
तेरी गुफ़तार[१९] सूं आलम[२०] मिठा कर — दे तेरे सना[२१] का हर किसकों शकर
सुखन के[१०] फूल की तासीर[२२] ते तूं — मुअत्तर[२३] कर जगत यक[२४] धीर ते तूं
ख़ुशी सूं ख़ुशी की बात पर आज — तूं कानां को जगत के ईद[२५] कर आज
सुखन को फहम[२६] सूं करता है तूं खूब — सलामत[२७] बात का धरता है तूं ख़ूब — १६५
सुख़न कों तूं सिंगारन जानता है — सुख़न को तेरे सब कोई मानता है
सुख़न का तर्ज़[२८] तुज आता है ताज़ा — सुख़न का सट तूं आलम में आवाज़ा[२९]
दुन्यां में कर ले तूं यक नावूं अपना — हुनर के काम सूं यक गावूं[३०] अपना
समज कर देक तूं दुनया के शैवे[३१] — देवे यक छन में पल में छीन लेवे
अज़ब[३२] कुच इस ज़माने के हैं चाले[३३] — कभी मीठे कभी कडवे-कसाले — १७०
फ़लक[३४] के नैं है, कुच हीले[३५] सूं चारा — कुई इस के हात सूं जासी न[३६] सारा
जो दुनया हर किसी सूं की है यारी[३७] — वो देखे लग ज़मी कों फिरको मारी
ज़माना किस के तैं खोंचा सो नैं है — कोई अब लग हद तलक पोंचा सो नईं है
फलक हर किस के तैं जो भार ल्याया — सो आख़िर[३८] ग़म[३९] के दर्यामें डुबाया
तूं कसरा[४०] नईं जो रहे तेरा अदालत — तूं हातिम[४१] नईं जो रहे तेरा सख़ावत[४२] — १७५
तूं रुस्तुम[४३] नईं जो तेरे दासतानां[४४] — पढें हर बज़्म में[४५] शाहनाम-[४६] खानां
नईं है तूं जो इब्राहीम ऊधम — कहेंगे ज़हद में[४७] तुज कों मुक़द्दम[४८]
भला है जो तूं अपना यादगार[४९] आज — दुन्यां में हर सनद[५०] कर आशकार[५१] आज
ख़ुदा तुज कों दिया है फ़हम[५२] आली[५३] — सुख़न की[१०] तुज कों बख़शी है उलाली[५४]

---

१. कारण, २. ग्रंथलेखन, ३. कथा, ४. दया, ५. विपुलता, ६. ईश्वर, ७ कलाभिज्ञता, ८ पहूँच्या, ९. कृपा, १० साहित्य, ११. मोती बाहर निकालना, १२. आवाज़ देनेवाला देवदूत, १३. कहानी, कथा, १४. साहित्य निर्माता, १५ रत्नपारखी, १६. अंबार, कोश, १७ क्यों, १८. वृत्त, बरत, काव्य, १९ वाणी, २० जग, २१. कला, २२. परिणाम प्रभाव, २३. सुगंधित, २४ एक बाज़ूसे २५ त्यौहार, २६. समझ, २७. प्रसाद, सहजता, २८. पद्धति, २९. कीर्ति, ३०. ग्राम स्थान, ३१. पद्धति, तरीके, ३२. विचित्र, ३३. करतूत, बेढंगे काम ३४ विधि, नसीब, ३५. चालबाजी, ३६. जाएगा, ३७. दोस्ती, ३८ अंततः ३९. दुःख, ४०. एक प्रसिद्ध राजा, ४१. अरबका प्रसिद्ध उदार व्यक्ति, ४२. औदार्य, ४३. ईराणका पराक्रमी राजा, ४४ कथाएँ, ४५. सभा, ४६. शहनामा ग्रंथ पढनेवाला, ४७. शुचिता, ४८. अग्रेसर, सर्वश्रेष्ठ, ४९ स्मारक, ५०. समान, प्रकार, ५१. आविष्कृत, ५२. समझ, ज्ञान, ५३. श्रेष्ठ, उच्च, ५४. जोश, स्फूर्ति

तुजे मालूम[1] है सालिम[2] सनाए[3] नको अवकात[4] अपना कर तूं जाए[5] १८०
उचा, हां, खूब यक ताजा हिकायत[6] अछेगा इश्क़ का जिस में रिवायत[7]
बसातीं[8] जो हिकायत फारसी है II लताफ़त देखने की आरसी है
इबारत[10] सब किसे वो नैं समजता कहां मुश्किल है किस कों नैं समजता
तुजे है फारसी में दस्त-गाह[11] आज न करसी[12] तर्जुमा[13] बी कोई तुज बाज[14]
उसे हर किस के तें समजा के तूं बोल III दखन[15] की बात सूं सारा बयां[16] घोल १८५
उसी में सरब-सर[17] मिल यार सूं यार करे सो है पिरत का गरम बाज़ार IV
सरासर[17] इश्क़ के है इस में राज़ां[18] किए सो इश्क़-बाज़ी[19] इश्क़-बाज़ा[20]
अवल[21] ते इश्क़ सूं था दिल पो आज़ार[22] दिया था सूज़[23] कों सीने मने ठार
यकायक ज्यूं कि यों बातां किया[24] गोश[24] सो मान्या शौक़ का दर्या वई जोश
लगे पडने कों मोत्यां भार[25] दिल ते लगे होने कों फ़ाश[26] असरार[27] दिल ते १९०
ज़बां[28] सूं वो यकायक मोती कों ले ले परोया निर्मले मोत्यां के झेले[29]
पडी देक हात मेरे वो लाली बजाया बात के आलम[30] में ताली
लगा कर तबा[31] की मोत्यां सूं डोरा बचन का जग मने मान्या धंडोरा
ज़बां सूं खूब निकल्या देख यो फ़ाल[32] विलायत[33] पर सुख़न के मैं किया चाल
अलम[34] कों बात के ऊंचा उचाया अपस के तबा की ज़ोरी[35] दिखाया १९५
न था जिस ठार बल[35] फिरने कों ताज़ी[36] किया उस ठार मैं चौगान-बाज़ी[37]
बिकट[38] चलने कों जां[39] मुश्किल दिसाया[40] सो उस जागा मने मंगल[41] उचाया
तबीयत[31] में अपस की देख साफ़ी[42] किया हर बैत[43] म्याने मूं[44]-शिगाफी
कहां करने सकत मुश्किल[45]-कुशाई करूं बा रे तबीयत-आज़माई[46]
कहे तेवूं काम करना नैं है आसां यही है गोय[47] हौर है यो च[48] मैदां २००
बचन के बाग़ की ले बाग़बानी II बसातीं[8] की किई सो तर्जुमानी[49]
दिस्या हर यक सहीफा[50] ज्यूं चमन हो लिख्या यो नज़्म[51] जीव की फूलवन हो

---

१. ज्ञात, २. पूरे, ३. साहित्य प्रकार, अलंकारशास्त्र, ४. समय, वक्तका बहुवचन, ५. बेकार, व्यर्थ, ६. कथा, ७. रीति, ८. बूस्तानका बहुवचन, बाग़, उद्यान-यह फारसी कथाकाव्य है। ९. बारीकी, सूक्ष्मता, १०. विषय, ११. प्रावीण्य, १२. करेगा, १३. भाषान्तर, १४. विना, १५. दक्खिनी हिंदी, १६. वर्णन, १७. पूरा, १८. भेद, गुह्य, १९. प्रेमके खेल, २०. प्रेमिक, २१. प्रथम २२. दुःख, २३. मनोवेदना, २४. सुनाना, २५. बाहर, २६. प्रकट होना, बाहर आना, २७. भेद, सिरका बहुवचन २८. वाणी, जीब, २९. माला, गुच्छ, ३०. अवस्था, हालत, ३१. बुद्धि, ३२. शगुन, ३३. देश, ३४. झेंडा, ३५. शक्ति, ३६. अरबी घोड़ा, ३७. पोलोका खेल, ३८. कठिन, ३९. जहाँ, ४०. दिख पडा, ४१. हाथी, ४२. सफाई ४३. जोड़, पंक्ति, ४४. केशविच्छेदन, ४५. कठिनताको सुलझाना, ४६. बुद्धिकी परीक्षा करना, ४७. चौगान का कंदुक, ४८. यही, ४९. अनुवाद, ५०. पृष्ठ, ५१. कविता।

सफ़ादार[1] उसकों देख हर यक चमन मैं   रख्या हूं नावूं उसका फूलबन मैं

अथा[2] तारीख़ लाया तो यो गुलज़ार[3]   अग्यारा सौ कोंकम थे बिस्त[4] पर चार

ख़ुदा के पास मंग हिम्मत बुलंदी[5]   नज़ाकत[6] सूं कन्या मै नक़्श-बंदी[7]   २०५

ले उस्तादां[8] कने ते मुअज़रत[9] मंग   कन्या मै बोलने कों नज़्म[10] आहंग[11]

सर्ग ७ वाँ

दास्ताने[12]-शहरे-कंचनपटन

सिफ़त कंचनपटन की है धरे चौ-गिर्द[13] बस्ती वो

सगल[14] रूए[15]-जमीं में कैं[16] न था उस शहरका सानी[17]

जु-कोई है बाग़[18]-बां इस फूलबन का   चमन लाता है यूं ताज़ा सुख़न का

कते[19] यक शहर कोई मशरिक़[20] कुधन[21] था   सो उस का नावूं सो कंचनपटन[22] था

हिसार[23] उसका अथा दर्या किनारे   दिसे खंदक हो तिस दर्या बंध्यारे[24]   २१०

कंचन का ख़ूब उस चौ[25]-गिर्द था कोठ[26]   कंचनपुरी कों थे कंचन के सो ओठ[27]

कंचन की तोप कंचन के ज़ंबोरे[28]   कंचन-बुर्जां पो कंचन के कंगोरे

कंचन के थे उपर तोपां ज़रब[29]-ज़न   कंचन के लग़ज़[30] यां थे हौर फ़लाखन[31]

कंचन के थे कंकर कंचन की थी गच   कंचन कों गाल[32] बांधे थे कंचन रच

कंचन के थे महल कंचन के दीवार   कंचन पर फिर कंचन लीपे थे हर ठार   २१५

कंचन की थी ज़मीं कंचन के झाडां   घरां कंचन के कंचन के केवाडां

जिधर देखे तिधर कंचन कंचन था   उसी ते नावूं उसको कंचनपटन था

इते उंचे थे उस गड के दिवालां   अलगें[33] हो रहे थे वां अभालां[34]

कधीं[35] बारा[36] जो चडने तिस पो जावे   हो मांदा[37] दम में आ चडने न पावे

मंगे सूरज जो होने कांद[38] ते पार   तो लगते थे उलंगने[39] उसको दिन चार   २२०

मंगने खतरा[40] जो उपर चड को जाने   करे दो चार मंज़िल[41] दरमियाने[42]

गगन के तल़[43] कैं ऐसा शहर नादिर[44]   नईं देखे थे आंख्यां के मुसाफिर[45]

---

१. सफाईदार, २. था, ३. बाग, उद्यान, ४. बीस, ५. ऊंचाई, ६. सूक्ष्मता, ७. चित्र निकालना, ८. प्रवीण, प्राचार्य, ९. क्षमा, १०. कविता, ११. आवाज़, १२. कथा, १३. चारों ओर, १४. सब, १५. पृथ्वीके पृष्ठपर, १६. कहाँ १७. दूसरा, १८. माली, १९. कहते, २०. पूर्व, २१. ओर, २२. सुवर्ण नगर, २३. तट, २४. सीमा, २५. चारों ओर, २६. गड़की ऊँची दीवार, २७- होंठ, २८. अस्त्र विशेष, २९. मारनेवाली, ३०. सूराख, छिद्र, ३१. गोफन, ३२. गाल कर, ३३. अनुल्लंध्य, अलंघ्य, पार करने मुश्किल, ३४. मेघ. ३५. कभी. ३६. हवा, वायु, ३७ थका हुवा, ३८ दीवार, ३९. उल्लंघना–पार करना, ४०. भीति, ४१. मुक़ाम, ४२. वीचमें, ४३. पृष्ठभाग, ४४. अपूर्व, ४५. प्रवासी.

जमीं पर शहर बी ऐसा कर कैं किसी कानों के जासूसां[१] सुने नैं
अजब तासीर[२] था वां की हवा का सदा हंगाम[३] था नश्वो[४]-नुमा का
सुकी लकडचां अगर कोई ला को गाडे वो लकडचां सब्ज़[५] हो शाखांकों[६] काडे[७] २२५
बिखेरे तो ज़मीं पर वाँ की कांटे वो फुटते थे होकर फूलां के फाटे[६]
महल म्याने चितर गर कोई दिखावे चितर हरकत[९] मने दर-हाल[८] आवे
वहां चश्मे[१०] जो निकले थे ज़मीं ते मिठाई में मीठे थे अंगबीं[११] ते
अगर यक क़तरा कोई उस नीर का ले जो अज़माने[१३] के तें[१४] दर्या में डाले
तो उस तासीर[२] ते समदूर[१५] खारा[१६] अजब नैं कुच मिठा होवे तो सारा २३०
सदा खुश-हाल थे सब लोग वां के थे ख़ातिर[१७] जमा[१८] वां के साकिनां[१९] के
दिलां के आहवां[२०] सब के सदा-काल जफ़ा[२१] के तीर सूं थे फ़ारिग़ुल्बाल[२२]
अजब कुच फ़ैज़[२३] था वां आसमानी[२४] बुढे पाते थे फिर ताज़ी जवानी
जिता लेवें पो इशरत[२५] कम न था वां अथा सब कुच वले[२६] यक ग़म[२७] न था वां
खुशी का मेघ अथा जम[२८] वां बरसता वो ऐसे धात[२९] सूं था शहर बसता २३५

सर्ग ८ वाँ

देखो उस शहर के शह में अथी निसदिन दो ख़ासियत[३०]
यके आदाबे-[३१] इस्कंदर दिगर[३२] इदराके-[३३] लुक़मानी[३३]

अथा उस शहर का यक नामवर[३४] शाह सुलख्खन[३५] सलतनत[३६] के बुर्जका माह[३७]
शहां में जब के उस कों सरवरी[३८] थी जगत में सरवरां के बर-तरी[३९] थी
इताअत[४०] में थे उसकों ताजदारां[४१] थे उस के हुक्म में सब शहर[४२]-यारां
न था सानी[४३] उसे रूए-ज़मीं[४४] पर थे उस के ज़ब्त[४५] में सब बहर[४६] हौर बर[४६] २४०
मिहरबानी[४७] के वो असमां का सूर[४८] जहां-परवर[४९] ककर[५०] था जगमें मशहूर
फलक[५१] के ज़ुल्म सूं शह कन[५२] कोई आए सो वो जिव के नमन[५३] जम परवरिश[५४] पाए
जो कोई आवे ज़माने के सितम[५५] सूं सीने[५६] सूं लावे दिल के नाद[५३] उस कों

---

१. दूत, २. प्रभाव, परिणाम, ३, ऋतु, ४. दिखावा, दृश्य, ५. हरा-भरा, ६. शाखा, फांदी, ७. निकलना, ८. तुरन्त, ९. गति, चलना, १०. पानी के झरने, ११. मधु, १२. बूंद, बिंदु, १३. परीक्षा करना, १४. लिए, १५. समुद्र, १६. नमकीन, १७. मन, १८. एकत्र, १९. निवासी, २०. हिरन, २१. कष्ट, २२. सुखी, २३. विपुलता का लाभ, २४. दैवी, २५. ऐश, आराम, २६. किन्तु, २७. दुःख, २८. हमेशा, २९. प्रकार, ३०. विशेषता, ३१. सभ्य आचार, ३२. दूसरा, ३३. प्रसिद्ध ईसाप, की बुद्धि. ३४. प्रसिद्ध, ३५. सुलक्षण, ३६. राज्य, ३७. चांद, ३८. श्रेष्ठत्व, अग्रेसरत्व, ३९. अधिक श्रेष्ठत्व, ४०. आज्ञा पालन, ४१. राजा, ४२. बादशाह, ४३. द्वितीय, ४४. पृथ्वी के पृष्ठ पर, ४५. बंधन, शिस्त, ४६. समुद्र और खुश्की, ४७. कृपालुत्व. ४८. सूर्य, ४९. जगतपालक, ५०. कह कर, ५१. आकाश, ५२. समीप, ५३. समान, ५४. प्रतिपाल, पालन, ५५. ज़ुल्म, अत्याचार, ५६. छाती.

जो कोई हो ख़ार[१] आवे शाह के घर — तो गुल[२] के नाद[३] दामन[४] कर ले पुर-ज़र[५]
जो कोई हातां के सीप्यां कों पसारे — करे मतलब[६] के पुर मोत्यां सूं सारे — २४५
ल्या[७] सो अद्ल[८] का नूर[९] आपने हात — न थी उस देस में कैं ज़ुल्म की बात
सिफ़त[१०] बारी के नमने[३] जग में था पूर[११] — अथा सूरज ते शह का नाम मशहूर
सटचा था ज़ुल्म का शह खोद बुनयाद[१२] — देवे नित दाद-ख़ाहां[१३] का अपी दाद[१४]
उडावे ख़ाक[१५] अगर बारा जो ना जान — दिलावे भुईं[१६] कों बारे कन[१७] ते तावान[१८]
ख़रीफ़ां टुक[१९] जो कुमलावें मेहूं[२०] बिन V — करे ताकीद बादल[२०] कों उसी छन[२१] — २५०
थे आलम[२२] गोस्फंदां[२३] शह शुबां[२४] था — ख़ुदा की खलक[२५] का सो पासबां[२६] था
चुरा लेवें कधीं[२७] जो धरत बी नीर VI — धरत कों खोद काडे नीर कों बहीर[२८]
अगर कोई बीज जा ना झाड काडे — उसे ताकीद कर ले भुईं में गाडे
जगत था बाग़ शह जेवूं[२९] बाग़बां था — हमेशा ताज़ा उस सूं सब जहां[३०] था
जो कुच धरना सो सब धरता अथा वो — शही इस धात[३१] सूं करता अथा वो — २५५

सर्ग ९ वाँ

दास्तान[३२]

बयां उस दीन[३३]-रोशन का है उस दरवेश[३४] आरिफ़[३५] के
दिख्या सपने मने शह उस कों मुहब्बत दिल मने आनी[३६]

देवनहारा ख़बर उस नौ-अंबर[३७] का — कता[३८] है बात सूरज हौर चंदर का
जो धरता था सुरज रफ़्तार[३९] अपना — दिया सट गुंबद[४०] व्दार अपना
बुलंदी[४१] सट सुरज पकडचा जो पस्ती[४२] — किया मग़रिब[४३] के जा माबद[४४] मे बस्ती
मुसल्ली[४५] चांद का वैं भार आया — मुसल्ला[४६] जग पो चंदनी का बिछाया — २६०
जो मग़रिब की निशान्यां मुख दिखाए — सो आलम[४७] नींद के सिजदे[४८] में आए
गव्यां[४९] के कुंज पकडे सब दरिंदे[५०] — हुए गोशा-नशीं[५१] सारे चरिंदे[५२] मुअतकिफ़[१३]
पंखी हो मुअतकिफ[५३] बलकाए[५४] कोने — लिए अुज़्लत[५५] चरिंदे सब मरोने[६०]
हुआ हासिल[५६] जो राहत[५७] का फ़रागत[५८] — बिछाने पर किया शह इस्तराहत[५९]

---

१. अपमानित, २. फूल, ३. समान, ४. पल्लू, ५. सुवर्ण-पूर्ण, ६. मांग, ७. ला कर, ८. न्याय, ९. प्रकाश, १०. ईश्वर के वर्णन, ११. बाढ़, १२. पाया, १३. न्याय की अपेक्षा करनेवाला, १४. अन्याय दूर करना, १५. धूल, १६. ज़मीन, १७. समीप, १८. द्रव्यदंड, जुरमाना, १९. क्षण मात्र, २०. मेघ, २१. क्षण, २२ जग, २३. बकरी, २४ गो-पालक, चरवाहा, २५ मनुष्य सृष्टी, २६. रक्षक, २७. कभी, २८. बाहर, २९. ज्यूं, जिस प्रकार, ३०. जग, ३१. प्रकार, ३२. कथा, ३३. धर्म-प्रकाश, ३४. फकीर, ३५ ईश्वर का ज्ञाता, ३६. लाई, ३७. नये आकाश का, ३८. कहता, ३९. गति. ४०. घुमट, ४१. उच्चता, ४२. नीचापन, ४३. पश्चिम, ४४ पूजास्थान, ४५. नमाज़ पढ़नेवाला, ४६. नमाज़ पढ़नेकी चादर ४७. जग, ४८. नमाज़ के लिए झुकना, ४९. गुफ्फा, दरी, ५०. हिंस्र पशु, ५१. कोनेमें बैठनेवाला, ५२. चरनेवाले पशु ५३. एकान्तवास सीकारना, ५४. अयोग्य कब्ज़ा करना, (मराठी) ५५. कोने में बैठना, ५६. प्राप्त. ५७. आराम, ५८. चैन, ५९. आराम करना, ६०. भटकना, घूमना।

लगी सो नींद सूं दो नयन खिलने — लग्यां पलखां सूं पलखां खिलने मिलने २६५
नयन के दो कंवल मुख मूंद[1] लेते — भंवर पुतल्यां के तिस में कोंड[2] लेते
दिया वें ख़ाब[3] जेवूं पुतल्यां को आ कर — सटे ले पोपट्यां[4] की ओड चादर
दिखाई सो नैन को नींद आ मूं — रहे पलखां के दरतक[5] मारने[5] सूं
ख़ुशी की नींद सूं है बहुत मस्ती — नईं वो नींद यक वो मय[6]-परस्ती
सो देखा ख़ाब[3] में दरवेश कों यक — दुन्या के आक़िबत[7]-अंदेश[7] कों यक २७०
है तनपर पैरहन[8] उजला छबेला — कमर बांध्या है यक बारीक शेला[9]
बंद्या है छोड शमला[10] सर पो दस्तार[11] — असा[12] पकड्या है यक रंगीं तरहदार[13]
कि है मुख पर इबादत[14] का तजल्ला[15] — लिया है हात में अपने मुसल्ला[16]
अगरचि[17] लहू सूं था सब अंग ख़ाली[18] — वले[19] सिजदे की थी उस मुख पो लाली
खड्या है आ को यूं दरबार अंगे वो — शहनशह[20] के मुबारक[21] दार अंगे वो २७५
खड़े अछते हैं ज्यूं[22] हर यक कोई आ — रज़ा[23] की इंतिज़ारी[24] सात गोया

सर्ग १० वाँ

दास्तान

सो वो दरवेश आ शह् सूं मिल्या अपनी शफ़क़त[25] सूं
अथा फ़य्याज़े[26]-आलम[26] वो धरे सब गंजे[27]-इरफ़ानी[27]

ख़बर-दारी के आलम का कुहन[28] पीर[29] — कता है ख़ाब की इस धात ताबीर[30]
हुवा फिर शाम सूं ज्यूं सुबह तबदील[31] — सगल पंख्यां लेते तसबीहो[32]-तहलील[33]
सुरज का देख मुक़री[34] सुबह का छावूं — रख्या असमां की मिहराब[35] पर पावूं २८०
ख़तीबी[36] का सुरज ले बर्गो-सामान[37] — हुवा अंबर के मंबर[38] पर ख़िरामान[39]
हुवा यक-बारगी[40] वो शाह बेदार[41] — हुवा सो ख़ाब की मस्ती सूं हुशयार
ख़ुमारी[42] फ़िक्र की आ कर लगी ज़ोर — कि था कुच निस कों दिन कों कुच दिस्या हौर
लगे इस बात के ख़तरे[43] गुज़रने — आपस में आप लग्या अंदेशा[44] करने[44]

---

१. बंद करना, मोंच लेना, २. बंद करना, ३ स्वप्न, ४. तोता, शुक ५. दरवाज़ा खटखटाना, ६. मद्य की पूजा करना, ७. अंतिम परिणाम जाननेवाला, ८. पोशाक, ९. ओढ़नेका उत्तरीय, चादर, १०. पगड़ी का पीठ पर लटकता भाग, ११. पगड़ी, १२. लकड़ी, छड़ी, १३. विशिष्ट प्रकार की, १४. भक्ति, १५. प्रकाश, तेज, १६. नमाज की चादर, १७. यद्यपि, १८. रिक्त, १९. किन्तु, २०. सम्राट्, २१. शुभ, २२. जैसा, २३. परवानगी, २४. रास्ता देखना, २५. प्रेम, २६. जग पर उपकार करनेवाला, २७. ईश्वरज्ञान का भांडार, २८. पुराना, २९. बूढ़ा, ३०. अर्थ कहना, ३१. वदलना, ३२. भक्ति से ईश्वरनाम लेना, ३३. मौत पर ईश्वरनाम लेना, ३४. कुरान पढ़नेवाला ३५. खिड़की, ३६. खुतबा पढ़नेवाला, ३७. सामान, ३८. चौरंग, पीड़ा ३९. सुगतिमान्, ४०. एकाएक, ४१. जागृत, ४२. रुचि. ४३. डर. ४४. आशंका करना।

अगरचि[1] बहूत खूब दिसते अहैं[2] खाब — वेल[3] देखे हैं तेवूं[4] कम पाए हैं लाब[5] २८५
कि खाबां एक नई है कई रविश[6] के — है सौदा[7] हौर सफ़रा[8] के तपिश[9] के
किते धरते अहैं बर-अक्स[10] तावील[11] — कित्यां कों वहम[12] सूं देते हैं तमसील[13]
फामा[14] खाब जेवूं देखे अहे रात — कबी सच बी हुवा है बाजे[15] अवकात[16]
भला वो है जो हासिल[17] किया है सो पांवूं — हक़ीकत ख़ाब का ख़ातिर[18] मने ल्यांवूं[19]
कि शायद तीर मेरे वहम[12] दिल के — हदेफ[20] के तें लगे जा कर तलब[21] के २९०
गुहर[22] जो ख़ाब के दर्या मने रात — जो देख्या सो चडे हलके मेरे हात
ककर[23] हर हाल यक ख़ादिम[24] बुलाया — जो कुच दिख्या सो सब उसकों सुनाया
कह्या इस धात का दरवेश कोई आ — खडा है देख जा दरबार में क्या
अवल दरबार अंगे उस कों तूं जा देख — अगर वां नें तो बद-अज[25] जा-ब-जा[26] देख
गया ख़ादिम देख्या दरबार में उस — दिस्या नें तो धुंड्या बाज़ार में उस २९५
मिल्या नें वां बी सो कूंचा गली कों — चल्या वें धूंड लेता उस वली[27] कों
यकायक खानक़ाह[28] यक ठार देख्या — तजल्ली[29] सूं दरो-दीवार[30] देख्या
वहां बैठे अहैं अरबाबे[31]-ताअ़त[31] — मिले यक ठार सब अहले[32]-इबादत[32]
दिलां[33] कों कर मुनव्वर[34] ज्यूं चिराग़ां[35] — कुदूरत[36] सूं हो कर ख़ातिर-फ़राग़ां[37]
हक़ीक़त[38] के हो बातां के उताले[39] — तसव्वुफ़[40] के ले बैठे हैं रिसाले[41] ३००
करें बातां हदीसां[42] आयतां[43] सूं — कते थे उस रविश[44] हुज्जतां[45] सूं
तरीक़त[46] के अछो जम पैरवी[47] में — कये हैं मौलवी ज्यूं मस्नवी[48] में
धरो यूं मारफ़त[49] सूं आशनाई[50] — हदीक़ा[51] में कए हैं ज्यूं सुनाई
हक़ीक़त के बयां[52] हर एक दम कै — देखो आख़िर की जुज़[53] में जाम[54] जम[55] कै
पकड पस्ती कों हस्ती[56] सूं करूं साज़ — नहीं बावर[57] तो देखो गुलशने– राज़ ३०५
करेंगे तो फ़ना[58] होवेंगे बाक़ी — है हुज्जत उस कों लमआते[59] इराक़ी[60]
किए सब मिल मुक़र्रर[61] आख़िर यो बात — है अव्वल नफ़ी[62] हौर बाद अज़ है इसबात[63]
किताबां के देखे तेवूं हुज्जतां बोल — कहे फिर यूं दलीलां[64] सूं किते खोल

---

१. यद्यपि, २. हैं, ३. किन्तु, ४. तैसा, ५. लाभ, फायदा, ६. चाल, ७. दीवानगी, मूढ़ता, ८. पित्त, ९. जलन, १०. उलटी, ११. मोड़ मुरोड़ कर अर्थ करना, १२. शंका, १३. उदाहरण, १४. समझ, १५. कभी-कभी, १६. समय, १७. प्राप्त, १८. मन, दिल, १९. लावूं, २०. निशाना, लक्ष्य, २१. साध्य, २२. मोती, २३. कह कर, २४. सेवक, २५. तदनंतर, २६. स्थान-स्थान पर, २७. साधु, २८. फकीरोंके रहने का स्थान, २९. तेज, ३०. दरवाज़ा, ३१. आज्ञा माननेवाले, शिष्य, ३२. भक्ति करनेवाले, ३३. मन, ३४. प्रकाशित, ३५. दीप. ३६. दुष्टता, ३७. जिनके मन स्वच्छ हैं, ३८. सत्य, ३९. उतावील, बे-चैन, ४०. भक्ति, ईश्वर-ज्ञान, ४१. ग्रंथ, ४२. पैगंबर के बचन, ४३. कुरान के श्लोक, ४४. चाल, प्रकार, ४५. विवाद, ४६. आत्मशुद्धि, ४७. अनुकरण, ४८. कथा, ४९. ईश्वर-ज्ञान, ५०. पहचानत, ५१. मदीना के समीप का एक गांव, ५२. वर्णन, ५३. भाग, ५४. प्याला, ५५. नित्य, ५६. अस्तित्व, ५७. समझना, ५८. नष्ट, ५९ क्षण, ६० देशविशेष, ६१. निर्णित, ६२. न होना, ६३. सिद्ध होना, ६४. वादविवाद, मुद्दा।

पलास[१] अपसीं फ़ना[२] करता है अव्वल | मंगे तेवूं वां ते होता है उसे बल
न सटता पात पात अपनी अगर तोड | कहां तशरीफ़[३] लेता फूल की ओड ३१०
अपस[४] कों बीज ना माटी मिलाता | ह्न्या हो कां ज़मीं ते सर उचाता
कंगी आरे तले सर को न देती | कहां जुल्फ़ां[५] कों यूं उंगल्यां में लेती
अगर मिहंदी जो अपसीं[४] ना पिसावे | उसे कौन पावूं हातां कों लगावे
अगर कूज़ा[६] जो आतिश[७] में न पडता | कहां ख़ूबां[८] के लब[९] कों वो अं-पडता[१०]
अपस में आप देख यकस कों यकस | वो कितेक बार कों बातां किए बस ३१५
जो ख़ादिम[११] देखता है सब में अंदेश[१२] | उनों में मिल को बैठा है वो दरवेश
पछाना है समज कर जो निशान्यां[१३] | कहे सो शाह सब है वो निशान्यां
रख्या ख़ादिम उसे देख सीस भुई[१४] पर | नुक़्त[१५] पर जेवूं क़लम[१६] रखता अहे सिर
ज़बां की नोक कों कर बात सूं तेज़ | हुवा शह कै सो बातां सूं गुहर[१७]-रेज़
वो कामिल[१८] था अवल ते, सुन कों यो बात | उठ्या जाने बदल ख़ादिम के[१९] संगात ३२०
कि नइं है जीव किस का तोडना ख़ूब | कि नइं है शीशए[२०]-दिल फोडना ख़ूब
हक़ीक़त[२१] कों जो कोई कयते[२२] हैं हासिल[२३] | सो बोले हैं ख़ुदा का अर्श[२४] है दिल
ककर सब सूं रज़ाले[२५] भार आया | हो दौलत[२६], शाह के दरबार आया
जो देख्या शाह उसों[२७] मिल बैस कर ज्यूं | दर्या[२८] में दिल के उस के पैस कर[२९] ज्यूं
हुनर के गोहरां सूं दिल अहे पूर | हर यक फ़न[३०] के वो मोत्यां सूं है मामूर[३१] ३२५
ज़बां दिनरात उस की बात में थी | क़लम[१६] केनाद[३२] उस के हात में थी
कहे जाहिद[३३] हिकायत[३४] रोज़ ताजा | देवे शह कों हर यक शब[३५] सूज़[३६] ताजा
जो वो दरवेश किस्सा जिस घडी कए[३७] | तो होता था शहनशाह[३८] मस्त बिन मए[३९]

---

१. पलास वृक्ष, २. नष्ट, ३. पोशाक, ४. खुदको, स्वयं, ५. बाल, केस, ६. सुराई, ७. आग, ८. प्रेयसी, ९. होंठ, १०. पहुँचना, ११. सेवक, १२. चिंतन करना, १३, चिन्ह, १४. भूमि, १५. बिन्दु, १६. लेखनी, १७. मोती डालना, १८. प्रवीण, १९. सेवक, २०. मनका शीशा, कांच, २१. सत्य, २२. करते, २३. प्राप्त, २४. सिंहासन, २५. परवानगी, २६. संपत्ति, २७. उस से, २८. समुद्र, २९. प्रवेश कर, ३०. कला, हुनर, ३१. भरा हुआ, ३२. समान, ३३. संयमी, सच्चरित, ३४. कथा, ३५. रात, ३६. जलन, ३७. कहे, ३८. सम्राट्, ३९. मद्य।

सर्ग ११ वाँ

अर्पी[१] जोयां[२] हो कर शह ने कहा दरवेश सीते[३] यूं
कहो कुच खूब उन्वान[४] की मेरे आगे तुमें कानी[५]

जो कोई धरता अहे शीरीं-ज़बानी[६] कता[७] है रात की उस धात कानी[५] ३३०
कि थी यक रात निर्मल चौदवीं रात चंदर उस रात का था सूर की धात
तफ़ावत[८] रात दिन में कुच न कर सक कंवल रहे थे नयन ना मोंच कर थक
दिखाया रात कों जेवूं दीस आरू[४५] सो रहे सब कोई मिला बाज़ू सूं बाज़ू
रह्या था रात दिन इस धात हो एक गिने जाते थे ख़शख़श दूर ते देक
सिवनहारे[९] अपस बैसे सो जागे ले मोंच आंख्यां परोवें सूई में धागे ३३५
नजूम्यां[१०] पर हुवा नें हल[११] यो माया[१२] कि क्यों चोवीस साअत[१३] का दिन आया
सके नें बोलने तहक़ीक़[१४] कोई बात जिता देखे जो उस्तरलाब[१५] ले हात
सो बैसी रात वो शह बहुत खुश हो कहा दरवेश कों यक बात बोलो
कि बातां सूं तुम्हारे हूं रोज़ तुम्हारी बात में है कुच अज़ब सोज़[१६]
कहा दरवेश आपस में आप सूं यूं हक़ीक़त[१७] मारफ़त[१८] की खोल क्यों कवूं[१९] ३४०
कि सब किस कों नई इस बात का इल्म[२०] अहे मुशकिल ख़ुदा की ज़ात[२१] का इल्म[२०]
किस्सा सुनने पो है कर शाह राग़िब[२२] लग्या कहने को यक किस्सा[२३] अज़ायब[२४]
लेकर आया हिकायत[२३] यक मजाज़ी[२५] मजाज़ी में सुनाया बात ताज़ी
दुआ[२६] के सात अव्वल[२७] लब[२८] कों खोल्या शकर सूं बी मिठी नाबात[२९] घोल्या

सर्ग १२ वाँ

हिकायत[२३] शह अंगे बोल्या जो वो दरवेश लज़्ज़त[३०] सूं
वो सुनते दिल हुवा उस का शिगुफ़्ता[३१] हौर खंदानी[३२] ३४५

बडा जो मुल्क[३३] है सब में ख़ुरासान मेरा उस मुल्क में था बाप परधान
सफ़ा-बख़्श[३४] उस की अत[३५] रोशन[३६]-ज़मीरी करे ख़ुरशीद[३७] कों नित दस्तगीरी[३८]
करे आप अक़्ल[३९] सूं मुश्किल[४०]-कुशाई धरे खुश[४१]-ख़ुल्क़ में वो सट[४२] के शाही[४३]

---

१. स्वयं, २. प्रयत्नशील, ३. से, ४. नाम, ५. कहानी, ६. मधु-वाणी, ७. कहता, ८. अंतर; फरक, ९. सीनेवाले, १०. खगोल शास्त्रज्ञ, ११. खोलना, १२. भेद, १३. घंटा. १४. सत्यान्वेषण, १५. एक यंत्र, जिस में, खगोल शास्त्र के अनुसार, चित्र निकाले जाते हैं और खगोलशास्त्री उसकी मदद से साल भर के हालात मालूम करते हैं। १६. जलन, जोश, १७. सत्य, १८. ईश्वरज्ञान, १९. कहूं, २०. ज्ञान, २१ व्यक्तिमत्त्व, २२. आकर्षित, लुब्ध, २३. कथा, २४. विचित्र, अज़ब का बहुवचन, २५. काल्पनिक, २६. प्रार्थना, २७. प्रथम, २८. होंठ, २९. वल्ली, अभिरुचि, ३१. प्रफुल्लित ३२. हंसतमुख, ३३. देश, ३४. सफ़ाई देनेवाली, ३५. अति, अतिशय, ३६. आत्मजागृत, ३७. सूर्य, ३८. सहायता, ३९. बुद्धि, ४०. कठिनता दूर करना, ४१. सदाचार, ४२. छोड़ना, ४४. राज्य, ४५. अरु, आरू—और.

फ़लातून[१] फ़हम[२] में शागिर्द[३] उस का — गदा[४] कों शाह करना बिर्द[५] उस का
ज़मीर[६] उस का अथा सूरज ते रोशन — अथा दिल साफ उस का ज्यूं कि दर्पन ३५०
जिस ठार पर तदबीर[७] का जल — अपस ते आप आते थे मुलुक चल
फ़रासत[८] सूं छुपे राज़ां[९] को खोले — अंगे छे मास कों होएगा सो बोले
उसी ते फ़हम[२] पाया था फ़लातून — अथा शागिर्द[३] उस का आफलीसून[१०]
अरस्तू[११] दर्स[१२] लेवे अक़्ल का आ — उस आंगे बूअली[१३] सो यक मुक़र्रा[१४]
हिकायत यक मैं उस ते सुन्या हूं — बचन के फूल कानां सूं चुन्या हूं ३५५
कि यक कोई पादशाह कश्मीर में था — अदालत[१५] की बहुत[१६] तदबीर में था
हुन्या[१७] था बाग़ उस के अ़द्ल[१८] का जम — चमन[१९] नित ज़ब्त[२०] का था सब्ज़ो[१७]-खुर्रम
कते थे उस के तैं सुल्तान आ़दिल[२१] — न था कोई ज़ाबिते[२०] में उस मुक़ाबिल[२२]
खडचा शाह का अ़लम[२३] था हो को शमशाद[२४] — अथा बंदा[२५] सो उस का सर्वे[२६] आज़ाद
रज़ा बिन शाह की गुल हंसने जो आवे — सुबा के हात उस टुकडे गिरावे ३६०
कधीं[२७] बे-हुक्म नर्गिस[२८] आंख खोले — दिलावे वाव[२९] के हात उस कों झोले
अगर सूसन[२८] कधीं करने मंगे बात — करे उस शाह की परवानगी सात
'हलो' कए शाह तो सर्व वां के हलते — बी हौर यक पांवूं गर अछता तो चलते
सकत नइं था जो बारे कों हर यक सू[३०] — चमन ते ले परागंदा[३१] करे बू
इशारत बिन न खोले ज़ुल्फ़[३२] सुंबल[२८] — न बोले बात तोती हौर बुलबुल ३६५
न था क़ुदरत[३३] चमन में बुलबुलां कूं — जो देखे शौख़-पन सूं फूल का मूं
गले में बाग़ के मोत्यां के हारां — रज़ा ले कर सटे अब्रे[३४]-बहारां
सर्व क़दां[३५] के क़द के नौ-निहालां[३६] — समन[२८]-रूयां[३७] के गालां के गुलालां
लगाया था अपस दिल के चमन में — वो शाह अपने सीने के फूलबन में
चमन सो तख़्त था हौर फूल था ताज[३८] — वो ऐसी धात सूं करता अथा राज ३७०

---

१. प्लेटो, २. बुद्धि, समझ, ३. शिष्य, ४. फकीर, ५. ब्रीद, ६. आत्मा, मन, ७. युक्ति, ८. बुद्धि की कुशाग्रता, ९. भेद, गुह्य, १०. नाम विशेष, ११. ॲरिस्टॉटल, १२. पाठ, १३. नाम-विशेष, १४. अभिवचन देनेवाला, १५. न्यायासन, १६. युक्ति, १७. हराभरा, १८. न्याय, १९. बाग़- २०. व्यवस्था, २१. न्यायप्रिय, २२. सामना करनेवाला, २३. झेंडा, २४. एक मजबूत और सीधा वृक्ष, २५. गुलाम, २६. वृक्षविशेष, २७. कभी, २८. फूलविशेष, २९. वायु. ३०. दिशा, ३१. फैलाना, ३२. बाल, ३३. शक्ति, ३४. वसंत ऋतु का मेघ, ३५. शरीर, ३६. नए छोटे पेड़, ३७. चेहरा, ३८. मुकुट।

सर्ग १३ वाँ

दास्तान[1]

सिफ़त[2] उस गुलो[3]-बुलबुल की अथा आशिक[4] सो उस गुल का
मुहब्बत सूं लगा कर दिल किया था आप को फ़ानी[5]

मुनज्जिन[6] अक़्त का देख ताज़ा तक़्वीम[7]   किया है बात कों इस धात तर्क़ीम[8]
निकल कर मिहर[9]-माही के शिकम[10] ते   हो यूनिस[11] के नमन[12] मफ़रूग़[13] ग़म[14] ते
दिया सों फ़ैज़[15] फिर जग कों दो-नंदां[16]   हुए फूलां शिगुफ़्ता[17] हौर खंदां[18]
जो थे ग़ुंचे के तिफ़्लां[19] नैन खोले   बंदे फूल डाल के मुर्ग़ां[20] हिंदोले   ३७५
उठ्या था फूल का सब ठार महकार   खिले थे फूल डाल्यां पर हर यक ठार
कल्यां हौर फूल मिल दिसते थे इस धात   कि ज्यूं कोई चुप है कोई करते अहैं बात
कल्यां लाले[21] की सुरभे क्यां निशान्यां   दिसे याक़ूत[22] की हो सुरमा-दान्यां
दिसे यूं फूल में लाले के काले   चवा ज्यूं लाल के प्याले में घाले[23]
दिस्या हावन कली का हो को लाला   दिसे उस में लगे त्यूं मश्क क़ाला   ३८०
पडे देख बुलबुलां आने के होलां   बंदे शबनम के मोती गुल में फूलां
हज़ारां साज़[24] कयते नग़मा-संजी[25]   लग्यां सब कोयलां गाने करंजी
चमन की देख हज़ारां ख़ुश-क़माशी[26]   लगे करने नवे मज़मून-तराशी[27]
बदल[28] के नीर सूं गुल[29] तर किए लब[30]   निछल[31] पानी सूं सब्ज़े[32] धोए मुख सब
वो ऐसे वक़्त शह मजलिस[33] किया था   इरम[34] का ज़ेब[35] मजलिस कों दिया था   ३८५
दिस्या उस ठार पर यूं वो जहां-बां[36]   कि ज्यूं फिरदोस[34] में बैठा हैं रिज़्वां[37]
यकायक बाग़बां[38] यक फूल ल्याया   हो कर बादे[39]-सबा ख़ुश[40]-बूई ढाया[41]
अथा वो बूई[42] में सब मश्क[43] के सार[44]   थे उस की बास में अंबर[45] के आसार[46]
न था मश्को-अंबर, था क़ुदरती[47] फूल   जो तिस की बास पर मजलिस रही भूल
दिया वो फूल शह के हात में ज्यूं   शिगुफ़्ता[17] हो रह्या शह फूल के त्यूं   ३९०
अज़ब[48] रहे शाह हौर शह के वज़ीरां[49]   हुए तिस फूल के सालिम[50] असीरां[51]
कह्या शह फूल देख उस बाग़बां-धीर[52]   कि अए! बन कों देवनहारे[53] सदा नीर
देख्या नैं झाड ऐसा कोई चमन[54] में   दिस्या नैं फूल ऐसा फूलबन[55] में

---

१. कहानी, २. वर्णन, ३. फूल, ४. प्रेमिक, ५. नाश होनेवाला, ६. खगोल शास्त्रज्ञ, ७. जंत्री ८. लिखना, ९. सूर्य और चंद्र, १०. पेट, ११. पुरुष विशेष, १२. समान, १३. गिराया गया, परित्यक्त' १४. दुःख, १५. विपुलता, १६. दो गुना, १७. प्रफुल्लित, १८. हंसते हुए, १९. बच्चे, २०. पक्षी, २१. फूल विशेष, २२. लाल रत्न, २३. डालना, २४. सिंगार, २५. गान करना, २६. सुशोभा, २७. ग्रंथ लेखन, २८. मेघ, २९. फूल, ३०. होंट, ३१. स्वच्छ, ३२. हरियाली, ३३. सभा, ३४. स्वर्ग, ३५. शोभा, ३६. जगत्पालक, ३७. स्वर्ग का पहरेदार देवदूत, ३८. माली, ३९. प्रातः की हवा, ४०. सुगंध, ४१. गिराना, ४२. सुगंधिता, ४३. कस्तूरी, ४४. समान, ४५. सुगंधी चूर्ण, ४६. परिणाम, प्रभाव, ४७. नैसर्गिक, ४८. आश्चर्य पूर्ण, ४९. प्रधान, ५०. सब, ५१. कैदी, ५२. ओर, ५३. देनेवाला, ५४. बाग़, ५५. उद्यान, पुष्पवाटिका।

अगर इस फूल का तूं झाड ल्याएगा
तूं ल्याकर मेरे गुलशन[1] में लगाए गा
तो बख्शिश[2] सूं करूंगा मैं मुकर्रर[3]
धन तेरा कली के नाद[4] पुर-ज़र[5] ३९५
शहनशह की ज़बां ते ज्यूं वो माली
वो झाडां के हिलालां[6] का हिलाली
सुन्या यो बात सो रख भुईं[7] उपर सिर
चल्या पानी नमन[4] ना देख कर फिर
जो माली फूल कों धुंडता चल्या सो
हर यक चमने चमन बादेसबा[8] हो
कितिक दिन के पिछे वो झाड ल्याया
लगाया झाड हौर मक़सूद[9] पाया
वो माली रोज़ उट यक फूल कों ल्याए
नज़र तल[10] शाह के गुजरानता[11] जाए ४००
क़ज़ारा[12] यक दिन उस फूल ऊपर
दिसे आसार[13] खुश्कीके सरासर[14]
कह्या शह बाग़बां सूं होको दिलगीर[15]
अहै के[16] फूल का यूं रंग तग़य्युर[17]
हुवा है क्या सबब यूं फूल सो बोल
रह्या के[16] फूल यूं मख्मूल[18] सो बोल
जवाब इस धात देता शह कों माली
अछो ताज़ी तेरी शाही[19] की डाली[20]
कि बुलबुल है चमन में एक काला
सटचा है इश्क़[25] का तिस पो जाला ४०५
यों सुन कर शह कह्या कर दिल को मांदा[15]
मंडो बुलबुल के खातिर[22] एक फांदा[23]
करो हलक़्यां[24] कों फांदे के इते[25] तंग
जो चिमटचां[26] लेवे अंख्यां तिस कने[27] मंग
बुनत में सुस्त ऐसा कर बुनो दाम[23]
जो सांपां लेवें कंचली तिस कने वाम[28]
अगर पानी कधीं[29] जाले लग अं-पडे[30]
तो मछल्यां के नमन उस ठार संपडे
अगर बारा कधीं उस दाम कन जाए
तो पंखी के नमन[4] वां आ दग़ा खाए ४१०
ले ऐसे धात का फांदा शिकारी
मंड्या उस झाड तल जा कर वो कारी
दग़ा बुलबुल कों दे फांदे में भाने[31]
कितिक हीले के डाल्या उस में दाने

१ बाग़. २ इनाम. ३ निर्धारित. ४ समान. ५ सुवर्ण-पूर्ण. ६ कलायुक्त चंद्र. ७ भूमि. ८ पूरब की हवा. ९ ध्येय. १० नीचे. ११ सामने रखना. १२ यकायक. १३ परिणाम. १४ संपूर्ण. १५ दु:खी. १६ क्यों. १७ बदला हुवा. १८ कुमलाया हुवा. १९ राज्य. २० शाखा. २१ प्रेम. २२ लिए. २३ जाला, फांसा. २४ कडियां. २५ इतने. २६ चूंटी. २७ समीप. २८ कंर्ज. २९ कभी. ३० पहूंचना. ३१ डालना.

सर्ग १४ वां

गिरफ्तन[1] व बुलबुल रा[2] पेशे-शाह[3] आवर्दन[4]
रजा ले[5] शह की जल्दी सूं चले सारे शिकारी मिल
पकड बुलबुल कों फांदे में किए महबूस[6] जिंदानी[7]

फलक[8] यक दाम[9] है, दाने सो तारे — कि कामां दाम[9] के हैं उस में सारे
फलक के दाम ते गाफिल[10] न अछना — कुई उसके काम ते गाफिल न अछना ४१५
है खासा फिअल[11] उसका बे-वफाई[12] — सदा हासिल[13] है उस ते बे-सफाई
सुबह उठ कर सुरज के तें[14] जलावे — पुनम के चांद कों निसदिन गलावे[15]
सितार्‍यां कों कधीं रखता कधीं नैं — बदल[16] कों अमन[17] देता नैं घडी कैं
सुरय्या[18] हो जो कोई बैठे हैं डेरे — बनातुन्नाश[19] कर दिन कों बिखेरें
हो अक्‍रब[20] आवतों[21] कों डंक मारे — खुशी सूं मिल के जो कोई पग पसारे ४२०
रहे हैं यार दो जान यक-तन हो — सटे जौज़ा[22] के नमने[23] उन को कर दो
वो बुलबुल ज्यूं देख्या यक बार दाने — पडे हैं जो[24] बजा उस ठार दाने
कहचा ताले[25] दिये हैं आज यारी[26] — किए हैं बख्त[25] मुज सूं साज़गारी[27]
मगर क्या बुर्ज में मेरे चंदर है — सितारे का मेरे मुज पर नज़र है
खुशी का मुज कों दिसता है बडा लाब[28] — फरागत[29] का हुवा हैं हासिल[13] असबाब[30] ४२५
वो चारा हौर यो महबूब[31] यक ठार — मिले मुंज आज दोनो खूब यक बार
बहुत राहत[29] सूं खा कर आज चारा — करूंगा फूल का बारे! नज़ारा[32]
नईं मालूम जो चारे में दंदी — कला कर बिस रख्या है पेश-बंदी
नहीं मालूम[33] जो उस ठार ल्या कर — रखे हैं ज़हर शकर में मिला कर
खुशी सूं अपने दिल में हो को गुलगुल[34] — पडचा दाने पो हो दीवाना बुलबुल ४३०
गया खाने कों दाना ज्यूं वो पग रक — पडचा फांदा गले में आ यकायक
बिचारा वो गया दाने जो खाने — लग्या फांदे में पड कर फडफडाने
तमा-दारी[35] बुरी है अए! अज़ीज़ां — नहीं कुच खूब अए साहिबे- तमीज़ां[36]
तमादारी सूं खाने जा को चारा — पडचा फांदे में जा बुलबुल बिचारा

---

१ पकडना. २ का. ३ सामने. ४ लाना. ५ सम्मति. ६ कैद किया हुवा. ७ कारावास ८ आकाश. ९ जाला. १० बे-फिकीर. ११ काम. १२ अविश्वास, श्रद्धाहीनता. १३ प्राप्त. १४ लिए. १५ पिघलाना. १६ मेघ. १७ शांति. १८ झुमका-छह सितारों का समूह. १९ सप्तर्षि. २० सब से समीप. २१ आनेवाला. २२ आसमान के बुर्ज का नाम. २३ समान. २४ स्थान स्थार पर. २५ नसीब, दैव. २६ मित्रता. २७ अनुकूलता. २८ लाभ. २९ आराम. ३० सामा. ३१ मित्र. ३२ दर्शन. ३३ ज्ञान. ३४ खुश. ३५ लालुच करना. ३६ सारसार सोचनेवाला.

तमादारी सूं आती यार ! ख़ारी[१]
तमादारी में नई है रस्तगारी[२] ४३५

तमादारी के सिर ते जो उठे हैं
वही ऐसी बलायां[३] ते छुटे हैं

गिरफ्तार उस ज़ो फांदेमें हुवा जब
लग्या यूं गुल सूं कहनेकर मुख़ातिब[४]

कि अए जीव के मेरे साती संगाती[६]
अए राहत-[७] रूह की हौर दिल के साती

तेरे रुख[८] सूं थें रोशन[९] नयन मेरे
तेरे लब[१०] सूं थे शीरीं[११] बैन[१२] मेरे

अथा तुज आ जलक ना भाग कर कैं
पडचा था छांवं हो तुज पांवं तल मैं ४४०

अथा तुज-धिर ते[१३] ताज़ा बर्ग[१४] मेरा
जुदाई[१५] में तेरी है मर्ग[१६] मेरा

पडचा है नयन तल[१७] अंधकार मेरे
रहूं क्यों तुज बदल[१८] अए यार मेरे

जिधर था तूं उधर संगात[१९] था मैं
हर यक दिनरात तेरें सात था मैं

बहूत दीसां सिते[२०] तुज मुज सलग[२१] था
तेरे साए मने मैं आज लग था

मैं संपडया[२२] हूं सो ग़म[२३] नें मुज कों अए हूर[२४]
यही ग़म है ज़ो मैं तुज ते पडचा दूर ४४५

पडचा हूं दाम में सो नें है मुश्किल
वले बिछडे सूं तेरे लहू[२५] हुवा दिल

संपड कर दाम में करने कों ज़ारी[२६]
दिखत वो दूर ते पापी शिकारी

पकड गुस्से[२५] सिते दांतां मने लब[१०]
ग़ज़ब[२७] सूं आपना गरदान[२८] कर डब[२८]

सय्चा बुलबुल पो बे-रहमी[२९] सिते[२०] हात
उसे ल्या हात पिंजरे में किया घात

इता कुच तंग था पिंजरे केरा[३०] ठार
सकत नैं था ज़ो दम निकले सूं[३१] भार[३२] ४५०

शिकारी शह को आ तसलीम[३३] कयता[३४]
वो पिंजरा शह के ल्या तसलीम कयता

जडत के भा[३५] को पिंजरे में शहनशह[३६]
रखे बुलबुल कों मजलिस में[३७] हमेशा

१ अपमानिता. २ सीधापन. ३ संकट. ४ उद्देश कर कहना. ५ साथी, मित्र. ६ सहवासी मित्र. ७ आत्मा का सुख. ८ चेहरा, मुख. ९ प्रकाशित. १० होंट. ११ मीठे, मधुर. १२ बचन, वाणी. १३ तेरी ओर. १४ पत्ता, पात. १५ वियोग. १६ मृत्यु. १७ नीचे. १८ सिवा, बिन. १९ साथ, बराबर. २० से. २१ जोडी, मित्रता. २२ हात में पडना, प्राप्त होना. २३ शोक. २४ अप्परा. २५ रक्त, ख़ून. २६ रोना. २७ क्रोध. २८ ढब बतला कर. २९ निर्दयता ३० का. ३१ उस सूं-उसमें से. ३२ बाहर. ३३ वंदन. ३४ करता. ३५ डाल कर. ३६ सम्राट्. ३७ सभा, दरबार.

सर्ग १५ वां

दीदन[1] बे-क़रारीए[2] बुलबुल व पुरसीदन[3] अहवाले[4] वू[5] व इज़हारे[6] आन[7]
पूछा पिंजरे में शहर उसकों तू कय[8] जो कएच चहता[9] है
हुवा है किस बदल[10] तू यूं निपट[11] बे-होश नादानी[12]

देख्या बुलबुल ज़ो वो दीसां नें रहे — निपट दरशन के दरवाजे बंदें गए
मुंडी पंखां में अपनी घाल[13] ले कर — लग्या रोने कों पंखां ढाल[14] ले कर ४५५
इता नित यार कों कर याद अपने — लग्या था यूं बिलकने हौर तडपने
बिछडने सूं हुवा है तलख़ जीना[15] — कमर बैठी है हौर फूटचा है सीना
पडया सो दूर में उस गुल- बदन[16] सूं — हो कर सलते[17] हैं काटे तन पो रूं रूं[18]
दुन्या दोज़ख़[19] है मुंज उस हूर[20] के बाज[21] — दिसें दिन, रात हो उस सूरके[22] बाज
पवन बिन नें है मेरा कोई महरम[23] — जो बोले फूल सूं जा कर मेरा ग़म ४६०
पवन कों कय कि अए खुश-बाश[24] यारे[25] — मेरा दुख फूल सूं टुक बोल[26] बारें
अगर अछता तो बारे का मेरा तन — मैं उड कर यां ते जाता कर हर यक फ़न[27]
कहां वो पावूं जो मैं उस तलक जावूं — वो आंख्यां कां जो मैं उसका दरस[28] पावू
सुबह उठ यूं लग्या करने कों ज़ारी[29] — देख यक दिन शाह उसकी बे-क़रारी[2]
ले कर बुलबुल के पिंजरें कों अपस हात — लग्या शह बोलने बुलबुल कों इस धात ४६५
हुआ है कै[30] तेरा ख़ातिर[31] परेशां — परेशां जीव है हौर सर परेशां
हे तुज में क्या बदल,[10] बारे की आदत — तूं कै पकडचा है बारे की ख़सालत[32]
तूं किस के नयन के खातिर[10] है बे-ख़ाब[33] — तूं किस के ज़ुल्फ के[34] बदले[10] है बे-ताब[35]
मेरी-धिर[36] बोल तूं किस का है मजनूं[37] — है किस लैला[38] की ख़ातिर[10] दिल तेरा खूं[39]
लिया है कोहकुन[40] का तूं जो पेशा[41] — लग्या है किस की नेह[42] का तुज को तेशा ४७०
भंवर तूं बोल मुंज किस फूल का है — तूं बुलबुल बोल किस मक़बूल[44] का है

अर्ज नमूदन[45] बुलबुल पेशे[46]-पादशाह

दन्या ते नयन के मोत्यां के तैं रोल[47] — दिया बुलबुल जवाब इस धात सूं खोल
भला है दुख मेरा कोई ना सुने तो — अगन के फूल मेरे ना चुने तो

---

१ देखना. २ अस्वस्थता. ३ पूछना. ४ वृत्तांत. ५ वह. ६ स्पष्ट करना. ७ उस. ८ कह. ९ चाहता. १० लिए, विना. ११ केवल. १२ मूर्खता. १३ डालना. १४ घालना, डालना. १५ असह्य. १६ फूलके शरीर का. १७ शल्य बनाना. १८ रोम, केस. १९ नरक. २० परी, अप्सरा. २१ सिवा. २२ सूर्य. २३ भेद जाननेवाला. २४ सुखी जीवनवाला. २५ मित्र. २६ क्षणमात्र. २७ कला, युक्ति. २८ दर्शन. २९ रोना. ३० क्यों. ३१ मन. ३२ आदत. ३३ अ-स्वप्न, अस्वस्थ. ३४ केस, बाल. ३५ बेचैन. ३६ ओर. ३७ दीवाना. ३८ मजनूं की प्रेयसी ३९ लहू, खून. ४० पर्वत खोदनेवाला, फरहाद की, जो शीरीन का प्रियकर था, उपाधि. ४१ धंदा. ४२ प्रेम. ४३ बढई का बसोला. ४४ पसंद किया गया, प्रेयसी. ४५ विज्ञप्ति करना. ४६ सामने. ४७ बहाना.

किसे कवूं[1] दर्द यो दिल में ज़ो है पूर[2] जमीं है सख्त[3] हौर आसमां है दूर
वही जो यो दुख जिस पर घडचा है जुकोई बिरह के फांदे में पडचा है ४७५
पछाडचां ग़म सू क्यों खाता है सो दिल वही बूजे[4] घडचा है जिस पो मुश्किल
न कये जाता, न आता है कने[5] में न कए में फायदा ना चुप रहने[6] में
हर यक तिल[7] तिल हो कर जाता हूं पीला पिरीत[8] में नें मेरा चलता है हीला
कहूं वो बात क्या मैं जीब पर ल्या वो दुख क़िस सूं कहे तो फायदा क्या
नई बुलबुल के ग़म सूं शाह कर नम[9] अपस के दो कंवल ते काड शबनम ४८०
कया अए ! ग़म के पंखीं दर्द कों झाड दिरंग[10] पर काम अपना तूं नको पाड[11]
शकर बिन खाए होता नें मीठा काम नई पडता है सच बे-मशोरत[12] काम
मेरे धीर बोल अपने जीव की बात कि शायद काम तेरा होवे मुंज हात
दिलासा शाह सूं बुलबुल जो पाया ज़बां[13] मतलब[14] के बातां सूं उचाया
लग्या कयने अवल गुज़री सो बातां बिरह खूनीं[15] ज़ो कयता[16] है सौ घाता[17] ४८५

सर्ग १६ वां

कहचा यूं शह अगे बुलबुल ज़ो कुच मतलब अथा अपना
देख्या सो इश्क़ की शिद्दत[18] हुवा सो रूप तैरानी[19]

मेरा था बाप सौदागर ख़तन का न थी परवा उसे कुच मालो धन[20] का
बडा था बहुत सब सौदागरी में अथा मशहूर सालिम[21] बंदरां में
हो कर मशहूर था सौदागरी सूं कते थे कारवां सालार[22] उस कों
पडे थे उस कने मुहरां[23] के अंबार ढिगारां[24] सूं रूपे हौर दीनार ४९०
मनां सूं था रूपा खंडचां सू सुन्ना थी लाखां अशरफ्यां करोडों सूं हुन्ना[25]
यो ना हो कर बी सौदे थे दरयाई है जिस में फाईदा देवडा[26] सवाई

१ कहूं. २ भरा हुवा. ३ कठिन. ४ समझना, जानना. ५ कहने. ६ रहने. ७ क्षणक्षण ८ प्रेम. ९ तर, गीला. १० देरी. ११ डालना. १२ मशोरे बिन. १३ जिव्हा, जीब. १४ हेतु. १५ रक्तलांछित, १६ करता. १७ संकट परंपरा. १८ अतिशयता, गरमी. १९ उडना, बे-चैनी. २० माल हौर द्रव्य. २१ पूरा, सब, सस. २२ प्रमुख. २३ मोहर. २४ ढेर. २५ होन. २६ डेढ गुना.

इते चलते थे किश्त्यां[1] हौर खडे थे
दर्यां रगडे सूं तिस के गदघडे[2] थे
सके ना क़ाफ़ल्यां के ढोए ना[3] सक
संगीनी[4] सूं ज़मीं आई थी पर टुक
सितम दो दिन जो काडचा[5] था कडा[6] वां
पडे थे बदंरां सालिम पडावां ४९५
कधीं सौदा लेकर जावे अ़रब का
कधीं शीशा लेकर आवे ह़लब का
कधीं सौदा लि जावे रूम सूं शाम[7]
कधीं जाता बंगाले पर ते आसाम
कधीं काबुल पो ते लाहोर जाता
कधी मांडू[8] कधीं माहूर[10] जाता
वतन कर चंद रोज़ अछता ख़तन में
कधीं दूकान खोले जा यमन में
तिजारत के बहुत सौरात[11] सूं वो
गया यक मरतबा[12] गुजरात कों वो ५००
अथा मैं उस सफ़र में उस के संगात
घडचा सो क्या[13] कहूं उस ठार पर घात
मेरी उस वक्त थी अव्वल जवानी
नवी अं-पडी[14] थी मुज कों शादमानी[15]
जवानी के बरस सो बीस लग है
बंदे है हद बडे ता तीस लग है
अथी उस ठार यक ज़ाहिद[16] कों बेटी
फरिश्ताखूई[17] थी आ़बिद[16] कों बेटी
चतुर, चंचल, सडक कुंतल, सुहानी[18]
न उसकों कोई था सूरत[19] में सानी[20] ५०५
कहूं क्यों मैं अलक[21] उसके सडकां
सडक में दिलकशाई के असर[22] कां
चंदर आधा, कहूं क्यों मैं पिशानी
चंदर आधा नई वैसा नुरानी[23]
भुंवां कों क्यों कहूं मिहराब[24] थे कर
वो कां है नूर[25] मिहराबां के ऊपर
कहूं क्यों उस के मैं पलखां कों तीरां
हुए नई कोई तीरां के असीरां[26]
नयन कों नरगिसां[27] कहना है ना-साज़[28]
चमनके नरगिसां में कां है वो नाज़[29] ५१०

---

१ नाव, नौका. २ भारवाही. ३ बोझ उठना. ४ वज़न, बोझ. ५ निकालना. ६ कठिन. ७ इटाली, रोम. ८ सीरिया देश. ९ मध्य प्रदेश का एक शहर. १० महाराष्ट्र, जिला नांदेड का एक ऐतिहासिक देवस्थान. ११ अपने फायदे का अतीव प्रयत्न. १२ बार. १३ कहा. १४ पहूंची. १५ सुख-चैन. आनंद. १६ साधु, भक्त. १७ देव दूतके स्वभाव की. १८ लावण्यवती. १९ आकृति. २० द्वितीय. २१ केस. २२ परिणाम, प्रभाव. २३ प्रकाशमान्. २४ खिडकी. २५ प्रकाश. २६ कैदी. २७ फूलविशेष २८ अयोग्य. २९ गर्व गुरूर.

नयन कों नरगिसां कयना है ज़ोरी[1]
कहां है नरगिसां में लाल दोरी

कली चंपे की कर नासिक कों बोल्या
वले तह्शबीह[2] में नासिक क्यों बोल्या

कहूं रुखसार[3] कों क्यों उसके लाला[4]
हर यक लाले के दरम्यानी है काला

अधर[5] कों लाल[6] है कर क्यों कहूं मैं
वो नरमी नाजकी किस लाल में नैं

दसन[7] कों क्यों कहूं अनार-दाने
अथे उस पर दिवाने हो के, दाने[8] ५१५

थुडी के सार धन[9] के सेब कां है
यो उस में इश्क का आसेब[10] कां है

कहूं जोबन[11] कों मैं क्यों कुब्बए[12] नूर
है कुब्बए नूर की उस पर बला[13] दूर

कने[14] फुल गेंद मुंज आता है अनमान[15]
करूंगा फूल के गेंद उस पर कु़रबान

कहां है करदनां[16] में उसका आकार
सटूं मैं करदनां कों उस पोते वार

कमर को क्यों कहूं मैं उसके शरज़ा[17]
कमर के सामने शरजा है हरज़ा[18] ५२०

जुकोई उस चाल कों हंस कर कया है
हंसू कर तिस पो, हंस हंसके कया[19] है

सर्व था क्यों कहूं मैं उस के कद[20] कों
अं-पडने[21] कां सकत उस हद[22] कों

मैं सिर तें पावूं लग उस मोहिनी का
कि था त्यूं क्या सिफ़त[23] करने सकूंगा

हवस[24] उस देखने का मुंज को आया
तमाशे[25] कों मेरा दिल सिर उचाया

कभीं सर-कश[26] कभीं दिलबर कहलावे
कभीं बाहर निकल मुखडा दिखावे ५२५

ज़ो याद आती अथी वो चलबली[27] मुंज
तो होती थी सीने में गुदगली मुंज

प्यारे का पिरीत प्यारा लग्या सो
पिरीत का थंड हौर बारा लग्या सो

अवल था हाल कुच आखिर[28] हुवा हौर
पिरीत की चुटपुटी[29] मुंज को लगी ज़ोर

लगे चश्मे[30] हो कर नयनां उबलने
लग्या ज्युं शमा[31] होकर ज़ीव जलने

कली नमने हुवा दिल तंग, नाशाद[32]
हुवा तुकडे गरीबां[33] फूल के नाद ५३०

धुवां आहां[34] का सिर पर हो बदल[35] छाए
गरम भापां सूं होंटां पर छाले आए

पिरीत की आग सूं दिल जल हुआ राक
सबूरी[36] को जो था दामन[37] हुवा चाक[38]

सो उस अवतारा[39] पदमन[40] ज़ात बदले
तबीअतके[41] मेरे सब धात बदले

ज़ईफ[42] ऐसा हुवा उस दर्द सूं मैं
अजल[43] मुंज पैरहन[44] में धुंड सके नैं

---

१ शक्ति (ज़ुल्म). २ उपमा. ३ गाल. ४ फूलविशेष. ५ होंट. ६ रत्नविशेष, पोवला. ७ दांत. ८ बुद्धिमान्. ९ प्रेयसी, प्रिया १० धोका, दुःख. ११ कुचद्वय. १२ गेंद, गोल वस्तु. १३ संकट. १४ कहने. १५ द्विधावृत्ति होना. १६ व्याघ्र १७ करदली १८ नुकसान. १९ कहा. २० शरीर. २१ पहूंचने. २२ मर्यादा. २३ वर्णन. २४ अभिलाषा. २५ दर्शन. २६ बागी, विरोधक. २७ चंचला. २८ अंतिम. २९ लगाव, आकर्षण. ३० झरना. ३१ दीप. ३२ दुःखी. ३३ पल्लू. ३४ दुःखनिश्वास. ३५ मेघ. ३६ सहनशीलता. ३७ पल्लू. ३८ फटना. ३९ अवतार अर्थात् रूपवती ४० पद्मिनी ४१ वृत्ति ४२ बूढा. ४३ मौत. ४४ पोशाक.

...४

समज कर रहे जु-कोई थे हम-क़रीनां[1] लगी देने गवाही[2] आसतीनां ५३५
लगे कहने हर यक कोई भा[3] को भाना[4] वदे[5] जाता फलाने का फलाना
जो उसकों देखने का मुंज हुवा ज़ौक़[6] जो आया दिल मने मेरे उबल शौक़
हर यक निस जावूं उस धन की गली कों हलूं छुपकर देखूं उस चलबली[7] कों
सिने[8] में अपने दम को सांद ले[9]कर कमर कों खींच दामन बांद ले कर
न देखे कोई त्यूं आहिस्ता[10] दिक दिक चलूं इस कांद[11] ते उस कांद कों लक[12] ५४०
तुरंग पर शौक़ के हो सवार हर निस पियादा जावूं घर लग देखने तिस
यकेला उस गली में कोई न दूजां चलूं मैं चांदनी में धूप की जा[13]
कर उस चंदर-बदन के घर तरफ़ मूं हर यक निस नयन के तारे बिखेरूं
हर यक शब ग़म सूं मैं वो थी अछे जहां धुवें सूं आह[14] की बांदूं खला[15] वां
करूं हर शब नयन सूं आब-पाशी[16] उसासां[17] की करूं दम सूँ फ़राशी[18] ५४५
कितिक दिन के पिछें उमीदुका सूर मेरे बख्तां के नयनां कों दिया नूर
नसीबां मुंज सूं ज्यूं आख़िर[19] हुए यार मेरी ताले[20] केरा[21] आया सो रुक[22] बार[23]
यकायक झांक कर देखी मुंजे नार मेरे हौर उसके दो दीदें[24] हुए चार
नज़र का बाज[25] उडचा सो अब न रुक सक हवा में हुस्न[26] के उस के रहचा थक
गया सो दिश्ट[27] का आहू[28] निकल कर पडचा उस मुख के गुलशन[29] में फिसल कर ५५०
उसे देख इश्क़ सूं मेरा भुल्या दिल हमन दोनों के दिल रहे एक हो मिल
हुई सो मिहरबां[30] आख़िर परीज़ाद[31] करूं ज्यूं याद मैं वो बी करे याद
कधीं मैं सिर सूं चालता जाऊं उस लग कधीं वो बी रखे मुंज नयन पर पग
कधीं मैं उस के जाता था क़दम कन कधीं मेरा करे वो घर बी रोशन
कधीं अंपडावूं[32] मैं उसे घर लिजा कर कधीं अं-पडाए वो बी मुंज घर आ कर ५५५
कधीं इस धात सूं सब निस गुज़रते कधीं जा[33] पर न्हते लोकां के डर तें
कधीं कोई ना सुने तेवूं बात करते हलूं बातां इशारत सात करते
कधीं मिल[34] मुसक टचां में दोनों आते यकस कों एक देख नज़रां चुराते
कधीं देखे यकस का एक दीदार[35] पसार आंख्यां पलक कों ना पलक मार

१ सगे, रिशतादार. २ साक्ष. ३ डालना. ४ बहाना. ५ वधा जाता, मारा जाता. ६ अभिरुचि. ७ सुचंचला. ८ छाती. ९ सांधना, व्यवस्थित करना. १० शनैः. ११ दीवार. १२ लग, तक. १३ स्थान. १४ दुःश्वास. १५ धान्य को भूस से अलग करने का स्थान. १६ जलसिंचन. १७ श्वासोच्छवास. १८ झाड्ना. १९ अंतिम. २० दैव. २१ का. २२ वृक्ष; झाड. २३ फल. २४ नयन. २५ शिकारी पक्षी. २६ सौंदर्य. २७ दृष्टि. २८ हिरन. २९ उद्यान. ३० कृपालु. ३१ अप्सराकन्या. ३२ पहुंचाना. ३३ स्थान ३४ मुख आदि छुपाना. ३५ दर्शन.

व-हर-हाल[1] उस रविश[2] सूं मिल हमें दो मुहब्बत सूं रहे थे एक दिल हो ५६०
यकायक यो ख़बर ज़ाहिद[3] को अं-पडाए युं उस के धीर जा चाडी[4] कोई खाए
नई कुच खूब है चाडी का चाला[5] है चाडी-खोर का मूं जग में काला
लग्या[3] ज़ाहिद खबर सुन तलमलाने[6] अपस में आप पछाडचां ग़म सूं खाने
हया[7] पर का उडचा यो सुन को सर-पोश[8] हुए उस होश[9] के तबकां फ़रामोश[10]
लिख्या है सो अं-पडता है वलेकिन[11] न्हता[12] नें जीव रोने हौर पीटने बिन ५६५
पडचा सो शरम का गोहर निकल कर दन्या[13] ग़ीरत[14] केरा[15] आया उबल कर
लिए देख आबरू[7] जग में नसीबां उचाने आबरू की आग जीवां
कते हैं जीव तो प्यारा अहे शरम खुदा सब की रखनहारा है शरम
हो कर सब खलक़[16] की कसरत[17] सूं तनहा[18] वो जा हुजरे[19] मने खिलवत[20] सूं तनहा
ख़डचा यक पावूं पर हो सर्व की धात पसार अपने दो हातां मंग मुनाजात[21] ५७०
मंग्या सूरत[22] हमारीं होने तबदील[23] मंग्या मूरत हमारी होए तबदील
थे रहमत के खुले उस दिन केवाडां खुले थे फ़ैज़ के उस छन केवाडां
दुआ ज्यूं तीर हो उस की सिहर[24] हो सिपर[25] में सातों अंबर के गुज़र गई
इजाबत[26] कें शाने[27] पर लगी सूद कबूलियत के शाने पर लगी सूद
हुवा मैं मातमी[28] कसवत[29] सूं बुलबुल हुई ज़ाहिद की बेटी सूरतें-गुल[30] ५७५
हुई है तौ[31] ते मुंज में दर्द[32]-नाकी गई नैं तौ ते उसकी सीना[33]-चाकी
है मुंज में तव ते सुंबल[34] के नमन ताव[35] वो नरगिस के नमन है तौं ते बे-ख़ाब[36]
दुआ सूं ख़तम[37] बुलबुल बात कों कर कया यूं मुख्तसर[38] इस धात कों कर
कहूं क्या मैं तुजे मालूम है सब है मेरे बख़्त[39] हौर तेरी नज़र अब

---

१ एवंच. २ रीति, पद्धति. ३ संयमी. ४ चुगली. ५ चाळा (मराठी)-कोई काम जो अनावश्यक किया जाय. ६ व्यथित होना. ७ शरम, लज्जा. ८ आच्छादन, ढक्कन. ९ ज्ञान, जानकारी. १० भूला गया. ११ किन्तु. १२ रहता. १३ समुद्र, दर्या. १४ लज्जा का अभिमान. १५ का. १६ प्राणिमात्र. १७ अगणितता. बहुसंख्या. १८ अकेला. १९ कमरा, २० एकान्त. २१ ईश्वर-प्रार्थना. २२ आकृति. २३ बदलना. २४ जादू. २५ ढाल. २६ सम्मति, मंजूरी. २७ कंधा, स्कंध. २८ शोक करने वाला. २९ लिबास, पोशाक. ३० फूलकी आकृति. ३१ तव. ३२ दुःखावेग. ३३ छाती फट जाना. ३४ फूलविशेष. ३५ गरमी ताप, ३६ बे-चैन. ३७ अंत. ३८ संक्षिप्त. ३९ नसीब, दैव.

सर्ग १७ वां

बाज़[1] आमदन[2] गुलो-बुलबुल व सूरते[3] अव्वल व हर दो रा[4] निकाह[5] करदन[6]
अंगोठी इस्मे-आज़म[7] की लेकर शह हात में अपने
फिराया गुलो-बुलबुल पर हुए फिर शकले-इनसानी[8] ५८०

सुन्या सो बात वो शह याद कर — खजीने-दार[9] कों अपने बुला कर
कह्या जा उस अंगोठी कों ले कर आ — दुआ[10] जिस में लिखी है जो असर[11] का
अगर ममसूख[12] पर उस कों फिरावे — तो सूरत में अव्वल के फिर को आवें
वो शह फरमाए[13] तेवूं[14] जा एक खाज़िन[9] — कन्या हाज़िर[15] अंगोठी कों उसी छन
अंगोठी ले वज़ू[16] अव्वल पकड कर — वहां ते आयतुल्कुरसी[17] कों[18] पड कर ५८५
गुलो-बुलबुल कों शह अंगे मंगाया — दोनों पर सूं अंगोठी कों फिराया
खुदा के फैज़ सूं ज्यूं थे अवल वो — हुए फिर आदम्यां की शकल सूं वो
यकस ते एक थे साहिब-जमालां[19] — यकस ते एक थे रोशन[20] हिलालां[21]
कये हर कोई दोनों का निछा[22] मूं — कि यो लैला अहैं हौर वो सो मजनूं
दोनो कों देख आया हर किसे याद — मगर ऐसेच थे शीरीं व फर्हाद ५९०
मगर दुन्यां में फिर कर आए हैं क्या — कते थे जिन के तैं यूसुफ जुलेखा
देखत यो हाल शह हो कर बहुत शाद[23] — लग्या लब[24] खोल हंसने फूल के नाद
तुजे करता हूं अए करतार सिजदा[25] — कन्या शह शुक्र[26] का दो बार सिजदा
अवल बारी[27] हुए यो फिर को आदम[28] — असर धरता अहे दूजा सो खातिम[29]
दोनो कों शाह दिखलाने कों फिर चाह[30] — किया चावां[31] सूं दोनोका मिला ब्याह ५९५
मरातिब[32] दे बडा उसकों किया शाह — हुज़ूर्यां[33] में उसे जागा दिया शाह
सुबह उठ शह की वो खिदमत मने आए — किस्यां[34] सूं रोज़ शह का वक्त बहलाए

---
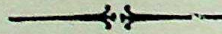
१ पुनश्च. २ आना. ३ आकृति से. ४ दोनों में हर एकका. ५ विवाह ६ करना. ७ श्रेष्ठ व्यक्ति. ८ मनुष्याकृति. ९ कोशाधिकारी. १० आशीर्वाद. ११ प्रभाव. १२ एक योनि से दुसरी आकृति में गया हुवा. १३ आज्ञा करें. १४ तैसा. १५ उपस्थित. १६ नमाज के पहले हाथ-पैर धोना. १७ कुरान के श्लोक. १८ पढ़ना. १९ सौंदर्यवान्. २० प्रकाशमान. २१ चंद्र. २२ ताकना. २३ संतुष्ट. २४ होंट. २५ झुक कर वंदना. २६ धन्यवाद. २७ ईश्वर. २८ मनुष्य. २९ अंत करनेवाला. ३० खुशी, प्रीति ३१ जोश. ३२ मानसन्मान. ३३ दरबारी अधिकारी. ३४ कथा.

सर्ग १८ वां

कह्या शह उस हुजूऱ्यां[1] को सुखन[2] न यक खूब कर मुंज ते
कि जिस सूं दफ़ा[3] ग़म[4] होवे अछे बी राहते-जानी[5]

जु कोई धरता है बातां का फ़िरासत[6] कता है यूं हिकायत[7] में हिकायत
कि यक निस उस हुजूरी कों कया[8] राज तुं किस्सा बोल यक मुंज सामने आज ६००
जो अछना इश्क़ के कुच उस मने काम कि कामां इश्क़ के है सब तुजे फ़ाम[9]
बिरह हौर भोग के अछना यो दो फ़न कि उस फ़न का है तुज पर हाल रोशन
अदब सूं शमा के नमने खडा हो हिकायत सूज़[10] का यक यूं कया वो
सुन्या हूं पादशाह था कोई अव्वल सितार्‍यां सूं ज्यादा था उसे दल
सरब का बल[11] उस उपर था मुसल्लिम[12] बुंदां मे हूं[13] के दिसे उस दल अंगे कम ६०५
बुज़ुर्गी में सुरज ते मुहतशम[14] था उसे ज़र्‍यां[15] सिते अगला[16] हशम[17] था
वो शह यक दीस मजलिस कों भरा कर जो बेठ्या तख्त[18] के उपराल आ कर
खबर अं-पडाए ल्या ऐसे में शह कों किए आगाह[19] आ ऐसे में शह कों
कि यक कोई चीन सूं आया है नक्काश[20] पछत्तर नक्श लक[21] ल्याया है नक्काश
सुन्या शह ज्यूं यकायक चीन का नावूं पडच्या ग़म में फिसल कर ऐश[22] का पावूं ६१०
वज़ीर यक उस तरफ लश्कर ले संगीन[23] गया था मुल्क लेने चीन का छीन
ख़बर नैं आई थी लई दिन ते वहां की सुनी नैं गई थी बात उस की ज़बां की
अपस कों जग में दिखलानें कों हलका कहां बैठ्या है लें कर मुल्क बलका[24]
शहनशह बहुत उस पर बद-गुमां[25] हो अंदेशे[26] सूं दिस्या शह ज्यूं कहां हो
हुवा शह[27] गर्क़ यूं इस फिक्र[28] में बैस कि जाता ल्हवा[29] ज्यूं म्यान में पैस[30] ६१५
जु कोई फिर पड को जो बदलाए ईमान तिरअंदाज[31] उस कों करता हौर क़ुर्बान[32]
जु कोई उपकार यकस का ना करे याद फलक छीले उसे ज्यूं रंग के नाद
अंदेशा खूब नैं कर दिल में ल्या कर नदीम[33] यक था सो बोल्या उस बुला कर
हिंकायत बोल कर यक दफ़ा कर ग़म तुं दिल सूं हर सनद यो रफ़ा कर ग़म
अवल ते वो समजता था हिंकायत मुनासिब[34] सात बोल्या यक रिवायत[35] ६२०

---

१ दरबारी, सरदार. २ साहित्य, वाणी. ३ दूर ४ दुःख. ५ दिलको आराम. ६ बुद्धिमत्ता. ७ कथा. ८ कहा, ९ ज्ञात, मालूम. १० जलन, दर्द. ११ सेना १२ सिद्ध, मान्य. १३ मेघ, वर्षा. १४ वैभवशाली. १५ कंकर. १६ श्रेष्ठतर. १७ सैन्य. १८ गद्दी. १९ ज्ञात, परिचित. २० चित्रकार. २१ लाख, लक्ष. २२ सुख, आराम. २३ बहुत बडा. २४ जबरदस्ती से कब्जा कर लेना. २५ दुःशंकित. २६ डर. २७ डूबना. २८ चिंता. २९ तलवार. ३० प्रवेश करना. ३१ धनुर्धारी. ३२ अर्पित. ३३ साथी. ३४ योग्य. ३५ चली आई रीति, कथा.

सर्ग १९ वां

दर बयान[१] गुफ्तन[२] जोगी पेशे[३] पादशह नक्ले[४] रूह व आमोख़्तने[५] वू[६]

हिकायत खूब यक शह के हुनर-मंदी[७] सूं बोल्या
सिकाया था उसे जोगी मन्तर सो नक्ले रूहानी[४]

क़लम[८] करता[८] अहै नक्ल[९] ऐसे फ़न[१०] सूं	करे ज्यूं रूह कों वो नक्ले-तन[११] सूं	
कि यक राजा बडा कोई गौड[१२] में था	हुनर हौर फहम[१२] के लई[१३] दौड में था	
अथा वो मुअतक़द[१४] जोग्यां सूं दायम[१५]	मिले वो ख़ाक[१६] के भोग्यां[१६] सूं दायम	
अथी जोग्यां सूं बहुत उस ईतिबारी[१७]	करे हर मुल्क के जोग्यां सूं यारी[१८]	६२५
सट्या था उस रविश[१९] का शाह पाया	सो यक दिन एक जोगी कोई आया	
लगा गातां कों मुदरी[२१] हौर[२१] चकरी	संकी[२२] यक हत मने यक हात खुपरी[२३]	
हर यक मुदरा सो ज्यूं सूरज चंदर था	खले[२४] के नाद उस हत का चकर था	
संकी कौसो-क़ज़ह[२५] के सार रंगदार	खुपर था उस कने खुश देव के सार	
लगा कर अब्र[२६] सा तन के उपर ख़ाक[२७]	दिस्या यूं भुई पी ज्यूं उतऱ्या है अफ़लाक[२८]	६३०
अपीं जा घर कों ल्याया शह बुला कर	लग्या अहवाल पूछन बैसला[२९] कर	
कि कां अछते तुमें किस ठार ते आए	करम[३०] लई[१३] था जो दरशन हम को दिखलाए	
कया जोगी हमें साए के मानें	हमें हैं कौन आने हौर जाने	
जुकुच करता सो हक़[३१] करता, नहीं हौर	है हात उसके हमारे नात[३२] की डोर	
ब-हर-हल[३३] उस रख्या शह दे मरातिब[३४]	कन्या घेवू दूद[३५] उस कों रोज़ रातिब	६३५
दिख्या जो शाह का जोगी बहुत प्यार	कह्या मैं बी करूं उस पर एक उपकार	
मन्तर सिखलाइया[३६] यक काड कर भेद	अथा जिस में जो नक़ले[४] रूह का भेद	
मंगे तो जिस्म[३७] में हर किस के जाना	मंगे त्यूं फिर कर अपने तन में आना	
अगर उडने मंगे तो होए रावां[३८]	हरन होवे तो फिरने कर को पावां	
वजीर उस शाह कन था एक कामिल[३९]	हर यक तदबीर[४०] में था बहुत फ़ाज़िल[४१]	६४०
क़ज़ारा[४२] उस दिनां में यक क़ुबल[४३] काम	घडचा सो बेग[४४] आया दे सर-अंजाम[४५]	
क़्या शह इस पो हो कर बहुत खुशहाल	जुकुच मंगता सो मंग अए नेक-अफ़ाल[४६]	

---

१ वर्णन. २ बोलना. ३ सामने. ४ आत्म का शरीरान्तर. ५ आवृत्ति करना, फिरसे कहना. ६ वह- ७ कलाभिज्ञता. ८ ग्रंथ लिखना, लिखना. ९ अनुवाद. १० कला. ११ एक शरीर से दूसरे में जाना. १२ गौड देश. बंगाल. १३ बहुत. १४ श्रद्धालु. १५ हमेशा. १६ मृत्तिका के, भोगी-मनुष्य. १७ विश्वास. १८ मित्रता. १९ चालचलन. २० गात्र, अवयव चक्र. २१ मुद्रा, चक्र. २२ शंख. २३ खोपरी, कशकोल. २४ खला. २५ इद्र धनुष्य, आकाश-धनु. २६ बादल, मेघ. २७ मृत्तिका. २८ आकाश-फलक का बहुवचन. २९ बिठा कर. ३० कृपा. ३१ ईश्वर. ३२ नथनी, नाक ३३ एवंच. ३४ सन्मान. ३५ घी और दूध ३६ सिखलाया ३७ शरीर. ३८ तोता. ३९ पूरा, कलाभिज्ञ. ४० युक्ति. ४१ विद्वान्. ४२ फौरन, प्रसंगवशात्. ४३ कठिन. ४४ जल्दी, त्वरा. ४५ पूरा करना. ४६ शुभकृति.

वो यूं फिर शह सूं बोल्या सीस भुई[1] धर   तेरी हिम्मत सूं कम नें सीम[2] हौर ज़र[3]
करम[4] बख्शिश[5] तूं अपने लिए कन्या है   मंगू क्या सब तेरा दौलत भन्या है
हुनर जो शाह आसमानी[6] सिके हैं   जो नक्ले रूह आज़माने[7] सिके हैं   ६४५
नज़र रख मुंज कमीने[8] के उपर शाह   अ़जब नें है करें तो उस सूं आगाह[9]
अहै शह इ़लम[10] हौर हिकमत[11] में ज्यूं यम[12]   नहीं   क़तरे सूं होता है दर्या कम
हुनर के है गगन का शाह ज्यूं भान[13]   नईं सूरज कों यक ज़र्रे[14] सूं नुक़सान[15]
सुन्या सो शह सरासर[16] उस सूं यो बात   लग्या अंदेशने[17] ला कान कों हात
कया यो मैं हुनर जो इस कों सिकलावूं   दिए त्यूं मूं में ज्यूं सांप के पांवूं   ६५०
यो बातां यूं है देना उस कों आं-पड   कए त्यूं है फतर आ पावूं पर पड
बिकट त्यूं बी यो बात उसकों दिखाना   है जाती सो बला कों ज्यूं बुलाना
वले बोल्या हूँ मैं हर कुच मंगो कर   मेरी बख्शिश सूं दिल अपना रंगोकर
न बोलूंगा तो आती है दुरोग़ी[18]   दुरोग़ी में है हासिल[19] बे-फ़ुरोगी[20]
अगर शाहां जो झूटी बात ल्याएंगे   जगत में कौन शाहां को पत्याएंगे[22]   ६५५
यो बातां शह समज ले कर सब अव्वल   कया उस सूं ख़ुदा पर करे तवक्कुल[22]

सर्ग २० वां

हरन के तन में ज्यूं शहने सटचा परधान के सामन जा
वो सगा ने[23] कीना-वर[24] हो कर दिखाया फेल[25] शैतानी[26]

हवस-नाक[27] उस बचन का नित हवस कर   लगाया बात के पंखी कों यूं पर
गवी[28] ते शक़[29] के ज्यूं सूर का बाग[30]   जो निकल्या मूं सूं अपने काडता आग
हिरन मिहताब[31] का खा ताव[32] यकदम   जो फिरता था गगन-सहरा[33] में बे-ग़म[34]   ६६०
निकल कर बाज[35] आया सूर का जब   सिताऱ्यां के वगोले उड गए सब
किया शह सैद[36] का उस दीस आहंग[37]   चरिंदे हौर परिंदे का देखन रंग
शही का ताज[38] अपनी सीस पर धर   ख़याल[39] ऐसे तुरंग पर सवार हो कर
चल्या लश्कर कों ले सब अपने संगात   अथा वो बी वजीर उस शाह के सात

१ भूमि. २ चांदी. ६ मुवर्ण. ४ कृपा. ५ इनाम, देना. ६ दैवी, स्वर्गीय. ७ परीक्षा.
करना. ८ नीच, कनिष्ठ. ९ परिचित, ज्ञात. १० ज्ञान. ११ युक्ति, १२ यमदेवता १३ भानु–
सूर्य. १४ कंकर, कण. १५ हानि. १६ परिपूर्ण. १७ शंकित होना. १८ झूट बोलना, असत्यता
१९ प्राप्त. २० अंधकार. २१ विश्वास रखना (प्रत्यय से क्रियापद). २२ विश्वास रखना भरोसा
करना. २३ कुत्ता. २४ दुष्ट, मक्कार. २५ काम. २६ शैतान, पिशाच्च का. २७ अभिलाषा से
भरा हुवा. २८ गुफ़्क़ा, गुहा. २९ पूर्वदिशा ३० व्याघ्र. ३१ चांद. ३२ जोश. ३३ वालुका प्रदेश
३४ सुख से. ताप, गरमी ३५ पुनश्च. ३६ शिकार. ३७ आवाज़. ३८ मुकुट, ३९ कल्पना, विचार.

बे-हर-हाल[1] उस तरफ था एक जंगल   अथे बार[2] उस दिनां में फूल हौर फल   ६६५
दिस्या वैसे रविश[3] चौफेर छा कर   खड्या है ज्यूं मगर अस्मान[4] आ कर
इता वो दाट था जंगल जो खोल आंक   न था कुदरतैं सुरज कों देखने झांक
अगर बारा कधीं[6] वां पैस[7] कर जाए   न पावे सीस कों वां बैस[8] कर जाए
कि छाया था सो वैं चारो कुधन[9] वो   सुहावे में दिस्या सब कों गगन हो
दिसे यूं हो को फूल उस ठार सारे   गगन पर जगमगाते ज्यूं सितारे   ६७०
दिसे उडते सो पंख्यां के वहां दल[10]   चले ज्यूं तोल[11] सूं बारे के बादल
ज़मीं पर वां के बसते थे चरिंदे[12]   गगन कों ढांप[13] लेते थे परिंदे[14]
ले लश्कर शाह उस जंगल में पैठ्यों   सितार्‍यां सूं चंद बादल में बैठ्या
हवस का दरस अज़बर[15] कनहारे   सियाह-गोशां[16] कों तक्त्यां ते उतारे
हत्यां के पीट ते झूलां कों काडे   कित्यां के गल ते देते खोल नाडे   ६७५
हरन चितला कार्‍यां कों करे चूर   लगावे ठोक वैं पेटां हुए दूर
सियह-गोशां को देख वहशी सियह-गोश   हुए बे-होश कर होशां फरामोश[17]
जिते सब तन के पंख्यां सात काले   दिसे यूं ज्यूं चरिंद्यां के हो जाले
कित्यां के दांत थे बलकि दरांत्यां[18]   चरिंद्यां के थे चुंगल में दरांत्यां
यक यक कों दूर ते यक यक कों दिखलाए   हलूं नज़दीक ज्यूं चीते चले आए   ६८०
चिते दिखला कों आपसीं कर ग़लोले[19]   पडे चितलां पो हो तोपां के गोले
किते हरनां पो यूं कयते[20] उडानां   अगन के जिस रविश[3] उडते हैं बानां
सिया॰-गोशां चिकार्‍यां पर पडें यूं   कमानां ते जो तीरां छूटते ज्यूं
हर यक नवार्‍यां[21] में हर यक ठार   ज़ंगल के वहश्यां[22] कों यूं सटे मार
लग्यां बहने नद्यां लहू के वहां सब   ज़मी लहू सूं चिकड हुई जां तां सब   ६८५
पडे देख जानवर भुईं के उपर दाट   हमल[23] न्हाट्या पकड असमान की बाट
बचा ले कर अपस कों उस ख़तर[24] ते   छुपे पाताल में जा गाय डर ते
हवा पर देखते पंख्यां कों जोर्‍यां[25]   चुकाए[26] पांवूं सूं बाजा[27] की डोर्‍यां

---

१. संक्षेपतः २. हंगाम. ३ चालचलन. ४ परन्तु. ५ शक्ति. ६ कभी. ७ प्रवेशना, घुसना बैठना. ९ चारों ओर. १० समूह. ११ वजन. १२ पशु. १६ छाना, छा जाना. १४ पक्षी. १५ ८ मुखोद्गत. १६ पशुविशेष. १७ भूलना. १८ घांस काटने का हतयार. १९ चीत्कार. २० करते. २१ धनुष्य खींचना. २२ पशु. २३ गर्भ. २४ भीति, संकट. २५ जुल्म, शक्ति. २६ चुकाना, टालना २७ शिकारी पक्षी, ससाना.

हवस-नाकां[1] दिखा कर अपनी आवाज़ — देते चुमकार[2] कर बाश्यां कों परवाज़
कितिक होस्यां[1] अथें उस फन में कारे — कलक अंख्यां पो तो बहन्या के काडे ६९०
यो ना होकर बी यक-धिर लोक थोडे — चिमोटे खोल कर लकडां को छोडे
तरमत्यां हौर शकऱ्यां कों सटे मूठ — हुए जा कर पंख्यां के सात झटपूट
हलूं पंख्यां के दिखला दूर ते मूं — उडाए यक तरफ ते शाहिनां[3] कों
वो शाहीन यूं चले पंख्यां के[4] दंबाल — दुआ ज्यूं कामिलां[5] की जावे उपराल
ज़मीं पर आन[6] यूं पंख्यां सिते[7] मिल — कंज़ा[8] ज्यूं आस्मां ते होवे नाज़िल[9] ६९५
सिने पर नोक रख पंख्यां मने ढांप[10] — लगे टटनी गले चुंगल सिते झांप
हुमां देख हाल पंख्यां का नज़र सूं — रहचा किस की नज़र ना पड को डर सूं
पंख्यां के पांवू हौर पंख्यां के लहू सूं — दिस्या म्हेवूं[11] हौर बारा हो को सब कों
दिखत मुर्गां कों सारी[12] के बहाने — छुप्या सीमुर्ग[13] जा[14] कोहकाफ[15] म्याने
हवा वां का परिंद्यां सात कर पाक — ज़मी वां की चरिंद्यां सात कर पाक ७००
हुवा रग़बत[16] जो घर का शाह कों[17] ग़ालिब — फिऱ्या वां तें ले शाही के[18] मरातिब[19]
क़ज़ा[8] कैसी खडी देखत थी उस पर — कि ज्यूं लगती बला[20] आ कोई उस पर
कऱ्या सो काम आखिर अपना तक़दीर[21] — पडचा शह एक-धीर हौर लश्कर यक धीर
वजीर उस बाज[22] नैं था शाह कन[23] कोई — ज़ुहल उस बिन न था उस माह[25] कन कोई
यकायक देखता है बाट में तो — पडचा है यक हरन जीव अपना खो ७०५
रह्या है जीव सूं तन हो के खाली — न थी कुच तन मने दम की[26] उबाली
ह़ले क्यों तन कि जीव का खेल नैं था — बती सारी[27] थी अमा[28] तेल नैं था
कया[29] शह तन सट अपना उस मने जाऊं — हुनर क्या है सो ब ारे आज़मावूं[30]
चुंगल पकडावूं टुक हरन्यां के सारे — फिरूं ले पेटसूं[31] हरन्यां कों सारे
हवस[32] उस बात का ज्यूं मन में आया — अपस का जीव हरन के तन में भाया[33] ७१०
हरन हो कर चल्या ज्यूं सैर कों शाह — चल्या फिरने कों ज्यूं आसमान पर माह[34]

१ अभिलाषी. २ पशुओं कों बुलाने की आवाज़. ३ शिकारी पक्षी, ससाना, ४ पीछे. ५ ज्ञाता, स्थितप्रज्ञ. ६ आनना, आना. ७ से. ८ मौत. ९ अवतीर्ण होना, उतरना. १० छुपाना, ढोकन. ११ मेघ. १२ बहना, गति से जाना. १३ गरूड. १४ काल्पनिक पर्वतविशेष, १५ में. १६ इच्छां. १७ प्रबल. १८ राज्य. १९ सन्मान, २० संकट. २१ दैव, नसीब. २२ विना. २३ समीप. २४ शनि ग्रह. २५ चंद्र. २६ जोश. २७ पूरी. २८ किन्तु. २९ कहा. ३० परीक्षा करना. ३१ गर्भिणी (मराठी–पोटीशी) ३२ अभिलाष, इच्छा. ३३ डालना. ३४ निजी

वजीर उस शाह के देखा जो तन कों सुलखन जीव के उस पैरहन[१] कों

उमस[२] उस सल्तनत का दिल में आया हुकूमत का हवस उस तिल[३] में आया

वली-निअमत[४] सूं अपने हो बद-अंदेश[५] बदल देखो क्या किया नोश[६] सूं नैश[७]

न बाकी देख दिल जरा जसद[८] में सय्या जीव अपना शह के जसद में ७१५

मुबारक[९] तन में शह के ज्यूं वो आया सुने के जाम[१०] में ज्यूं[११] ज़हर भाया[१२]

जसद अपना खडग सूं तोडकर सट हरन कर शाह कों, शाही किया गट[१३]

जो सवरात[१४] आ को उसके दिल में दाटी मुरव्वत[१५] की सटचा आंख्यां में माटी

नमकखारी का सब अपना धरम छोड नमक खा कर नमक-दानी[१६] सटचा फोड

वफ़ादारी[१७] की सब सट दिल ते सफाई कन्या साहिब[१८] सूं अपने बे-वफाई[१९] ७२०

चडचा सो हात शह का पाक तन वो सुलेमां हो चल्या वैं अहरमन वो

वो मक्कार[२०] उस मसनद[२१] सूं सल्तनत[२२] ले हलूं दे तख्त[२१] बैठचा मुम्लिकत[२२] ले

सर्ग २१ वां

चल्या वो बद-गुहर[२३] वां ते महल में शह के, रानीं कन
समज उस की खसालत[२४] कों रखी थी अपसीं[२५] गरदानी[२६]

थीरानी शाह कों यक सतवंती[२७] नावूं चंदर सूरज नईं देखे कधीं छावूं

नइं पकडी थी घर किस के कधीं बाट कधीं कर देखने का दिल में सौरात[१४] ७२५

कधीं दरपन में जो मुख देखने जाए देख अपनी नयन के पुतल्यां कों शरमाए

कधीं लेवे कंगी जो खोलने बाल नमूना है पंजे का कर देवे डाल

कधीं नरगिस जो पडती थी नयन तल अपस के खींचती थी मुख पो आंचल

सदा शाकिर[२८] थी उस की गत[२९] पो बीव्यां सतवां[३०] खात्यां थ्यां तिस की सत[३१] पो बीव्यां

वो सत की सतवंती अवतार नारी सत्यां का मान सत[२७] रकने हारी ७३०

जो देखी वो चलन्त हौर उसकी वो चाल कही खाली[३२] खलल[३३] सूं नैं है यो हाल[३४]

कि लगता है मुंजें वो शाह यो नैं संभालूं बा रे मृम्किन है तलक मैं

---

१ पोशाक. २ हिम्मत. ३ क्षण, छन. ४ युवराज. ५ बुरा विचार करना, दुष्ट इच्छा. ६ पीना. ७ डंख, काटना जहरेले पशु का. ८ शरीर. ९ पवित्र. १० प्याला. ११ विष. १२ भाना–डालना. १३ बलकाना, अयोग्य रीतिसे कब्जा करना. १४ स्वार्थ. १५ प्रेम-मनुष्यता १६ नमक को पहचानना, निष्ठावान् रहना. १७ निष्ठा, विश्वास रखना. १८ स्वामी. १९ विश्वासघात. २० धोकेबाज़. २१ २१ गद्दी. २२ राज्य. २३ दुष्ट मोतीं. २४ स्वभाव. २५ निजी. २६ घूमना, चक्कर लगाना. २७ सती. २८ धन्यवाद देनेवाला. २९ चाल. ३० सती होने का निश्चय करना. ३१ सतीत्व. ३२ रिक्त, विना: ३३ डर. ३४ अवस्था.

नईं वो खूब जो होना पशीमां[१] संभालूं गर तो किया है उस में नुकसां
वो करनें कों जो आव सेज[२] पर चाल हुनर सूं सतवंती देवे उसे टाल
ग़रज़मंदी के ले ले आवे जो फन करे भान्या सूं दफ़ऊलवक्त[४] वो धन[५] ७३५
चडया सो दिन ब-दिन वैं बिरह का भार उसे दिखलाए अपसीं को कव[६] बीमार
न दी वो सत-भरी किस बात का राह पडी बिरहे में निसदिन कींचती आह[७]
थी अपस में अपी रोती व तपती रही निर्जीव हो, उस जीव कों जपती[८]
लगी घटने वो चंदर हो को दिनरात सुनो यां ते कता हूं जीव की बात

सर्ग २२ वां

नवल[९] नमूदन[१०] बादशहा रूह[११] दर[१२] जिस्मे–आहू[१३] व अज़[१४] जिस्मे–आहू[१३] दर[१२] जिस्मे–तोती[१५]

हरन का तैर[१६] हो कर शाह उडया अपने महल पर ज्यूं
फिर एक तदबीर[१७] सीते[१४] वो दिस्या आ शक्ले इन्सानी[१८] ७४०

कितिक दिन हो हरन वो शाह भोला रह्या था सब किसी सूं हो अभोला[१९]
हरन के तन में शह का जीव था यूं रहता है मश्क-तर[२०] नाफे[२१] मने ज्यूं
दिल अपना तंग कर नाफे के नमने[२२] घटे खूने-जिगर[२३] नाफे के नमने
जो ग़म जिस वक़्त दिल में याद आवे हरन कैं शाख़ नमने पेच खावे
झुके नित देख अपस के पांवूं आपीं बिचकता[२४] था देख अपनी छांवूं आपीं ७४५
न कर सक दर्द दिल का किस सूं जाहिर[२५] गुसे[२६] सूं हर घडी वो शाह साबिर[२७]
बजुज़[२८] साया न देख संगात बी कोई दरीगी[२९] सूं कए यूं दिल में होर रोए
ख़ुदा उस कों देवेगा क्या भली बाट किया है जिन जंगल में यो कलाघात[३०]
देखो अव्वल वो क्यों ख़ूबी सूं पेश आ बुराई दिल में क्यों सितमी[३१] अंदेशा[३२]
कर अव्वल गरम मुंज सूं दोसती कों किया मुंज सर्द[३३] आख़िर दुश्मनी सूं ७५०
समज नैं था बला यूं ला को भाएगा[३४] बला में था दग़ा यां दे को जाएगा
बहरहाल[३५] सनद[३६] चंद रोज़ था शाह सो देखा रह में यक तोती कों नागाह[३७]

---

१ लज्जित, शर्मिंदा. २ शय्या. ३ बहाना. ४ समय टालना. ५ प्रेयसी, सुंदरी, ६ कह, बता कर. ७ दुःखके निःश्वास. ८ जप करती. ९ वर्णन. १० आविष्कृत होना. ११ आत्मा. १२ में. १३ हिरन का शरीर. १४ से. १५ तोती का शरीर. १६ पक्षी, परिंदा- १६ युक्ति. १८ मनुष्याकृति. १९ न बोलने वाला (मराठी–अबोला). २० कस्तूरी. ३१ नाभी. २२ समान. २३ हृदय का रक्त. २४ डर कर भागना. २५ स्पष्ट. २३ क्रोध. २७ सहनशील. २८ सिवा, विना. २९ डर, भीति. ३० झगडा. ३१ जुल्मी, दुष्ट. ३२ सोचना, विचार करना. ३३ ठंडा. ३४ डालना. ३५ एवं च. ३६ समान. ३७ यकायक.

न हलता है न जलता है मुवा था — तमाम, उडने सूं, काम उस का हुवा था
देख उस शह दिल में ल्याया अब यो अहै खूब — कि तोती सूं करूं मैं अपसीं मन्सूब[1]
जो हर किस सूं सकूं कयने[2] कों मक्सूद[3] — मेरा इस काम में बेगी[4] अछे सूद[5] ७५५
गोंद अपने दिल मनें इस बात का हार — मदन के नाद रावें[6] पर हो असवार[7]
जुदा[8] यक जिंदगानी[9] का पकड मत[10] — खिज़र के नाद[11] कयता[12] सब्ज़[13] कसवत[14]
कर अपने रूह[11] का तोती पो साया — ज़मर्रुद[15] के नवे पिंजरे में भाया[17]
फिरा कर भेस[14] आहू[18] का हुवा तैर[19] — यकायक वैं उडचा सो वो सुब्रक[20] सैर
शिकारी का वहां नजदीक था घर — पकड कर बेचता था वो जनावर[21] ७६०
उसी के घर के जा उपराल उतऱ्या — वईं बातां मने दर-हाल[34] उतऱ्या
शिकारी देख पकडने कों ब-ज़िद[22] हो — लग्या करने कों फांदा[23] मुस्तअद[24] हो
तुरत[25] रावां ख़याल उस का समज कर — उचा गरदन मुंडी कों अपनी कज कर[26]
किया यूं वो अपस के राज़[27] कों खोल — उठचा यूं वो बुलंद आवाज़ सूं बोल
कि अए ! पिंजरे हमारे नित धरनहार — हमन ऐस्यां के अए निसदिन तलबगार[28] ७६५
पकडने के बदल[29] हील्यां सूं मुंज कों — मशक्कत[30] खींचता है क्या सबब[31] तूं
सितम[32] आया हूं तेरे दाम[33] में मैं — अपी हो इस पडचा हूं काम मे मैं
वलेकिन बेच तूं मुंज शाह के पास — दो लक हूं मैं न दे गर कम हो यक कास[31]
कर ऐसा शर्त रावां उस सूं दर-हाल[34] — किया अपसीं हवाले उस कों दर हाल
बिचारा वो जो यक बार उस कों पाया — लग्या यूं उस के तन में जान आया ७७०
शिताबी[4] सूं ले जा उस शाह कों दे — फिर अपने घर कों आया माल व धन ले
शकरसी सुन के उस रावे की गुफ़्तार[35] — रहचा हैरां[36] हो वो शाह मक्कार[37]
मिठी बातां सूं रख उस का मिठू नांवूं — रख्या उस सतवंती रहती थी जिस ठांवूं
शकर की वो छुरी है कर न जान्या — खराबी अपनी है कर नै पछान्या

---

१ संबंधित. २ कहना. ३ हेतु. ४ जल्द, त्वरित. ५ फायदा. ६ तोता. ७ घोडसवार, सवार ८ अलग. ९ जीवन. १० राय. ११ समान. १२ करता. १३ हरा. १४ पोशाक. १५ आत्मा. १६ रत्नविशेष. १७ डालना. १८ हिरन. १९ पक्षी. २० हलका. २१ प्राणी. २० आग्रह से. २३ जाला. २४ सिद्ध. २५ फौरन, जल्दही. २६ टेढी. २७ गुह्य भेद. २८ मांगनेवाला. २९ लिए. ३० कष्ट. ३१ कारण. ३२ जुल्म. ३३ एक प्रकार का घास (मराठी काशा). ३४ तुरन्त, त्वरित. ३५ बातचीत. ३६ आश्चर्यचकित. ३७ धोकेबाज.

अथा चंद[1] रोज़ ब्रा रे वहां वो रावां   देखे पिंजरे में सूं नित झांकता वां   ७७५
कितिक दिन के पिछे फुरसत कों पाकर   ज़बा आहस्ता[2] नरमी सूं उचा कर
कया[3] उस धन सिते अए सर्व आझाद   जवानी का हुवा कै रंग बरबाद
रह्या नैं जुल्फ के सुंबल केरा ताब   गया रुखसार[4] के कै[5] फूलका आब[6]
हुवा ख़म[7] कै[5] बनफ्शा के नमन क़द[8]   जो करता था सदा वो सर्व कों रद
कली के नाद दिल कै है तेरा तंग   गुले-सूरी[9] नमन कै ज़र्द[10] है रंग   ७८०
लग्या है तुज कों किस के दर्द का तीर   हुवा कै ग़म सूं गिलकर[11] दिल तेरा नीर
तेरे दो नयन क्यां दिसत्यां थे बायां   पडी कै मह के[12] नमने मुख पो छायां
जले सो दिल सूं अपने मार कर आह[13]   देती फिर कर जवाब इस धात वो माह[12]
कि सब आ़लम[14] उपर रोशन है यो बात   दिवा नैं सो सुहावे[15] किस सनद[16] रात
जव[17] नइं जिस के अछेगा मूं में तंबूल[18]   वो क्योंकर ख़ूब[19] दिसता मूं, सो तूं बोल   ७८५
जो ना फिरता अछें जिस तन मने दम[20]   क्यों अछना तूंच उसका बोल आ़लम[21]
बिरह में जीव देना बहूत आसाँ   है ज़ीना पीव बिन मुश्किल ककर जान
परेशानी मने गरचे अ़लम[22] हूं   मुहब्बत में वले साबित-क़दम[23] हूं
अगरचि शमा[24] के नमने जली हूं   वले जागे ते अपने नैं हली हूं
जो तोती कायम[23] उस यारी[25] में देख्या   मुहब्बत की वफादारी[26] में देख्या   ७९०
अंझू[27] मोत्यां के अपसी ढाल कर ढाल   कया खोल उस के धीर गुजऱ्या सो अहवाल[28]
कया तोती ने यूं उस सतभरी[29] कों   हया[30] के आस्मां के मुश्तरी[31] कों
जु आवेगा तेरे कन वो नीलाजा[32]   उसूं यूं बोल नैं है तूं वो राजा
गुमां[34] आता है तुज पर मुज कों हर छन   कि धरता था वो नक्ले-रूह[35] का फ़न[36]
मुजे गाहे[37] दिखाता था वो आ़क़िल[38]   दिखा उस फन में गर तूं है जो कामिल[39]   ७९५
दिखाने वो हुनर आएगा तो काफ़िर[40]   मुई क़मरी[41] कों उस के सामने धर
करे जब रूह कों ना होए त्यूं फाम[42]   वहां ते मैं समजता हूं मेरा काम

---

१ कुछ. २ हलू. ३ कहा. ४ गाल. ५ क्यों. ६ पानी. ७ झुका हुवा. ८ शरीर. ९
सूरी का फूल. १० पीला ११ पिघलना. १२ चंद्र. १३ दुःखनिश्वास. १४ जग. १५ शोभा देना.
१६ प्रकार. १७ जब. १८ ताम्बुल, पान. १९ सुंदर. २० प्राण. २१ अवस्था, स्थिति. २२ झेंडा,
ध्वज. २३ स्थिर, मज़बूत पांवू की. २४ दीप. २५ मित्रता २३ निष्ठा. २७ अभी (मराठी अजून.)
२८ वृत्तांत. ९ सती, पतिव्रता. ३० इज़्ज़त, लज्जा. ३१ गुरु (ग्रह.) ३२ निर्लज्ज. ३३ उस सूं-
उस से. ६४ शंका. ३५ आत्मा का शरीरान्तर. ३६ कला, युक्ति. ३७ कभी कभी. ३८ बुद्धिमान्. ३९
पूरा. ४० ईश्वर को एक और कुरान को, न माननेवाला. ४१ पक्षीविशेष. ४२ समझ,

हरम़[1] में यक दिन आया सो वो कोल[2]
सकी थी त्यूं सकी उस सूं उठी बोल

उछल पड कर कह्या हुज्जत[3] उपर आ
तुं क्यों मुंज आज़माती[4] है सो आज़मा

मुई[5] क़मरी कों ल्या कर दरमियाने[6]
सटी, सटते हैं ज्यूं कोई आज़माने ८००

हुनर का अपने दिखलाने के तें ज़ोर
सट्या क़मरी में अपना रूह वो कोर[7]

वो तोती अपने अस्ली[8] तन कों देख्या
जो ख़ाली[9] गैर[10] सूं मसकन[11] को देख्या

अपस का जीव दरहाल[12] उस में पाड्या
पकड कर टांग क़मरी कों पछाड्या

सुलेमां के नमन फिर तख़्त[13] बैठ्या
ख़ुशी हौर ऐश का ले रख़्त[14] बैठ्या

दुन्या फिर कर करी साज़े-अरूसी[15]
लगे करने कों सारे तख़्त-बोसी[16] ८०५

घड्या सो दुख सरासर[17] खोलकर मूं
कन्या इज़हार[18] अपना शाह सब सूं

यकायक कोई वजीर ऐसे मने आ
अवल मदहो-सना[19] शह का बजा ला

कया शह कों कि अए फर्ख़ुंदा-ताले[20]
गया बद-बख़्त[21] वो यूं हो को ज़ाए[22]

जो यक शह भूल कर औरत के उपराल
हुवा ज्यूं सल्तनत[23] कों खो को पाएमाल[24]

यो सुन कर बात शहगंउस धीर कर रुख़
उसे यूं फिर को पूछया शाहे-फ़र्रुख़[25] ८१०

भुल्या औरत पो वो कोताह-बीन[26] क्यों
गवाया हात सूं अपनी नगीं[27] क्यों

किसा सुनने पो है गर शाह का मन
लग्या कयने वो किस्सा शहके सामने[28]

हुवा है इश्क़ का जिस कों इशारत[29]
वो ऐसे हुस्न का ल्याता इबारत[30]

---

१ घर का स्त्रियों के रहने का भाग. २ शूकर, सुअर नीच ३ वाद-विवाद, झगडा. ४ परीक्षा करना. ५ मृत. ६ सामने. ७ आंधा, गंवार, निर्दय. ८ मूल. ९ रिक्त. १० दूसरा, शत्रु. ११ शरीर. १२ तुरन्त, त्वरित. १३ गद्दी. १४ सामान, माल. १५ वधू, दुलहन का सामान. १६ गद्दी, सिंहासन को चुमना. १७ पूरा. १८ स्पष्ट करना. १९ स्तुति. २० सुदैवी. २१ दुर्दैवी. २२ बेकार, नष्ट. २३ राज्य. २४ नष्ट, पैरोंतले खुंदलना. २५ पवित्र, सुदैवी राजा. २६ अदूरदृष्टि, तंगनज़र. २७ अंगोठी में बिठाया रत्न. २८ सामने. २९ इशारा. ३० लेखन.

सर्ग २३ वां

गुफ्तन[1] वजीर हिकायते[2] समन्बर व हुमायून बादशाह

सिफत[3] दिलबर[4] समनबर की हुमायून था फिदा जिस पर
कि जिस के हुस्न[5] खूबी[6] की सना[7] करते हैं मह[8] भानी[9]

करनहारा दो[10] ज़ीबां[10] सात तक़रीर[11] पिरत की बात यूं करता है तहरीर[12] ८१५
कि यक कोई शाह था मुल्के अ़जम[13] में अथा मशहूर हातिम सूं करम[14] में
ख़जिल[15] था उस सख़ावत[16] के अंगे सूर अथा बख्शिश[17] अंगे शरमिंदा[15] समदूर[18]
जु खोले दान सूं जब हात दानी[19] अभाला[20] रश्क[21] सूं होते थे पानी
करम में देख शाह का जोरे-बाज़ू[22] धरें सर भुई[23] लव्हे[24] के आ तराज़ू
इता कुच था सकत उस बख़्त-वर[25] कों करम सूं मोम करता था फतर कों ८२०
करम का गरम था बाज़ार उस सूं धरम का ताज़ा था गुलज़ार[26] उस सूं
अथी उस बादशाह कों एक बेटी सुलख्खन भागवंती नेक बेटी
कये क्यों कोई उस कों नेक दुख़्तर[27] न थी दुख़्तर अथी वो नेक[28] अख़्तर
न थी अख्तर, इरम[29] की शहपरी[30] थी परी नैं थी, गगन की मुश्तरी[31] थी
नई थी मुश्तरी, थी नाज़नीने[32] हूर[33] नई थी हुर, सर ते पांवूं लग नूर[34] ८२५
सिफत[3] करते थे हर यक कोई अमा[35] वलेकिन[35] हुस्न उसका था मुअ़म्मा[36]
कितिक उस चलबली के देख कंठल[37] लगाते थे चिरागां[38] हौर मशअ़ल[39]
कितिक करते थे देख उस की भवां कूं अपस में आप दस्त-बोसी[40] खुश्यां सूं
नयन हौर बाल देख उस के किते जान बरशकाले के मिल करते थे सामान
नज़र पडती जो थी नासिक सुंदर की तो जाती थी सुद[41] उड हर यक भंवर की ८३०
कते थे उस के लब[42] हर कोई निछा कर यो वो है जिस गया धुंडने सिकंदर
जु कोई बातां सुने सो उस सुंदर की सटे भारां बंगाले की शकर की
गला जो कोई सुने सो उस सुमन का हवस[43] करते थे फिरने कों चमन का
हंसी में रैन[44] कों जब आए वों धन[4] परोत्यां थ्यां कित्या पोत[45] उसकि सामन
कित्यां करत्यां अथ्यां उस रुख़[46] मने देख लगा काजल कों शोखी की सिधी रेख ८३५

---

१ बोलना. २ कहानी. ३ वर्णन. ४ प्रेयसी. ५ सुंदरता. ६ गुणवत्ता. ७ स्तुति. ८ बडा, महा. ९ भाण, नाटक लिखने वाले १० जिस को दो जीब, जिव्हा होते हैं, लेखनी, कलम. ११ बखान, व्याख्यान. १२ लिखना. १३ अरबस्तान के सिवा दूसरा देश, ईराण. १४ कृपा, उदारता. १५ लज्जित. १६ उदारता. १७ दान. १८ समुद्र. १९ देनेवाला. २० मेघ, बादल. २१ असूया, मत्सर. २२ हात की शक्ति. २३ भूमि, ज़मीन. २४ लोहा. २५ सुदैवी. २६ बाग़. २७ बेटी. २८ सद्गुणी चंदनी, सितारा. २९ स्वर्ग. ३० अप्सरा. ३१ शुक्र नाम का ग्रह. ३२ स्त्री. ३३ अप्सरा. ३४ प्रकाश. ३५ किन्तु. ३६ गूढ. ३७ कंठाला, कंठमाला, गले का रत्नहार. ३८ दीप. ३९ बडा दीप. ४० हात चूमना. ४१ शुद्धि, ज्ञान (मराठी सुद). ४२ होंट. ४३ अभिलापा. ४४ रात. ४५ स्त्रियों के गले में डालने की मणीओं की माला (मराठी–पोत.) ४६ दिशा. ४७ खिलाडीपन, विनोद.

कितिक उस धन के मुख के सामने आ देखें मांगा कों पेशानी पो बिसला[1]
सिफत सुन उस के ज़ोबन[2] के फुलारे रहे गुंदने सूं गेंदा हात सारे
पछानेगा वई उस की कमर कूं देख्या है जो जवानी की नज़र सूं
कमर हौर चाल देख हर यक कोई कये यो दो ज़िद[3] मिल को क्यों यक ठार पर रहे
कते थे देख हर यक कोई वो क़द[4] हुवा है जिस सूं सिहरे[5]-सामरी[6] रद ८४०
चरन नाज़ुक हर यक कोई उस के देख कर लगाने अपने जाते थे सर उपर
गर आवे नीर कन वो निस कों फिरते तो खुलते थे कंवल सब यक-धिर ते
सुलख्खन नांवूं उस का था समन्बर[7] अथा उस ज़ुल्फ[8] सूं अंबर मुअत्तर
जो था मुख नूर बे-अंदाज़ा[10] उस का पड्या शहारे शहर आवाज़ा[11] उस का
दिया सो नूर उस का सूर कों नूर हुई यो बात मुल्के मुलुक मशहूर ८४५
सुने सो शोर [12] लोकां चौ-कुधन[13] के जो थे पूरब पछम उत्तर दखिन के

सर्ग २४ वां

दर[14] बयाने[15] आशिक–शुदन[16] फीरोजशाह

बयाने इश्क़[17] हुमायूं[18] का है उस माशूक़[19] से मिलता
यकस का रूप यक देख कर हुए सो आशिके जानी[20]

कते यक मिस्र[21] में था शाहज़ादा[22] अथा सूरत[23] में यूसुफ ते ज्यादा
नज़ाकत में रुख़[24] उस का जो यक फूल वो बल्कि फूलते था खूब मक्बूल[25]
मुख उस का था निका ज्यूं शमे[26]-खूबां थे परवाने तिस उपर जमा[28] खूबां[29] ८५०
पडे मुख-शमा[30] का उस के उजाला अथा रोगन जगत का उस सूँ थाला
सिफ़त[31] उस क़द[32]की करने कों किसे हद[33] बुलंद[34] तारीफ सूं था वो बुलंद केद
उसूं[35] थी नित सर्ग की कारसाजी[36] उसी ते सर्व की जम[37] सर्वफेराजी[38]

---

१ बिठाना. २ कुच, स्तन. ३ परस्पर विरोधी. ४ शरीर. ५ जादू. ६ जादूगर (विशेष नाम) ७ समन– एक फूल और वर-श्रेष्ठ. श्रेष्ठ फूल जैसे शरीर की नारी. ८ बाल, केस. ९ सुंगधी वस्तु विशेष. १० अतिशय, बहूतही. ११ कीर्ति. १२ गडबड, हलचल. १३ चारों और. १४ में. १५ वर्णन. १६ लुब्ध होना. १७ प्रेम. १८ शुभ. १९ प्रेयसी. २० सच्चे, प्राणके प्रेमी. २१ ईजिप्त. २२ राजपुत्र. २३ आकृति. २४ चेहरा. २५ सन्मान्य, पसंद. २६ केवल. २७ प्रेयसी रूपी दीप. २८ एकत्रित. २९ सुंदर. ३० दीप. ३१ वर्णन. ३२ शरीर. ३३ मर्यादा, शक्ति. ३४ ऊंचा. ३५ उस सूं. ३६ काम बनाना, कारोबार. ३७ नित्य. ३८ मान सन्मान.

हर यक कोई देख ताज़ा भवां के उसके तक़्ती[1] कये ख़ूबी के फ़र्मा[3] का है तवक़ी[4]
उग्या सो उस की रुख़[5] पर ताज़ा रीहां[6] दिस्या रीहान देख रीहां को हैरां[7] ८५५
जवानी के चमन में ताज़ो-तर[8] दम्या[9] था ताज़गी का सब्ज़ां[10] यक-सर[11]
वो सब्ज़ा लब[12] उपर उसके दिसे यूं ख़िजर चश्मे[13] कन बैठ्या है ज्यूं
सियाही[14] यूं दिसे उसके अधर पर कि ज्यूं बैठ्यां अहैं चिमट्यां शकर पर
नयन दो सुल्स[15] के ऐन थे ज्यूं 'साद' देख उस नासिक अलिफ़[16] आता अथा याद
दसन[17] में 'शीन' था, उस लब[12] में था 'बे' अलामत[18] हुस्न के थे उस में सगले[19] ८६०
सुन्या वो जान[20] ज्यूं उस नार की बात सो आया देखने का दिल में सौरात[21]
जु आई उस सिफ़त[22] के फूल की बास लग्या तिस देखने का दिल कों विस्वास
उचाट्या[23] दिल सो उस चौसार[24] का वैं चल्या मां-बाप सूं, हो यार का वैं
दिया सट माल उस धन की ख़ातिर[25] ख़राब अपसीं किया उस धन की ख़ातिर
मुसाफ़िर हो पिरत का घर सूं निकल्या बिरहवंदी[26] की बिस के डर सूं निकल्या ८६५
करे सो जोश दिल में इश्क़ की आग हो वैरागी[27] लिया सर अपने वैराग
पिरत के लोट[28] अंगे ना चल को चारा चल्या माटी उडाता हो को बारा
नईं कर वस्ल[29] का उस बाज[30] तदबीर किया रुख़[31] उस सुंदर के मुल्क के धीर
मशक़्क़त[32] सूं कितीक निसदिन चल्या सो बहर हाल[33] अं—पड्या उस शहर कों वो
वहां जो देखता है तो हर यक ठार हुवा है आशिकां सूं शहर गुलज़ार ८७०
कितिक रुख़सार[5] सूं उस धन के ल्या ध्यान करे हैं फूल के नमने गरीबान[34]
कितिक सूसन नमन कर धन-कुधन[35] मूं [36]सिफ़त करते थे उस का सौ जबां सूं
कितिक उस धन के क़द कों दिल में कर याद खड़े यक पावूं पर हो सर्व के नाद[37]
कितिक ले ना-उमीदी का निपट[38] दर्द करें हैं दमको अपने बाव[39] सर्द
न रक सक उन बी अपने इश्क़ का सोज़[40] महल कन उस के जाता था शबो-रोज़[41] ८७५
अदिक बे-ज़ार हो जीने[42] सूं अपने जले दिल हौर जले सीने सूं अपने
सुवह उठ सोज़ सू जाले गगन कों उडावे आह[43] क्यां चिंगारियां कों

---

१ बनावट, सु-रेखा-पन. २ सुंदरता. ३ आज्ञा. ४ स्वाक्षरी करना. ५ गाल. ६ फूलविशेष. ७ परेशान, विचलित. ८ हरेभरे. ९ दबाना, दूर करना. १० हरियाली. ११ पूरा १२ होंट. १३ झरना. १४ कालापन. १५ अक्षर शैली, आंखों को नाद की उपमा दी है। १६ फारसी लिपि का आद्य अक्षर. १७ दांत. १८ चिन्ह. १९ सब (मराठी-सगळे) २० प्रेमी. २१ अभिलाषा. २२ गुण. २२ मन उठ जाना, बे-चैन होना (मराठी) २४ सियाना. २५ लिए. २९ बिरहवान्, बिरही. २७ जिस का दिल संसार से उठ गया हो. (मराठी) २८ पानी की बाढ़. २९ दो प्रेमियोंका मिलाप. ३० सिवा. ३१ मुख ३२ कष्ट ३३ किसी प्रकार, ३४ पोशाक. ३५ प्रेयसी की ओर. ३६ वर्णन. ३७ समान. ३८ केवल. ३९ वायु. ४० जलन, दर्द. ४१ रातदिन. ४२ जीवन. ४३ दुःखनिश्वास.

...६

नयन ते कालवे लहू के बहावे — शफक़[1] के नाद कर दामन[2] दिखावे
कए नित यूं अए मेरे बख्त[3] के सूर — अजूं[4] कब[5] लग न देसी नयन कों नूर
चंदर ऐसा सुंदर दिखला को रुखसार[6] — नयन सूं दूर कर मेरे तूं अंदकार ८८०
गगन ते हुस्न के ज्यूं चांद भार आ — अंख्यां सूं दूर कर मेरी अंधारा
वो चंचल एक दिन देखे जो जीता — अछे जा वां महल तल[7] मुज कों मीता[8]
कितिक दिन यूं वां रोता अछे जा — रगत अजवां[9] सूं मुख धोता अछे जा
अथा निसदिन उसी दुख सूं बिलकता — लव्हे[10] के त्यूं अंगारा हो सुलगता
जो ताले[11] उस के देखे खोल कर आंक — वो चंचल एक दिन देखी उसे झांक ८८५
उधर से उन बी देख्या सो यकायक — हुए बे-ताब[12] दोनो दिल न रख सक
उधर ते तीर निकली सो नज़र सूं — गई हो साफ़ सीने के सिपर[13] सूं
नज़र आ रूबरू[14] जिस तल जो बांदे — पडे जा दोनो बी[15] यकबार फांदे
निछा आहस्ता घूंघट खोल उस कों — उठी धन नाज़[16] सूं यूं बोल उस को
कि तूं कां का है आया कां ते इस ठार — उचानें आशिकी[17] का सर उपर भार ८९०
नईं है खूब तूं इस ठार आना — अपस कों सब में रुसवा[18] कर दिखाना
सुनेंगे गर मेरे मां-बाप यो बात — रवा[19] रखसी[19] न[19] तुज मुंज कों किसी धात
बचा ले, जा, अपस इस ठार ते तूं — हो फारिग़[20] इस बला[21] के भार ते तूं
देखी आशिक़ को इस धातां सूं कस कर — पिरत के धात की बातां सूं कस कर
जबां सूं बोलती थी गरचि इस धात — वले नैं दी समजने जीव की बात ८९५
वले दिल में अथी उस ते उताली — समजने उस न दी अपसीं संभाली
कसे बिन बी समज होना नई ज़र[22] — समज होवे पो बी कसना है बिहतर[23]
यो बात उस ते सुन्या ज्यूं वो परेशां — लगी मौत उस के आंगे बहुत आसां
दिल अज़माने कों जो उस का वो धन आई — छुपा कर रुख़ पो का तिल[24] जुल्फ[25] दिखलाई
लग्या वो यूं उसे जो मुर्ग़[26] दिल का — बग़ैर[27] दाना पडे त्यूं दाम में ज़ा ९००
करी सो नाज़ सूं यक बात वो धन — हलूं देख उस कों वैं थरकाए[28] नयन

---

१ संध्या. २ पल्लू. ३ नसीब, दैव. ४ अभी (मराठी-अजून) ५ कब. ६ गाल, मुख. ७ नीचे. ८ मित्र. ९ आंसूं, अश्रू. १० लोहा. ११ नसीब. १२ बेचैन. १३ ढाल. १४ आमने सामने १५ भी. (मराठी-बी) १६ गर्व. १७ प्रेमी-पन. १८ बदनाम होना. १९ योग्य न समझेंगे. २० मुक्त. २१ संकट. २२ सुवर्ण २३ ज्यादा अच्छा. २४ शरीर पर का छोटासा काला दाग़. २५ बाल. २६ पक्षी २७ विना. २८ कम्पित होते.

दिस्या वो यूं कि करने जीव आसान   खंजर[1] कों नाज़[2] के जानो दिए सान[3]

दर बयाने जवा[4] बदन आशिको माशूक रा[5]

यो बातां ज्यूं सुन्या वो ला-उबाली[6]   हुवा रंग जाफरानी जा गुलाली
कया अए मोहिनी आ इश्क़ तेरा   दिया है दिल में मेरे जव[7] ते डेरा
लग्या सो बात्र मुज तेरे पिरत का   पडच्या तुट कर सुतूं[8] दिल की सकत का ९०५
पिरत तेरा हुवा सो मुंज सूं लटपट   लिया वैताग[9] सर, राहत[10] दिया सट
है मेरा बाप गरचि मिस्त्र[11] का राज   वले आख्यां मेन्यां हैं रूदे-नील[12] आज
मेरा तो नांवूं है गरचि हुमायूं   वले बिरहे सूं तेरे दिल है पुर-खूं[13]
सुनी थी नांवूं वो अवल ते नारी   समज कर बी लगाई चित सूं यारी
लग्या सो चित उतम उस शह-परी[14] कों   तरद्दुद[15] दिल में कर वैं सरवरी[16] कों ९१०
कई[17] नरमी सूं, दिल में शौक़ कों रक   पिरत की तगभगी[18] दिल में न रक सक
कई तूं यक चमन का है निछल फूल   मैं यक बन की कली केवली हूं मक्बूल[19]
अहै यक बुर्ज का तूं सूर जोती[20]   हुं मैं यक दुर्ज की[21] सुढाल[22] मोती
सुन्या सो होश सट फिर होश में आ   कया उस धन सूं उन[23] फिर सूं सो आन[24] खा[24]
जु कोई मालिक ज़ो है, तुज साफ दिल का   जु कोई खालिक[25] जो है मुंज आबो-गुल का[26] ९१५
है शाहिद[27] वो कि मेरी झूट नैं बात   पिरत में दिल सूं ल्याया हूं सात
अपस का है ककर मुंज मान ले तूं   मेरी इस बात कों सच मान ले तूं
देख उस में इश्क़ के चाले उबाली   उतर आ कर हलूं सोने सूं लाली
सचा आशिक़ है अपना कर पछानी   अपी बी हुई दिवाने की दिवानी
उसक्यां के नमनें वो बी यार की हुई   अपी बे-यार ते उस यार की हुई ९२०
बज़्म[28] की उस परी कों तिस परी सूं   गमत[29] होने लग्या कैं आसरे सूं
वले मालूम नैं था वो किसे कुच   कि क्यों पकडच्या सो उस बाली के दो कुच
नईं बूज़ी[30] थी कोई दवता है कर कर   दग़ा दे कर दिया सो उन उसे कर
नईं देखे बीं कोई धन का होने हार   वो भाया[31] सो गले में बांह[32] के हार
सुने की है कि पितली देखने गुन   कसोटी पर कस्या सो सच के उन ९२५

---

१ छोटी तलवार. २ गर्व. ३ तीक्ष्ण करना. ४ उत्तर देना. ५ को. ६ असीम जोशवाला. ७ जब. ८ खंबा, स्तंभ. ९ हर बात से मन उठ जाना. १० आराम. ११ ईजिप्त. १२ नील नदी का प्रवाह. १३ रक्त से भरा हुवा. १४ उत्तम अप्सरा. १५ चिंता. १६ सेवा. १७ कही. १८ बे-चैन (मराठी-तगमग). १९ मान्य. २० प्रकाशमान. २१ संदूक, पेटी. २२ पानीदार, सुरेख. २३ वह. २४ सौगंध लें (मराठी-आण खाणे). २५ निर्माता. २६ पानी और फूल. २७ साक्षी. २८ सभा. २९ मज़ा ३० समझना. ३१ पसंद आना. ३२ बाज़ू, हात.

नई समजी थी कोई क्योंकर कस्या सो	पिरत में उस के खि़ल्वत[1] में घस्या सो	
अग़रचि ज़ाहिरा[2] दिसते थे तन दो	वले बातिन[3] मने थे एक दिल वो	
कितिक दिन ते यकस के एक मंजूर[4]	यकस के एक थे दरशन पो मसरूर[5]	
चली इस धात सूं चोरी कितिक दीस	गुपत सूं इश्क़ की जोरी कितिक दीस	
हुवा यो राज़[6] सब आलम[7] पो ज़ाहिर	पडी सो बात यो परदे सूं बाहिर	९३०
किए यक निस दोनों मिल मशौरत[8] यूं	विचारे आपना दोनो पिरत यूं	
देखे नयन लक यकस कों एक बे-ताब	न दिन आराम था न रात कों खा़ब[9]	
अपस में आप रहे खिल्वत[10] मने मिल	यकस सूं एक गले लगते सो तिलतिल[11]	
जो आती खवी[12] कधीं छाती उपर तो	वो लगती दरमियानी[13] ज्यूं नदी हो	
र्‍हती जो गांठ चोली कीं बिसर कर	वो दिसती दरमियानी को हो डोंगर	९३५
सुने यो बात खासो-आम[14] सालिम[15]	सुने यो बात नादां हौर आलिम[16]	
सुने यो बात आयां[17] हौर बायां	सुने यो बात दायां[18] हौर ददायां[18]	
सुने यो बात अपने हौर बिगाने[19]	सुने यो बात दाने[20] हौर दिवाने	
सुने यो बात मांवां हौर[21] भानां[22]	सुने यो बात पीरां[23] हौर जवानां	
कधां लग यां अछें इस धाक[24] डर सूं	भला वो है निकल कर जाएं घर सूं	९४०
रहें ता भागकर यूं यक वतन में	र्‍हता है जोत[25] मिल कर ज्यूं रतन में	
अछें यक ठार पर जा कर हमें दो	कि ज्यूं अछता है मिल कर फूल में बू	
करें यूं मिल दोनो यक ठार बस्ती	र्‍हती है जिस सनद[26] सूं मय[27] में मस्ती	
लगाएं आग दिल कों दुश्मनां के	सटे आंख्यां में माटी दुर्जनां के	
फलाने बाग़ कों जाने रज़ा[28] ले	सुबह आती हूं इस भाने[29] रज़ा ले	९४५
कया उन बी अपीं आता हूं चल कर	वहां ते जाएं दोनो मिल निकल कर	
सजन[30] सूं ज्यूं अंदेशी[31] थी वो अचपल[32]	करी वो बाग़ कों आने कि तैं बल	
कयें त्यूं शाहज़ादा[33] बी गया था	वो रातें रात वां जा कर रह्या था	

१ एकान्त. २ बाहर स्पष्ट. ३ अंदर, आंतर. ४ सम्मत. ५ खुश, आनंदित. ६ भेद. ७ जग. ८ विचार. ९ स्वप्न, नींद. १० एकान्त, अकेले. ११ छन छन. १२ प्रेयसी की थूक. १३ बीचमें १४ विशेष और साधारण जन. १५ सब. १६ विद्वान. १७ पडोसन, साधारण स्त्रियां (मराठी-आया-बाया). १८ महिला नोकर और बच्चे को दूध पिलानेवाली नोकरनी. १९ परके, परायें. २० बुद्धिमान्. २१ माताएं. २२ बहनें. २३ बुड्ढे. २४ डर. २५ प्रकाश. २६ प्रकार. २७ मद्य. २८ परवानगी, अनुज्ञा. २९ बहाना. ३० यार, प्रियकर. ३१ योजना की थी. ३२ सुचंचल. ३३ राजपुत्र.

सर्ग २५ वां

दर बयाने-रफ्तने[1] सैरें[2] बाग़

मिले यक बाग़ में आकर फिर वो माशूको-आ़शिक़ जब
चले पर मुल्क को दोनो हुए रूए-सुहानी[3]

समन्वर बाग़ को आती कय सुन वाग — बिछाया था चमन में फूल चुन बाग़ ९५०
चमन फिरने कों वो आती कय मक़बूल[4] — दु-रस्ता मिल खडे थे बार[5] बंद फूल
मदन मद की मती आती कय[6] लाले — खडे थे हत में ले मय[7] के प्याले
चमन के नरगिसां आती कर वो नार — पसार अंख्यां रहे थे ना पलक मार
खडी थी मुंतिजिर[8] आवे तो वो धन — दुआ[9] करने कों दस जीबां सूं सूसन
कल्यां धन के धन कों खोल कर आंक — थे छुप कर देखने पातां में ते झांक़ ९५५
नई हलते थे बन में बाव सूं सर्व — थे डुलते धन के क़द[10] के ताव[11] सूं सर्व
हरी हौर लाल पीली पात झड कर — चमन में हर तरफ़, हर ठार वड कर
हो रंगीन तिस चमन का आवगीना[12] — दिस्या यूं ज्यूं करे हैं भर को मेना[13]
भंवर फूलां पो बैटे सो दिसे यूं — कि मुख पर गुल-रुखां[14] के ख़ाल[15] है ज्यूं
फिरे फूलां पो बुलबुल खोल यूं बाल — कि उडते हैं पतंग ज्यूं शमा उपराल ९६०
पितंबर बांद पीली बवलकां आए — कुंवाऱ्या कर मंझी क्यां ऐसीं दिखलाए
कुसुंबे बांद नूऱ्यां[16] सब संवाऱ्यां — अरूसां[17] के नमन सुरख्यां-निगाऱ्यां[18]
गले में अपने क़मऱ्यां हांस[19] भायां[20] — अपस कों शारवां चक से[21] लगाया
मशीमे[22] अपने तन पर ल्याए चंदन — लगाए थे क़जल सोक्यां सूं कंचन
हो नटवे आए म्होरां[23] नाचने कूं — कऱ्यां थ्यां लाल तोत्यां पान खा मूं ९६५
दोनों के वस्ल[24] की देख शादमानी[25] — चडी थी बाग़ कों फिर कर ज़वानी
करी थी शर्त अपने लाल सूं ज्यूं — दुजे दिन ब़ाग कों आई कये त्यूं
उसे वां देखती है तो वो चंचल — रह्या है फूल ज्यूं पातां के ओझल
नयन नर्गिस के नमने खोल कर दो — देखन तिस सर्व कों बैठया था वो
मिले फिर वो कली हौर फूल यक ठार — लगा कर शर्त का बी ताज़ा गुलज़ार ९७०
हुए तुर्क्यां[26] पो ज्यूं तुर्कां[27] सवारां — सुबा होकर चले दो बें-क़रारां[28]

---

१ जाना. २ बाग़ में घूमना. ३ सुंदर मुख के. ४ मान्य, प्रेयसी. ५ हंगाम. ६ कह. ७ मद्य. ८ मार्गप्रतिक्षक. ९ आशीर्वाद. १० शरीर. ११ जोश, आवेश. १२ कांच, शीशा. १३ पालखी. नरवाहृया वाहन. १४ प्रेयसी. १५ चमडा. १६ पक्षीविशेष. १७ दुलहन. १८ चित्र, नक्श निकालना. १९ गले में का सोने का पट्टा. २० डालना. २१ चक्षु, आंख. २२ परदा. २३ मयूर. २४ संयोग, भेट. २५ आनंद. २६ घोडी. २७ सिपाही. २८ बे-चैन

तमाशे देखते हर ठार के खूब
चले दोनो वो तालिब[१] हौर मतलूब[२]

संगातन[३] कों संगाती ले को संगात
चल्या ना ठार[४] कर कई दीस हौर रात

उलंग[५] कर कई कट मुल्को-विलायत[६]
किते सट कर कयते[७] बी पाड[८]व परवत

सो अं-पडे[९] शहर कों यक जा को वा रे
अथा वो शहर गंगा के किनारे ९७५

कते थे नांवू उस का सिंद कर
करार[१०] यूं था कि वो है अस्ल[११] हिंद कर

अथें घर पर घर इते उस शहरमें दाट
कि वां जाने न थी बारे कों कैं वाट

अथा नीर उस नदी का दूदते साफ़
मिठाई में करे वो शहद पर लाफ़[१२]

न उस खूबी[१३]के आनें लक बराबर
गगन पर जा रह्या खिज्लत[१४] सूं कौसर[१५]

चतुर चौसार[१६] राजा उस नगर का
वो पर उपकार[१७] राजा उस नगर का ९८०

किनारे उस नदी के थे कितिक घर
चिताऱ्या था चितर सूं अत पछतर

कि हर कोई आ उतरना कर मुसाफिर
रहे लग ऐश[१८] करना कर मुसाफिर

करे थे वां हर एक घर का ताय्युन[१९] नांवू
अथा यक घर सो "बैतुल्य आशिकैन" नांवू

मुनासिब[२१] देख अपने हाल कों वो
रहे तिस घर मने जा आशिकां दो

महल के खोल कर खिडक्यां हर यक तिल
नदी कों देखते थे जौकं सू मिल ९८५

नदी पर बैस दोनो दीस सारा
यकस के हत सूं यक पीते थे सारा

सुराही गरदनां यकस की यक ले
पियाली मांगते थे लब[२२] सूं लब ले

चुम्यां का चाकनां[२३] कर चाकते थें
किता चाकें बी फिर चाकें कते थे

यकस के एक थे दीदार[२४] पर मस्त
चतुर पर उन, उन उस चौसार पर मस्त

खुशी सूं थे कितिक दिन दोनो इस धात
खडे थे फांक[२५] ना कई दीस हौर रात ९९०

हुमायूं था ब-जिद[२६] तिस राज़[२७] का हाल
कि ना होना यो जाहिर किस के उपराल

छुपे उस राज़ की बातां के गोहर
बिखेरे हर किधर नें गए तो विहतर

सटे जिस ठार मुश्किल ल्या के तक़दीर[२८]
किसी का नें है उस जागे पो तदबीर[२९]

---
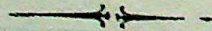
१ याचक. २ जिस को मांगा गया. ३ साथीदार, प्रेयसी. ४ ठहरना. ५ पार करना, उल्लंघना. ७ करना. ८ पहाड, पर्वत. ९ पहूंचे. १० ठहराना. ११ मूल १२ हंसी, मज़ाक. १३ सुंदरता १४ शर्मिंदगी, लज्जितता. १५ स्वर्ग का झरना. १६ हुशयार. १७ परोपकारी. १८ चैन. १९ निश्चित. २० प्रेमी-घर. २१ योग्य. २२ होंट. २३ चाखना. २४ देखना. २५ दूजापन. २६ आग्रह से. २७ गुह्यभेद. २८ नसीब, दैव. २९ युक्ति.

सर्ग २६ वां

पुर्सीदन[१] मालन अहवाले[२] समन्बर व बाज़[३] गुफ्तन माजरा[४]
व इखलास[५] नमूदन[६]
बिसर जा कर नसीहत[७] सब हुमायूं का समन्बर ने
कही सो हाल अपना सब जो उस मालन सूं नादानी[८]

ब-हर-हाल[९] एक कोई थी मालनी वां — कि हारां फूल के देती थी जां तां — ९९५
हमेशा पादशह कों फूल अं- पडाए[१०] — समन्बर क्या बी फूलां कों लेकर आए
कधीं[११] बालां में ल्या फूलां को भावे[१२] — अंधारी रात में तारे दिखावे
कल्यां कों उन खुली जुल्फां[१३] सिते जींड — दिखावे सुंबलां में आए त्यूं मोड[१४]
दिखावे ज़ुल्फ के ला तुर्री दरम्यां[१५] — रुपे की गेंद हौर नीलम की चौगां
बिछाने में बिछावे वो छबेली — कधीं मुगरा, कधीं चंपा, चंबेली — १०००
बिछाना गुल सूं कर चंदरबदन का — दिखाती थीं सुहावा[१६] कर गगन का
रखी थी उस की खिदमत में सदा खयाल — अपी हो मालनी कर उस कों फूलडाल
समन्बर हौर उस में था मुरव्वत[१७] — लगी यूं पूछने यकदिन हकीकत[१८]
बला लेवूं मुख पो तेरे बोल बाली[१९] — तूं किस के बाग की है फूल-डाली
तु सच कए किस इरम[२०] की है परीजाद[२१] — अहै तूं किस चमन की सर्व आज़ाद — १००५
है कुर्बां[२२] तुज पर सब मेरी जात[२३] — गुपित कह खोल मुंज बांदी सूं यो बात
नसीहत कर हुमायूं का फरामोश[२४] — सटी उस राज़[२५] पर का काड सर-पोश[२६]
छुपी सो बात क्यों उस सूं उठी बोल — कि ज्यूं था त्यूं कई सब मूं ब[२७]-मूं खोल
क़ज़ा[२८] मंगता है करनें जो हर यक काम — करता है पकड कर हात वो काम

+ ★ +
+ +

---

१ पूछना. २ वृत्तांत. ३ फिरसे बोलना, कहना. ४ कहानी, घडा हुवा हाल. ५ निष्कपटता ६ वर्णन करना. ७ उपदेश. ८ मूढता. ९ संक्षेपतः १० पहूंचाना. ११ कभी. १२ डालना. १३ बाल. १४ कोंपल (मराठी–मोड) १५ बीच में १६ शोभा १७ प्रेम, भीड. १८ वस्तुस्थिति १९ बाला, कन्या. २१ अप्सरा की बेटी. २२ अर्पित. २३ व्यक्ति. २४ भूलना. २५ भेद, गुर. २६ ढक्कन. २७ बाल बाल, विगतवार. २८ विधि.

सर्ग २७ वा

जरूरत सूं करी तारीफ[1] मालन ते समन्बर की
म़न्या उस शहरका शह ज्यूं निपट कर इश्क अवधाती १०१०

सो यकरा[2] दिन मालनी गुंदती सोरा गुल देख समन्बर उस को गुंद कर हार दे एक
वो मालन वक्त कर, रातिब किरा याद ले कर गई फूल शह कन रोज़ के नाद
खुशी सूं दी खुशी के फूल शह कों खडी रह जोड कर हातां अदब[3] सूं
दिखत गुल शह नयन नर्गिस ममन खील उठ्या सूसन के नमने बात यूं बोल
कि तू लई[4] दिस ते आती है इस ठार तुं नित ल्याती है गुंद के फूल के हार १०१५
कधीं हार आज लग ऐसा नइं ल्याई हुवर तेरा तो नें, सच बोल कां पाई
गरचि बहूत, उजरा[5] सूं करी बात ब्ले गुस्से सूं बोल्या शाह इस धात
अगर तूं रास्ती सूं सर्व की नाद न ल्यासी सामने तूं रास्त गुफ्तार[6]
खडग सूं बेद के कर तुज पो बे-दाद[9] करूंगा टुकडे टुकर्ग फूल के नाद
गुदो सूं चीर कर तेरी जबां कों बनफ्शा के नमन काडूं कज़ा[10] १०२०
खडग सूं तोड कर तुज कद[11] की डाली दिखावूं खाक[12] का रंग कर गुलाली
सटूंगा काट क़र तुज उमर[13] की बेल करूं सिर का तेरे दो फोंक नारेल
खंजर सूं केवडे के सीना कर चाक दिखावूं लहू सूं तेरे लाल कर खाक
जो देखो उजर[14] कोंकैनैं रह्या ठार सुनी थी त्यूं करो सब शब पो इज़्हार[14]
सिफत कर[15] शाहजादेका बहूत धात समन्बर के चलाई हुस्न को[16] बात १०२५
सुन्या सो बात उसके हुस्न की शाह यकायक इश्क़ आ दिल मे किया राह[17]
किया सो इश्क देख सीने में चकलाट[18] हुवा यक वाट दिल हौर सब्र[19] यक बाद
कप्या सो इश्क दिल में ठार उस कां मंग्या जा देखने दीदार[20] उस का

१ स्तुति. २ का, की, के. ३ सभ्यता. ४ बहूत. ५ हीला, टालना ६ सीधापन, सरल रीती. ७ लाएगी. ८ वाणी, बात. ९ निर्दय १० मौत. ११ शरीर १२ मिट्टी. १३ आयु. १४ स्पष्ट करना. १५ वर्णन. १६ सुंदरता १७ रास्ता, मार्ग. १८ जोश, आवेश. १९ सहनशक्ति २० दर्शन.

सर्ग २८ वा

देख्यां ज्यूं शाह उस मह[1] कों निपट[2] बे-होश[3] सुद[3] खो दी
पड्या चाहे[4]-ज़नख़दां[5] में देख उसका ख़ाल[6] कालानी[7]

बहाना सैद[8] का मछल्यां का कर शाह — मंगाया एक किश्ती ख़ूब दिलख़ाह[9] १०३०
अथी किश्ती जो रुपेली चंदरंसी — विहश्त्यां[10] के अथी वो वलकि घरसी
क्रितिक लोकां सू शह मिल उस में वैठ्या — विरह सूं जल न सक कर जल में वैठ्या
चली पानी पो किश्ती वाव[11] के सार — फलक के नाद किस जागे पो ना ठार
पडी यक वार वो आ सैद के फाम[12] — सटें पानी में मछल्यां के बदल[13] दाम[14]
गए ना-बुद[15] हो पानी में तै वाम[16] — रह्या नैं उस नदी में खोल[16] का नाम १०३५
मंगे तो कैं मरल[16] दारू[17] कों रही नैं — धुंडे तो वां पडन[16] दिसती न थी कैं
करे मछल्यां कों ख़ाली[18] इस सनद सात — नई पानी में रही मछल्यां की कुई ज़ात
किया सो सैद वस, ज़रा न कई थीर[19] — चल्या वां ते समन्वर के महल धीर
ज़ो आ कर देखता है शहर महल तल — सुकानी वाल वैटी है वो चंचल
नदी पर यू दिसी वो गुन की समदूर — कि ज्यूं बैठी है कौसर[20] उपर हूर[21] १०४०
ज़ो खोले थी जो वो. चौसार[22] वालां — पडे हैं मुख पो अंवर वार बालां
दिसें यूं उस नूरानी[23] रुख[24] उपर वाल — कि ज्यू छाया है वादल[25] चांद उपराल
दिसे बालां में यूँ रुख़सारे[24]-आली[26] — कि ज्यू सुंबल मने हुलकी है लाली
दिसें यूँ उस चंचल के मुख सूं मिल केस — मिले यक हार पर ज्यू रात हौर दीस
ज़ोवन[27] पर धन के यूं दिसते थे बालां — कि ज्यू पाडां[28] उपर उतरे अभालां १०४५
नज़र शह के पडी सो वो परीज़ाद[21] — हुवा वैं आप ख़ुदी[29] के वंद[30] ते आज़ाद
न चल कर इश्क़ के मौजां सूँ चारा — सबूरी का डुब्या असबाव[31] सारा
पड्या गरदाव[32] में दिल जान हो मुर्दा — गया नामोस[33] का टुकडे हो परदा
पिरत का दिल कों मान्या देख तूफां — रह्या नैं अक़्ल का उस ठार अवसां[34]
हल्या प्रीत सूं दिल का देख सुकान — पिरत के दिल सांद्या है वो सुकान १०५०
अथा नज़दीक ज्यूं लंगर हुए ग़र्क़ — नईंथा दूर वो गोहर[35] हुए ग़र्क़[36]

---

१ चंद्र २ केवल. ३ शुद्धि, जाणकारी. ४ कुंवा, बावली. ५ मूढता. ६ तिल. शरीरपर का कालासा दाग़ ७ कालासा. ८ शिकार. ९ मनपसंद. १० स्वर्गनिवासी. ११ वायु. १२ समझ १३ लिए. १४ जाला. १५ नष्ट. १६ मत्स्यविशेष. १७ दवा, औषध. १८ रिक्त. १९ स्थिर कायम. २० स्वर्ग का एक झरना. २१ अप्सरा. २२ चतुर. २३ प्रकाशमान्, चमकते हुए. २४ चेहरा. २५ मेघ. २६ उत्तम. २७ कुच, स्तन. २८ पहाड, पर्वत. २९ स्वत्व. ३० बंधन. ३१ सामान. ३२ भंवर. ३३ कीर्ति. ३४ शक्ति. ३५ मोती. ३६ डूबना.

...७

हुए देख हाजिरां[1] यो हाल हैरां लिए सब मिल को वा रे शह कों गरदां

जु थे किश्ती के चारो[2] धीर खलासी दिसें उस मौज सूं ग़म के ख़लासी

महल में शाह कों फिर ला को बिसलाए[3] जु ख़ासां[4] थे वो यकयक पूछने आए

दर बयान ज़ाहिर कर्दन[5] बादशाह अहवाले[6] खुद रा[7]

व जवाबदादन[8] वू[9] रा

दिस्या सो शाह का अहवाल मुश्किल कए यूं शह सूं सब यक-[10] बारगी मिल १०५५

कि नैं शाहां को वाजिब[11] यो कते काम करें क्या अर्ज़ है सब शाह को फ़ाम

न जाना नीर पर किश्ती मने बैस निकलना ना मते[12] मंगल[13] उपर बैस

न फिरना रात कों ना बोल कर किस न करना रातदिन प्याले की मजलिस

कि उस कामां पो कोई शाहां न जाना कए हैं अक्ल[14] के[14] यू पहलवानां[14]

सर्ग २९ वा

दिलसा दे वज़ीर आकर कया शहसे बचन नागाह[15]

अजब क्या मक्रो-अफसूं[16] ते होवे यो काम आसानी[17] १०६०

क्या शाह सब कों यो मा'लूम है हाल अगर कोई शह करे तो मुल्क उपर चाल

है मुमकिन दफ़ा[18] उस लश्कर सूं करना अगर लश्कर सूं नैं तो ज़र सूं करना

वले शह इश्क का उचा को भाला जो आवे मुल्क दिलका करने नालां[20]

मुंजे उस ठार क्या तदबीर[21] है कवो[22] मिरा उस ठार क्या तक़सीर[23] है कवो

नई भाता[24] है तख्तो-[25]ताज मुंज कों नई आता है कुच खुश राज मुंज कों १०६५

मुंजे क्या काम आए पादशाही नको देव आजते मेरी दुराई[26]

नको मुंज को सटे इस गलबले[27] में मैं अपने भावूं[28]गा कफनी गले में

मुंजे होवे तो होना है वही धन[29] अगर नैं तो नको मुंज माल हौर धन

मैं हर यक धात सूं करता हूं यो काम मिरे हातां सूं मैं पीता हूं जाम[30]

---

१ उपस्थित. २ चारों ओर. ३ बिठाना. ४ विशेष, सरदार आदि. ५ करना. ६ अवस्था वृत्तांत. ७ लिए ८ उत्तर देना. ९ वह १० एक साथ. ११ योग्य. १२ मस्त, मतवाला. १३ हाथी. १४ बुद्धिमान्. १५ यकायक. १६ धोका और जादू. १७ सहल. १८ निवारण. १९ सोना. २० शिकायत करनेवाला. २१ युक्ति. २२ कहो. २३ गलती, चूक. २४ पसंद आना. २५ गद्दी और मुकुट. २६ दुहाई, ढंढोरा. २७ गडबड, कठिनता. २८ डालना. २९ प्रेयसी, सं. धनी से. ३० प्याला.

सुने इस बात कों ज्यूं लोक सारे | समजकर चुप रहे कुच दम न मारे १०७०
व लेकिन[1] यक वजीर उन में था दाना | फिरासत[2] में अथा सब सूं तवाना[3]
न सटना हात ते अपने सबूरी[4] | नई है अक्ल सूं माकूल[5] दूरी
जु कुच होवे तो बी हिम्मत न सटना | न सटना सबर कों दौलत न सटना
शिताबी[6] सूं नई होता है कुच काम | हर यक आहस्तगी[7] में है सर-अंजाम
कल्यां आने में वें खिलते नई फूल | खिले तो हर किसे मिलते नई फूल १०७५
बुलंद आहस्ता होता है कंगोरा | पुनम की रात होवे चांद पूरा
अगर होवे तो मुज कों शह का फरमान[9] | सर[10] अंख्या[10] सूं मैं उस फरमां[9] कों मान
रखूंगा तौ[11] तलक उस काम में दिल | होवे तौ शाह का मक्सूद[12] हासिल[13]
हरेक धातां सूं उस तारे कों तोडूं | ले कर तारे कों उस, तुज मह[14] से जोडू
कया शह उस कों सच तूं दूर-बीं[14] है | हजारां, अक्ल पर तुज, आफरीं[15] है १०८०
वले नैं है कते[16] वौ फूल बिन खार[17] | सुन्या हूं मैं कि है उस गंज[18] पर मार[19]
दे कर छोड अपना घरदार यकबार | ले कर आया कैं ते उस कों इस ठार
वु चंचल बी कते ल्या जीव उसी सात | संगातन[23] हो को रही है दीस हौर रात
अवल उस मर्द को तूं काड सटना | हलूं उस गर्द[24] कों तूं झाड सटना १०८५
दगा शहजादे को इस धात देना | अवल हीलें सूं जीव इस वजा[25] लेना
जो वो धन मुंज सूं आजुर्दा[26] न होवे | वु नाजुक फूल पझमुर्दा न[27] न होवे
कया फिर शह सूं यूं वो हीला-अंगेज[28] | किया फिर मक्र[29] की यूं आग कों तेज
किनारे उस नदी के शह अपीं जा | जियाफत[30] का मजालिस[31] कर मुहिया[32]
बुला कर भेजना उस जान[33] कों वां | उस यक दो दीस के मिहमान[34] कों वां १०९०
पिलाना दम ब-दम[35] मै[36] भा[37] को भाने | हर एक बाजी[38] कों सटना ल्या को म्याने[39]
शरत बंदना अगर हारे तो जु कोई | नदी में जा को नंगे आंग ज्यूं भोई
कंवल का तोड कर यक फूल ल्याना | कंवल का फूल ल्या सब को दिख्याना

१ फरंतु. २ अक्लमंदी, बुद्धिमत्ता. ३ मजबूत. ४ सहनशीलता. ५ योग्य, अक्ल की. ६ जल्दी. ७ हलू, धीमापन. ८ परिणाम. ९ आज्ञा. १० पूर्णत: मान लेना. ११ तब. १२ ध्येय, हेतु. १३ प्राप्त. १४ दूरदृष्टि. १५ वाहवा १६ कहते. १७ कांटा. १८ कोश, खजाना. १९ सर्प. २० बेटा २१ बाल. २२ बांधना. २३ प्रिया, साथीदार. २४ धूलि. २५ प्रकार, बनावट. २६ दुःखी २७ कुमलाया हुवा. २८ धोखेबाज. २९ धोखा. ३० भोजन ३१ सभा ३२ सिद्ध तैयार. ३३ प्रियकर. ३४ अतिथि. ३५ हर दम. ३६ मद्य. ३७ डालना. ३८ खेल. ३९ बीच में

बिला उज़र[1] उस हमारी बात कों सुन — बहूत मुश्किल नई कर जान कर उन
क़बूल अलबता[2] वो ग़ाफ़िल[3] करेगा — करेगा त्यूंच आपी डूब मरेगा — १०९५
निहंगां का होवेगा लुकमा[5] वो जान — न जाने त्यूं हमें रहें हो कर अनजान
समन्बर कों गुमां[6]आसी[7] न अवसर[8] — सितम[9] सूं उस हमें मारे हैं कर कर
पसंद आया यो उस का शह कों हीला — हुवा रोशन लगाया सो फतेला

सर्ग ३० वां

करे थे मक्र[10] सब दिल में दग़ा देने हुमायूं कों
जि़याफ़त[11] के मजालीस[12] कर बुलाए उस कों मिहमानी[13]

अपस में आप दोनों कों नदी ठार — ज़ियाफत कों मुक़र्रर[14] कर को तिस ठार ११००
बुला भेज्या वई उस बे-गुनह[15] कों — बदी[16] कों हात दे, सर दे गुनह[17] कों
मुहब्बत[18] सूं अदिक मंजूर[19] रख बात — किया आ, शह सूं शहज़ादा[20] मुलाक़ात[21]
कन्या था शाह बज्म[22] आरास्ता[23] ख़ूब — खडे थे साक़ियां[24] दो-रास्ता ख़ूब
थे बैठे मतरबा[25] कर साजो[26]-सामां — छुपे सो खोलते नग़म्यां[27] के राज़ां[28]
तंबोरे बोलत तन तन तना तन — रबाबां बाजते छन छन छना छन ११०५
दफां[29] हौर दायऱ्यां यूं मिल झलाझल — कते थे छल छला छल छल छला छल
बरत[30] ते थी हक़ीक़त खोलती मूं — कये तूं तूं तुंही तूं तूं ही तूं तूं
समज कर शाह का रुख़ साक्यां[24] आए — पियाले यक तरफ ते दौर में ल्याए
खुले जुल्फां मिले आंख्यां सूं साक़्यां — दिखावें हौर देखें जिस कों साक्यां
अजब वो ज़ौक़[31] है ना कए में आता — न दिल में शोक़ वो किस के समाता १११०

---

१ बिना आक्षेप, हीला. २ ज़रूर. ३ ग़फलत में पडा हुवा. ४ नक्र. ५ निवाला. ग्रास. ६ शंका. ७ आएगी. ८ कभी. ९ जुल्म. १० धोखा, हीला. ११ भोजन. १२ सभाएं. १३ अतिथि. १४ निश्चित. १५ निरपराधी. १६ दुष्टता. १७ अपराध. १८ सम्मत. २० राजपुत्र. २१ भेंट. २२ महफिल. २३ सुशोभित. २४ मद्य का प्याला देनेवाला. २५ मद्यपान सभा के सदस्य. २६ सामान. २७ गीत. २८ भेद, गुह्य. २९ वाद्यविशेष, डफ. ३० व्रत, विधि. ३१ अभिरुचि.

सर्ग ३१ वां

कन्या था शर्त ज़ो उन सूं[1] हुमायूं ज़ो वफ़ा[2] पर आ
अपस कों डाल पानी में किया ग़र्काब[3] तूफ़ानी[4]

कवूं अल्क़िस्सो[5] मैं बा रे वो किस्सा
डुबा शहज़ादे कों मारे सो क़िस्सा

किया शह शाहज़ादे धीर[6] कर मूँ
ख़ुशीं की मै[7] कों पी कर मिल ख़ुशी सूं

दुनों[8] मिल बैठ कर शतरंज खेलें
दुन्यां की फ़िक्र यक-धिरते[9] रकेले[10]

पिता[11] उस कीना-वर[12] सूं शाहज़ादा
पियाले दम ब-दम मय[7] के ज्यादा ॥ १११५

डुब्या मस्ती में देख उस, खा को बाज़ीं[13]
सटचा वैं दरमियाने[14] ल्या को बाज़ी

गुंद्या[15] था त्यूं बंद्या शहज़ादे सूं होड[16]
ज़ो था उस होड में शहज़ादे का मोड[17]

वले यक-बारगी[18] शह उस किया बात
कि था उस बात में शदज़ादे का घात

हुई यूं ज़ेर[19] शहज़ादे की बाजी
पडी ज़ा बंद[20] आज़ादी की बाज़ी

है वां शतरंज़ घर कर नैं पंछान्या
घडेगा यूं कि मनसूबा[21] न ज़ान्या ॥ ११२०

हुई ज्यूं हार बाज़ी उस जवां की
सची करने कों बात अपनी ज़बां[22] की

खडे हो शह के आंगे जीव की दर्पन
खिडी[23] के नाद नंगा कर अपस तन

वफ़ा[2] का शर्त शहजादा बजा ल्या
तिरंदा[24] हो पडचा पानी उपर जा

डुब्या गव्वास[25] के नमने पकड बल
लग्या गोहर के नाद यक-बारगी[26] तल[27]

देती मछली यक उस कों बतन[28] में ठार
रह्या मछली में वो यो निस केरा[29] ठार ॥ ११२५

सटचा लेकर क़ज़ा[30] मछली कने उस
चली मछली वई ले मूं मने उस

वफ़ा कयते तो अम्रित[31] का छुरा है
जिवेगा वो वफ़ा में ज़ो खरा है

वफ़ा सूं ख़िज़्र ज़ीते हैं अजूं लग
लेते ईसा वफ़ा सूं ऐश का जग

वफ़ा सूं वो जिया वैसी जफ़ा[32] सूं
वफ़ादारी सूं बांचा[33] उस ख़फ़ा[34] सूं

वफ़ादारी ते माही[35] के शिकम[28] सूं
निकल यो निस फ़रागत[36] पाए ग़म[37] सूं ॥ ११३०

दिए सो मिल को भायां[37] चाह[38] का रंज
वफ़ा सूं पाए यूसूफ़ ऐश का गंज[39]

अंझू बादल[40] के नमने ढाल बे-ग़म
सटचा बारे नमन चुप आह[41] के दम

---

१ आसे २ विश्वास. ३ पानी में डुबना ४ तूफान का. ५ संक्षेपतः ६ ओर ७ मद्य. ८ दोनों. ९ एक ओर. १० रखे हुए. ११ पीता. १२ धोकाबाज १३ खेल १४ बीच में १५ बुनना. १६ सौदा. १७ नुकसान. १८ एकदम १९ नीचे. २० बंधन. कैद. २१ योजना. २२ वाणी. २३ गांव के बाहर की बडी दीवार का छोटासा दरवजा २४ तैरनेवाला. २५ तैराक. डूबनेवाला. २६ यकायक. २७ तह, समुद्र का निचला भाग. २८ पेट. २९ का, की, के. ३० वाजिब, योग्य, ३१ अमृत. ३२ कष्ट. ३३ बचना. ३४ नाराज़गी, दु.ख ३५ मछली. ३६ आराम. ३७ दुःख, शोक, ३८ कुंवा, बावली. ३९ कोश, ४० मेघ. ४१ दुःखके निःश्वास.

डुब्या सो सूर को उस दिल में कर याद
पुकार्‌या दर्द ते सौ राद[१] के नाद
खुशी सूं वां ले जा कर अपने घर कों
बुला भेजा तुरत उस हीला-गर[२] कों
कया जा बोल जो कयने को है बात
जु मेरा लई[३] है दिल उस मोहिनी सात ११३५
वज़ीर आपी वो, हाजिब[४] हो गया वां
समन्बर कर मुकाम[५] अछनी अथी जां

सर्ग ३२ वा

समन्बर हिजरते[६] पिव[७] के दिसे मख्मूल[८] ग़मगीन[९] हो
करे उस की जुदाई[६] सूं हमेशा आह व[१०] वियलानी[११]

समन्बर तीन दिनते दुख में पड कर
रही थी पीव के बिछडे सूं अड कर
न सुक था दीस कों ना निस कों आराम
तपे[१२] हौर रोए बिन दूजा न था काम
लग्या सो पीव के बिछडे सूं परदेस
करे भडक्यां[१३] सूं दिलके रात कों दीस ११४०
बिरह सूं लाल के ले लोंच वालां
दिखाई लहु-भरा वो कर को गालां
सजन कों याद करती ग़म सूं रोती
गुहर अंझवां[१४] बिन धागे परोती
रगत आंख्यां में आया सो दिसे यूं
हरन पकडे हैं लाले[१५] मुख मने ज्यूं
कती थी यूं अपस में हो को दिलगीर[१६]
दरीगा[१७] सात काड आंख्यां सिते नीर
न जानी मैं सिया[१८] सख्ती सिते दाट
जंगल में जाएगा कर वो कलाघात[१९] ११४५
अवल अपने पिरत की कर दिवानी
व आखिर[२०] यूं करेगा कर न जानी
न बूझी[२१] थी मुंजे इस ठार ल्याएगा
मुजे इस ठार ल्या गुरबत[२२] मे भाएगा[२३]
अए मेरे पीव ! अए मुंज जीव के पीव
संभाल अपना रखूं तुज बाज क्यों जीव
तेरा बिछडा[२४]. घडचा सो मुंज पो मुश्किल
कलीजा फूट लहू पानी हुवा दिल
मुंजे क्या काम आवे ऐसा जीना
है बिहतर जो उचा कर ज़हर पीना ११५०
बिलकती थी वो यूं जीने सूं आ[२५] बाज़[२५]
सो ऐसे मे सुनी दस्तक[२६] का आवाज़
वो समजी यूं कि शहज़ादा किसी हात
दिलासे के बदल भेजा है कय बात

---

१ बिजली का कडकना. २ धोखाबाज. ३ बहूत ४ दूत. ५ स्थान. ६ जुदाई, वियोग ७ प्रियकरा ८ दु.ख में पडनां. ९ शोकव्याप्त १० दुःखनिश्वास ११ विव्हल होना. १२ जलना. १३ दुःखावेग १४ अश्रू. १५ फूलविशेष. १६ दुःखी १७ दुःख, शोक १८ सीता अपभ्रष्ट रूप जानकी १९ झगडा, घात. २० अंतिम २१ समझना २२ परदेश २३ डालना. २४ जुदाई, वियोग. २५ मूं मोडना, वापिस फिरना. २६ खटखटान.

नंगी सर हौर नंगें पग दौडकर आई   कई जा आसरे सूं 'क्या ख़बर है भाई'
ख़बर बा रे अवल उस पीव का बोल   खबर निर्जीव कों उस जीव का बोल
मेरे जीव के गगन का सूर कां है   मिरे दिल के नयन का नूर कां हैं   ११५५
वो मेरे जीव का मनमीत[1] कां है   वो मुंज निर्जीव का अम्रीत का है
निराधारी कों मुंज था यक आधार   मुंजे उस बाज[2] यो सब जग है अंदकार
लग्या है तीन दिन ते मुंज को रोना   नज़र तल ते गया सो वा सलौना[3]
मुंज़े कर वाक़िफ़[4] उस के हाल सूं बेग   जिला[5] फिर मुज़ को दे कर जीव तूं बेग
सुन्या पो वो कती बातां सूं आरूस   अपी बी मक्र[7] सूं वैं खा को अफसोस   ११६०
कन्या इज्हार[8] शहज़ादा मुवा[9] सो   वु गोहर[10] गर्क़[11] दर्या में हुवा सो
कया बी शह किया सो दर्द हौर ग़म   लगालग[12] तीन दिन कयाता सो मातम[13]

सर्ग ३३ वां

समन्वर जब सुनी बद[14] बात उस के ग़र्क़ होने की
निकल तन ते गया जिव सब, हुई बे-ताबो[15]-बे-जानी

समन्बर बात वो दुख की सुनी ज्यूं   लग्या अस्मान सर पर तुट पडे त्यूं
अगन सूं दर्द के मान्या सो दिल-जोश   पडी ज़्यूं गाए अरडा[16] कर हो बे-होश[17]   ११६५
पडी भुईं पर मुंडी[18] ले डाल कर यूं   हरन ज्यूं तीर खाया सो पडे त्यूं
लगी यूं तडफडाने फोड छाती   कि मछली नीर बिन ज्यूं फडफडाती
लगी लडने कों लग ग़म की छुरी यूं   पंखी काटे सो पड कर तलमले[19] ज्यूं
हुवा दिल तुकडे तुकडे फूट त्यूं फूट   लगी पडने कों सर अपना सीना कूट
लगी बारे[20] नमन माटी उडाने   लगी बादल नमन रो रो बिलाने[19]   ११७०
उबल आया दर्या[21] दिल का जो दुख सूं   सूं डुबाया नयन के मछली पटन कूं
दरीग़ी[22] सूं लई[23] ब्राल अपने लोंच   कजल अंझवां[24] सूं आंख्यां का सटं पोंछ

---

१ मित्र. २ सिवा, बिन. ३ नमकेला, अभिरुचिपूर्ण ४ परिचित. ५ जल्दी. ६ जीवित करना ७ धोखा. ८ स्पष्ट करना. ९ मृत. १० मोती. ११ डुबना. १२ मुसलसिल, अखंड. १३ शोक, दुःख. १४ बुरी, अशुभ. १५ बेचैन और निर्जीव. १६ चिल्लाना (मराठी—अरडणे) १७ शुद्धि खोना १८ शिर. १९ विव्हल, होना, दुःख करना (मराठी तळमळणे) २० वायु. २१ दरया, समुद्र. २२ शोक, दुःख २३ बहुत. २४ अश्रू

अंगारां सूं अंज्नू के नयन गए जल हुए जल कर दो नयना ज्यूं कि काजल
सटी सारा ज़रीना[1] तन पो का काड तख्त[2] की लाल कसवत[3] कों सटी फाड
कंगी कों बिरहनी तुकडे करी तोड सटी मूं देखने की आरसी फोड ११७५
कंगन हौर चूड[4] हातां के करी चूर करी पांवां सूं पैंजन पायलां दूर
दंदी[5] यूं घर डुबांएंगे कर न जानी दन्या में गम के भाएंगे[6] कर न जानी
समजती तो बी[7] यूं होएगा ककर मैं छुपा रखती उसे दिल के भितर[8] मैं
नयन-पुतली कर उस रखती नयन में जतन[9] करती उसेज्यूं राज़[10] मन में
समन्बर का दिखत दुख दर्द हाजिब[11] बिसर गरमी रह्या हो सर्द हाजिब ११८०
न सक उस शमा[12] सूं कुच बोलने कूं धुंवें के नाद काला ले चल्या मूं
गया शह पास हौर बोल्या वो सब हाल समन्बर का जो कुच देख्या सो अहवाल[13]
वु सुन कर बात शह हो बहुत दिलगीर कया यूं फिर के यक हीलागर[14] उस-धीर
तुं फिर यक बार उस मोहन तलक ज़ा मुंजे लुबदाई[15] सो धन[16] तलक जा
हर यक हीले[18] सूं, हर तदबीर[19] सूं तूं थंडी कर उस के मातम[20] की अगन कूँ ११८५
बुजा उस दिल के ग़म की आग ऊपर नसीहत[21] के तूं पानी को छिनक कर
मुहब्बत[22] में मेरी उस गरम कर तूं इलूं उस संग-दिल[23] कों नरम कर तूं
तिरे धीर इतनी बातां क्या कवूं मैं मिला इर हाल उस कों तूं मेरे तैं

सर्ग ३४ वां

गया वो कीना-वर[24] फिर वां पड्या कुच मक्र के[25] अफसूं[26]
वलेकिन उन वफा पर आ करी नैं कारे-नफ्सनी[27]
समनबर क्यां[28] चल्या हर हाल फिर वो पकड कर भोंदने[29] की चाल फिर वो ११९०
गया उस धन कने बी[7] फिर को बो नाग[30] लगाने शह के बिरहे की उसे आग

१ सुवर्णालंकार. २ बैठनें का स्थान. ३ पोशाक. ४ कंगन विशेष. ५ शत्रु ६ डालना. ७ भी. ८ अंदर ९ सुरक्षा (मराठी-जतन) १० भेद, गुह्य. ११ दूत. १२ दीप. १३ वृत्तांत. १४ धोकेबाज़. १५ उस की और १६ लुब्ध की, आकर्षित की. १७ प्रेयसी. १८ बहाना. १९ युक्ति. २० शोक २१ उपदेश. २२ प्रेम. २३ पत्थर के दिल कों, निर्दय. २४ बहाना करने वाला २५ धोखा. २६ जादू, मंतर. २७ विषयाभिलाषा का काम. २८ पास, समीप (संक्षेप- के यहां) २९ ठगाना. ३० ज़हरेला सर्प.

मसख़्ख़र[1] करने शह की उस परी कों
समन्बर कों हलूं ना होए त्यूं फ़ाम[4]
किया इस धात पड हिकमत के मंतर[3]
जु देख्या है जो कोई जग में कुंवारा
हुवा है चीज़ जो दुनयां में मौजूद[9]
जु कोई आ फूल डाली पर चड्या है
जु दिसते हैं चमन के फूल सारे
यो जीना है सो ज्यूं दूपारकी[14] छांवूं
अबद[16] का नें किसे बख़्शे[17] है खिलअत[18]
यो ना हो कर है रोशन सब पोयो बात
अगर मग़रिब[21] में देवे सूर कों ठार
दुन्यां का काम नें अछता है परकम[24]
न सटना काम कोई अपना मुअत्तल[27]
मुजे पूछे तो यूं लगता अहै ख़ूब
तिरी आशिकी में शाह यक-रंग
कन्या है तेरे नेह[31] का दिल सूं सौदा
समन्बर उस ते बातां यूं सुनी ज्यूं
कि शहज़ादे कों मान्या सो यही है
कई यो लहु-भऱ्या मूं उस तरफ ल्या
अवल ते देख मैं समजती तेरा मूं
तुजे समजी न थी ऐसा है कर तूं
कये यां आ को कुच, वां जा को कुच कये

लग्या त्यूं मक्र[2] के करने कों अफसूं[3]
वई हील की बातां का सटया दाम[5]
कि नें हैं बात यो पोशीदा[6] किस पर
वु आख़िर[7] गोर[8] में है जानहारा ११९५
सो आख़िर होनहारा है वो नाबूद[10]
फ़ना[11] की बाव[12] सूं आख़िर झड्या है
खिज़ां[13] के हात सूं है झडने हारे
दुन्यां में कुच रह्या नें है ब-जूज़[15] नांवूं
सदा जीने न किस देते हैं दौलत १२००
ख़ुदा के है जो कुदरत[19] का कवी[20] हात
उसी साअत[22] में ल्यावे चांद कों भार[23]
ग़नीमत[25] कर समजना है हर यक दम[26]
न अछना काम सूं कोई अपने काहिल[28]
कि शह तालिब[29] अछे हौर तूं सो मतलूब[30] १२०५
तुजे मंगता है त्यूं तूं बी उसे मंग
चड्या तुज जुल्फ़[32] का सिर तिस के सौदा
हुवा तहकीक[33] तो उसके उपर यूं
दंदी[34] हो ला दंदी सान्या सो यही है
गुसे[35] के जोश[36] सूं वैं लब पो कफ ल्या[37] १२१०
बडा कुटना बडा मक्कार है तूं
मिरा जीव कलकलावे, क्यों न रोवूं
क़लम[38] के नाद तुज कों दो ज़वां[39] है

+ * +
\+ +

१ आनंदित २ बहाना ३ जादू, मंतर ४ समझ ५ जाला ६ छुपाहुवा ७ अंतिम ८ क़बर समाधि ९ उपस्थित १० नष्ट ११ नाश १२ वायु १३ पतझड का ऋतु १४ दोपहर (मराठी—दुपार) १५ सिवा, विना १६ अनन्त १७ देना १८ पोशाक १९ निसर्ग, शक्ति २० मजबूत २१ पश्चिम २२ क्षण, छन २३ बाहर २४ मुहताज २५ बख्शिश, देन २६ श्वास २७ रुका हुवा २८ सुस्त २९ मांगनेंवाला ३० मांगी हुई ३१ प्रेम ३२ बाल ३३ सत्य ३४ शत्रु ३५ क्रोध ३६ आवेग ३७ मूं की थूक ३८ लेखनी ६९ जीव, जिन्हा

...८

फरंग[1] के धात यक दिखला को पहलू
वलेकिन सैफ़[2] के त्यूं है तुं दो रू[3]
नई हूं वो कंवल जो उस सुरज बाज[4]
शिगुफता[5] होवूं फिर कर चांद सूं आज १२१५
वु चातक मेहूं[6] पिवूं बरसात की कर
हर यक पानी सूं लब अपना करूं तर
पिरत की रह[7] रविश[8] में है बडी तंग
जु गई पर यक दूजे सूं करे संग
वफ़ादारा[9] कों है इस बात का आर[10]
दिखाना खोल कर दुसऱ्यां को कखसार[11]
तुं मुंज जलती के तें फिर कर नको जाल
नको डुबती कों मुंज दऱ्या मने डाल
नको हरगिज[12] तूं फिर उस बात पर आ
तुजे सन्वान[13] है कि ज्यूं आया है त्यूं जा १२२०

सर्ग ३५ वां

वज़ीर के मुल्क हवाले कर चल्या शह अहद[14] लेता वां
पकड दरबार उस धन[15] का लग्या करने कों दरबानी[16]

रह्या नैं देख कर कैं बात कों ठार
फिऱ्या वो हीला-गर[17] वां ते न दम मार
कया सब शाह सूं गुस्से की कानी[18]
जु कुच कई थी बिरह की वो दिवानी
सुन्या सो शाह रो रो कर उठचा वैं
दरीगी[19] सूं कया उस हीला-गर तें
करूं क्या फिक्र[20] हौर क्या मैं करूं फ़न[21]
नई हुइ मिहरबां[22] कुच मुंज पो वो धन १२२५
हुकूमत[23] का दे तेरे सीस पर भार
पडूंगा जा को तनहा[24] उसके दरबार
कि शायद यूं तो बी उस प्यार आएगा
नई भाया[25] तो कुच उस पो तो भाएगा
रख उस के आस्ताने[26] के उपर सिर
करूंगा याद उस का नांवूं फिर फिर
कया त्यूं जा को उस का दार पकडचा
तुरत उस नार का दरबार पकडचा
सुबह उठ वस्ल[27] का रह[7] देखता जाए
'सलाम' आए न, उस कों ना 'अलेक' आए १२३०
करार[28] आपस मने यक शुग्ल[29] दे ले
मुहब्बत का गंजीफा दिल में खेले
कए बांध्या हूं मैं बाज़ी सरापा[30]
तुजे में देवूंगा सिर आख़िर अपना
सुना कर मुज गला[31] कर तूं बात आज
तुं अपने वस्ल[32] का दे लाब[33] रात आज

---

१ एकधारी तलवार २ दोधारी तलवार ३ बाजू, मुख ४ सिवा, विना ५ प्रफुल्लि ६ मेघ ७ रास्ता मार्ग ८ चालचलन ९ निष्ठा १० लज्जा ११ मुख, चेहरा १२ कभी भी १३ सन्मान १४ प्रण १५ प्रेयसी १६ सेवा, चाकरी १७ बहाना बनानेवाला १८ कहानी, कथा १९ शोक, दुःख २० चिंतन २१ तदबीर, युक्ति २२ कृपालु २३ राज्य २४ अकेला २५ पसंद आना २६ चौखट २७ मीलन २८ निश्चय २९ काम ३० शिरसे पांवू तक ३१ कंठ ३२ मीलन ३३ लाभ, फायदा

मुजे तुज वस्ल के रंग साफ रंग सूं नकर तुकडे जुदाईके फरंग[1] सूं
नईं है कुच .कुमाश[2] अए धन जुदाई मुंजे क्या वास्ते[3] अफगां में[4] ल्याई १२३५
तुं अपरूप[5] आ दिखा के मुंज कों अए धन जियादा फिर खुदा देगा तुज अए धन
तुं क्या ख़ातिर[3] नई ल्याती मेरी आस सबब[6] क्या तुज़ कों नई भाई मेरी पास[7]
करे सौरात[8] क्यां बातां नित इस धात लगा कर ध्यान धन सूं दीस हौर रात
लगी इस धात सूं मुद्दत[9] गुज़रने अथा नज़दीक[10] शह विरहे सूं मरने

सर्ग ३६ वा

सुन्या ज्यूं मिस्र[11] के शह ने मुवा कर पूत अपस का वो
चल्या उस शहर पर धुम सूं गुसा[12] ले दिल मने जानी[13] १२४०

शुजाअत[14] की जिने यो बात बोल्या ज़बां के तेग[15] को इस धात तोल्या
जु था शह मिस्र का शहज़ादे का बाप रह्या था जो विछड कर पूत सूं आप
सदा बेटे के बिन तपता अछे वो उसे देखें बदल[3] जपता अछे वो
सुबह उठ अपने उस यूसुफ कों कर याद किया था नयन वो याकूब के नाद
नयन की रोशनी क्यों ना होए दूर कि फर्जंद[16] कों कते[17] है नयन का नूर १२४५
दगा शहज़ादे को दुश्मन दिए सो यकायक शह कों अं-पडाने[18] खबर वो
सुन्या सो त्यूं वा खाया दर्द हौर ग़म हुवा तारीक[19] उस के हक़ पो आलम[20]
खुशी हुई देख दिलकी ग़म सूं बरबाद लग्या लुडने[21] कों भुई पर गेंद के नाद
लग्या करने कों ग़म सूं ग़म वो ग़म-नाक[22] ले सट जोग्यां के नमने सर उपर खाक[23]
मिले चौ-फेर[24] आ शह के वज़ीरां जु थे सरदार हौर सालिम[25] अमीरा १२५०
लगे नालैन[26] पर सब शह के पडने पिशान्यां पांवूं पर ला को रगडने
सरासर[27] शह के मतलब[28] कों अं-पड[18] कर दिलासा दे कए यूं पांवुं पड कर

---

१ तलवार २ सामान, माल ३ लिए ४ दुःख के निःश्वास ५ अप्राप्य, दुर्लभ ६ कारण ७ प्रेम ८ स्वार्थ ९ समय १० समीप ११ ईजिप्त १२ क्रोध १३ जानलेवा १४ शौर्य १५ तलवार १६ बेटा १७ कहते १८ पहूंचाना १९ अंधःकारमय २० जग २१ लुडकना: ढुकलना २२ दुःखी २३ मृत्तिका, मिट्टी २४ चारों ओर २५ सब २६ जूते की नाल २७ पूरा २८ हेतु

कि अए शह ग़म इता करना नईं ख़ूब
दिल अपना दर्द पर धरना नईं ख़ूब

नईं कुच फ़ायदा करने में ज़ारी
करे हैं मना, करना अश्क-बारी

है वाजिब[1] बाप कों बेटे की ख़ातिर
बला जो कुच घडे सो ले अपन सिर १२५५

ख़ुदा कन[2] मांग लेना है सबूरी[3]
वई देगा सबूरी की मज़ूरी[4]

कया शह यूं मैं आपसी क्यों संभालूं
न क्यों दिल के अगन सूं तन कों जालूं

कि मुंज अंदले[5] की यक लकडी के तैं वो
सटचा हैं तोड कर सितमी[6] जफ़ा[7] जो

दऱ्या हो कर उबलने कों लग्या रवूं[8]
अजल[9] कचवा[10] को बैठे जा फिरा मूं

अता आता है यूं मुंज दिल में यकबार
अदू के[11] मुल्क पर बरसावूं अंगार १२६०

पडूं दुश्मन के घर पो हो के बिजली
सटूं जा कहर[12] के लश्कर पो बिजली

विलायत में उचावूं उसके शरशौर
दिखावूं तेग़ सूं बाज़ू केरा[14] ज़ोर

वई झगडे केरा धर दिल में मतलब
किया लश्कर कों हाज़िर आपने सब

मिल सो मुस्तइद[15] शमशेर-[17] बाज़ा
यकस ते एक नामी[18] यक्का-[19]ताज़ां

मिले हो गरम सब ताज़ी[20]सवारां
जु थे लाकां उपर भारी हज़ारां १२६५

चल्या लश्कर ले शह जागे ते अपनें
हल्या लश्कर ले शह जागे ते अपने

दिस्या दिल शह का यूं तेज्यां[21] के संगात
कि ज्यूं चलता है बादल बाव के साथ

लगे करने[22] बी भूं भूं भेर बजनें
लगे धम धम दमामे सब गरजने

उठ्या चौ-फेर पेशा-पेश[23] का शौर[13]
रहे हैरां माही[24], मुर्ग़[25] हौर मोर

गया उस दल केरा[14] बादल तलक गुल[13]
पड्या गौगे[13] सूं तिस जग में तज़ल्ज़ुल[26] १२७०

उठ्या इत्ता ज़मीं पो शौर हौर शर
हदरने कों लगे थे सात अम्बर

गया आवाज़ जेवूं अस्मान में ले
रखे उंगल्यां मलायक[27] कान में ले

जिधर चलते अथे वो शह-सवारां
सिने में धरत के पडते थे ग़ारां[28]

हत्यां के पांवूं सूं सब भर को वो ग़ार
अवल के नाद भुई होती थी हमवार[29]

---

१ योग्य २ समीप ३ सहन करने की शक्ति ४ कीमत, मूल्य ५ अंधा ६ जुलमी ७ कष्ट देनेवाला ८ रक्त ९ मौत, मृत्यू १० हिम्मत हारना ११ शत्रु १२ प्रलयकाल १३ गडबड, हलचल, खलबली १४ का, की, के १५ उपस्थित १६ सिद्ध १७ खड्गधारी १८ प्रसिद्ध १९ अद्वितीय २० घोडा २१ त्वरा २२ सींग २३ आगे पीछे २४ मछलीं २५ पक्षी २६ कम्पित होना २७ देवदूत (मलक का बहु व.) २८ खड्डा, गुहा २९ साफ. सम-स्तर

धरत पर लोक यूं पसरे थे सारे गगन पर भर के ज्यूं दिसते हैं तारे १२७५
धुलारे[१] तल छुपे वो सात असमां नज़र में सूं गए सूरज चंदरमां
करे शाहो[२] सिपाही मिल को यलगार[३] चंदर तान्यां के नमने कुल[४] किए ठार
विलायत[५] कों जो अं-पडे हिंद के जा खबर अं-पडाए शह कों सिंद के जा
कि यक कोई शाह बेन्हद ले सरब दल बडी ज़ोरी[६] सूं आता है इधर चल
न जाने बी ख़याल उसका किधर है वले देखे तो रुख़[७] उस का इधर हैं १२८०
तुमन हो कौन कर पूछे तो यूं कए हमन सालिम दिलेरां मिस्र के है
सुन्या सो दिल में शह के फिक्र[८] यूं आए मबादा[९] दिल गया त्यूं मुल्क बी[१०] जाए
है मुश्किल वाद-अज़ां[११] उस धन को पाना नई मुमकिन[१२] वो मोहन हात आना
सकत रहने है मुंज, बिन तख़्त हौर ताज सकत रहने कों नई उस मोहिनी बाज
गया तो मुल्क, नईं किस बात का ग़म वले है मुंज बडा इस बात का ग़म १२८५

सर्ग ३७ वां

धमक[१३] सूं शाह हिंदी ने कहला भेजा सो उस शह सूं
सुवह् के दिन हमें हौर तुम दिखावे जंगे-मैदानी[१४]

लगा यूं फिक्र के ताज़ी कों मिहमीज़[१५] वई झगडे की आतिश[१६] को किया तेज़
अवल दाने[१७] कों यक[१८]बा रे बुला कर कया यूं बोल उस की धीर जा कर
सबब[१९] क्या हैं यां लग पेश[२०] आने हमारे मुल्क पर लश्कर उचाने
हमीं हिंदी अगर झगडें पो आवे घडी में मार मिस्र्यां[२१] कों भगावें १२९०
हमारा फन है करन तुरक-ताज़ी[२२] हमारा काम है शमशेर-[२३]बाज़ी
हमारे रावतां[२४] कोते[२५]हत्यारां हमारे रावतां दुश्मन-शिकारां
दिलेरी में वो ऐसे हैं दिलेरां गवी पकडे उनन कों देख शेरां[२८]
दिलेरी देख हर यक लश्करी की कमर बैठी है धाकों[२७] धरतरी की

१ धूली २ राजा और सैनिक ३ हमला, हल्ला ४ कह, बोल (आज्ञार्थ) ५ देश ६ ताक़त, शक्ति ७ दिशा ८ चिंता ९ ऐसा न हो १० भी ११ इसके पश्चात् १२ शक्य १३ हिम्मत १४ मैदान की लडाई १५ लोहे का कांटा जो घोडेस्वार के ईडी के समीप होता है। १६ आग १७ बुद्धिमान् १८ (संबोधन) १९ कारण २० आगे २१ ईजिप्त के निवासी २२ तुर्की घोडा २३ तलवार चलाने का खेल २४ शूर २५ भाला के हतयार रखनेवालें २६ गुहा, गुम्फा २७ व्याघ्र २८ डरसे

हमारे रावतां ऐसे है जंगी[१]   पलंगां[२] उन कने सिकते पलंगी   १२९५
नईं चकमक[३] सूं किस कों काम इस ठार   उनों की वात सूं झडती है अंगार
लिवें हातां में जब गुस्से सूं जमधड[४]   तु यकयक जरब में दो दो करें धडे[५]
अगर निकलें तो ले हातां में भाले   वई बांचे खुदा जिस को संभाले
सरां कों वो सुराही बूजते[६] है   अदू[७] के लहू कों पानी बूजते हैं
पियाले सिर के कांसे कर को जानें   कबाब[८] आदा के[९] दिल कों कर पछानें   १३००
मुसलमानां में झगडा काफिरी है   नको जानो कि झगडा सरसरी[१०] है
यहां ते संग जाईंगे छोडकर ठाव   रहेगा तो तुमारा जग में कुच भाव
अगर नैं तो सुबह् मालूम हुएगा   यु झगडा किस पो आखिर[११] हुएगा
शिताबी[१२] सूं गया ज्यूं वो गुहर-संज[१३]   बिखेऱ्या बात का उस सामने गंज[१४]
सुन्या शह बात का हाजिब[१५] सूं तक़रीर[१६]   लगी वो बात हो कर कान कों तीर   १३ ५
खडग पर शाह् वें गुस्से सूं सट हात   कया जा बोल यूं उस संग-[१७]दिल सात
कि तू लेता है नाहक़[१८] जीव जिस का   सो होता हूं सगा मैं बाप उस का
लगी है दिल कों मेरे आग उस ते   झगडने कों न करसूं[१९] तुज सूं सुस्ती
डराने सूं तेरे हरगिज़[२०] न डरसूं[२१]   तुजे मारे बगैर मैं ना गुज़रसूं[२२]
दिखाया तूं दिलेरां की दिलेरी[२३]   दिखा बा रे दिलरी मुज कों तेरी   १३१०
कया अपने तूं सब लश्कर की तारीफ़[२४]   सुनावूं मेरे अब लश्कर की तारीफ़
कहें हमना जगत दुश्मन-[२५]तराशां   हमारा नांवूं है दुर्जन-[२६] तराशां
हमीं झगडे कों नैं शकते[२७] है ज़र्रा   नज़र में किस कों नैं रखते हैं ज़र्रा
हमारे लश्कऱ्यां हैं बाद बारे   हैं आशिक़ ज़ग के यकऱंग सारे
समज कर धन की वो ज़ुल्फां कों ग़ाज्यां[२८]   करें जा बरछ्यां सूं दस्त[२९] बाज्यां   १३१५
क़दां[३०] हैं सर्व-क़दां के ककर जान   लेवे नेज्या[३१] के तें हातां सूं गरदान
सदा झगडे के धिर[३२] ना डर कों देखें   धनुक[३३] कौ धन की अबरू[३४] कर को देखें

---

१ जंग, युद्ध करनेवाले २ व्याघ्र ३ पोलाद और एक पत्थर से आग पैदा करनेका साधन (फारसी–चक़माक़) ४ खड्ग विशेष ५ शरीर ६ समझना ७ शत्रु ८ भूना हुवा मांसखंड ९ अदू का बहुव.–शत्रु १० मामूली ११ निर्लज्ज १२ त्वरा १३ मोती परखनेवाला १४ कोश १५ दूत १६ भाषण १७ पत्थर के दिलवाला, निर्दय १८ बिना कारण १९ करूंगा २० कभी भी २१ डरूंगा २२ गुज़रूंगा, जाऊंगा २३ शौर्य २४ स्तुति, प्रशंसा २५ शत्रु को छीलनेवाला २६ दुष्ट भंजक २७ शंका, डर लेना २८ योद्धा २९ हात का खेल ३० शरीर ३१ भाला ३२ ओर ३३ धनुष्य ३४ भूं

सिपर[१] सीने[२] कर ऐसे हैं क़वी[३] दिल
गिने तीरां कों पलकां के[१] मुक़ाबिल[४]
लव्हे[५] का झलझलाता देख झलकार
देवें बोसे समजकर धन के रुख़सार[६]
हमारी तेग़[५] कों हैं नांवु ऊना
कहे ओना, करे वो काम दूना[७] १३२०
उसी ते उस कों है सब ठार कीमत
सिने का फूल सो है उस कों हुज्जत[८]
नई तुज में मुसलमानी के शैवे[९]
नई कुच तुज में इमानी के[१०] शैवे
अहै लाज़िम[११] मुंजे तुज सूं झगडना
है वाजिब[१२] बलकि तेरे सात लडना
यु बातां बोल कर दो शाह दाना[१३]
किया हाजिब[१४] कों उस शह के रवाना
वुहाजिब जा को बोल्या शह सूं अपने
सुन्या सो आ को बोल्या शह सूं अपने १३२५
नहायत[१५] था सो मतलब शाह पाया
अदावत[१६] के अ़लम[१७] कों वैं उचाया
चले दो-धीर ते दो लश्कर के सरदार
सिकंदर हौर दारा आय यक ठार
यकायक दो तरफ फ़ितना[१८] उठ्या जाग
उठी दो-धिर ते झगडे की सुलग आग
मिले हर-हाल[१९] आ कर अझदहा[२०] दो
हुए दो-धीर ते लटपट बला[२१] दो
सिलह-[२२]पोशां के यूं दिसते थे फौजां
उमंड समदूर की आती हैं मौजां १३३०
दिलेरां के दिसे यूं तन पो जोशन[२३]
ग़ज़ब[२४] की आग ज्यूं कयती है रोशन
मुवां चार[२५] आईने सूं मिल दिसे यूं
अगन पानी में ते निकले अहै ज्यूं
खडा सो क़ायम अपने पांवु को कर
दिसे सफ़[२६] यूं कि ज्यूं सद्दे-[२७] सिकंदर
निकल आए कि ताज़ां[२८] दो तरफ सूं
हुए आंगे पिछे कर अपनी सफ कों
अवल तंदूर[२९] पर झगडे के ज्यूं आए
अगन वैं तीर के लकडयां सूं सुलगाए १३३५
लगे सटने सरां पर ज़ोर सरकां[३०]
कंगोऱ्यां पर सटे ज्यूं चूर सरकां
दिलेरी सूं दिलेरां हात में हात
मिलाए गुरज[३१] हौर शमशेर के[३२] सात
ठनाठन देख हौर सुन कर घनाघन
लिए दांतां में उंगल्या धरत हौर घन
हुवा इता शफाशफ हौर फशाफश
ज़माना घाबरा हो कर किया ग़श[३२]
लग्या तीरां सूं हौर भाल्यां सूं आ काम
गए छात्यां के सब पेटां कों पैग़ाम[३३] १३४०

---

१ ढाल २ छाती ३ मज़बूत ४ सामने ५ तलवार ६ गाल ७ दुगन ८ चर्चा ९ पद्धति १० सत्यनिष्ठा ११ आवश्यक १२ योग्य १३ बुद्धिमान् १४ दूत, वकील १५ अंत, परिणाम १६ शत्रुत्व १७ ध्वज १८ झगडा। १९ एवं च २० सांप २१ संकट २२ शस्त्र-सज्ज २३ आवेश २४ पराकोटी २५ मृत २६ सैन्य की पंक्ति, क़तार २७ दीवार २८ घोडे २९ भट्टी ३० गलफांस ३१ शस्त्रविशेष ३२ बेहोश, शुद्धि खोना ३१ संदेश, ख़बर

इते तीरां सहे सीने के सिपरां   झजर[1] हो कर रहे सीने के सिपरां[2]
तमाशा रू-ब[3]-रू आ खोल कर आंक   यकस के यक सिने में सूं देखे झांक
यकस के एक छाती में खंजर मार   पिला कर काड सटते थे सलां[4] बहार
मूं में तीरां लगे थे सो दिसे यूं   हत्यां गांडे[5] लिए हैं मूं मने ज्यूं
दिलेरां तन कों लग तीरां पडे सो   नज़र तल सार[6] शल[7] हो कर दिसे वो   १३४५
धनुक सरक[8] मिल दिसन आ यूं हो यक तीर   मगर क्या कौस[9] में आया अहे तीर
तबर[10] बैठ्या सो हर यक सीस कों फोड   दिस्या यूं मुर्ग का ज्यूं लहु-भऱ्या मोड[11]
ज़रा[12] सूं लहू निकल जो भार आया   खतर[13] ऐसा हुवा कर वो दिखाया
खतर ऐसा हुवा ऐसा खचाखच   फलक[14] की हैबतां[15] सूं गई कमर धज[16]
हुवा उस ठार पर आलम[17] इता ठार   चल्या हो दंग इज़राईल बे-ज़ार   १३५०
गया छुप कर धुलारे[18] के तल अस्मान   हुए गायब नज़र में ते चंदर[19]भान
न देख सक कर यो फितना[20] हौर यो जंग[21]   दुन्या जीने सूं अपने आई थी तंग
इते रगडे गए झगडे तले उस   हतीं हौर ऊंट गए रगडे तले उस
भऱ्या था सब हवा रूहा[22] सूं जां तां   वजूदां[23] तल जमीं दिसती न थी वां
बह्या ज्यूं मिसऱ्यां पर फतह[24] का बाव[25]   किनारे पर लग्या मकसूद[26] का नाव   १३५५
यकायक मिस्र के शह के दिलेरां   दटा कर दल में ज्यूं पिठ्ठे[27] वो शेरां
फिराया वें मुख उस शह का सरब दल   सो पाए मिसऱ्यां यकबारगी बल
खुदा ते फतह ऐसा मिसऱ्यां पाए   जो शाहे-सिन्द कों जीता पकड लाए
पडी ज्यूं दिष्ट[28] शह की तिस के उपराल[29]   कया गुस्से सूं यूं उस अए बद[30]अफाल
तूं अपने नफ्स[31] के कामां की खातिर[32]   गुनहगारी[33] कों लेता अपने सिर   १३६०
गंवाया हात सूं अपने तूं शाही   सितम सूं ला ल्या मूं कों सियाही[34]
न यां रही तेरी ज़रा आवरूई[35]   न वां की कुच तूं पाया है निकोई[36]
खुदा कों खुश नई आता है यो काम   अबस[37] जग में हुवा यूं आज बदनाम

---

१ छलनी २ ढाल ३ सामने ४ शल्य ५ नैशकर ६ शक्ति ७ नि:सत्त्व, शक्तिहीन ८ गलफांस ९ कमान १० शस्त्रविशेष ११ तुर्रा १२ किंचित्, थोडा १३ डर, धोका १४ आकाश १५ डर, धाक १६ बैठ १७ अवस्था १८ धूल १९ चंद्र-भानु २० झगडा २१ युद्ध २२ आत्मा २३ शरीर २४ विजय २५ वायु २६ ध्येय, हेतु २७ घुस गए २८ दृष्टि २९ ऊपर, पर ३० दुष्कृति ३१ पापी मन ३२ लिए ३३ अपराध करना ३४ कालख ३५ इज्ज़त, कीर्ति ३६ नेकी, सत्कीर्ति ३७ व्यर्थ

करेगा क्या तूं, जो आई तेरी मौत — तुजे इस काम पर ल्याई तेरी मौत
तूं शहज़ादे कों मार्या जिस सनद सूं — उसी धातां सूं मरना है अजूं[1] तूं १३६५

सर्ग ३८ वां

जो मछलीके गल लिख कर कों पतर बंद भेजे ज्यूं
खबर उस की हयाती[2] की दो दिन कों फिर ले कर आनी[3]

किया उन फिर कर इस धात सूं अर्ज़[4] — रज्या[5] होए तो करूं यक बात मैं अर्ज़
कि मेरे एक खज़ाने मैं है मछली — न मछली उस किस्म कोई आवे सचली[6]
करे हैं उस कों हिकमत[7] सूं हकीमां[8] — घडे हैं वहुत सनअत[9] सूं हकीमां
तिलिस्म[10] उस पर लिखें हैं खूब अवल ते — सटे पानी में तो आपी च चलती १३७०
जिसे पानी में दिखलाया है जे मूं — लिख्या लाती है वो जिन्नां कने[11] सूं
खबर बा रे अवल शहज़ादे का लेवो — कि ज्यूं मंगते हैं त्यूं बादअज सजा[12] देवो
मंगा बेगी[13] सूं उस मछली कों दर-हाल[14] — कये त्यूं लिख को पानी में दिए डाल
वु मछली उस हकीकत का खबर ले — निकल कर आई दो दिन कों पतर ले
निछल[15] ख़त[16] सूं लिखी थी उसमें यो बात — जो शहज़ादे को कियते[17] नीर में घात १३७५
ले कर गई थी पकड कर एक माही[18] — मंग्या रखने कों ज्यूं उसको इलाही[19]
निगलने कों वो माही उस कों ना सक — कितिक दिन लग अपस के मूं मने रक
सटी जा कर जज़ीरे[20] पर समन के — कि जां होते हैं फूलां यासमन के
वहां खाता है हौर पीता है वो जवां — पर्यां के बंद[21] में जीता है वो जवां
सुन्या सो शाह बेटे की ख़बर यूं — मुवा नईं है वो जीता है ककर ज्यूं १३८०
हुवा दिल का उवाल उसका तले[22] टुक — सुख उस जग मुख दिखाया कम हुवा दुक
अछो कर तव[23] तलक उस शह कों यक ठार — चल्या अपने शहर कों वो शहरयार[24]

+ ★ +
+ +

---

१ अभी २ जीता रहना ३ आई ४ विनती ५ अनुज्ञा ६ टक्कर की ७ युक्ति, तदबीर ८ चतुर ९ कला १० जादू ११ पिशाच्च १२ बाद में १३ जल्दी १४ फौरन, त्वरित १५ सुंदर १६ अक्षर १७ किए थे १८ मछली १९ ईश्वर २० द्वीप २१ कैद, कारावास २२ नीचे २३ तव २४ राजा

सर्ग ३९ वां

छुप्या कनआं[1] मनें युसुफ बदल धुंडनें समन्बर ने
चली थी बावरी होकर पकड सूजे[2]–जुलेखानी

मुसाफिर इश्क़ के शिद्दत[4] नगर का — बयां करता है यूं मिहनत[5] सफर का
समन्बर जो पडी थी बिरह धरती — दऱ्या में ग़म के डूबती हौर तरती १३८५
गया था रंगो–रूप उसका हो बरबाद[6] — लगे ज्यूं पतझडी के पात के नाद
पिरत के गरम बारे सूं हो मख्मूल[7] — पडी थी भुई उपर कुमला के ज्यूं फूल
रहचा था हो को यूं उस नार का हाल — ख़िज़ां[8] में ज्यूं सुके सो झाड की डाल
पडी सों बाग़ ते बुलबुल नमन दूर — बिरह के दर्द दुख सूं हो को रंजूर[9]
कधीं बिरहे सूं जो तन धगधगावे[10] — थंडक होने चंदन घंस कर लगावे १३९०
तो उस बिरहे–जले के तन के ऊपर — वो जाता था चंदन जल राख हो कर
कधीं जो आग बिछडे की करे जोश — बिछावे फूल पग तल भर के पा-पोश[11]
तो उसकी आंच सूं फूलां सब यकबार — फिरे लग जल को होते थे ज्यूं अंगार
न ल्या कर ताब बिछडे के तलक सूं — गुसे सूं हरघडी झगडे फ़लक[12] सूं
अगर ताले[13] सूं जो यक तिल सरे बख्त[14] — बुरी बख्तां सूं अपने फिर गिरे बख्त १३९५
सुनी जो जीव का वो अपनी मीता[15] — मुवा नई है पऱ्यां के बंद में जीता
कई इस ठार अछूं मैं अब कितिक दिन — बिलकती हूं तपती पीव के बिन
गर यां सौ बरस लग कर रहूं ठार — तो हरगिज़ मुंज पो ना आसी[17] किसे प्यार
हलक़[18] सुक कर मुई तो या जिगर[19] फूट — न पावे प्यास कों पानी का यक घोट[20]
भला है वो जो धुंडने जाऊं उस कों — मेरे बख्तां सूं फिर कर पावूं उस कों १४००
पिरत के उस सफर को हो उताली — लें अपना चीर[21] कंठा गल मे घाली[22]
मंगी चलने कों जब बिरहे पलेटी[23] — लेकर पावां कों सब छितडें लपेटी
भिबूती ले अपस मूं कों लगाई — पुनम का चांद बादल में छुपाई
सफर कों मुस्तइद[24] हो इस रविश सूं[25] — चली वैं धूंड लेने उस सजन[26] कों

---

१ अंधा कुंवा, जिसमे पानी न हो २ जुलेखा का दर्द, जलन ३ प्रवासी ४ प्राचुर्य, प्रचुरता ५ कष्ट ६ नष्ट ७ जली हुई ८ पतझड का ऋतु ९ बीमार, रोगी १२ आग का बहुत जोरों जलना ११ पांव पोछना १२ आकाश १३ नसीब, दैव १४ नसीब १५ मित्र, प्रिय १६ कही १७ आएगा १८ कंठ १९ कलिजा, हृदय २० चुल्लूभर पानी २१ कपडा, साडी २२ डालना २३ बिरहसे पलटी हूई २४ सिद्ध २५ चालचलन २६ प्रियकर

बिरह के दर्द दुख सूं पदमिनी वो — चली वनवास ले बिरागनी वो १४०५
वडी दुख ग़म की आ सीने उपर सल[१] — चली फिरती जंगल को हो को कोयल
मदन के बल ते पीव कों मोहिनी वो — सो मुल्के मुलुक कों धुंडते चली वो
जिते थे आशनायां[२] हौर बेगाने[३] — लगे उस देख कर अफसोस[४] खाने
यो नाज़ुक नाज़[५] की नारी नवेली[६] — यो नाज़ुक छंद हौर छब की छबेली[७]
कि यो नाज़ुक सुंदर नाज़ुक पगां की — यो नाज़ुक फूल ते नाज़ुक रगां की १४१०
कधीं फूलां पो यो चलने जो जावे — तो पांवां कों छल्ले आ तलमलावे
कधीं चंदन जो लावे तन कों वो नार — वो चंदन उस के तन हो कर लगे बार
दिवे की छांवूं ज़ो पडती थी उस पर — संगीनी[८] ते रहती थी उठ न सक कर
हरयक कोई देखते थे तो नज़र सूं — वो लगते थे नज़र सूं ज़ख्म[९] उस कों
निपट आसूदगी[१०] ते हात धो शौख़[११] — देखो निकली है क्यों परदेस हो शौख़ १४१५
यो पापी इश्क़ कां ते सर चडयाउस — यो कां ते नाग बिछडे[१२] का लडया उस
बिसर सुद अपने मन धन का चली है — ख़बर सट अपने तन मन का चलो है
समन्वर तव चली पीरत के ज़ोरों — चली अपने पिरत की सत[१३] के जोरों
न परवा धूप का ना छांवूं का था — न सुद उस कों जंगल हौर गांवूं का था
कधीं चुभते थे उस तलव्यां[१४] सें कांटे — लगें तन कों कधीं कांटे बुरांटे[१५] १४२०
कधीं पाडां[१६] उतरती हौर चडती — कधीं मांदी[१७] हो गिरती हौर पडती
कधीं नाले, नद्यां, हौज़ां उलंगती — छल्यां सूं पावूं के गाहे[१८] उलगंती[१९]
पिरत सूं पीव के हो कर रहेंली — वो यूं चलती अथी, लाडां की खेली

---
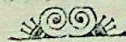
१ शल्य, कांटा २ परिचित ३ अपरिचित, पराए ४ दुःख ५ गर्व ६ नवयौवना ७ सुंदरी ८ बोझ ९ चोट १० आराम, चैन ११ निडर १२ बिरह १३ सतीत्व १४ पैर का निचला भाग १५ बोरांटी झाडविशेष १६ पहाड, पर्वत १७ थकी हुई १८ कभी १९ पार करना

सर्ग ० वां

समन्बर इश्क़ सूं पीव के चली वैताग[1] ले सर पर
पडी आ यक जज़ीरे[2] पर अथा वो जाए[3]-नूरानी

अजब कुच इश्क़ है, है कुच अजब इश्क़ — जिधर देखे उधर है इश्क़ सब इश्क़ १४२५
अगर नैं इश्क़ तो आलम[4] हुवा क्यों — मुठी भर खाक सूं आदम हुवा क्यों
अगर नैं इश्क़ तो यो उम्र सारा — परेशां हो को के[5] फिरता है बारा
अगर नैं इश्क़ तो के सब्ज़[6] है झाड — खडे के पावूं अपने गाड यूं पहाड
अगर नैं इश्क़ तो वो बिरहिनी धन — चली क्यों छोड अपना माल हौर धन
खुदा के लुत्फ़[7] का मान्या सो बारा — खुल्या उस दर्द के दिल का अंधारा १४३०
ब-हर-हाल[8] एक जज़ीरे[2] में पडी धन — जज़ीरा वो न था, था यक सरग बन
उचाए थे सरां वां नौ-निहालां[9] — थे डुलते बावूं सूं वो बन डाल्यां
दिसे लग डाल सूं मिल डाल इस धात — लिए है अच्छऱ्यां[10] ज्यूं हात में हात
थे चश्मे नीर के हर ठार भर कर — हुवा था चौ-कुधन[11] सब्ज़ा[12] ज़मी पर
दिसे सब्ज़ा जमीं पर यूं हर यक जा — बिछाए है बिछाना पाच[13] का ल्या १४३५
दिसे यूं झाड पानी के बंधारे[14] — कि ज्यूं हूरां[10] खडचां कौसर[15] किनारे
फिरे पंख्यां वहां सब्ज़े उपर यूं — मलक[16] फिरते ज़मीं पर पाच[13] के ज्यूं
निझा कर देखती है वां जो वो नार — महल दिसता है यक अपरूप[17] उस ठार
महल वैसा न था रूए-ज़मी[18] पर — शक[19] आता है कने कों अर्श[20] था कर
थे चश्मे[21] उस में ज्यूं नयनां पऱ्यां के — दिसे ताकां[22] भुंवां ज्यूं अच्छरां[23] के १४४०
कितिक वालां मिला कर रख क़लम नाम — करे थे बाल ते बारीक वां काम
रखे थे बेल सूं मिल कर कल्यां कैं — रखे थे झाड सूं मिल कर फल्यां कैं
लिखे थे मिल को कैं खिलते सो फूलां — खिले कैं फूल कैं खिलते सो फूलां
कई भंवरे कई तीतर लिखे थे — कहीं बुलबुल कों फूलां पर लिखे थे
सुने सूं सूर कों दिखलाए थे कैं — लिखे थे कैं रूपे सूं चांद के तें १४४५

---

१ ऐहिक बातों से दिल उठना २ द्वीप ३ प्रकाशित स्थान ४ जग ५ क्यों ६ हराभरा ७ कृपा ८ संक्षेपतः ९ नए, छोटे पेड़ १० अप्सरा ११ चारों ओर १२ हरयाली १३ पाचू, रत्नविशेष १४ सीमा, किनारा १५ स्वर्ग एक झरना १६ देवदूत १७ अप्राप्य, अपूर्व १८ भूपृष्ठ १९ शंका २० सिंहासन, गद्दी २१ झरना २२ क़तार, पंक्ति २३ अक्षर

मिनबत[1] के करे थे बहूत कामां	नज़ाकत[2] के करे थे बहुत कामां	
लिखे थे कुत्ब शाहां का, कहीं बज्म[3]	लिके थे तुर्कमानां[4] का कहीं रज्म[5]	
कहीं फरहाद कैं शीरीं लिखे थे	अ़जब कुच सूरतां शीरीं[6] लिखे थे	
कहीं मजनूं कहीं लैला लिखे थे	बही[7] ताज़ी सूरतां ले ले लिखे थे	
चितर ऐसा चितारे थे चितारे	चितारी चीन के हैरां[8] थे सारे	१४५०
समज कर धन पऱ्यां का है ककर ठार	रही कर बिरहिनी उस ठार पर ठार	
ख़राबा[9] जा बसाई बिरहिनीं धन	खराबेमें सदा अछता है सच धन	
वले बातिन में कुच आराम नई था	तपे बिन, रोए, दुजा काम नई था	
हर यक दिन, हर घडी, हर तिल वो नारी	सजन कों याद कर करती थी ज़ारी[10]	
रही थी उस सनद सूं शह-परी[11] वां	उतम उस लाल की वो मुश्तरी[12] वां	१४५५

सर्ग ४१ वां

खुशी सूं मलिक आरा ले चली वैं सर करने कों
चडी यक महल पर जाकर दिस्या वो महल नूरानी[13]

कते यक बाशाह कोई उस कुधन[14] था	हुकूमत[15] में सुलेमां के नमन था	
थे उस के ज़ेर देवां जग के सारे	पऱ्यां उस हुक्म सूं नैं थ्यां किनारे	
थे फरमां[16] में उस के सब सुबह ता शाम	करें उस घर में जिन्नां[17] रोज़ आ काम	
कितिक दिन कों ल्या वो हौर आ़लम[18]	सटया वो उस दुन्यां के मुल्क का ग़म	१४६०
न था बेटा सो कोई उस शाह के घर	हुवा था राज बेटी पर मुक़र्रर[19]	
कते थे आ़लम[20] उस को मलिक आरा	वो बेटी बाप का ली मुल्क सारा	
हुमायूं उस हुमा[21] का लाल छत्तर	जगत पर सब हुवा था साय-गुस्तर[22]	
हुकूमत का उचा उस माह[23] का ढाल	सटया था छांवु आलम[20]के सर उपराल	
जडत के ताज[24] का उस के निछल नूर	हुवा था सूर नमने जग पो मशहूर	१४६५
हवा देखी जो यक दिन था बहुत खुब	खुशी का सर चडया है उस कों मै खूब[25]	

---

१ मेणबत्ती (मराठी), मोमबत्ती २ नाजुकपन ३ महफिल, सभा ४ मुसलमान ५ लडाई ६ प्यारा, आकर्षक, मधुयुक्त ७ भी ८ आश्चर्ययुक्त ९ पडाव जमीन १० रोना, दुःख करना ११ उत्तम अप्सरा १२ खरीदनेवाली, शुक्र १३ प्रकाशमान् १४ ओर १५ राज्य १६ आज्ञा १७ एक पिशाच्च योनि १८ जग १९ निश्चित २० जग २१ एक शुभ पक्षी २२ छांवूं फैलानेवाला २३ चंद्र २४ मुकुट २५ मद्य

सवारी के बदल[1] होने रवाना सटे देख खुब साअत[2] पेश खाना[3]
सवारी का करी वो शह परी चोप[4] बहुत कुच ऐशो इशरत का करी हूप[5]
मंडप यक जा को आगे खूब देते[6] खजिल[7] असमां के डेरे कों कयते[8]
बुलंद ऐसा उचाए थे वो मंडप गया परदा बदल[9] का तिस अंगे छुप १४७०
मंडप में उस गगन फिरता दिसे ज्यूं खयाल फिरता अहे फानूस[10] में ज्यूं
उचाए सो जमीं पर बारगह[11] वो दिस्या सब कों नवा यक आसमां हो
दिसे बैठी सो उस चौढल[12] मने यूं दिवा रोशन करे कंदील में ज्यूं
मिले सो लोक चौ-फेर[13] उस के सारे दिसे ज्यूं चांद के चौगिर्द तारे
जु कोई देखे सो सब उस माह-रू[14] कों उचाए थे जबां कों यूं दुआ सूं १४७५
खुदा या हुस्न[15] में यो आज है यक बलायां[16] सूं तूं आलम[17] के निगह[18] रक
तुं रक चंदर के तैं घटने सिते दूर नको कम कर तूं उस के हुस्न का नूर
खला अगला[19] कर उस चंदर बदन का जियादा कर जिला[20] उसके रतन का
जु हलका[21] घन पो दिसता सो खले का उसे तू हांस[22] कर उसके गले का
कर उस के हात का दरपन शिशे कों[23] कर उसका फर्श चर्खे[24] अतलिसी[25] कों १४८०
तमाशे देखती ताज़े हर यक ठार चली सो शह-परी बिन पर की अवतार
बुलंदी में है ज्यूं हिम्मत-बुलंदा[26] बुजुर्गी[27] में है ज्यूं इकबाल[28]-मंदां
अरश[29] के धीर था रुख[30] नीट[31] उसका फलक कों तक्या-गह[32] था पीट उस का
फरिश्ते[33] कूद्यां उस गड पो मेलें बदल[34] उस गोद में ज्यूं तिफल[35] खेलें
न उस कों बाव के हमल्यां सूं ग़म था पऱ्यां के बात का ना कुच अलम[36] था १४८५
थे पैदा आशिकां के उस में लख्खन[37] उसी ते हो को था गुलजार[38] दामन[39]
जु देखे फाड वो इशरत[40] उताली है अपने मरतबे[41] के सार[42] आली[43]
चडी उस आसमां पर मुश्तरी[44] वो उडी उस फाड[45] पर सूं शह-परी[46] वो
बुलंदी पर देख उस हर कोई यूं कए नवा यो चांद नौ असमान का है

---

१ लिए २ घडी ३ डेरा ४ इच्छा, अभिलाषा ५ इरादा ६ लिए थे ७ लज्जित ८ किए थे ९ मेघ, बादल १० कंदील, दीप ११ दरबार १२ अंबारी १३ चारों ओर १४ चंद्रमुखी १५ सुंदरता १६ संकट १७ जग १८ दृष्टि १९ अनोखा, उत्तम २० प्रकाश २१ गोल, वर्तुळ २२ हांसली नामी अलंकार २३ जमीन २४ आकाश २५ नववे आसमानका नाम २६ हिम्मत के ऊंचे २७ बडापन २८ सुदैवी, वैभवसंपन्न २९ गद्दी ३० दिशा, मुख ३१ सीधा ३२ स्थान ३३ देवदूत ३४ मेघ ३५ बच्चा ३६ दुःख ३७ लक्षण ३८ उद्यान ३९ पल्लू ४० आराम, ऐश ४१ प्रतिष्ठा ४२ समान ४३ ऊंचा ४४ शुक्र ४५ पहाड, पर्वत ४६ अप्सरा

दिस्या वो महल जो वो नार र्‍हती थीं
बिरहिनी ठार कर जिस ठार र्‍हती थी १४९०
अचंबा[1] उस लग्या सो देख वो ठार
करे लोकां केधिर यूं अपने इज़हार[2]
कितिक बोले अछेगा सूर का ठार
कितिक कए सुबह के है नूर का ठार
कितिक बोले चंदर का घर अछेगा
कितिक बोले इंदर का घर अछेगा
कितिक बोले फलक का घर अछेगा
कितिक बोले बिहश्त[3] का दर[4] अछेगा
बडचां सूं या न्हन्यां सूं हौर किसी धात
मुशख्खस[5] खूब नैं हुई, देख कर बात १४९५
कई यूं यूं दीदबानां[6] कों बुला कर
देखो वो दूर ते दिसता सो जा कर
कि वो क्या ठार है, वो कौन जा है
वो ऊंचा फाड[7] है कि या छजा है
रहे हैं कौन वां का हाल क्या है
र्‍हते सो लोक का वां चाल क्या है
शिताबी[8] सूं खबर उस ठार का ल्या वो
सुबा हो बास उस गुलज़ार का ल्यावो
गए जो देखने कों लोक यक-सर[9]
खबर यूं ल्या ए, यां वां देख फिर कर १५००
कि है यक अर्श[10] ऐसा महल आ़ली[11]
नई उस ठार कोई, दिसता है खा़ली[12]
न उस के कोई भीतर ना भार आदम[13]
नहीं तसवीर. बिन उस ठार आदम
वलेकिन[14] देखते हैं तो निझा कर
दिसे वां एक औरत[15] तख़्त ऊपर
न जाने आदमी है या परी है
न जाने सरग की, या अछ्छरी[16] है
सितारा क्या गगन पर ते झडचा है
मगर अंबर ते चंदर तुट पडचा है १५०५

सर्ग ४२ वां

मिली आकर समन्बर सूं हकीक़त[17] सब सुनी उस का
वो सुनते दी दिलासा उसने अपने तैं मिहरबानी

सुनी ज्यूं वो परी उस हूर[16] की बात
सुनी वो चांद ज्यूं उस सूर की बात
सुं रग़बत[18] देखने कों उस करी वैं
चली वां ते वां वो गुन-भरी[19] वैं
मिली उस फूल सूं जा कर कली वो
मिली तिस खूब सूं आ कर भली वो

---

१ आश्चर्य २ आविष्कार ३ स्वर्ग ४ दरवाज़ा ५ खोज किया हुवा, पहचाना हुवा ६ पहरेदार ७ पहाड, पर्वत ८ जलदी ९ सारे, तमाम १० सिंहासन ११ ऊंचा १२ रिक्त १३ मनूष्य १४ परन्तु १५ स्त्री १६ अप्सरा १७ हाल. वार्ता १८ इच्छा १९ गुणवती

दिखत खुश-हाल[1] हो यकस के मूं एक — लगे अहवाल पूछन एक सूं एक — १५१०
कई वो शह-परी[2] उस हूर[2] सूं यूं — तुं अपना हाल मुज सूं बोल है त्यूं
अवल तूं बोल बा रे कौन है आप — तुं बेटी किस की तेरे कां हैं मां-बाप
कली कंवली है तू किस के चमन की — है रोशन शमा[3] तूं किस अंजुमन[4] की
किने बे-रहम[5] बांधा तुज पलू आग — दिया किन बे-कटर[6] सर तेरे वैताग
किया भयरा तुजे किस का पिरत छेड — लिया किस के बिरह का दर्द तुज बेड[7] — १५१५
मुजे लगती हैं तूं बहुतीच दुख्यरी — मुंजे दिसती है तूं वैताग-मारी
अंगार अंजवां की ले दुख सूं बिछाई — ज़बां को आग की कर जीव उचाई
मेरा है बाप दुख हौर दर्द माई — है मेरी भान गम हौर रंज भाई
अ[8]गीटी जिस कते मेरा चमन है — मेरी जलती हुई भटी सो अंजुमन है
किसी बे-रहम[5] कों या मिहर-वां[9] कूं — कए तो क्या नफा कर, सोसती हूं — १५२०
न मुंज में हौर बख्तां[10] में है यारी — न ताला[10] हौर मुंज में दोस्त-दारी[11]
न मेरे लाल का मुंज को खबर है — न मेरे हाल का गुंज कों खबर है
जु कुच कए तो नसीबां कों कना[12] है — नई तो मुंच ले मूं चुप र्‍हना है
कितिक वार इस रविश[13] सूं बहुत दुख वो — रगत अंजवां[14] सूं कितिक वक्त मुख धो
दरीगी सूं हजारां खोल कर लब[16] — कई गुजर्‍या सो अपना दर्दो गम[15] सब — १५२५
समज उस बिरह-भूनी है ककर कोई — पिवला मूं को दुख सें उसके टुक धोई
सो ऐसे में कितिक आ मिल कों दायां[17] — ले फुल-नीर[18] उस दोनो का मुख धुलायां
दिलासा दे कई यूं गुन-भरी वो — मुहब्बत के इरम[19] की शह-परी[2] वो
तुं गम सट दे, नको यूं दिल-फिगार[20] अछ — खुदा के लुत्फ[21] सूं उम्मीदवार अछ
खुशी तुज आज ते दिन दिन नवी है — नको डर तूं खुदा सिर पर क़वी[22] है — १५३०
तुं आवेगी अगर मेरे नगर कूं — करूंगी काम तेरा हर हुनर सूं
पर्‍यां ऐस्यां मेरे सब हुक्म में हैं — वु सुनत्यां हौर करत्यां जो कवूं मैं
समज तूं सच हुवा है काम तेरा — मिले त्यूं मैं करूंगी राम तेरा

---

१ संतुष्ट २ अप्सरा ३ दीप ४ सभा ५ निर्दय ६ निर्दय ७ घेरना ८ अंगीठी ९ कृपालू १० दैव ११ मित्रता १२ कहना १३ चालचलन १४ अश्रू १५ शोक, दुःख १६ होंट १७ स्त्री-नोकर १८ फूल का पानी १९ स्वर्ग २० मन को जख्मी करनेवाला २१ कृपा २२ मज़बूत

सुनी यो बात ज्यूं वो बिरहिनी धन
लग्या दिल का खुल्या त्यूं फिर को फुल बन

हुवा यूं उस के जीव हौर दिल कों राहत[1]
यकायक गैब[2] ते ज्यूं आए दौलत १५३५

हुईं खुश हाल यूं सब छोड कर रंज[3]
कि ज्यूं मुफलिस[4] के आया हात में गंज[5]

कई[6] फिर आजिज़ी[7] सूं उस परी कों
मुरव्वत[8] के सर्ग की अच्छ्छरी[9] कों

मुंजे इस वक्त पर हो तूं सगी भान[10]
मिला कर पीव सूं दे मुज तूं जीवदान

वु चंचल शह[8]-परी अचपल सुंदर कों
चली ले कर संगात[11] अपने नगर कों

बहुत इज्ज़त सूं अपने सात ले जा
रखी हुरमत[12] सूं अपने पास दे जा १५४०

रहचां यक ठार मिल कर वो सहील्यां
रहचां थ्यां एक दिल हो दो सहील्यां

हो आपस में अपी यक-जीव यक-दिल
रहचां थ्यां खेलियां हंसत्यां दोनो मिल

सर्ग ४३ वां

लिख्या है मलिक आरा ने पऱ्यां के शाह कों नामा[13]
सो उस महबूस[14] ना-हक़[15] को छुडा देव कर मिहरबानी[16]

अगरचि ज़ाहिरा[17] वो बिरहिनी नार
थी हंसती खेलती उस सूं मिल यक-ठार

वले[18] बातिन[19] में कुच आराम नईं था
तपे[20] विन उस कों दूजा काम नईं था १५४५

धुंवां दिल जल को जिस तिल भार आवे
तुरत बारे सूं दम के उस उडावे

जु मारे जोश जब दो नयन की देग[21]
करे पलखां कों सिर-पोश[22] उस वो बेग

जु लब गरमी सूं ग़म के सुक को जब जाए
सुके सो, जीव का तर[23] टुक उपर लाए

जु जाता था फिका पड को रुख़[24] लाल
रगड ले लाल कर दिखलावे दर-हाल[25]

समजने ना दे कर इस धात थी वो
हु कर ज्यूं छांवूं उस के सात थी वो १५५०

सो यक दिन उस परी कों देख कर शाद[26]
दिलाई बात अपने दर्द की याद

कि कब लग यां अछूं[27] इस हाल सूं मैं
बिछड कर अपने दिल के लाल सूं मैं

---

१ आराम. २ अदृश्यता. ३ दुःख. ४ दरिद्री. ५ कोश, खज़ाना. ६ कही. ७ नम्रता. ८ प्रेम. ९ अप्सरा १० बहन ११ साथ. १२ इज्ज़त, मान. १३ पत्र. १४ बंदी, कारावास मे रखा गया. १५ निरपराधी. १६ कृपा. १७ बाहर से. १८ परंतु. ११ आंतर, दिल, मन. २० तपना, जलना. २१ बरतन. २२ शिर का आच्छादन. २३ गीलापन. २४ गाल, चेहरा. २५ तुरन्त. २६ संतुष्ट, आनंदित. २७ रहूं.

...१०

कधां लग मैं अछूं इस धात रोती अंजू[२] आंख्यां के आंख्यां में जिरवती[३]
यु सुन कर बात उस कों प्यार आ कर कई मुनशी कि तैं अपने बुला कर
पऱ्यां के शाह कों लिख बेग नामा[४] तुरत तर मश्क[५] सूं कर खुश्क[६] खामा[७] १५५५
कि यक कोई शाह-ज़ादा इस तरफ का हमन खाक्यां[८] मने इज़्ज़ो-शरफ[९] का
अवाचीते[१०] उधर जाकर पडचा है पऱ्यां के बंद[११] में वो संपडचा है
दे कर इस धात की लिख कर ज़बानीं कन्या काफूर पर अंबर-फ़शानी[१२]
तबीअत[१३] सूं लिख्यां तकरीर[१४] ताज़ा[१५] किया मक़सूद[१६] का तहरीर[१७] ताजा
निछल सफहे[१८] उपर सतरां[१९] दिसे यूं कि ज़ुल्फां[२०] मह-रुखां[२१] के रुख़[२२] पो है ज्यूं १५६०
दिखाया कर अजायब[२३] कारबारां[२४] दऱ्या पर दूद के कैंके के भारां
किया सो खत्म[२५] नामे कों वो दाना[२६] दे यक सियाने के हत कियते[२७] रवाना

सर्ग ४४ वां

छुडा कर मलिक आरा के शहर कों भेज दे शह ने
दिया संगात परयां कों करो हर जा निगह[२८]-बानी

पऱ्यां के शाह कों अं-पडचा[२९] सो फर्मान[३०] दिया फर्मां कों हाजिब[३१] सूं मिल मान
सुन्या नामा केरा[३२] मक़सूद सारा देख अपना उस में है कर सूद[३३] सारा १५६५
कन्या लोकां कों अपने हुक्म वो राज कि पैदा हर सनद सूं उस करो आज
वु है कैं मलिकआरा का क़राबत[३४] बहुत धरती है कये[३५] उस सूं मुहब्बत
वु आशिक़ है कैं उसकी भान[३६] का सो कवल होगा कैं उस की भान का सो
वु लोकां ज्यूं इशारत[३७] शाह का पाए समन के उस जज़ीरे[३८] सूं उचा ल्याए
नज़र शहज़ादे पर शह की पडी सो लग्या कयने कों यूं हैरान हो वो १५७०
अजब यो शक्ल यो सूरत अजब है जु कुच अछना सो खूबी उस में सब हैं
बहुत ताज़ीम[३९] सूं उस को बुलाया मुहब्बत सूं बुला कर बैसलाया[४०]

---

१ कब. २ अश्रू, आंसू. ३ हजम करना, पी लेना. (मराठी जिरविणे) ४ पत्र. ५सुगंधविशेष. ६ सूका. ७ लेखनी. ८ मनुष्य, इहलोकवासी, मृत्तिकाके बने हुए ९ मान, वैभव. १० यकाएक, दैवयोगसे. ११ कैद. कारावास. १२ सुगंधी फैलांना. १३ बुद्धिमत्ता १४ भाषण, १५ नई: १६ ध्येय, हैतु. १७ लिखना. १८ पृष्ठ, १९ रांग, कतार. २० केस. २१ चंद्रमुखी. २२ चेहरा, गाल. २३ आश्चर्यपूर्ण. २४ काम. २५ पूरा, २६ बुद्धिमान. २७ करता. २८ दृष्टी रखना २९ पहूचा. ३० आज्ञा. ३१ दूत वकील. ३२ का, की, के. ३३ फायदा, भला. ३४ नाता, संबंध. ३५ कहे ३६ बहन. ३७ सूचना. ३८ द्वीप. ३९ मान करना, ४० बिठाना

मलिक-ज़ादे[1] केरा नज़दीक ले यूं   शहनशह देखता है तो करम[2] सूं
रही है ज़र्द[3] हो कर रुख़ की लाली   रंगारंग इश्क़ की दिसती है चाली
रहे हैं हो अधर खुश्क[4] व नयन तर[5]   मुहब्बत सूँ लिया है बहर[6] हौर बर[7]   १५७५
कया अए इश्क़ के जन्नत[8] के रिज्वां[9]   तु है किस हूर की ख़ातिर परेशां
तुं अपना रंज मुंज-धिर[10] खोल कर बोल   तु पाया रंज किस ते सर ब-सर[11] बोल
यकेला यूं तुज़े बिरहे में सट कर   रही सो कौन है वो बोल सुंदर
किने[12] यूं ज़ुल्फ का तुज गल में भा[13] दाम[14]   देती है तलख़[15] अपने हिज्र[16] का जाम[17]
तुजे करने दिवाना हो को आडी[18]   पिरत के कोन यूं फांदे[14] में पाडी   १५८०
शराब अं-पडचा हैं तुज किस छंद-भरी का   लग्या आसीब[19] तुज कों किस परी का
पिरत के जोश कों दिल में न सक दाब   दे कर रुख़सार[20] के गुलज़ार[21] को आब[22]
कया वो फिर को यूं उस कों कि अए जम   चमन ताज़ा अछो तुज हुक्म का जम[23]
मेरे दुख का है रुख[24] यूं जीव पकड कर   न आसी[25] हात सूं किस के उपड[26] कर
पिरत का नाग क्या कवूं में लडचा सो   कवूं क्या ज़हर बिरहे का चडचा सो   १५८५
हुवा परदेस मुंज पर देस मेरा   हुवा है रात के सिर दीस मेरा
डुब्या है इश्क़ के समदूर[27] में दिल   मुहब्बत के पडचा है बंद में मुश्किल
समन्बर यक कते सो है दिल आराम   ले कर गई है वो मेरे दिल ते आराम
किधर हुयगी न जानूंवो सहीली[28]   नगीं-सूरत[29] मदन-मूरत छबेली
नयन के नाद उस की नित हूं हैरां   हुवा हूं ज़ुल्फ के नमने परेशां   १५९०
दहन[30] नमने है उस के दिल मेरा तंग   है उसके तिल[31] सूं मेरा ज़र्द[32] है रंग
करूं क्या में है सद हैहात हैहात   न मेरा इख़्तियारी[33] है मेरे हात
अगर कुच इख़्तियार[33] इस ठार होता   तो निसदिन काई कों इस धात रोता
कया वों शाह शह-ज़ादे[1] सूं फिर वैं   हकीक़त सुन को बोल्यां उसके धिर वैं
नको मग्मूल[34] अछ तूं अए सुजानी   नको कर ले लहू[35] कों ग़म सूं पानी   १५९५

राजपुत्र २ कृपा ३ पीला ४ सूका ५ गीला; जलसे भरा हूवा, ६ समुद्र ७ जमीन, खुश्की ८ स्वर्ग ९ स्वर्गका पहरेदार देवदूत १० मेरी ओर. ११ पूरा १२ कौन. १३ डालना. १४ जाला. १५ कडवा. १६ वियोग, जुदाई. १७ प्याला, १८ सामने, रुकावट. १९ दुःख, धोका. २० गाल. २१ उद्यान २२ पानी, जल २३ नित्य. २४ वृक्ष, झाड २५ आएगा. २६ जड से उखाडना, २७ समुद्र. २८ प्रिया. २९ रत्न—मुखी. ३० मुख, ३१ शरीर पर का काला दाग ३२ पीला, ३३ वस, अधिकार- ३४ दुःखी ३५ रक्त

सिना[1] दुख सूं नको ले फोड अपना
नको जीने सूं ले मुख मोड अपना
नको हो घाबरा तू जान[2] जानी
सुन्या हूं यक खबर मैं आसमानी[3]
कि वो तेरे प्रेम की प्रेम-पियारी
अहे बेगी च[4] तुज सूं मिलनेहारी
पडी सो कान में यो बात उस के
रही नैं इख्तियारी हात उस के
कया[5] या[6] रब[7] यो ताले[8] कां हैं मुंज कूं
जु देखूं फिर को मैं उस चांद का मूं १६००
नसीबा कां है वो जो फिर को उस पावुं
जु देकूं वो मुबारक[9] उस के मैं पांवुं
मिरे बख्तां[8] का नैं मुंज कों पत्यारा[10]
जु होए दिल फुटया सो फिर को सारा
दिलासे सूं दिल उस का शह बहुत रंग[11]
किया वां ते रवाना मुअज़रत[12] मंग
म-बादा[13] होए कर बी उस उपर घात
दिया कितिक पर्‍यां कों उस के संगात
चल्या वो वां ते राते रात ले कर
उडयां उस गुल कों हातेहात लेकर १६०५
दिस्या यूं वो पर्‍यां के सात वो जान
सवारी ज्यूं के निकले हैं सुलेमान
ब-हर-हाल[14] उस रविश[15] कर्री-फर[16] सूं
जु अं-पडे मलिकआराके नगर कूं
अथा उस शहर के नजदीक[17] यक बाग़
इरम[18] के दिल पो था उस बाग़ सूं दाग़
जु चल कर आए थे वो बाट सारे
उतर वां मांदगी सारी उतारे

सर्ग ४५ वां

जब आया जेबो–जीनत[20] सूं महल में मलिकआरा के
देख उस की शक्लो–क़ामत[21] कों खुशी दिल में लगी आनी[22] १६१०

खुशी कीं वो खबर सुन मलिक-आरा
सिंगार अपना रंगारंग शहर सारा
बुला ल्यानें मुबारक[9] उस हुमा[23] कों
करी अपने रवाना पेशवा[24] कों
रहया था शाह-जादा ठार[25] कर जां
बडे गोग[26] सूं आया पेशवां
नज़र उस के पडया ज्यूं शाहज़ादा
तुरंग पर ते उतर कर हों पियादा[27]
अदब सूं हों अंगे तसलीम[28] कयता[29]
हो हुदहुद[30] इश्क़ का पैग़ाम[31] देता १६१५

१ सीना, छाती. २ प्राण का मित्र. ३ आकाशनिवासी. ४ जल्दही ५ कहा. ६ अए. ७ ईश्वर, ८ नसीब दैव. ९ पवित्र· १० विश्वास. ११ रंगना. १२ माफो, क्षमा. १३ ऐसा न हो. १४ संक्षेपत: १५ चालचलन· १६ शान, वैभव १७ समीप. १८ स्वर्ग, १९ थकावट. २० शोभा, २१ आकृति व शरीर. २२ आना. २३ एक शुभशकुन पक्षी. २४ प्रमुख प्रधान. २५ ठहरना. २६ शान, वैभव. २७ पयदल. २८ वन्दना, नमस्ते. २९ करता. ३० एक पक्षीविशेष. ३१ वार्ता, खबर.

नवाज़िश[1] सूं पऱ्यां कों फिर को फिराए[2]
महल में शाहज़ादे को बुला लाए

बहुत इज्जत सूं शहज़ादे कों लेजा
रखी हुरमत[3] के यक जागे पो दे जा[4]

वु आशिक़ इश्क़ का ना सोस सक सोज़[5]
जपे उस मोहिनी कों देकने रोज़

चंचल बी[6] देक उस अपसीं दिखाने
धुंडी दिल में हरयक तिल[7] तिल बहाने

सिने जलते थे दिन को हो को आवा[8]
बिरह का रात कों दाटे उचावा[9] १६२०

न थी दोनो में कुच ज़रा सबूरी
दोनो च[10] के हक़ पो थी हो जहर[11] दूरी

पिरत के आ कों दोनो कों उलाले[12]
यकस ते एक थे मिलने उताले[13]

लग्या है यार कों जिस यार का ध्यान
लग्या है जिस के तैं दिलदार[14] का ध्यान

कहां दिल कों अछेंगा उस के राहत[15]
कहां जिव कों अछे उस के फ़रागत[16]

हुवा दोनो कों दुख अवल ते दुहरा[17]
लगे चखने कों बिरहे सात पूरा १६२५

लगी होएंगी जिसे किस सात यारी
लगी होएंगी पिरत जिस कों प्यारीं

ख़ुशी सूं दिल ख़ुश अछने कों ख़ुश आएगा
उसे अन्न हौर पानी क्यों कर भाएगा[18]

सर्ग ४६ वां

बजा ल्या मलिकआरा ने ख़ुदा का शुक्र यक[19]–दिल ते
भली साअ़त[20] मने[21] आकर मिले दो आशिक़े[22] जानी

यकायक ज्यूं सआ़दत[23] का दिन आया
निशान्यां सादियत[24] के सात ल्याया

हुवा सूरज के नमने जग नुराना[25]
सटघा फिर तरह[26] ताज़ा ल्या ज़माना[27] १६३०

जु धरता था सो कज[28]-रफ्तार अपना
दिया सट गुंबद द्वार अपना

दुन्या[29] सर[30] ते नवा फिर रंग रस पाई
जवानी के निकल जल्वे[31] मने आई

खिले जग में ख़ुशी के फूल सारे
मिले यक ठार ख़ूबी के सितारे

ख़ुदा के फ़ैज़[32] की तासीर[33] ते आ
मिले दो यार वो दो-[34]धीर ते आ

मिले वो आशिक़ो[35]-माशूक़ दो जब
जगत यक धीर ते ताज़ा हुवा सब १६३५

---

१ मान सन्मान. २ लौटाना. ३ इज्ज़त, सन्मान. ४ स्थान. ५ जलन. ६ भी. ७ छन, क्षण. ८ कुम्हार की ईट या बरतन जलाने की भट्टी (मराठी) ९ ऊंवापन १० दोनोही. ११ अंतर. १२ जोश, आवेश, उद्रेक. १३ उतावील, बेचैन. १४ प्रेयसी. १५ आराम. १६ चैन. १७ दुगना. १८ पसंद आना. १९ हार्दिक. २० घडी. २१ में. २२ प्राणप्रेमी. २३ शुभ. २४ शुभकारक. २५ प्रकाशमान. २६ प्रकार. २७ काल, समय. २८ टेढी चाल का- २९ जग. ३० टोक, अंतिम बिंदू. ३१ शोभा. ३२ विपुलता. ३३ प्रभाव, परिणाम. ३४ दोनो ओर. ३५ प्रियकर और प्रेयसी.

मिल्या यूं उस चतुर सूं हो को हमदम[१] मुलेमां कों मिल्या ज्यूं फिर को हातिम
मिल्या यूं उस चंचल को वो ग्यानी जुलेखां कों मिली ज्यूं फिर जवानी[२]
मिल्या इस खूब सूं इस धात वो खूब कि ज्यूं बीनाई[३] पाए फिर को याकूब[४]
मिली उस जान सीते[५] यूं बी वो जान खिज्र के तैं मिल्या ज्यूं आबे-हैवान[६]
युं आया वस्ल[७] का दोनों कों दौलत मिल्या आयूब को जिस धात सिहहत[८] १६४०
वु मिल दो तन रहे यूं यक दिल हो नई देखन में यका दिसते हैं ज्यूं दो
वु दोनो यक हो यूं रहें थे ना फांक[९] उन की पुतली सूं जिव, पुतली सूं हर आंक
यकस कों एक मिल कर रहें थे इस धात है मूं में जीब हौर ज्यूं जीब में बात
रहे इस धात सूं हो खेश[१०] दोनो अथे यूं वो मुहब्बत[११]-केश दोनो
देखत यो हाल मलिक आरा हो कर शाद[१२] दिलो[१३]-जां सूं खुदा का हम्द[१४] कर याद १६४५
हुई सो यूं दुन्यां में यादगारी[१५] दुगाना[१६] शुक्र का हक़ के गुजारी
वु अम्रत-गुन की पर उपकार मोहन कितिक दिन रख को दोनो कों अपस कन[१७]
मंगी करने कों ज्यूं यो बात जाहिर[१८] कि ज्यूं आलम में है दिनरात ज़ाहिर
दु-रुख ज़र-हल[१९] करे सो एक कागज़ ले कर रंगीन-खताई एक कागज़
शहानी मरतबा[२२] सूं दरज कर बात लिखी मां-बाप कों दोनो के इस धात १६५०

सर्ग ४७ वां

लिखाई मलिकआराने दोनो के बाप कों कागज़[२४]
मिले हक़ के करम ते फिर तुमारे नूर-चश्मानी[२५]

ब-हमदुलिल्ला[२६] कि जग है आज ताज़ा ज़माना फिर किया हैं साज़[२७] ताज़ा
जिधर देखें तिधर खूबी की सफ है जहां में ऐशो-इशरत[२९] हर तरफ है
तुमारे जीव के थे नूर दीदे[३०] पडे थे हो तुमने से हो जरीदे[३१]
दुआ-गो[३२] हूं हकीकी[३३] मैं तुमारी कुंवान्यां में न्हनी हूं यक कुंवारी १६५५

---

१ मित्र, साथी. २ तारुण्य. ३ दृष्टी. ४ याकूब अंधा था. ५ से. ६ अमृत. ७ मीलन. ८ आरोग्य, नीरोगिता. ९ टुकडा. १० अपना, संबंधित, रिश्तेदार. ११ प्रेम का चालचलन स्वीकारनेवाला १२ आनंदित १३ मन और प्राण १४ ईश्वरप्रार्थना. १५ स्मारक. १६ दुगना. १७ समीप. १८ स्पष्ट. १९ सुवर्ण का नक्श २० रंगीन नक्शी का २१ राजा के योग्य. २२ स्थान, प्रतिष्ठा. २३ प्रविष्ट करना, लिखना. २४ पत्र. २५ आंखो का प्रकाश, पुत्र २६ ईश्वरकी प्रार्थना से. २७ सिंगार. २८ क़तार, आवली. २९ आनंद, वैभव. ३० आंख. ३१ अकेला. ३२ जिसकी जिव्हा पर आशीर्वाद हो, ३३ वास्तव, सच्चा.

जु कुच्छ करने की थी तदबीर[1] कयती   मिलाने उनकों नें तक़सीर[3] कयती
अगर फरमाएं[4] तो भेजूंगी उस ठार   देखो वा रे यकस का एक दीदार[5]
हक़ीकत[6] लिख तमाम अव्वल ते आख़िर[7]   दुआ[8] सूं ख़त्म कयती इस सनद[9] फिर
झलकता है सूरज का ताज़[10] जौ लग   अछो होना तुमन घर का च तौ लग
मुहब्बत के बयां[11] लिख इस सनद सूं   रवाना वैं करी मिस्रो-अजम[12] कों   १६६०
गया ज्यूं उस शहां के धीर क़ासिद[13]   वु दोनो शह अपस का पा मक़ासिद[14]
हुए इस धात सुन वो बात महज़ूज़[15]   कई ना जाए वैसी धात महज़ूज़
उमस[16] सूं यूं हुए खुश अपने मन में   समाता नइं अथा तन पैरहन[17] में
करी सो देख कर उपकर वहूती च[18]   हो मलिकआरा के मिन्नत-दार[19] वहूती च

सर्ग ४८ वां

जवाबनामा[20] शहां का ज़ो अं-पडना मलिक आरा कों
उसी उनवान[21] ते दोनो कों करे शहरां कों वहूरानी[22]   १६६५

मुहब्बत सूं अपस के दिल में दे राहे[23]   लिखे यूं उस कों फिर कर वो दोनो शाह
कि जवुं लग चर्ख[24] के महबूब[25] का हात   है लाल अछे शफ़क़[26] मिहंदीके संगात
सुहाता कहकशां[27] का हार है लग   गले के हांस[28] का सिंगार है लग
गगन की सेज[29] पर कर फूल तारे   ज़धां[30] लग रात की मालन पसारे
अछो तौं[31] लग तुजे अस्मत[32] हमेशा   खुदा तेरा रखे हुरमत[33] हमेशा   १६७०
नवाज़िश-नामा[34] भेजी, सो करम सूं   सरासर[35] लिख मुहब्बत की क़लम सूं
सआदत[36] की घडी में आं-पडचा सो   यक एक बाज़ू[37] हुए शादी सूं दो दो
सुफ़ीदी हौर सियाही[38] उसकी थी यूं   सुहावे में पुनम का चांद है ज्यूं
मुहब्बत के अभालां का हों समदूर   खुशी के था जवाहर[39] सात भरपूर
तुमन सूं अब अहे उम्मीदवारी[40]   मुहिब्बां[41] पर तौज़्जुह[42] धर को भारी[43]   १६७५

---

१ युक्ति. २ करती, किई थी. ३ गलती, चूक, कोताही. ४ आज्ञा करना. ५ दर्शन. ६ वस्तुस्थिती, सत्य. ७ अंत. ८ आशीर्वाद. ९ प्रकार, समान. १० मुकुट. ११ वर्णन. १२ ईजिप्त और ईराण. १३ दूत, वार्ता ले जानेवाला. १४ मकसद का बहुत, हेतु. १५ आनंदित, तुष्ट. १६ हिम्मत, जोश, १७ पोशाक, पेहराव १८ बहुतही १९ कृतज्ञ. २० उत्तरमे लिखा हुवा पत्र. २१ नाम, नांवूं २२ रवाना, भेजना. २३ मार्ग. २४ आकाश २५ प्रेयसी २६ लाली रक्तिमा २७ आकाशगंगा २८ अलंकार विशेष, हांसली २९ बिस्तर, शय्या ३० जब, ३१ तब. ३२ पातिव्रत्य, सतीत्व ३३ इज्ज़त, प्रतिष्ठा. ३४ कृपा—पत्र. ३५ पूरा. ३६ पावित्र्य. ३७ अवयव, इंद्रिय, ३८ कालापन ३९ रत्न. ४० आशा. ४१ प्रेमिक. ४२ दृष्टी. ४३ बहुत.

मदद शह-ज़ादे कों दे कर सरव दल — दे कर संगात लश्कर का उसे वल[१]
करो इस मुल्क पर उस कों रवाना — है तलग इहसान[२] समजो तुम हो दाना[३]
डुबाया था जो वो दे ग़फलत[४] उस कों — जु मान्या था जिने बे-निसबत[५] उस कों
देवेंगे छोड तो नेकी[६] तुमारी — अवद[७] लग यो रहेगी यादगारी
शहां-नामे[८] कों फिर भेजे इस धात — वी कीते धात के तुहफे दे संगात १६८०
जु नामा जा को अं-पड्या उस परी कों — उतम उस पाक-दामन[१०] गुन-भरी कों
उसी साअत[११] दे कर संगात लश्कर — करी उस कों रवाना उस मुल्क पर
बडे यक दवदबे[१२] हौर शौरो-शर[१३] सूं — जु निकले मलिक आरा के नगर सूं
ब-हर-हाल[१४] उस शहर कों अपसीअं-पडाए[१५] — वहां के लोक सुनकर सामने आए
वज़ीरां मिल इताअत[१६] आ करे सब — अदब[१७] सूं यक[१८] ब-यक सर भुईं धरे सब १६८५
मुक़र्रर[१९] उस पो कयती बादशाही — फिराए मुल्क में उस के दुराई
लगी खुशबूई,[२०] बांटे ऐश के पान — लिखे चारों तरफ शाही के फर्मान
अदालत[२१] का रख अपने सीस पर ताज[२२] — फरागत[२३] सूं सदा करता रया राज
यो किस्सा शाह के धिर बोल ज़ाहिद[२४] — यो मोल्यां अन-बंदे[२५] सब रोल ज़ाहिद
बहूत कुच शाह सूं पाया नवाज़िश[२६] — कन्या दीनो-दुन्यां सूं[२७] मिल कों साज़िश[२८] १६९०
हुए जिस धात सूं वो ग़म सूं आज़ाद — खुदा सबका करे उस धात दिल शाद[२९]
मुंजे दो जग में दे तूं आबरूई[३०] — बन्हाल मन निकोई, कुन निकोई
दरुद[३१] अवल नबी[३२] पर भेज़कर मैं — मुरत्तब[३३] इस हिकायत कों किया मैं
सचापन सो नबी पर है मुसल्लिम[३४] — सुन्यां त्यूं मैं कया वाल्ला[३५] आलम[३६]

---

१ शक्ति. २ उपकार. ३ बुद्धिमान. ४ भूल. ५ बिना संबंध के. ६ सौजन्य ७ अनंतकाल, ८ पत्र. ९ भेट. १० सतीं, पतिव्रता, अपांसुला. ११ घडी. १२ वैभव. १३ शान. १४ एवंच. १५ पहूंचाना. १६ आज्ञापालन. १७ विनय १८ एक के पश्चात एक, १९ निश्चित. २० सुगंध, अत्तर. २१ न्याय. २२ मुकुट. २३ चैन. २४ संयमी. २५ न बंधे हुए. २६ कृपा. २७ इह और परलोक २८ साथ देना. २९ आनंदित. ३० इज्ज़त, प्रतिष्ठा. ३१ अंतःकरण. ३२ पैगंबर. ३३ बनाना, लिखना. ३४ सिद्ध माना हुआ. ३५ ईश्वर सबसे ऊंचा है.

सर्ग ४९ वां

इलाही[1] घन[2] पो जुहरा[3] का जधां लग नूर है तब लग
अछो यो फूल–बन सब में शिगुफ्ता[5] हौर खंदानी[6] १६९५

जु कोई सनअत[7] समजता है सो ग्यानी वई समज मेरी यो नुकता–दानी[8]
वई समजे समज हैं जिस कों कुच बात जु मैं बांधां हूं यो सनअत सूं अबयात[9]
हुनर कोई नें देख्या सो मैं दिखाया VII सनाए[10] यक–कम–चालीस ल्याया
हर यक मिसरा[11] उपर होकर ब–जिद[12] रख्यां हूं काफ़िया[13] ल्या मुस्तनद[14] खूब
दिखाया मैं हुनर कर सब कों हलका VIII खूब सनअत[10] कयता हूं शस्तोशश[15] महलका १७००
रख्या मैं मसनवी[16] ऊंची सब इस धात सकत नें किस कों अं–पडावे वहां हात
दिए उस्ताद सो तशबीह[18] देता चली सो बात कों मैं नज्म[19] कयता[20]
है मेरी नज्म में इनशा[21] की धातां अहै इनशा की धातां हौर बातां
ग़ज़ल[22] का मर्तबा गरचि अवल है वले हर बैत मेरा एक ग़ज़ल हैं
ग़ज़ल गर नैं कए तो नैं हैं ख़ामी[23] IX जु कुच बोले सो ज़ाहिर है निज़ामी[24] १७०५
ग़ज़ल नैं तूस के उस्ताद कों एक X हुनर आज़मा को शहनामा सने देक
हुज़ून्या[25] मे अगर मुंज सलग[26] अछता गुहर–रेज़ां[27] में मेरा कलक[28] अछता
फरागत उस ते गर टुक[29] मुंज कों होता ले मोत्यां खूब मैं उस मे परोता
बडच्यां के नाद अछता तो बडापन दिखाता आंज मैं बातां में बहुत फन
ज़माना ना समज कर क़द्र[30] मेरा बिछाना है वो भुई[31] सूं सद्र[32] मेरा १७१०
बुज़ुर्गी किया सब, यूं चुप के लेना जु सुन कर देवेंग हर कोई महीना
रतन अपनी सिफत[33] के नित नको रोल हुनर जो शिअर का समज्या है त्यूं बोल
अगरचि[34] शाइरीका फन[36] है आली[37] वले क्या काम आवे बात ख़ाली[38]
अवल बा रे नसीहत[39] उस में अछना नसीहत नैं तो सनअत[7] उस में अछना
यु दो फन उस में नैं तो हेच है सब नई वो शिअर पेचा पेच है सब १७१५
नसीहत मैं कवूं तो कोई न सुनते मेरी हिकमत[40] के फूलां कों न चुनते

---

१ ईश्वर. २ मेघ. ३ शुक्र ४ जब ५ प्रफुल्लित. ६ हसंतमुख. ७ कला. ८ सूक्ष्मदर्शी. ९ बैत का बहु–वचन, जोड. १० सनअत का बहु व., अलंकार (साहित्य का) ११ जोड, बैत का एक चरण. १२ आग्रह से १३ यमकविशष १४ प्रमाणसिद्ध. १५ छःसट (६६), महल, प्रसंग, स्थान. १६ कथाकाव्य. १७ पहूंचना १८ उपमा अलंकार. १९ काव्य. २० करता. २१ साहित्य. २२ विशेष काव्य प्रकार. २३ गलती, कच्चापन २४ फारसी का प्रसिद्ध कवि. २५ दरबारी लोक. २६ संबंध. २७ मोती चुननेवाला २८ वंश, बांबू, लेखनी २९ क्षणमात्रथोडी. ३० कीमत, मूल्य. ३१ भूमि. ३२ सभा–स्थान. ३३ वर्णन. ३४ यद्यपि. ३५ कवित्व. ३६ कला. ३७ उच्च. ३८ रिक्त ३९ उपदेश. ४० युक्ति, कला, फन.

...११

इसी सूं तबा[1] मेरा नैं कबूल्या — जु कुच बोल्या सो सब यक बार घोल्या

मुंजे कुच शिअ़र पर रग़बत[2] जो अछता — हज़ारां सूच बैतां[3] ल्या को रचता

अहे इनशा[4] पो मेरा मेल[2] दायम[5] — तबी[1] अत कों मेरी है हिज़[6] मुलायम[7]

समज हर किस कों मेरा[1] तबा होना — ककर मैं एक दिखाया हूं नमूना

नईं बो क्या करूं फीरोज़[8] उस्ताद XI — जु देते शाइ़री का कुच मेरी दाद[9] १७२०

है सद[10] हैफ[11] जो नैं सय्यद महमूद[8] XII — कयते[12] पानी कों पानी, दूद कों दूद

अनईं इस वक्त पर वो शेख़ अहमद[8] XIII — सुख़न का देखते बांद्या सो मैं हद[13]

हसन शौकी[8] अगर होते तो फ़िल्हाल[14] XIV — हज़ारां भेजते रह़मत[15] मुंज उपराल[16]

अछते तो देखते मुल्ला ख़याली[8] XV — यु मैं बरत्या[17] हूं सो साहिब[18] कमाली १७२५

अछेगा जिस मने ईमान का बूई[19] — न होसी[20] रश्क[21] सूं सुन कर तुरश–रूई[22]

न कर इब्न निशाती ख़ुद-नुमाई[23] — सटे हैं यां हुमा[24] यां सब हुमाई[25]

करे क्या शुक्र कोई हक़[26] के करम[27] का — नईं फिरने सकत यां किस के दम का

अगर तन पर के जो हरेक है रूं रूं[28] — वु हर एक रूं कों सौ सौ गर हुए मूं

अज़ल[29] ते ता अबद[30] नासब्र[31] यक छन — करे जो मिल कर आलम शुक्र निसदिन १७३०

न करने तो बी आसी[32] शुक्र उस का — करे ना बी तो बी जासी[33] शुक्र उसका

मुंजे तुज शुक्र का दे खाना पानी — तेरे कर शुक्र की मुंज मेहमानी[34]

सरासर[35] शुक्र की दे बात मुज़ को — दे तेरा शुक्र लिखनें हात मुज कों

हजारां शुक्र यो ताजा हिकायत — सर–अंजामी[36] केरा पाया सआदत[37]

हजारां शुक्र मेरी बात के फूल — पडे ख़िदमत में उस्तादां के मक़बूल[39] १७३५

हजारा शुक्र यो क़िस्सा हुनर का — मिठाई में ल्या जागा शकर का

हज़ारां शुक्र यो मेरी इबारत[40] — फ़ह्म–दारां के देता दिल कों राहत[42]

---

१ बुद्धि. २ अभिलाष, आकर्षण. ३ जोड. ४ गद्यलेखन. ५ नित्य. ६ रुची. ७ नरम. ८ दक्खिनी हिंदी का एक प्रसिद्ध कवि. ९ रसग्रहण. १० सौ (१००) ११ अफसोस. १२ करता. १३ सीमा. १४ सद्यः अब. १५ कृपा. १६ उपर, १७ किया हूं १८ प्रवीणता. १९ गंध, सुवास. २० होएगा २१ मत्सर. २२ मूं खट्टा होना. २३ खुद को बतलाना-अभिमान, गर्व. २४ एक शुभशकुन पक्षी, अछेअछे. २५ अछापन. २६ ईश्वर. २७ कृपा. २८ रोम, बाल. २९ अनादि. ६० अनंत. ३१ सहना. ३२ आएगा. ३३ जाएगा. ३४ आतिथ्य. ३५ पुरी. ३६ अंत को पहूंचना. ३७ खुशी. ३८ प्रवीण, आचार्य. ३९ मान्य, मंजूर. ४० मजमून ग्रंथ. ४१ ज्ञाता, जानकार. ४२ आनंद.

हजारां शुक्र यो पिरत की कहानी
कबूलीत[१] सूं जग के दिल कों भानी[२]
हजारां शुक्र मेरी तबा[३] का फन[४]
हुवा सूरज के नमने जग पो रोशन
किया सो इब्तदा[५] देक माह रज्जब XVI
कमालीत[६] कों अं-पड्या ईद कों सब १७४०
यु फूलबन तीन म्हैने लग लगाया
पुनम का चांद हो पूरा तो आया
मशक्कत[८] सूं बहुत दिल लहू हुए पर
कितिक दिन कों दिस्या यो मश्क[९] हो तर[९]
गिनत में आए सो यक[१०]बार बैतां XVII
है सतरा[११] सौ पो दो बीस पर चार बैतां
अछो शह कों मुबारक फूलबन यो
नज़र में जम अछो शह के चमन यो

समाप्त

१ मान्यता, २ पसंद आना. ३ बुद्धि. ४ कला. ५ प्रारंभ. ६ परिपूर्णता. ७ पहूंचा. ८ कष्ट.
९ अधिक सुगंधी. १० इकट्ठा, कुल. ११ सतरा सौ चवालीस (१७४४)

फूलबन के कुछ संदर्भ

टिप्पणी

I जोड १२५ – सुल्तान अब्दुल्ला कुतुबशाह कुतुबशाही राजघरानेका सातवां राजा था। वह बारा साल की छोटी आयु में गद्दी पर बैठा। (शक १५४८ – हिजरी १०३५)। उसको दीर्घ आयु प्राप्त हुई। उसका देहान्त शक १५९४ में (हिजरी १०८३) हुवा। अब्दुल्ला कुतुबशाह न केवल कविता और संगीत का प्रेमी था, किन्तु स्वयं भी कवि था। उसके पिता मुहम्मद कुतुबशाह के समय कविता और संगीत को राजाश्रय कम हो गया था। अब्दुल्ला के गद्दी पर बैठने पर फिर कवियों और संगितज्ञों का मानसम्मान होने लगा।

अब्दुल्ला कुतुबशाह ने दक्खिनी हिंदी के विकास में काफी सहाय्यता की। दक्खिनी के श्रेष्ठ कवि गवासी, मुल्ला वजही, मलिक खुशनूद और इब्न निशाती उस के आश्रित थे। गवासी राजकवि था। इसी राजा के राज्यकाल में मुल्ला निजामुद्दीन अहमदने 'हदीकतुस्सलातीन' नामी इतिहासग्रंथ फार्सी में लिखा हैं, जिस में राजाओं, कविओं, और अन्य कलाकारों के वर्णन मिलते हैं।

अब्दुल्लाने विविध विषयों पर कविताएं लिखी हैं। कई विषयों पर उसकी गजलें भी मिलती हैं। किन्तु उस के साहित्य में विशेष गहराई नही मिलती। उसने इब्राहीम कुतुबशाह के अनुकरण मे संगीत संबंधी एक ग्रंथ लिखा हैं जो अभी तक प्रसिद्ध नही हुवा है।

बसातीन

II जोड १८२ और २०१ – इस से ज्ञात होता है कि 'फूलबन' काव्य का आधार 'बसातीन' (बूस्तान–उद्यान, का बहुवचन) नामी फार्सी कथा काव्य है। इब्न निशाती 'फूलबन' को 'बसातीन' का भाषांतर (जोड २०१) बतलाता है। परंतु ज्ञात पडता है कि यह भाषान्तर तो है नहीं। यह अनुवाद हो सकता है। और यहां पर भी कवि ने स्वतन्त्र ही रचना की है। कवि के कथन के अनुसार अलग अलग ६६ प्रसंगो पर कविने ३९ प्रकार के अलंकारोंका उपयोग इस काव्य में किया है। 'बसातीन' का केवल कथा सूत्र कविने उपयोग में लाया है।

III जोड १८५ – कवि ने अपनी भाषा को, अपने पूर्वकालीन और समकालीन कवि और गद्यलेखकोंकी रूढी के अनुसार, दक्खिनी भाषा कहा है। ज्ञात रहे कि इब्ने निशाती दक्खिनी भाषा के इतिहास में उत्तरकाल में हुआ। इस भाषा को दक्खिनी या हिंदी अथवा हिंदुई कहने का रिवाज शक १७०७ (हिजरी १२००) तक चालू था। कवि और लेखक इस भाषा को उर्दू नहीं कहा करते थे।

IV दक्खिनी, प्रचलित भाषा

जोड १८६-१८७ – इन जोडोंसे मालूम होता है कि कवि के समय में दक्खिनी बोलचाल की भाषा थी। सरकारी कर्मचारी, सेनापति, सैनिक आदि इसी भाषा का प्रयोग किया करते थे। दूसरे जोड से ज्ञात होता है कि इस भाषा में प्रेमकाव्यों का भरपूर भांडार था।

अहमदनगर के निजामशाही राज्य के फार्सी इतिहास लेखक असदबेग ने इसी दक्खिनी भाषा के दो वाक्य अपने ग्रंथ में उल्लिखित किए हैं। 'तुमारी बज़ां क्या करती है" और 'तुमारी अनारकली की दुआ करती है" यह दो वाक्य है। इस से मालूम होता है कि दक्षिण के मुसलमानी राज्यों में कमसे कम मुसलमान आपस की बोलचाल और साहित्य निर्मिति के लिए इसी दक्खिनी का प्रयोग किया करते थे।

V वर्षा

जोड २५० यद्यपि यह 'फूलबन' काव्य कल्पनाविलास पर निर्भर है, इस जोडसे कहा जा सकता है कि तेलंगाना, जिस प्रदेश में कवि रहता था और जहां पर यह काव्य लिखा गया है, अच्छी वर्षा का प्रांत था, यह एक भौगोलिक सत्य है। आंध्र प्रदेश मे ३५ से लेकर ४० इंच तक वर्षा होती है। कभी अवर्षण नहीं होता। इस वस्तुस्थिति के कारण कवि ने यह विधान किया है जो बिलकुल सत्य है।

VI जलसिंचन

जोड २५२ – इस जोड में कवि ने आंध्र प्रदेश में जलसिंचन की विपुलता कीं ओर इशारा किया है। आंध्रप्रदेश मे निसर्गतः वर्षा अछी और नियमित होने पर भी इस प्रदेश में जलसिंचाई का बहुत ही अच्छा प्रबंध कुतुबशाही राजोओंके पहले ही से होता आया है। वरंगल के काकतीय राजाओंने लखनावरम और पाखाल के प्रसिद्ध तालाब बनवाए थे। वह आज भी जलसिंचन का कार्य हजारों एकर जमीन में कर रहे हैं। विजयनगर के सम्राटोंने तुंगभद्रा नदीपर नहर बनाई थी। वह आज तक जलसिंचन का काम देती थी। हाल में उस नहर को बडे तुंगभद्रा प्रकल्प मे समाविष्ट कर दिया गया है। इसके सिवा, नैसर्गिक विशेष भूपृष्ठभाग के कारण, इस प्रदेश में हजारों तालाब और बावलियां प्राचीन काल से बनी हुई है और जलसिंजन का काम करती हैं। इस प्रदेश को सहस्त्रावधि तालाबोंका देश कहा जाता है।

अब्दुल्ला कुतुबशाहने शक १५४८ से शक १५९४ तक (हिजरी १०३५ से १०८३) याने ४८ साल तक राज्योपभोग लिया। उसके राज्य में शांति और स्वस्थता थी। उसने भी जलसिंचन के बढावा देने मे प्रयत्न किया होगा। इसी प्रयत्न की ओर इब्न निशातीने इस जोड में इशारा किया है।

VII अलंकार–संख्या

जोड १६९८ कवि ने इस काव्य में प्रयुक्त सनअतें अथवा अलंकारों की संख्या लिख दी है। उपमा, दृष्टान्त, रूपक, अतिशयोक्ति, विशेषोक्ति आदि उनचालीस अथवा एक कम चालिस अलंकारों की संख्या कविने बतलाई है।

VIII जोड १७०० – कविने यह भी बतलाया है कि अलंकार कितने प्रसंगोपर प्रयुक्त हैं। कवि बतलाता है कि ३९ अलंकार उसने छहसट (६६) स्थानों पर प्रयुक्त किए है।

IX निजामी गंजवी

जोड १७०५ - निजामी फारसी भाषा का प्रसिद्ध महाकवि हैं। वह ईराण के प्रसिद्ध शहर गंजा का निवासी था। इस लिए उसका उपनाम गंजवी है। उस की पांच प्रसिद्ध फारसी मसन्वियां हैं। निजामी गंजवी ने कोई गज़ल नहीं लिखी। तथापि वह एक प्रसिद्ध महाकवि माना जाता है।

उसका जन्म गंजा शहर में शक १०६३ (हिजरी ५३५) में हुआ और उसका देहान्त शक ११२५ (हिजरी ५९९) में। उसने अपनी पहली मसनवी 'मख्जनुलअसरार' शक १०८९ (हिजरी ५६२) में पूरी की थी। उसका दूसरा ग्रंथ 'खुसरो और शीरीन' है। उसका तीसरा ग्रंथ 'लैला और मजूनन' नाम की मानवी जो उसने शक १११० (हिजरी ५८४) में पूरी की थी। उसने सिकंदरे—आज़म अथवा अलेक्झांडर दि ग्रेट की जीवनी लिखी जो सिकंदरानामा नामी ग्रंथ है। उसने स्वयं अपने संकीर्ण कविताओंका शक १११० के लगभग संकलन किया था।

निझामी किसी राजा का दरबारी कवि नहीं बना। वह अपने देहान्त तक स्वतंत्र रहा और अपनी अभिरुचि के अनुसार काव्यसरस्वती की पूजा बांधता रहा। अपनी साहित्यसरस्वती को वह किसी राजा की दिलबहलाई के लिए बेचना नहीं चाहता था। उसने यह प्रण अंत तक निभाया (डॉ विल्हेल्म बाकेर सन १८७१ के मूल जर्मन के इंग्लीश भाषान्तर से – १८७३)

X फिर्दोसी

जोड १७०६. प्रसिद्ध शाहनामा ग्रंथ का रचयिता अबूलकासिम मन्सूर था और उसका कविता का नाम फिर्दोसी था। वह ईराण के मशहूर शहर तूस का निवासी था। उसका जन्म शक ८४५ (इ. स. ९२३) में हुआ था। फिर्दोसी ने शाहनामा नामी ग्रंथ फार्सी भाषां में गझनी के राजा महमूद गझनवी की प्रशंसा में लिखा, जिस में ६०,००० बैत-जोड है। उसनें यह इतिहास ग्रंथ में ३५ राजघरानोका वर्णन करता है और ३,६२० वर्षो से सम्बन्धित है।

इस समय पर इब्ने निशाती फिर्दोसी की ओर इशारा करता है कि उसने एक भी गजल नही लिखी। अपने महाकाव्य के कारणही वह महाकवि बन बैठा। उसी तरह उसका दावा है कि गो मैंने गजल नही लिखी, मैं भी अपने गुणों पर जांचा जाऊंगा। महाकवि कहलाने के लिए गजल लिखनाही आवश्यक नहीं है।

दूसरा एक शाहनामा, जो शाहनामए-हिंद कहलाता है, अजीजुद्दीन इसामी ने (जन्म शक ११५९) बहमनी खानदान के संस्थापक अलाउद्दीन हसन गांगू की स्तुति में शक १२४९ के पूर्व लिखा था। इस शाहनामे की ओर यहां इशारा नहीं है।

XI फीरोज

जोड १७२१ – फीरोज का नाम कुतुबुद्दीन कादरी फीरोज बीदरी था। और उसका कविनाम फीरोज। वह शककी पदरहवीं शताब्दि में सबसे प्रसिद्ध साहित्याचार्य था। यह कवि बडा सुदैवी मालूम होता है। उस के साहित्य और श्रेष्ठत्व की कीर्ति कुतुबशाही राज्य के अंत शक १६०९ (हिजरी १०९८) तक बराबर चालू थी। गुजस्ता दो शताब्दियों से फीरोज भूला गया था। किन्तु हाल के अनुसंधान और खोज से फीरोज का एक कथाकाव्य "तौसीफ नामा मीरां मुहीयुद्दीन" अपूर्ण अवस्था में मिली है। उसका दूसरा कथाकाव्य "पिरतनामा" जो केवल १२१ जोडों का है, हालही में प्राप्त हुआ है। पिरतनामा शक १४८७ (हिजरी ९७२) के पूर्व लिखा गया है। यह एक सूफी संत के स्तुतिपर काव्य है। यह सूफी दक्षिण के प्रसिद्ध साधु अब्दुल्कादर जीलानी, महबूब सुबहानी थे। फीरोज अपने समय के अतीव प्रथितयश साहित्यिक थे। दक्खिनी हिंदी की उनकी सेवा कई वर्षो तक याद की गई है। मुल्ला वजहीं जो एक गर्विष्ठिश कवि था, अपनी मसनवी 'कुतुबमुश्तरी' में फीरोज को यूं याद करता है।

कि फीरोज आ स्वाब में रातको दुआ दे के चूमे मिरे हात को
कह्या है तू यो शिअर ऐसा सुरस कि पडने को आलम करे सब हवस वजहीका

यह उल्लेख शक १५३१ (हिजरी १०१८) में किया गया है। फीरोज ने अपने 'पिरतनामे' में अपना मूल नाम और कविनाम इस भांति दिया है।

मुजे नांवूं है कुत्बुद्दीन कादरी तखल्लुस सो फीरोज है बीदरी

फीरोज के गुरु मख्दूमजी बीदरनिवासी बडी प्रतिष्ठा के सूफी संत थे। गोलकुण्डा के राजा इब्राहीम कुतुबशाह उनके निष्ठावान् भक्त थे। राजाने मख्दूमजी से प्रार्थना की कि वह रहने के लिए गोलकुण्डा चले आए। गुरुने यह मंजूर नहीं किया। परंतु अपने शिष्य फीरोज को राजा के पास भेज दिया। अपने गुरु और वतन की याद में फीरोजने बीदरी उपनाम स्वीकृत कर लिया।

XII सय्यद महमूद

जोड १७२२ – जिस प्रकार इब्ने निशाती ने फीरोज बीदरी के साथ सय्यद महमूद का उल्लेख किया है उसी भांति, मुहम्मद कुली ने भी अपनी एक ग़जल में फीरोज के साथ सय्यद महमूद का भी उल्लेख किया है। इस पर से यह जान पडता है की सय्यद महमूद की प्रतिष्ठा और कवि के नाते उसका

स्थान, बहुत ही ऊंचा था। कुली कुतुबशाह के ग़ज़लोंका दीवान शक १५३३ (हिजरी १०२०) में संकलित किया गया था।

इस जोड में कुली के उल्लेख के ५६ वर्ष बाद, इब्ने निशाती भी महमूद को याद करता है। पानी को पानी और दूध को दूध कहने की सय्यद महमूद की परंपरा, निशाती जैसे केवल राजाश्रय पर न पलनेवाले लोकाभिमुख कवि को याद आवे तो कोई आश्चर्य की बात नहीं है।

स. महमूद का कोई काव्य उपलब्ध नहीं है। स. महमूद न केवल ऊंचे दर्जेका कवि था। बल्कि वह दक्खिनी का बडा प्रेमी और आश्रयदाता भी था। मुल्ला वजहीने अपने कथाकाव्य 'कुतुबमुश्तरी' (शक १५३१) में कहा है।

कि फीरोज, महमूद अछते जो आज तो इस शिअर को बहुत होता रिवाज।

कि नादिर थे दोनों बी इस काम में कया नइं किने बोल अझूं फाम में

इस पर से फीरोज और महमूद की प्रतिष्ठा मालूम होती है।

XIII शेख अहमद

जोड १७२३ – शेख अहमद कुली कुतुबशाह का समसामयिक कवि है। इस कवि की एक अधूरी मसनवी 'लैला मजनून' पाण्डुलिपि की अवस्था में प्राप्त हुई है। उस के केवल ५६० जोड प्राप्त हैं। इस कथाकाव्य से ज्ञात होता है कि मुहम्मद कुली ने शेख अहमद को बुला भेजा और 'लैला मजनून' पर दक्खिनी में काव्य लिखने की आज्ञा दी। इस से पता चलता है मुल्ला वजही से भी बढकर शेख अहमद का स्थान था। वजही से वह आयु ओर विद्वत्ता में श्रेष्ठ था।

यह बात साफ है कि लैलामजनुन का लेखनसमय शक १५३३ (हिजरी १०२०) से पूर्व है। इसी साल मुहम्मद कुली कुतुबशाह का देहान्त हुआ है। इस के ५६ वर्ष बाद इब्ने निशाती के इस कवि को याद करनेसे मालूम होता है कि शेख अहमद को दक्खिनी के काव्यसाहित्यक्षेत्र में ऊंचे दर्जे की प्रतिष्ठा प्राप्त थी।

XIV हसन शौकी

जोड १७२४ – इस कवि का नाम शेख हसन और काव्यनाम शौकी था। इस का संबन्ध दक्षिण के तीन मुसलमानी राज्यों कुतुबशाही, निजामशाही और आदिलशाही से था। वह बीजापुर में अधिक समय तक रहा।

उसके दो कथाकाव्य प्राप्त हो चुके हैं। उनमें से एक काव्य 'मेजबानी नामा' है जो शौकी ने बीजापूर के बादशाह मुहम्हद आदिलशाह का विवाह उसके सेनापति मुस्तफाखान की बेटी ताजजहाँ बेगम से होने के समय पर लिखा था। 'मुहम्मदनामा' नामी फार्सी इतिहासग्रन्थ के अनुसार यह विवाह शक १५५४ (हिजरी १०४२) में हुआ था। शौकी का दूसरा कथा काव्य 'फतहनामा निजाम शाह' या 'जफरनामा निजामशाह' है। इस में उस प्रसिद्ध तालीकोटके रणकंदन का वर्णन है जो एक और दक्षिण के चार मुसलमान राज्य-गोलकुण्डे की कुतुबशाही, बं दर की बरीदशाही, अहमदनगर की निजामशाही और बीजापूर की आदिलशाही और दूसरी ओर विजयनगर के बलवान सम्राट् के बीच शक १४८ में कृष्णानदी के आसपास में हुआ था। निजामशाहने इस युद्ध में बडा शौर्य दिखलाया और विजयनगर के सेनापति रामराजाका शिर काट ले लिया। इस लिए इस मसनवी का नाम शौकी ने 'फतहनामा निजामशाह' रखा है। यह काव्य इतिहास की दृष्टि से अतीव महत्त्वपूर्ण है। दुर्दैववशात् इतिहास के किसी भी अनुसंधान कार्य और लेखन कार्य में इस काव्य का उल्लेख नहीं किया गया है। महाराष्ट्र और दक्षिणापथ के इतिहास लेखन में इस ग्रंथ का बहुतकुछ

उपयोग हो सकता है। हसन शौकी को अच्छी इतिहासदृष्टि प्राप्त होना इस काव्य के उद्धहरणों से भी ज्ञात होता है। युद्ध और राजकारण पर सब आधुनिक आर्य-भारतीय भाषाओंमें लिखा गया, यही सर्वप्रथम काव्य हो सकता है।

यह कथाकाव्य कला और इतिहास की दृष्टी से अत्यन्त महत्वपूर्ण है। यह काव्य उस समय के दक्खिनी हिन्दी के स्वरूप का उत्तम दर्शन कराता है। आवेशपूर्ण प्रसंगवर्णन, भावनाविष्कार और सुंदर अलंकारोंसे शौकी की भाषा शैली सुशोभित है। इन दो ग्रंथोंकी पाण्डुलिपियां अंजुमने तरक्कीए उर्दू, कराची में मौजूद हैं।

इब्न निशातीने शौकी का आदर पूर्ण उल्लेख किया है। इससे साहित्यक्षेत्र में शौकी का उच्च स्थान सूचित होता है। निशाती के इस सूचनासे मालूम होता है कि शक १५८७ (हिजरी १०७६) से पूर्व शौकी का देहान्त हो चुका था। इसी प्रकार वह शक १५३४ (हिजरी १०४२) में जीवीत रहने का भी निश्चय होता है।

इन दो काव्यों के अतिरिक्त शौकी की ५ गज़लें भी उपलब्ध हैं। शौकी के एक अत्यन्त प्रभावी कवि होने का सबूत इस बात से भी मिलता है कि उसकी भाषा शैली का प्रभाव एक शताब्दिके बाद लिखनेवाले वली औरंगाबादी पर पडा हुआ है।

XV मुल्ला खयाली

जोड १७२५ – इब्राहीम कुतुबशाह के राज्यकालमें मुल्ला खयाली मुल्ला फीरोज और सय्यद महमूद जैसे दक्खिनी हिंदी के सुप्रतिष्ठित कवि उस की शोभा बढा रहे थे। मुल्ला खयाली की काव्य-संपदा से दक्खिनी हिंदीके रसिक वंचित हो गए है। उनका कोई साहित्य अब उपलब्ध नहीं है। किन्तु खयाली के देहान्त के सौ वर्ष बाद भी इब्ने निशाती के आदरपूर्ण उल्लेख से खयाली का श्रेष्ठत्व प्रतीत होता है। उसकी बनाई हुई एक सुंदर मसजिद गोलकुण्डा गड के समीप अब भी खडी है। इस मस्जिद पर के शिलालेख में उसके बनाने का वर्ष हजरी ९८४ दिया गया है। यह शक १४९८ होता है।

टिप्पणी – उपर्युक्त पांच कवियों की मालूमात 'अलीगढ़ तारीखे–अदबे–उर्दू शक १८८४ से लिए गए हैं।

XVI समाप्ति काल

जोड १७४० – यह फूलबन काव्य हिजरी १०७७ में ईद के रोज समाप्त किया गया। हि १०७६ का वर्ष शालिवाहन शक १५८७ के अधिक श्रावण शु।। ३ को अथवा दिनांक ५ जुलै इ. स. १६६५ को प्रारंभ हुआ था। हिजरी १०७६ का रज्जब मास शकगणनाके अनुसार पौष मास में आता है।

कवि ने अपना काव्य रज्जब, शाबान और रमजान के तीन महीनों में लिख पूरा किया। रमजान की ईद अगले महिने–शव्वाल की प्रथम तारीख को आती है। इस तरह गणित होता है कि रमजान की ईद हि. १०७६ मे तारीख २८ मार्च १६६६ को हुई थी। एवं च यह फूलबन काव्य उक्त तारीख को पूरा किया गया था।

XVII जोड संख्या

जोड १७४३–इस बैत में कवि साफ तौर पर बतलाता है कि उस के लिखे हुए कुल बैत अथवा जोड १७४४ हुए है। यद्यपि कविने काव्यकी जोडसंख्या देने के बावजूद भी श्री. शेखचांद की संपादित प्रति में १९७६ जोड हैं और प्रो. अब्दुल्कादिर सर्वरी की संपादित प्रति में भी २०२३ की संख्या दी गई है। अनुसंधान की दृष्टीसे यह दोनों संख्याएं गलत अत एव त्याज्य हैं।

———

फूलबन हिन्दी मराठी शब्दकोश

सूचना—अर्थ के सामने के अंक काव्यसंहिता के जोड के हैं।

दक्खिनी शब्द	मराठी	अर्थ, संदर्भ, प्रयोग
अगला (अग्रल)	आगळा	विशेष, अनोखा ६०६, १४७८
अगीटी	आगि-ठ-ठी	अंगेठी १५१८
अचपल	अचपल	अत्यंत चपल, चंचल ९४७, १५३९
अछना	असणे	होना ४६२
अच्छरीं		अप्सरा १४२३
अजूं, अझूं	अजून, अझून	अभी ८५, ७९१, १३६५
अंजू	अश्रू	आंसू १५५३
अडना	अडणे	रुका रहना ११३८
अनमान	अनमान	द्विधावृत्ति होना ५१८
अंदला	आंधळा	अंधा १२५८
अं-आं-पडना		पहुंचना, आन पडना ९५, ५२५, १८
अपरूप	अपरूप	अप्राप्य, दुर्लभ १२३६, १४२८
अपसीं	अपसें	स्वयं, खुद ३१३, ७३६, ८९६
अभाल	आभाळ	मेघ, घन २१८, ८१८
अभोला	अबोला, अबोल	न बोलनेवाला ७४१
अरडना	अ-आरडणे	चिल्लाना, ज़ोरसे पुकारना ११६५
अवाचिती	अवचिती	यकायक १५५७
अस्मान तूट पडना	आकाश कोसळणे	आकाश गिर पडना ११६४
अहे	आहे (वर्तमानकाळ)	है
आन खाना	आण खाणे	सौगंद खाना ९१४
आनना	आणणे	लाना १३६६, १६१०
आया बाया	आया बाया	पडोस की साधारण स्त्रियाँ ९३७
आरसी	आरसी, आरसा	अईना, दर्पण १८२
आरू		और
आवा	आवा	कुम्हार की इंटें आदि जलाने की भट्टी १६२०
आस	आस	आशा १२३७
उचाटना	उचाटणे	मन किसी बात में से उठ जाना ८६३
उचाना	उंचावणे	ऊंचा करना २०, १९५
उताला	उतावीळ	बेचैन ३००

उलंगना	उल्लंघणे	पार करना ९७४, १४२२
उलाला		उबाल, जोश ११२
उमस	उमसणे	सं-उष्म से-दिल की गर्मी, जोर, आवेश ७१९, १६६२
ओठ	ओंठ	होंट २११

क—वर्ग

कचवाना	कचणे	हिम्मत हारना १२५९
कंचली	कांचळी	सांप की रशल ४०८
कयता		करता १६,११२
कधी	कधीं	कभी ७९, २१९
कन-ने		समीप, पास ९८
कमर बैठना	कंबर बसणे	गलितधैर्य होना ४५७
कलकलाना	कालवणे	पेट में बेचैनी होना १२१२
कलाघात	कलागत	झगडा, लडाई ७४८, ११४५
कलाना	कालविणे	मिलाना, मिश्रित करना ४२८
कव, कौ	कऊ	कभी ७३६, ८७९
कंवली	कवळी, कोवळी	तारुण्यपूर्व अवस्था में, कोमल १५१३
कानी	कानी	कहानी १२२३
कसना	कसणे	कसोटी पर परखना ८९४, ८९६
कालवा	कालवा	नहर ८७८
काडना	काढणे	निकालना २२५, ४८०, ६३७, १०८५
कांद		दीवार ११५, ५४१, २१७
काम दिरंग पर पाडना	काम लांबवणीवर टाकणे	काम में देरी करना ४८०
कुधन		ओर, तरफ ५४, २०८
कुबल	कुबल	कठिन ६४१
कास		एक अल्पमुल्य मुद्रा ७७४
केवाड	कवाड	दरवाजे का एक भाग २१६, ५७२
के, कै	के	क्यों १६१, ४०३, ४०४, ४६६, ७७७
कैं	कें	कहीं ६३ [१४२७–८
कोंडना	कोंडणे	बंद करना २६६
कोता	कोंता	हत्यार, भाला, दरांती १२९२
खला	खळे	अनाज को भूसे से अलग करनें का स्थान ५४४, १४७८
खतर		क्षेत्र, रण, युद्ध १३४८
खिडकी	खिडकी	खिडकी ९८५

खडग	खडग	तलवार १२, १४१
खिंडी	खिंड	ग्रांम के बाहर की दीवार का दरवाजा परिघ ११२२
खोंचना	खोचणे	घुसना, जख्मी करना १७२
गच	गची	छत के उपर की जगह सौध २१४
गलसुरी	गलसुरी, गरसुळी	गले का सुवर्णालंकार ७८६
गड	गड	क़िला, दुर्ग १४८४
गल		गला, कंठ
गलबला	गलबला	गडबड १०६७
गवी		गुहा, गुम्फा २६२
गुपित	गुपित	भेद, गुह्य १००६
घडना	घडणे	बनना ५०१, ६४१, ११२०
घालना	घालणें	डालना ३७९, ४५५, १४०१
घोट	घोट	घोंट १३९९
घोलना	घोळणे	पीसना, मिलाना ३४४

च–वर्ग

चलन्त		चरित्र, शील ७३७
चाडी	चहाडी, चाडी	चुग़लखोरी ५६१
चारा	चारा	घास ४२६, ८६७
चाल	चाल	आक्रमण, हल्ला १९४
चाले	चाळे	अनुचित काम १७०, ५६२, ९१८
चाव	चाव	त्वेष, जोश ५९५
चोप		हिम्मत, धैर्य १४६०
चौसार		चतुरस्त्र, चतुर ८६३
चुटपुटी	चुटपुटी	चस्का, आकर्षण ५२८
जडत	जडित	रत्नोंसे सजाया हुवा ४५१
जनावर	जनावर	जानवर (फा), पशु ७६३
जतन	जतन	सुरक्षा १३५
जधां		जब ९९
जपना	जपणे	नित्य ध्यान करना ७३८
जम		हमेशा, नित्य २
जव, जौ	जव	जव ९०४
जागा	जागा	स्थान ५९६
जालना	जाळणे	जलाना १२१९
जासी		जाएगा १७१
जिरवना	जिरविणे	अंदर के अंदर समा लेना १५४३
जीब	जीभ	जिह्वा, जीब ९

झडना	झडणे	वृक्षसे गिर जाना १५०५
झाड	झाड	वृक्ष २१६, ३९४
झाडना	झाडणे	साफ करना ४८१, १०८५
झूल	झूल	बैल, हाथी पर के पीठपर का कपडा ६७५
झेला	झेला	गुच्छ १९१
झोला	झोला	ज़ोर से खींचना, झटका ३६१
डब	ढब	चाल, रीति ४४७
डुलना	डुलणे	आनंदसे गर्दन हिलाना १४३२
डंक	डंख, डंक	दंश, डसना ४१९
ढिगार	ढिगार	ढेर, राशि १४४, ४९०
टुक		छन, क्षणमात्र ८१

त–वर्ग

तकी भगी	थकला भागलेलां	थका माँदा ९११
तगमगी	तगमग	बेचैनी ९११
तधां		तब, तदा १६३
तल	तळ	नीचे २२२, ४११
तलक		तक
तलमलना	तळमळणे	हार्दिक व्यथा से बेचैन होना ५६३
तव, तौ	तव	तब ५७७, १०७८
ताव	ताव	त्वेष, जोश, गर्मी ६६०, ९५६
तिस		उस १८
तुरत	तूर्त	फौरन, अभी १२९९, १५५५
त्यों		उस प्रकार ७
थीर	थीर	स्थिर, कायम ७३, १०३८
तिरंदा		तैरनेंवाले ११२५
दंदी	दंदिया	शत्रु ४२८, १२०९
दफ	डफ	वाद्य विशेष ११०६
दरपन	दर्पण	आईना १४८०
दसन	दसन	दशन, दांत ५२१
दाट	दाट	घन, विपुल ६६७, ६८६
दाटना	दाटणे	पूरी तरह भरना ७१८, १६२०
दांत में उंगली धरना	तोंडांत बोट घालणे	आश्चर्य करना १३३८
दायां ददायां	दायां	स्त्रीनोकर ९०७
दार	दार	दरवाजा, द्वार २७५, १२२९
दिवा	दिवा	दिया, दीपक ७९०
दिस्ट	दिष्ट	दृष्ट, नज़र ५५०, १३५९
दिसना	दिसणे	नज़र आना १९७

दीस	दीस	दिवस, दिन ४५४, ६०७
दुराई	द्वाही	ढंढोरा १०६६
दूजा	दूजा	दूसरा ५४२, ५९४
दुपार	दुपार	दो पहर ११९९
धगधगना	धगधगणे	आग का जोरों से जलना १३९०
धड	धड	शरीर १२९७
धन		धनी, धनिका, प्रेयसी ७८३, ८४०, ८४२
धमक	धमक	हिम्मत १२८६
धरत	धरती	पृथ्वी ४
धाकों	धाक	डर, भीतिसे १२९४
धात		प्रकार ७
धार	धार	प्रवाह ७४
धिर, धीर		ओर, तरफ ४७३
धुलारा	धुराळा	धूळ
धूंडना	धुंडाळणे	ढूंडना, तलाश करना २९५
नटवा	नटवा	नाटच करनेवाला ९६५
नको	नको	न. १३०१, १५९५
नाद		सम समान ९६
नाडा	नाडा	डोरी ६७५
नात	नथनी	ऊँट के नाक में डाली हुई डोरी ६४०
निछल	निछळ, निथळ	स्वच्छ, साफ ३८४, १३७५
निपजना	निपजणें	पैदा होना, अस्तित्व में आना ५४
निपज	निफ्ज	पैदावार, उपज ६५
निपट	निपट	केवल ४५३
निर्मले	निर्मळ	स्वच्छ १९१
नीट	नीट	सीधी दिशा में, सीधा, सरल १४८३
नेंह		स्नेह. प्रेम ४७४

प–वर्ग

पग		पांव ४१९
पतियारा	पत्यारा	भरोसा. विश्वास १६०२
पतियाना	पत्ययाणे पातेजणे	विश्वास रखना ६५५
पसारना	पसरविणे	फैलाना ४२०, ५७०
पाडना	पाडणे	गिराना, डालना ४८१
पांव पडना	पाया पडणे	पैर छूना १२५२
पिंवला	पिवळा	पीला, ज़र्द १५१५
पेटसूं	पोटीशी	गर्भिणी स्त्री ७०९

पैसना	पैसणे	प्रवेश करना ३२४, ६१५, ६६८
पैलाड	पैलाड	उस बाजू ६२
पोत	पोत	स्त्री के गले में की मणिओंकी माला ८३४
पोपट	पोपट	तोता, रावा २६७
फडफडाना	फडफडणे	पर, पंख मारना ४३२
फत्तर पांवू पर पडना	पायावर दगड पडणे	अपनाही नुकसान कर लेंना ६५१
फांक	फांक	भाग, हिस्सा १०२२
फांकना	फांकणे	दो भाग होना, फटना ९९०
फाटा	फाटा	डाल, शाखा २२६
फांदा		जाल, दाम ४०५
(फार्सी) बदल	बद्दल	१ लिए. २ बिना, सिवा ४४२
बंध्यारा	बंधारा	हृद, सीमा २१०
बहिरा	बहिरा	पक्षी विशेष
बलकाना	बळकावणे	अनुचित कब्जा कर लेना २६३, ६१३
बांचना	वांचणे	बचना, जीवित रहना ११२९, १२९७
बाड	वाडा	बडा मकान, प्रासाद ६०
बांटना	वांटणे	तकसीम करना १६८७
बारा	वारा	वायु २४९, ४१०, ६६८
बाली	बाली	कन्या, बालिका १००४
बास	वास	गंध, बू १४९९
विकट	विकट	कठिन १९७, ६५२
बिखेरना	विखुरणे	बिखरना २२६ ५४३
बिचकना	विचकणे	घबराकर इधर उधर भागना ७४१
बिचारना	विचारणे	सोचना, पूछताछ करना ९६१
बी	बी	भी २८८, ३४४, ६५२
बुडबुडा	बुडबुडा	बुलबुला ७३
बुरांटी	बोराटी	एक काटेवाला झाड १४१०
बूजना	बुझणे	समझना, जानना ४७६, ११४७, १२९९
बेग, बेगी	बेगी, भेगी	जल्द, त्वरित ६४१, ७५५, १५५५
बेकटर		अति कठोर, निर्दय १५०४
बेडना	वेढणे	घेर लेना १५१५
बेदना	वेधणे	निशाना जमाना १०१९
बैसना	बैसणे	बैठना ३२४, ३३५, ६३१
भडका	भडका	आवेग ११४९
भयरा	भैरा, बहिरा	बहरा, न सुननेवाला १५१५
भंवर		भ्रमर ११२
भान		बहन, भगिनी ९३९
भाना	भाणे, भावणे	पसंद आना १०६५, ११३१

भाना		डालना ४१२, ७१०
भाना, बहाना		मिष, बहाना ५४२, ७४१
भारना	भारणे	जादू कर परिणामित करना १००
भुई	भुई	भूमि २४९, ६३०, ६४३
भेस	भेस	वेश, पोशाक ७५९
भोंदना	भोंदणे	ठगाना, फंसाना ११९०
मंगल		हाथी १९७, १६०, १०५७
मंडना, मांडना	मांडणे	व्यवस्थित रचना करना ४०६, ४११
माया	माया	जादू, माया ३३०
मिनबत, मेनबत	मेणबत्ती	मोमबत्ती १४४६
मुखडा	मुखडा	मुख, चिहरा ५२५
मुंडी	मुंडी	शिर ४५५, ७६३
मुसकटना	मुसकटणे	कपडा शरीर को लपेटना ५५८
मेना	मेणा	पालखी, नरवाह्य वाहन ९५८
मोड	मोड	पराभव, शिकस्त १११७
मोड	मोड	कोंपल

य–व

रगडना	रगडणे	पीसना, मलना १२५१
रयन, रैन	रयणी	रजनी, रात ८४०
रावत	राऊत	घोडेस्वार, पराक्रमी १२९२
रावा	रावा	तोता ६३९, ७५६
रुक	रुक	वृक्ष, झाड ५४७
लई	लै, लई	बहुत ६१२, ६३२, ११७२
लोट	लोट	पानी की आई हुई बाढ़ ८६७
वारना	वारणे	कुर्बान करना, अर्पित करना ११४, ५१९
विवहार	व्यवहार	व्यवहार, कारोबार ७४
वैताग	वैताग	दुनियादारी की बातों में से मन उठ जाना ८६६, ९०६

श–ह

शमला (फा.)	शमला, समला	पगडी का पीठपर छोडा हुवा थोडा भाग २७२
शेला	शेला	उत्तरीय, शरीर पर पहनने की चादर २७१
सगले	सगळे	सब १३९, २०७, ८६०
संग	संग	साहचर्य, सुहबत. सहवास १५१

सजन	सजन	प्रियकर, मित्र ९४७, १४०४
सत	सत	सत्त्व, पातिव्रत्य १४१८
सतवां		पातिव्रत्य की शपथ ७३५
संपडना	सांपडणे	प्राप्त होना, मिलजाना ४०९, ४४५
संभालना	सांभाळणे	संभालना, सुरक्षा करना ११४८
सम्दूर		समुद्र ५
सल	सळ	शल्य १३४३
सलोना		सलवण, चित्ताकर्षक, प्रियकर ११६७
सलग	सलगी	मित्रता, साहचर्य ४४४, १७०७
सलना	सलणे	शल्य बनना, असह्य होना ४५८
सवां		सौगंध, शपथ ९१४
साय	साई	छांवू १४६३
साजना	साजणे	शोभा देना २
सांदना	सांधणे	जोडना ५३९, १०५०
सान	सान, सहान	कुल्हाडी तेज करनेका पत्थर १२
सामी		ईश्वर, मालिक ९१
सारा	सारा-री-रे	पूरा, संपूर्ण ६९९
सिकाना	शिकविणे	सिखाना ६२१
सियाना	स्याना, शहाणा	हुशयार, चतुर १५६२
सिर उचाना	शिर उंचावणे	प्रवल होना ५२४
सीना फुटना	छाती फुटणे	हिम्मत हारना ४५७
सुकाना	सुकविणे	सुकाना १०३९
सुद	सुद	शुद्धि, पहचान १०२९
सेज	सेज	शय्या ७३४
सो		वह ७३
सोसना	सोसणे	सहना १५१९, १६१८
सौरात	सौरात, सवरात	अपने फायदेका अतीव प्रयत्न स्वार्थ का प्रयत्न ५००, ७१८, ७२५, ८६१
हदरना	हदरणे	हिलना, कम्पित होना १२७१
हम्म		हिम्मत, जोश ९०
हिंदोला	हिंदोळा	झूला ३७४
हंसते खेलते रहना	हंसत खेळत राहणे	मिलजुलकर, मजैसे रहना १५४२
होड	होड	सौदा १११७
होड बांधना	होड बांधणे	बाजी लगाना, सौदा करना १११७

फार्सी शब्दकोश

अ

अक़रब–संबंधी, रिश्तेदार
अख़्तर–सितारा
अचपल–अत्यंत चपल, चंचल
अच्छरी–बना है सं. अप्सरा से
अ़जब–आश्चर्यपूर्ण
अज़ल–अनादि
अज़्–से, बना है सं. सचा से
अ़ज़ीज़–प्रिय
अंजूं, अंझूं, अंजू–आंसू
अ़ता–दान, देना
अदब–साहित्य, वाणी
 २ नम्रता, विनय
अ़दालत–न्यायासन, न्याय देना
अ़दू, अ़दवां–शत्रु
अंदेशा–आशंका, भीति
अ़नासिर–पांच मूल तत्त्व
 उनसुर का बहुवचन
अफसूं–जादू
अफाल–कृत्य, फेल का बहुवचन
अफशानी–बाहर निकालना
अवद–अनन्त
अ़वस–व्यर्थ, फुजूल
अमन–शान्ति
अमानत–सुरक्षित
अरवाह–आत्मा, रुह का बहुव.
अरूसा–दुल्हनें
अ़र्श–सिंहासन, गद्दी

अख़जरी–हराभरा
अगरंचे–यद्यपि
अंजल–मृत्यु
अज़बर–मुखोद्गत
अ़जायब–आश्चर्यपूर्ण, अ़जीबका बहुव.
अ़जम–ईराण
अंजुमन–सभा
अझदहा–सांप
उतलिसी–नववे आस्मान का नाम
उतारिद–बुध नाम का ग्रह
अ़दम–अनास्तित्व
अदा करना–देना
अ़दावत–शत्रुत्व
अ़दल–न्याय
अनवार–प्रकाश, तेज नूर का बहुवचन
अपस, अपसीं–स्वयं, खुद
अं-पडना–पहूंचना
अफलाक–आकाश, फलक का बहुवचन
अफसोस–दुःख
अफ़गां–दुःख का निःश्वास
अवजद–अलिफ, बे, ज़ीम, दाल आदि
 मूलाक्षर
अब्र–मेघ, बादल अभ्र से बना
अमा–किन्तु
अमीर–नेता, सरदार
अरस्तू–प्रसिद्ध विद्वान् ॲरिस्टॉटल
अ़र्ज़–विनंती
अलम–दुःख, शोक

अ़लामात–चिन्ह, अ़लामत का बहुव.
अलबत्तां–ज़रूर
अवलाद–बेटे, वल्द का बहुव.
असली–मूल, अकृत्रिम
असवार–घोडेस्वार-योद्धा
सं. अश्ववार से ब.ा
अ़सा–हात की लकडी, यष्टि
अ़स्मत–पातिव्रत्य, सतीत्व
अ़ह्द–प्रण, निश्चय
अह्ले-इ़बादत–भक्त, सन्त

अ़लम–झेंडा. ध्वज
अवक़ात–समय, वक्त का बहुव.
अव्वल–प्रथम
असबाब–सामान, साहित्य
असर–परिणाम. प्रभाव
असरार–भेद, गुह्य सिर्र का बहुव.
असीर–कैदी, बंदिजन
अह्सन–सुंदर तम
अह्वाल–हाल, वृत्तांत हाल का बहुव.

आ

आंकस–अंकुश
आ़क़िल–अ़क्लमंद, बुद्धिमान्
आगाह्–परिचित
आज़माना–परीक्षा करना
आतिश–अग्नि
आ़दा–शत्रु, अ़दू का बहुव.
आ़दिल–न्यायी
आन–वह
आफ़रीन–वाह्वा
आबरू–भूं, सं. भ्रू से बना
आ़म–साधारण
आमीज़ (समास में)–मिश्रित, मिला हुवा
आयतुल्कुर्सी–कुरान का श्लोक
आ़रिफ–ईश्वरज्ञानी
आ़लिम–विद्वान्
आवर्दन–आना, बना है सं. आ+वृत से
आशनाई–परिचय
आ़शिक़–प्रेमी
आसार–प्रभाव, परिणाम, असर का बहुवचन
आस्मान–आकाश, अश्मन् से बना
आहंग–ध्वनि, आवाज़
आहू–हिरन

आक़िबत-अंदेश–भविष्यदर्शी
आख़िर–अंतमें
आ़ज़म–वडा
आज़ार–दुःख. शोक
आदम–मनुष्य
आदाब–नम्रता, शिष्ट आचार, अदब का बहुवचन
आफ़त–संकट
आब-गीना–शीशा, आईना
आबरूई–कीर्ति, प्रतिष्ठा
आमदन–आना, बना है सं. आगमन से
आमोख़्तन–पुनरावृत्ति करना
आयत–कुरान का श्लोक़
आ़र–लज्जा
आ़लम–जग. २ अवस्था, स्थिति
आ़ली–उच्च
आवाजा–कीर्ति
आशकार–आविष्कृत से ही बना है।
आसान–सहल
आसीब–दुःख, धोखा
आस्ताना–चौखट
आह–निःश्वास
अहिस्ता–शनैः, हल्

इ

इअतबार–विश्वास
इखलास–प्रेम, निष्कपटता
इजाबत–सम्मति
इज्जो-शर्फ–मान, प्रतिष्ठा
इंतिजारी–प्रतीक्षा करना
इनशा–गद्यलेखन
इन्सान–मनुष्य
इबारत–मज़मून, कृति
इलाह, इलाहि–ईश्वर
इर्फान–ईश्वर का ज्ञान
इशरत–आराम, सुख
इश्क़–प्रेम
इश्क़-बाजी–प्रेम का खेल
इस्तिराहत–आराम पाना
इस्म–नाम
ईद–त्योहार
ईमान–विश्वास, श्रद्धा
इक़बाल–वैभव, सुदैव
इख्तियारी–अधिकार
इज़हार–स्पष्ट, उद्घोषित करना
इताअत–आज्ञा मानना
इदराक–बुद्धि
इनायत–कृपा
इबादत–पूजा, भक्ति
इब्तिदा–प्रारंभ
इल्म–ज्ञान, विद्या
इरम–स्वर्ग
इशारत–सूचना
इश्क़-बाज–प्रेम का दिवाना
इस्तिताअत–शक्ति
इस्बात–होना, आस्तिक्य
ईजाद–नई बात बनाना
ईमन–निडर, निर्भय

उ

उजरां–आक्षेप
उताला–उतावील, बेचैन, त्वरा करनेवाला
उमल–हिम्मत
उलाला–पानी का बहना, उल्लोल, जोश, उद्रेक
उस्ताद–आचार्य
ऐन–केवल
औरत–स्त्री, नारी
उजलत–कोने में बैठना
उन्वान–नाम
उमर–वय, आयु
उम्मीद–आकांक्षा
उस्तखां–हड्डी
उस्तखां-बंदी–अस्थि-पंजर बनना
ऐश–आराम

क

कज–टेढा
क़ज़ारा–यकायक
क़तरा–बूंद, बिन्दु
क़द्र–कीमत, मूल्य
कवरयाई–श्रेष्ठता
कबाब–भूना हुवा मांसखंड
क़ज़ा–मृत्यु
कजी–दुष्टता, नीचता
क़द–शरीर
कनआं–अंधा कुंवा, निर्जल बावली
क़बा–पोशाक
क़बुलियत–मान्यता, सम्मति
कमरी–पक्षीविशेष

कमान, कमां–अर्धवर्तुल
कमालियत्–प्रवीणता
क़माशी–शोभा
कमीना–नीच, दुष्ट
करना–सींग, वाद्यविशेष
करम–कृपा
क़राबत–संबंध, रिश्तदारी
करामत–कर्तृत्व
क़रार–स्थिरता, स्वस्थता
कर्रो–फर–शान, वैभव
क़लम–लेखनी
क़लम करना–लिखना
क़वी–मजबूत
कसरत–विपुलता, प्राचुर्य
कसरा–एक प्रसिद्ध राजा
कसवत–पोशाक
कहकशां–आकाशगंगा
क़हर–प्रलयकाल
क़ाजीऊल्हाजात–सृष्टिनियंता, ईश्वर
कांद–दिवार
क़ाफिया–यमक विशेष
काफ़िर–ईश्वरको एक, या कुरान को मानननेवाला
क़ामत–आकृति

कारसाजी–कारोबार, कर्तृत्व
कालानी–काला
क़ासिद–दूत
काहिल–सुस्त
किरदार–शील, चारित्र्य
किश्वर–देश, मुल्क
किश्ती–नौ, नौका
क़िस्सा–कहानी, कथा
कीना–वर–दुष्ट, नीच
कुदरत–शक्ति, बल. २ निसर्ग, ३ ईश्वर
कुदूरत–मलिनता, दुष्टता
कुब्बा–गेंद, गोल वस्तु
क़ुमाश–माल,धन
क़ुरबान–अर्पित करना
क़ुल–कहो, बोलो
कुलाबा–मछली पकडनेका साधन, गल
कोताह-बीन–अदूरदर्शी
कोह-क़ाफ–काल्पनिक पर्वत विशेष
कोहकुन–पहाड खोदनेवाला, शीरीन के प्रियकर फरहाद की उपाधि
कौस–कमान
नकौसर–स्वर्गका एक झरना, निर्झर
कौसें–क़ज़ह–इन्द्रधनु

ख

ख़जर–छोटी तलवार
ख़जिल–लज्जित
ख़ज़ीना, खजाना–कोश, भांडार
ख़तर, ख़तरा–संकट भीति
खतीबी–खुत्बा पढनेवाला
ख़त्म–पूर्ण
ख़ंदानी–हसता हुवा
ख़फा–नाराज, दुखी
ख़म–झुकाव
ख़मूशी, खामूशी–स्तब्धता

ख़याल–विचार, कल्पना
ख़राबा–पडाव जमीन
ख़लल–व्यत्यय, बिगाड
ख़ल्क–मनुष्यजाति
ख़सलत, ख़सालत–गुण, स्वभाव
ख़ाक–मिट्टी, धूल
ख़ाकी–मर्त्य, मृत्तिकाका बना,मनुष्य
ख़ाजिन–कोशपति
ख़ातिम–पूरा करनेवाला
ख़ातिर–मन,दिल. २ लिए

खा़तिर-फरागा–साफ दिलवाले
खा़दिम–सेवक, नोकर
खा़नकाह–फकिरोंका निवासस्थान
खा़ना–घर,२ डेरा
खा़ब–स्वप्न, बना है सं. स्वाप से
खा़मा–कलम, लेखनी
खा़मी–दोष, व्यंग
खा़र–कांटा, बना है सं. खर से
खा़र–निंदित, अपमानीत, बना है सं. स्वर् से
खा़ल–चमडा
खा़लिक–निर्माता, ईश्वर
खा़ली–रिक्त
खा़सा–विशेष
खा़सियत–विशेषता
खि़ज़ां–पतझड का ऋतु
खि़रामान–सुगतिमान्
खि़लवत–एकान्त स्थान
खि़लात–पोशाक
खु़द–स्वयं, बना है सं. स्वतस् से
खु़द-नुमाई–आत्मप्रौढी
खु़द-फरोशी–खु़दको बेचना, आत्मार्पण
खु़दी–स्वत्व आस्मिता
खु़मारी–रुचि
खु़र्रम–उल्हसित, प्रफुल्लित
खु़र्शीद–सूर्य, बना है सं. स्वर्क्षेत्र से
खु़श-खल्क–सदाचारी
खु़शबूई–सुगंध
खु़श्क–सूखा
खू़–स्वभाव, आ़दत
खू़,–खू़न–रक्त
खु़ई–थूंक
खू़बां–प्रेयसी
खबी–सौंदर्य, चारुता

ग

गज़ब–क्रोध
गंज़–कोश, खज़ाना
ग़ट करना–निगल लना, अयोग्य कब्जा करना
गदा–फकीर
ग़नीमत–देन, बख्शिश
ग़म–दुःख, शोक
गरदानना–सिद्ध करना
गरदाब–भंवर, प्रवाह में का पेंच
गरीबान–पल्लू
ग़र्क–डूबना
ग़र्काब–पानी में डूबना
गर्द–धूल, धुलारा
गलाना–पिघलाना
ग़लोला–चीत्कार
गवी–गुहा, गुफ्फा (कन्नड शब्द)
ग़व्वास–समुद्रकी तल से मोती निकालनेवाला
गवाही–साक्ष
ग़श करना–बेहोश होना
गह, गाह–जागा, बना है सं. गातु से
ग़ाजी–पराक्रमी, शूर
ग़ाफिल–असावध
ग़ायत–आवश्यकता, ज़रूरी
ग़ालिब–अग्रसर होना बलिष्ट होना
गाह-बाजी–चालविशेष
गाहे–कभी, बना हैं सं. प्रभ् से
गिरिफ्तन–पकडना, बना है सं. गातु से
ग़ीरत– लज्जा का अभिमान
गुजरानना–पेश करना, सामने रखना
गुफ्तन–बोलना
गुफ्तार–वाणी, बातचीत
गुरबत–दारिद्रय, २ वियोग
गुर्ग–भेडिया, बना है वृक
गुल–फूल
गुलज़ार–उद्यान, बाग
गुलशन–उद्यान,बाग़
गुहर, गोहर–मोती

गुहर-रेज–मोती निकालनेवाल
गुहर-संज–मोती परखनेवाला
गूई–सूर्य
गैब–अदृश्यता
गोर–क़बर, समाधी
गोश–कान, बना है घोष से
गोश करना–सुनना
गोश-माली–कान मुरोडना, सजा देना
गोशा–कोना, एकान्त. बना है गोष्ठ से
गोशा-नशीन–कोने में बैठनेवाला
गोस्फंद–बकरी, बना है सं. गोष्पद् से
गोहर–मोती
गोहर-फशानी–मोती निकालना

च

चक़मक़–(फार्सी-चकमाक़), पोलाद, रूई और पत्थरविशेषसे आग पैदा करने का साधन
चंद–कुछ
चमन–उद्यान
चरिंदा–पशु , बना है सं. चरन्तः से
चर्ख–आकाश, बना है सं. चक्र से
चश्मा–झरना, नाला
चाक देना–फाडना
चाह–कुंवा, बावली
चिराग़–दीप ,दिया
चोप–इच्छा, अभिलाषा
चौगान-बाज़ी–पोलो का खेल
चौ-गिर्द–चारों ओर
चौढल–अम्बारी

ज

ज़ईफ–बूढा, वृद्ध
ज़जीरा–व्दीप
जंगे-मैदानी–मैदान का युद्ध
जद–मूल पुरुष, पूर्वज
जदवल–तख़्ता
जंनख़्दां–मूढता
जफा–ज़ुल्म, अन्याय
ज़बान–वाणी, बना है सं. जिव्हा से
जब्त–बंधन, शासन
ज़बूं, जबूनी–व्यर्थ, बेकार
जबोरा–अस्त्रविशेष
जमधाड–शस्त्रविशेष, यमदंष्ट्रा
जमर्रुद–रत्नविशेष
जमाल–सौंदर्य
जमा–एकत्रित
ज़मीर–आत्मा
ज़र–सुवर्ण, बना है सं. हिरण्य से
ज़रब-जन–मार मारनेवाला
ज़र हल–सुवर्ण की चित्रकारी
ज़रीना–सुवर्णालंकार
ज़रुरत–आवश्यकता
ज़र्द–पिला, बना है सं. हरित से
ज़र्रा–कण
जसद–शरीर
ज़हर–विष
ज़हां-पनाह–जगदाश्रय
जहां-परवर–जगत्पालक
ज़ाए–व्यर्थ, बेकार
ज़ात–व्यक्तिमत्व
जान–जीव, २ प्रेमी, प्रियकर बना है सं ध्यान से
ज़ा-नशीन–स्थानपर बैठनेवाला नया मनुष्य
जां–जहां, स्थान, जागा, बना है सं, स्थान से
जा-ब-जा–स्थान स्थानपर
जाम–प्याला, बना है सं. याम से

ज़ारी–रोना
जारूब–झाड़ू
जासूस–गुप्त दूत
ज़ाहिद–संयमी
ज़ाहिरा–बाह्य, स्पष्ट
जिगर–कलिजा, बना है सं. यकृत से
ज़िद–उलटा, विरुद्ध
जिंदगानी–जीवन, बना है सं. जिवन्त से
जिंदां–कारा, तुरंग
जिन्न–पिशाच्च
ज़ियाफत–भोजन समारंभ
जिला–प्रकाश
जिलाना–प्रकाशित करना
जिल्द–आवर्तन, आवेष्टन
जिस्म–शरीर
जुज़, जुज़ू–अंशभाग, २ अवयव
जुदा–अलग, वियुक्त
जुदाई–वियोग
ज़ुल्फ–बाल, केस
ज़हद–संयम रखना
ज़ुहरा–शुक्र नामका ग्रह
ज़ुहल–शनि नामका ग्रह
ज़ेब–शोभा
जेबो-जीनत-शोभा
जेर करना–वश में लाना, काबू में लाना
जोबन–कुच, स्तन, बना है सं. यौवन से
ज़ोया–प्रयत्नशील
ज़ोरी–ज़ुल्म, अन्याय. शक्ति
ज़ोश–आवेश, भावनोद्रेक
जोशन–त्वेष, आवेश
जौक–अभिरुचि
जोज़ा–आस्मान के एक बुर्जका नाम

त

तक़ती–सुरेखा-पन
तक़दीर–दैव, नसीब
तक़रीर–बातचीत
तक़वीम-पंचांग, जंत्री
तक़सीर–गलती, प्रमाद
तख्त–सिंहासन, गद्दी
तग़य्युर–बदलना
तजम्मुल–चमकना, शोभा, वैभव
तज़ल्ज़ुल--कम्पित, विचलित होना
तजल्ला--तेज, प्रकाश
तदबीर--युक्ति, हिकमत
तन्दुरुस्ती–शरीरस्वास्थ्य
तनहा--अकेला
तंदूर--भट्टी
तपिश--जलन, गरमी, बना है सं. तप् से
तफ़ावत--भेद, अन्तर
तबअ़--बुद्धि
तबक़--थाल
तबदील--बदलना
तबर--हतियार वेशेष
तबीअ़त--शरीर.२ बुद्धी
तमसील--उदाहरण देना
तमा--लालच
तमाशा--देखना, दर्शन
तमीज--सारासार विचार
तर--गीला, भीगा
तरक़ीम--लिखना
तरद्दुद--चिंता
तरफ़--ओर
तरह--रीति, भान्ति
तरहदार--शैलीशाली, ढबदार
तरीक़त--भक्तिमार्ग का आचार
तर्ज--प्रकार, रीति, शैली
तर्जुमा--भाषान्तर, अनुवाद

तर्जुमानी-- अनुवाद, अनुसरण
तलख़--कडवा
तलब--मांगना
तलबगार--याचक
तवकी--स्वाक्षरी करना
तवक्कुल-ईश्वर पर श्रद्धा धरना
तवज्जुह--ध्यान
तवाना- शक्तिमान्
तशबीह--उपमा अलंकार
तशरीफ--पोशाक
तसनीफ--ग्रंथरचना करना
तसबीह-भक्तिसे ईश्वरनाम लेना २ माला
तसलीम--मंजूर करना. २ वंदन करना
तहकीक़--सत्यान्वेषण करना
तहलील--मौता पर ईश्वरनाम लेना
तहरीर--लिखना
ताअत-इताअत--आज्ञापालन
ताज--मुकुट
ताज-वर--मुकुटधारी, राजा
ताज़ी--घोडा
ताजीम--वंदन, इज्जत करना
ताब--प्रकाश, बना है सं. ताप से
ताबानी--प्रकाशित
ताबीर--अर्थ करना
ताय्युन--निश्चित करना
तारीक--अंधःकारमय
तारीफ--वर्णन करना. २ स्तुति करना
ताला--दैव, नसीब
तालिब--इच्छुक
तालीफ--ग्रंथसंपादन करना
तावान--दंड, जुर्माना
तावील--खीचतान कर अर्थ पैदा करना
तासीर--असर, प्रभाव, परिणाम
तिजारत--व्यापार, वाणिज्य
तिफ्ल--बच्चा, बालक
तिरंदा--तैरनेवाला
तिलिस्म--जादू
तीरअंदाज--धनुर्धारी
तुज्जार--व्यापारी. ताजिर का बहुव.
तुर्क--मुसलमान
तुर्की--घोडा
तुर्कमानां--मुसलमानां
तुर्श--रूई--मूं खट्टा होना
तुहफा--भेंट
तेग़--तलवार
तैर--पक्षी
तैरानी--पक्षीयोनिसंबंधी
तौफीक़--सुबुद्धि
तौहीद--ईश्वरका एकमेव होना

द

दफ़ा--दूर करना
दफ़ऊलवक्त--समय टालना
दंबाल--पीछे
दर--में, अंदर, बना है सं. अंतर् से
दर--दरवाजा, बना है सं. द्वार से
दर-गाह--दरबार
दरबानी--चौकीदारीकी सेवा
दरमियान--में, अंदर
दरवेश--फकीर
दरस--(दर्शनसे) दर्शन
दर-हाल--फौरन, तुरन्त
दरिंदा--हिंस्त्र पशु, बना है सं. दृसे
दरीगी--डर, भीति
दरूद--वन्दन
दर्द-नाकी--दुःख, व्याकुलता
दर्स--पाठ
दलील--मुद्दा, कारण
दस्त--हात, बना है सं. हस्त से
दस्त-गाह--कमाल, प्रावीण्य
दस्त-गीरी--सहायता
दस्त-बोसी--हाथका चुंबन लेना
दस्तक--दार खटखटाना
दस्तार--पगडी, शिरोवस्त्र

दहन, दहान, दहां–मुख
दहरीं–जडवादी, निरीश्वरवादी
दाद–गुणग्रहण
दाद–खाह–गुणाग्राहक
दादन--देना (सं. द्रा-यच्छ् से)
दाना–बुद्धिमान (सं. ज्ञान से)
दाब–शान, वैभव
दाम–जाला, फंदा (सं. दामन्)
दामन–पल्लू
दायम–सदा, नित्य
दासतान–कथा, कहानी
दिगर, दीगर–दूसरा (सं. द्वितीयकर से)
दिरंग–देरी, विलंब
दिल–हृदय (सं. हृदय से बना)
दिल-खाह–मनपसंद
दिलगीर–दुःखी
दिलफिगार–दुखी, शोकमग्न
दिल-बर–प्रेयसी
दिलेरी–पराक्रम, शौर्य
दीदन–देखना (सं. दृश् से बना)
दीदा–आंख
दीदार–दर्शन, देखना
दीन–धर्म
दीन–रोशन–धर्मप्रकाशक
दुआ–प्रार्थना, आशीर्वाद
दुआ-गो–प्राथना करनेवाला
दुख्तर–बेटी (सं. दुहितृ से बना)
दुरोगी–झूट बोलनेवाला
दुर्ज–पेटी, संदूक
दुर्र–मोती
दुलदुल–अली के खच्चर का नाम
दुश्मन-तराशा–शत्रुको छाटनेवाले
दूना–दो गुना
दूर–बीनी–दूरदृष्टि
देग–बडा बरतन, भांडा
दो-चंदां–दो गुना
दोज़ख–नरक
दोस्तदारी–मित्रता

ध

धन–प्रेयसी, वल्लभा
धार–नदी का प्रवाह
धीरक–स्थिरता
धूरा–पूरा
धेड–एक अछूत जाती

न

नक्क़ाश–चित्रकार
नक्ल–स्थलांतर करना. २ वर्णन
नक्श–चित्र
नक्श-बंदी–चित्रींकरण
नग़मा–गीत
नग़मा-संजो–संगीत का रसग्रहण करना
नगीं-नगीना–अंगोठीपर का हीरा, रत्न
नज़ाकत–नाजुकी
नज़ारा–दृश्य, दर्शन
नज्म–कविता
नदीम–साथी, मित्र
नफ़सानी–काममोहित
नफी–न होना, अनास्तित्व
नफ्स–कामी मन
नबी–पैगंबर
नम–गीला. तर, जलपूर्ण
नमूदन–सामने रखना, स्पष्ट करना
नवाज़िश–सन्मान, मान
नस्वो-नुमा–आविस्कार, दर्शन
नसीहत–उपदेश
नहायत–परिणाम, अन्त
नाक़िस–नरर्थक, अपूर्ण

...१४

नागाह–यकायक
नाज़–गर्व
नाज़नीन–कोमलांगी, नारी
नाज़िल–अवतीर्ण
नात–पैंगबर की स्तुति
नाद–समान, सारखा
नादानी–मूढता अज्ञान
नादिर–अपूर्व, अनोखा
नाफा–नाभी
नावात–दात, २ वल्ली
ना-बूद–नष्ट अवशेष
नामवर–प्रसिद्ध
नामा–पत्र. २ ग्रंथ
नामी–प्रसिद्ध
नामोस–कीर्ति, प्रतिष्ठा
नाला–शिकायत
नालां–शिकायत करनेवाला
नालैन–जुते के दो नाल, पैर
ना-शाद--असंतुष्ट
ना-साज--अयोग्य
निअमत--ईश्वर की देन
निकाह--विवाह
निगह, निगाह,–दृष्टि
निगारना--लिखना
निपट–केवल
निशानी–चिन्ह
निहाल--पौधा
नुकत--बिन्दु
नुजूमी–ज्योतिःशास्त्रविद्
नूर--प्रकाश
नूरानी--प्रकाशमय
नेक-अफाल-सत्कृति
नेह (स्नेहसे)–प्रेम
नैश–ज़हरेले पशुका काटना, डंख
नै-शकर--गन्ना
नोश–पीना

प

पंगडचा--लूले लंगडे
पज्ञमुर्द--कुमलाया हुवा
पयंबर--पैगाम, वार्ता देनेवाला, पैगंबर
परकम--मुहताज, अभिलाषी
परवाना–पतंग
परतू–प्रतिबिंब
पर्वरिश–पालनपोषण
परस्ती (समास में)--पूजा करना
परागंदा करना--फैलाना
परी–ज़ाद–अप्सरा कन्या, अप्सरा
परी--अप्सरा
परेशां, परेशान–दुःखी
पलंग--व्याघ्र
पशीमान, पशीमां--लज्जित
पस्त--नीचा, कमहिम्मत
पाक--पवित्र
पाक-दामन--अंपासुला, निष्कलंक
पा-पोश–पादत्राण
पाय-माल–पांवको रगडना, नष्ट
पास-बानी–सुरक्षा
पिनहानी–गुप्त, अदृश्य
पिशानी, पेशानी–माथा, भालप्रदेश
पीर–बूढा
पुर (समास में)–पूर्ण
पुरसीदन–पूछना (सं. पृच्छ्)
पेश--सामने (सं. पश्चात्)
पेश-दस्ती–सहायता
पेश-बाजी--सामने बढना, प्रगति
पेशवा–नेता, सरदार
पेशा–धंदा,व्यवसाय
पैगाम–संदेश, वार्ता
पैरवी–अनुसरण
पैरहन–पोशाक (सं. परिधान)
पोशीदा–गुप्त, अदृश्य

फ

फ़ज़ल–कृपा
फ़तह–विजय
फ़न–कला
फ़ना–नष्ट
फ़य्याज़–उदार
फ़रंग–तलवार
फ़र्मान–आज्ञा (सं. प्रमाणम्)
फ़रागत–स्वास्थ्य
फ़रात–फ़रात नदी
फ़रामोश–भूलना
फ़राशी–झाडना
फ़रिश्ता-खू–देवदूतके स्वभावकी
फ़र्खुंदा–शुभ, कल्याणप्रद
फ़र्जंद–बेटा
फ़र्रख़–सुदैवी, भाग्यशाली
फ़र्श–जमीन
फ़लक–आस्मान
फ़लाख़ान–गोफन
फ़लातून–प्लेटो
फ़हम–समझ, ज्ञान
फ़ाजिल–विद्वान्
फ़ानी–नष्ट होनेवाला
फ़ानूस–दीपविशेष कंदील
फ़ामा–फहम, समझ
फ़ारिग–मुक्त
फ़ारिगुलबाल–सुखी
फ़ाल–शगुन
फ़ाश–आविष्कृत, खुला
फ़िअ़ल–कृति, कर्म
फ़ितना–झगडा
फ़िदा–लुब्ध, आकृष्ट
फ़िरदोस–स्वर्ग
फ़िरासत–बुद्धि की कुशाग्रता
फ़िल्हाल–तुरन्त, अभी
फ़ील–हाथी
फ़ैज़–उदारता

ब

बख़्त–नसीब, दैव
बख़्त-वर–भाग्यशाली, सुदैवी
बख़्शिश–देना
बगैर–सिवा, विना
ब-गैर-अज़–सिवा, विना
ब-जिद–आग्रहपूर्वक
बज़्म–महफिल, आनंदसभा
बतन–पेट, अंतर
बद–बुरा
बदअफाल–दुष्कृति
बद-गुमान–शंकित, संशयभरा
बद-गुहर–झूटा मोती, दुष्ट
बदायत–प्रारंभ
बदी–दुष्टता
बनातुन्नाश–सप्तर्षि
बंद–कैद, बद्ध
बंदा–गुलाम, सेवक (सं. बंधक से)
बयान, बयां–वर्णन (सं. व्याख्यान से)
बर–भूमि, खुश्की
बर-अक्स–उलटा, विरुद्ध
बर-गुजीदा–चुना हुवा, श्रेष्ठ
बर-तरी–श्रेष्ठत्व
बर-हक़–योग्य, उचित
बर्ग–सामान, वस्तु. २ पात, पता
बला–संकट
बल्कि–तथापि
बसाती–समर्थ, शक्तिवाला
बहर–समुद्र
ब-हर-हाल–संक्षेपतः, एवंच
बहार–वसंत ऋतु
बहिरा–शिकारी पक्षीविशेष
बाज (वर्ज्यसे)–विना, सिवा

बाज़–एक शिकारी पक्षी, ससाना.
२ वापिस, पीछे
बाज़–कुछ
बाज़ू–हात (सं. बाहू से बना)
बाज़े–कोई कोई
बातिन–आंतरिक, अंदर का
बाद–हवा, वायु (सं. वात)
बाद-अज़ां–तदनंतर
बादल–मेघ (सं. वा+ल)
बाब–सर्ग, अध्याय
बार-गाह–दरबार, सभा
बारी–ईश्वर
बावर–समझना
बिला–सिवा, बिना
बिसातीन–उद्यान, बूस्तान का बहुव
बिहश्ती–स्वर्गीय
बुज़ुर्गी–बडापन, श्रेष्ठत्व
बुनयाद–जड, मूल, पाया (सं. बुध्न)
बुलंदी–ऊंचाई
बे-अंदाजा–अतीव
ब-ईख्तियार–बे-बस, अगतिक
बे-कटर-निर्दय, निष्ठुर
बे-क़रारी–बेचैनी
बे-खाब-बेचैन, अस्वस्थ
बे-गाना, बि-गाना–वियुक्त, बिछडा हुआ
बे-ज़ार–बेचैन
बे-ताब–बेचैन
बे-दाद–निर्दय
बेदार–जागृत
बे-नहायत–अनगिनत
बे-निसबत–असम्बध्द
बे-फुरोगी–अंधकार
बे-वफ़ाई–विश्वासघात
बे-होश–बेशुध्द, जागृति खोना
बैत–जोड, पंक्तिद्वय. २ घर (सं. द्वित से)
बोसीदन–चूंबन लेना

म

मअ़नी–अर्थ
मकतब–पाठशाला
मक़बूल–सम्मत, मान्य
मक्कार–धोकाबाज़
मक्र–धोका
मक्सूद–ध्येय, आकांक्षा
मंगल–हाथी
मख्मूल–कुमलाया हुवा, दुखी
मगरब–पश्चिम
मज़नून–दीवाना
मज़मून–विषय, लेखन
मज़मून-तराशी–ग्रंथलेखन
मजलिस–सभा
मजाजी–सांकेतिक
मजालिस-सभाएं–मजालिस काब.
मंज़िल–मक़ाम, स्थान
मतबख़–पाकगृह
मतरब–मद्यपानगृह
मतरिब–मद्यपानगृहका सदस्य
मतलब–हेतु, साध्य
मता–मस्त
मद–मद्य, शराब, २ मधु
मदन–स्तुति
मनसूब–संबंधित
मनसूबा–योजना, इरादा
मफ़रूग–गिराया गया
ममसूख़–एक योनि से दूसरी योनि में
गया हुवा।
मंवर–चौरंग, पीडा
मय–मद्य, मदिरा (सं. मधु से)
मरक़द–क़बर, समाध
मरतबा–स्थान
मरूना–भटकना, घूमना
मर्ग–मृत्यु
मलक–देवदूत

मलिक--राजा
मशक्कत--कष्ट, मेहनत
मशरंक--पूर्व
मशरफ--प्रतिष्ठा
मशाल--बडा दीप
मशीमा--परदा
मश्क--कस्तूरी
मश्वरत--सूचना
मसकन--निवास, घर
मसनद -गद्दी, सिंहासन
मसनद-नशीनी- गद्दी पर बैठना
मसख्ख़र--आनंदित
मसरूर--आनंदित
महज़ूज़--रुचि, रस प्राप्त किया हुवा,
संतुष्ट
महबूस--कारावद्ध
महरम--भेद जाननेवाला
माकूल–उचित
माजरा–कहानी, कथा
मातम–शोक
मातमी–शोकाकुल
मांदा–थका हुवा
मावद–इबादत, पूजा का स्थान, देवालय
मामूर–भरा हुवा, परिपूर्ण
माया–भेद, गुह्य
मार–सर्प
मारफत–ईश्वरज्ञान
मालूम–ज्ञात
माशूक़–प्रियतमा, प्रेयसी
माह–चंद्र (सं. मास से)
माहिरी–कमाल, प्राविण्य
माही–मछली
मिन्नतदार–उपकृत
मिसरा–पाद, चरण श्लोकका
मिस्र–ईजिप्त
मिहमान–अतिथि
मिहमीज–लोहे का कांटा जो घोडेस्वार
के ऐडी के समीप होता है।

मिहर–सूर्य. २ कृपा (सं. मित्र से)
मिहर-बान–कृपालु
मिहराब–दीवार में बनी कमान
मुअज़रत–क्षमा
मुअत्तर–सुगंधीत
मुअतक़द–श्रद्धालु
मुअतकफ–एकान्तनिवास स्वीकारना
मुअत्तल–रद्द
मुअम्मा–कूट, गूढ, पेच
मुक़द्दम–अग्रसर, अग्रक्रम
मुकर्रर–निश्चित
मुक़री, मुकर्री–कुरान पढनेवाला
मुक़ाबिल–सामना देनेवाला
मुखातिब–होना कहना
मुख्तसर–संक्षिप्त
मुजरिम–अपराधी
मुनज्जिम–ज्योतिषी, नुजूमी
मुनव्वर–प्रकाशित
मुनाजात–ईश्वरको उपस्थित जान
प्रार्थना करना
मुनासिब–योग्य
मुंतज़िर–प्रतिक्षा करनेवाला
मुफलिस–दरिद्री
मुबारक–शुभ-पवित्र
मुमकिन–शक्य
मुमलिकत–राज्य
मुरत्तब–अंकित करना, लिखाना
मुरव्वत–प्रेम, भीड
मुरसल–रवाना करना, भेजना
मुर्ग–पक्षी (सं. मृग से)
मुलाकात–भेंट
मुशख्खस–खोज किया, पहचाना गया
मुश्किल-कुशाई–मुश्किल दूर करना
मुश्तरी–गुरु नामका ग्रह
मुसल्सिल–लगातार
मुसल्ला–नमाज पढनेकी चादर
मुसल्लम–सकल, मान्य
मुसल्ली–नमाज पढनेवाला

मुसाफिर–यात्री
मुस्तअद-सिद्ध, तयार
मुस्तफा–नेता, सरदार
मुस्तर–एक रेखा में
मुहब्बत–प्रेम
मुह्तिशम–वैभवसंपन्न
मुहिया––तयार
मू, मूं–बाल, केस
मू-शिगाफी–केसविच्छेदन
मूंद लेना–मोंच लेना
म्हेंवूं–मेघ, वर्षा
मोमीन–ईमान रखनेवाला, मुसलमान
मौजूद–उपस्थित

य

यक-बारगी–एकत्रित रीतिसे
यलग़ार–हल्ला, हमला
याकूत–रत्नविशेष
यादगार–स्मारक
यार–मित्र
यारी–मित्रता

र

रक़म–लिखना
रख़्त–सामान, माल
रग़बत –इच्छा, आकर्षण
रज़ा–परवानगी, सम्मति
रंजूर–रोगी
रफ्तन–जान
रफ्तार–गति
रवा रखना–योग्य समझना
रविश–चालचलन
रश्क–मत्सर
रस्तगीरी–सीधा रास्ता
रस्ताखोज़–प्रलय, क़यामत
रस्म–रीति, विधि
रह, राह–मार्ग (सं. रथ्या से)
रहज़न–रास्ते मे लूटनेवाला, वाटमारू
रहमत–कृपा, दया
रहमतुलआलमैन–दोनो जग का कृपालु
रहमानी–कृपालुत्व
रा–लिए
राग़िब–अभिलाषी, इच्छुक
राज़–भेद, गुह्य
राद–बिजलीकी कडक
रास्ती–सचाई, सीधापन
राहत–आराम, चैन
रिज्वां–स्वर्ग का पहरेदार देवदूत
रिवायत–परंपरा
रिसाला–ग्रंथ
रुख़–मुख २ गाल
रुख, रुक–वृक्ष, झाड
रुख़सार–मुख २ गाल
रुसवा–अपमानित, लज्जित
रुस्तुम–ईराणका प्रसिद्ध पहलवान
रू–दिशा २ पृष्ठभाग
रूं–रोम, केस
रूद–प्रवाह, ओघ
रू ब-रू–सामने
रू-शिनाई–मुखभेट, पहचानत
रूह–आत्मा
रूहानी–आत्मिक
रैन–रात (सं. रजनी से)
रोलना–वहाना
रोशन–ज़मीर–दिव्यात्मा

ल

लग़ज़–सूराख, छिद्र
लज्ज़त–रुचि
लताफत–सूक्ष्मता, नाजुकी
लब–होट, अधर
लमआत–क्षण,–छन (वहुव० लमाका)
लरज़ना–कम्पित होना, कांपना

लाफ़–हंसी, विनोद
लाला–फूलविशेष
लुक़मा–निवाला, ग्रास
लुक़मान–चतुरकथा लेखक ईसाप
लुत्फ़–कृपा. २ मज़ा

व

वज़ा–ढंग
वज़ू–नमाज के पूर्व हातपांव धोना
वज़ूद–अस्तित्व
वफ़ा–श्रद्धा, निष्ठा
वफादारी–निष्ठावान होना
वली–साधु, संत
वलीनिअ़मत–युवराज
वले–परंतु
वलेकिन–परंतु
वस्फ–वर्णन करना
वस्ल–मिलाप, संयोग
वहम–शंका
वहशी–पशुपक्षी
वाक़िफ़–परिचित
वाजिब–योग्य
वाम–क़र्ज़, ऋण
वारना–कुरबान, अर्पित करना
विलायत–मुल्क, देश
वैताग–दुनयादारी की बातों से मन उठ जाना

श

शकना–डरना, शक धरना
शक्ल–आकृति
शफ़क़–संध्या, संध्या की लाली
शफ़क़त–प्रेम
शफाअ़त–कृपा
शफाअत-बख्श–कृपालु
शफी–कृपालु
शब–रात (बना है सं. क्षणा से)
शबे–बरात शाबान मास की चौदहवीं रात
शमशाद–एक ऊंचा, सीधा वृक्षविशेष
शमा–दीप, दिया
शरज़ा–व्याघ्र
शरफ़–प्रतिष्ठा, इज्जत
शरम–लज्जा
शरह–टिप्पणी. स्पष्टीकरण
शरीअ़त–धर्मशास्त्र
शर्क–पूर्व
शस्तो-शश–छहसट, साठपर छह
शह, शाह–राजा (सं. क्षत्रिय से)
शहद–मधु
शहनशाह. शाहनशाह–सम्राट् (सं. क्षत्रियाणां क्षत्रिय से)
शहनामाखानां–शहनामाग्रंथ पढनेवाले
शह-परी–श्रेष्ठ अप्सरा
शहरयार–राजा
शहादत–साक्ष, गवाही. २ आत्माहुति
शहीद–जिसने आत्माहुति दी हो
शाअ़िरी–कवित्व
शाकिर–शुक्र, धन्यवाद करनेवाला
शाख–शाखा, डाली (सं. शाखा से)
शागिर्द–शिष्य (सं. आशाक्त् से)
शाद–खुश, संतुष्ट (सं. शान्ति से)
शादमानी–आनंदोत्सव
शाना–कंधा, स्कंध
शाहज़ादा–राजपुत्र
शाहिद–साक्षी, देखनेवाला
शाही–राज्य
शिअ़र–कविता
शिकम–पेट, आंतर (सं. स्कम्भ)
शिकंजा–पकड, बंधन
शिगुफ्ता–प्रफुल्लित
शिताब–जल्द, त्वरित
शिद्दत–अतीव, विपुलता
शीराजा–व्यवस्था
शीरीन–मीठी, माधवी (सं. क्षीर से)

शीशा–कांच, आईना
शुक्र–धन्यवाद
शुग़ल–काम
शुजाअत–पराक्रम. शौर्य
शुदन–होना (सं. अस् से)
शुबान–पशुपालक, गो-पालक
शैवा–पद्धति, रीति
शौख़–निडर, चतुर
शौम–निंदित, निर्लज्ज
शोर–गडबड, हलचल
शोरोशर–हलचल, धूमधाम

स

सआदत–सौजन्य
सखावत–औदार्य
सग–कुत्ता (सं. श्वन् से)
संग-दिल–निर्दय, पत्थर के मनका
संगिनी–वजनदार
सजन–प्रियकर
सतर–पंक्ति
सद–सौ. शत (सं. शत से)
सद्द–दीवार
सनअत–कला, हुनर. २ अलंकार
सनद–प्रकार, समान
सना–स्तुति
सनाए–अलंकार, सनअत का बहुव.
सफ़रा–पित्त
सफा–साफ
सफादार–साफ
सफा-बख्श-सफाई देनेवाला
सबक़–पाठ
सबब–कारण
सबा–प्रातः
सबर–सहन करना
सबूरी–सहनशक्ति
सब्ज़–हराभरा
सब्ज़ा–हरयाली
समन–फूलविशेष
सयद–शिकार
सर-अंजाम देना–पूरा करना
सर-कश–बागी, षड्यंत्री
सर-खेल–सेनापति
सर-गर्दा -घूमनेवाला
सर-पोश–आच्छादन
सर-फराजी–मानसन्मान
सरब-सर–पूरा
सर-लूह–प्रमुख तख्ता
सरवर–नेता, सरदार
सराना–सराहना, स्तुति करना
सरासर–पूरा
सर्व–वृक्षविशेष
सर्द–ठंडा
सलग–प्रवेश, संबंध
सलवात–नमाज़, दुआ
सलासत–प्रसाद, सहजता
सल्तनत–राज्य
सहरा–मैदान, जंगल
सहीफा–पृष्ठ
साअत–घडी, मुहूर्त
साकिन–निवासी
साकी–मद्य का प्याला देनेवाला
साज़गारी–अनुकूलता
साज़िश–बांधना
सानी–द्वितीय, दूसरा
साफी–सफाई
साबित-कदम–स्थिरगति, स्थिरबुद्धि
सामी–उत्तुंग, ऊंचा
साय-गुस्तर–छाया फैलानेवाला
सालार–नेता, प्रमुख
सालिम–पूरा, सब
साहिब–स्वामी
सामरी–नामविशेष एक जादूगार का
सिजदा–नमाजके लिए झुकना

सितम–अन्याय
सितमी–अन्यायी
सिपर–ढाल
सिपह, सिपाह–सैनिक
सिपहदार–सेनापति
सिफत–वर्णन
सियह, सियाह–काला
सियाह-गोश–पशुविशेष
सियाही–कालापन
सिलम–प्रेम, सहिष्णुता
सिलसिला–रांग, कतार
सिहर–जादू
सिह्‌हत–निरोगिता
सीना–छाती
सीम–चांदी
सीमुर्ग–गरुड
सुख़न–साहित्य २ वाणी
सुख़न-साज–साहित्यिक
सुफ़ीदी–शुभ्रता (सं. श्वेत से)
सुबक–हलका
सुबहान–ईश्वर
सुंबल–फूलविशेष
सुरय्या–झुमका १ छह सितारोंका समूह
सुल्स्–१ अक्षरशैली २ तीसरा भाग
सुहबत–सहवास
सुहानी–सुंदर, सुशोभित
सू–बाजू, दिशा
सूद–फायदा
सूज–जलन, संवेदना
सूर–सूर्य
सूरत–आकृति
सूसन–फूलविशेष
सैफ–दुधारी तलवार
सैर–घूमना

ह

हक़–सत्य. २ ईश्वर
हकीक़त–वस्तुस्थिति
हकीकी–सच्चा, सगा
हकीम–चतुर
हंगाम–ऋतु, मोसम
हद–सीमा
हदफ़–निशाना, लक्ष्य
हदीका–मदीनी के समीप का एक ग्राम
हदीस–पैगंबर के बचन
हफ़ताद–सत्तर
हबशी आफिरका की एक जाति, सिद्दी
हम-क़रीन–सगा, संबंधी
हमदम–मित्र, साथी
हमल–गर्भ
हमवार–साफ, अनुकूल
हम्द–ईश्वर की स्तुति
हया–लज्जा, शरम
हयाती–जीवित रहना
हरकत–चलन, गति
हरगिज़–कभीभी
हरजा–नुकसान
हरम–प्रासाद का नारियोंके लिए निश्चित किया हुवा भाग
हरफ़–अक्षर
हल करना–खोलना
हलक़–कंठ
हलक़ा–वर्तुळाकार
हवस–अभिलाषा
हवस-नाक–अभिलाषी
हशम–सैन्य
हशर–प्रलयकाल
हस्ती–अस्तित्व, (सं. अस्ति से)
हाजिब–दूत, वकील
हातिफ–आवाज देनेवाला देवदूत
हातिम–अरब का प्रसिद्ध उदार व्यक्ति
हाल–अवस्था
हासिल–प्राप्त
हिकमत–युक्ति, चातुर्य

हिकायत–कथा, कहानी
हिज़–अभिरुचि
हिज्र–वियोग
हिमायत–सहायता
हिम्म–हिम्मत, हिम्मत का बहु व०
हिलाल–वद्य द्वितीया का चंद्र
हिसार–तट
हीला–बहाना, तेढा मार्ग
हुकूमत–राज़्य
हुजरा–कमरा
हुज़ूरी–दरबारी पुरुष
हुवैदा–आविष्कृत
हुज्जत–तत्त्वचर्चा
हुनरमंदी–कलाभिज्ञता
हुमा–एक शुभशगुन पक्षी
हुरमत–इज्जत, मान
हुस्न–सौंदर्य
हूर–अप्सरा
हैबत–डर, भीति
हैरान–परेशान, दुखी
होश–समझ, ज्ञान
हौसला–हिम्मत, धैर्य

———